CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५०८)

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

३३

आ. १०६

श्रीगङ्गादासप्रणीता

छन्दोमञ्जरी

(प्रामाणिकं ...रणम्)

'सुषमा' 'सफला' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्याभ्यां संवलिता

व्याख्याकारः—

डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
साहित्याचार्यः, आयुर्वेदाचार्यः
एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० एस-सी० ए०

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
३६

आ. १०६

श्रीगङ्गादासप्रणीता

छन्दोमञ्जरी

(प्रामाणिकं संस्करणम्)

'सुषमा' 'सफला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्याभ्यां संवलिता

व्याख्याकारः—
डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
साहित्याचार्यः, आयुर्वेदाचार्यः।
एम. ए., पी-एच. डी., डी. एस-सी. ए.

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक—

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

के० ३७/११७, गोपालमन्दिर लेन

पोस्ट बाक्स नं० १२९

वाराणसी २२१००१

सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण १९८३

मूल्य ८–००

अन्य प्राप्तिस्थान—

चौखम्बा विद्याभवन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

चौक (बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे),

पोस्ट बाक्स नं० ६९

वाराणसी २२१००१

दूरभाष : { ६३०७६ दुकान
५५३५७ निवास

मुद्रक—

श्रीजी मुद्रणालय

वाराणसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

THE

CHAUKHAMBA SURBHARATI GRANTHAMALA

36

CHANDOMAÑJARĪ

OF

GAṄGĀDĀS

(AUTHENTIC EDITION)

Edited With

'Sushama' 'Saphala' Sanskrit & Hindi Commentaries

By

Dr. Brahmananda Tripathi

Sahityacharya, Ayurvedacharya

M. A., Ph. D., D. Sc. A.

CHAUKHAMBA SURBHARATI PRAKASHAN

VARANASI

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

© CHAUKHAMBA SURBHARATI PRAKASHAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
K. 37/117, Gopal Mandir Lane
Post Box No. 129
VARANASI 221001

Second Edition
1983

Also can be had of
CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
CHOWK (Behind The Benares State Bank Building)
Post Box No. 69
VARANASI 221001

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आमुखम्

अयि निरन्तरछन्दःसम्पर्कपावितहृदयमुकुराः सहृदयाः ! सरस्वती समाराधनसावधानाः सुधियश्च !, विदाङ्कुर्वन्तु भवन्तः, 'छन्दः पादौ तु वेदस्य' इत्यनेन सिद्धयति, यच्छन्दःशास्त्रं वेदस्य प्रधानतममङ्गम् । एतच्छास्त्रं लौकिकाऽलौकिकभेदेन द्विधाविभक्तम् । अमुष्य विषये भारतीयविदुषां साहित्य-व्याकरण-दर्शनादिवन्नास्ति समादरः, तथापि पाठ्यविषयेष्वन्यतमत्वाद् विषयोऽयं विदुषां हृत्सु, पिपठिषूणां नियमावलीषु, व्यवसायिनां पुस्तकाऽऽगारेषु, कथं कथमपि जीवति, श्वसिति प्राणिति च । तस्मादेतस्य सङ्क्षेपेण किमपि वृत्तजातमिहोपन्यस्यते ।

इतिहासः साक्षी यद् भारतवर्षमिदं चतुर्वर्णानामुपदेष्टेति, अतोऽत्र प्राचीनकालादेव छन्दःशास्त्रस्य स्थितिरिति नात्र सन्देहावसरः । आस्य आदिगुरुः सर्वलोकशङ्करः शङ्करः, ततः परम्पराक्रमेण शास्त्रमिदं महर्षिः पिङ्गलो जग्राह ।

एतदनन्तरमन्येऽपि न्यङ्कु-क्रौष्टुक-यास्क-शाकटायनप्रभृतयः छन्दःशास्त्रप्रवक्तार आसन् समये समये, येषां ग्रन्थेषु लौकिकाऽलौकिकछन्दसां विचारवीचयः समुल्लसन्ति । तेषु पिङ्गलकृतानि छन्दः सूत्राणि उभयात्मकानि, तदनन्तरं लौकिकच्छन्दोग्रन्थेषु केदारभट्टकृतो वृत्तरत्नाकरः, गङ्गादासरचिता छन्दोमञ्जरी, कालिदासनिर्मितः श्रुतबोधः, क्षेमेन्द्रप्रणीतश्छन्दोनिर्णयात्मकः सुवृत्ततिलकः प्रसिद्धिपदवीमारोहति ।

प्रस्तुता छन्दोमञ्जरी छन्दोजगति सरलया सरसया च संस्कृतव्याख्यया सुषमामादधातु तथा हिन्दीविवृत्या पिपठिषूणामभीष्टप्रदाने सफला स्यादिति सदाशयेन सुषमा-सफलाटीकाभ्यां समुपबृंहिता वर्वर्ति । अत्र यथास्थानं प्रसादगुणपूरितानि प्रत्युदाहरणान्यपि संयोजितानि । सर्वेषूदाहरणेषु तत्तद् गणनामचिह्नानि यथावदुट्टङ्कितानि विराजन्ते । स एव विषयष्टीकायामपि विशदीकृतो विलसति । इत्थ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुभयथा छन्दोज्ञानलिप्सव एतेन कृतार्था भविष्यन्तीति, नात्र सन्देहलेशः ।

वैशिष्टचम् —अस्याम् उदाहरणरूपेण गङ्गादासेन यो हि श्रीकृष्णस्तवो निबद्धः, तन्मन्ये ग्रन्थकर्त्रा स्वपित्रे वैद्यगोपालदासाय निवापाञ्जलिः प्रदत्तः किं वा स्वकीया श्रीकृष्णचरणाम्भोजे लोकोत्तरा भक्तिः स्थाने प्रदर्शितेति ।

सैषा **छन्दोमञ्जरी** सर्वथा **वृत्तरत्नाकर**मेवानुकरोति । अत्रोदाहरणेषु कानिचित् पद्यानि ग्रन्थान्तरेभ्योऽपि—समुद्धृतानि विद्यन्ते, मन्ये तत् सम्पादकपरम्परायाः प्रमाद एव । अस्याः प्रचारो विविधासु परीक्षासु स्थाने कृतं विलसति । अद्य स्वोपज्ञसुषमा-सफलाव्याख्या-सनाथिताम् एनां तत्रभवतां भवतां करकमलेषूपायनीकुर्वन् कमपि सन्तोषपोषमनुभवामि । मदीयैषा टीका विदुषां चित्तावर्जनाय एवञ्च छन्दोज्ञानमभिलषतां छात्राणां बोधाय स्तोकमपि प्रभवेच्चेत्तर्हि नूनं स्वात्मानं कृतकृत्यं भावयिष्ये ।

आभार—प्रसङ्गेऽस्मिन् विदर्भदेशराजधानीस्थनागपुराभिजन-न्यायपञ्चाननशेवडे-इत्युपाख्यपण्डितवसन्तशर्मणामधमर्णभावमावहामि यत्तदीया वृत्तमञ्जरी छन्दोमञ्जर्याः कलेवरकल्पनायां मह्यमनल्पं साहाय्यं प्रादात् ।

आशासे गुणगृह्याः सहृदहृदयाः सुधीधौरेयाः सम्भावितान् प्रकाशनसम्बन्धिदोषजातानपास्य मदीयं परिश्रमं सफलयिष्यन्तीति ।

तिथिः—
श्रावणी पूर्णिमा
संवत् २०३५

विद्वद्विधेयः—
—डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छन्दःशास्त्र का इतिवृत्त

वैदिक तथा लौकिक वाङ्मय में छन्दशास्त्र का एक विशिष्ट स्थान है। इसका प्राचीन नाम **छन्दोविचिति** है। शास्त्रभेद से इसके **छन्दोऽनुशासन**, **छन्दोविवृत्ति**, **छन्दोमान** आदि नाम भी उपलब्ध होते हैं। पाणिनीय शिक्षा में छन्द को वेदपुरुष का पादस्थानीय माना है। जिस प्रकार पैरों द्वारा पुरुष गतिशील होता है और उनके विना पङ्गु, ठीक यही स्थिति वेदों की भी है। इसीलिये वेदों का नाम 'छन्दस्' भी है।

वैदिक प्रमुख छन्द—गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् तथा जगती ये 'सप्तछन्दांसि' नाम से निर्दिष्ट हैं। इन छन्दों की अक्षर संख्या क्रम से चार-चार बढ़ती जाती है।

लौकिक छन्दों का प्रयोग—यद्यपि छन्दःशास्त्र में वार्णिक एवं मात्रिक भेद से अनेक छन्दों का उल्लेख हुआ है किन्तु उनमें से वहुत से छन्द अछूते रह गये हैं वाल्मीकिरामायण में १३ छन्दों का, महाभारत में १८ छन्दों का और श्रीमद्भागवत में २५ छन्दों का प्रयोग हुआ है। इनके परवर्ती काव्यों में यह संख्या ५० तक पहुँची है। माघ ने अपनी रचना में विविध छन्दों का समावेश किया है।

छन्दःशास्त्र की परम्परा—अन्य भारतीय वाङ्मय के अनुसार छन्दःशास्त्र का इतिहास भी अन्धकारमय है। तथापि कुछ आचार्यों के मत नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं। रामानुजाचार्य के गुरु (११ वीं शती) आचार्य यादवप्रकाश ने पिङ्गलसूत्र की समाप्ति पर एक महत्वपूर्णश्लोक का उल्लेख किया है। यथा—

छन्दोज्ञानमिदं भवाद्भगवतो लेभे गुरूणां गुरु-
स्तस्माद् दुश्च्यवनस्ततोऽसुरगुरुर्माण्डव्यनामा ततः।
माण्डव्यादपि सैतवस्तत ऋषिर्यास्कस्ततः पिङ्गल-
स्तस्येदं यशसा गुरोर्भुवि धृतं प्राप्यास्मदाद्यैः क्रमात्॥

१. **क्रम**—युधिष्ठिरमीमांसक कृत 'वैदिकच्छन्दो मीमांसा' के अनुसार बृहस्पतिदुश्च्यवन (इन्द्र)-शुक्राचार्य-माण्डव्य-सैतव-यास्क-पिङ्गल का है। यथा—

छन्दशास्त्रमिदं पुरा त्रिनयनाल्लेभे गुहोऽनादित-
स्तस्मात् प्राप सनत्कुमारकमुनिस्तस्मात् सुराणां गुरुः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तस्माद्देवपतिस्ततः फणिपतिस्तस्माच्च सत्पिङ्गल-
स्तच्छिष्यैर्बहुभिर्महात्मभिरथो मह्यां प्रतिष्ठापितम् ॥

२. **क्रम**—शिव–गुह–सनत्कुमार–बृहस्पति–इन्द्र–शेषनाग (पतञ्जलि)–पिङ्गल । इसमें भी आदि प्रवर्तक शिवजी को ही स्वीकारा है ।

३. **क्रम**—पिङ्गलछन्दःसूत्र की हलायुधवृत्ति में पिङ्गल से पूर्व कुछ आचार्यों का इस प्रकार उल्लेख है । न्यङ्कु–कौ (क्रौ) ष्टुक–यास्क–शाकटायन आदि महर्षियों द्वारा रचित छन्दःशास्त्रों को अत्यन्त कठिन समझकर संसार के उपकार की इच्छा से पिङ्गलाचार्य ने अपने उक्त छन्दःसूत्र की रचना की ।

वैदिक तथा लौकिक छन्द—कतिपय वैदिक छन्दों का उल्लेख हमने ऊपर किया है । लौकिक छन्दों के सम्बन्ध में कालीदास की अनुभूति 'निषाद-विद्धाण्डजदर्शनोत्थः श्लोकत्वमापद्यत यस्य शोकः' तथा भवभूति ने उत्तररामचरित के द्वितीय अंक में ब्रह्मा के मुख से कहलाया यह अंश 'अहो ! नूतनश्छन्दसामवतारः' और महर्षि वाल्मीकि की 'शोकः श्लोकत्वमागतः' यह उक्ति, ये तीनों लौकिक छन्दों के श्रीगणेश का संकेत करते हैं ।

आचार्य पिङ्गल—इनका छन्दःसूत्र उपलब्ध छन्दोग्रन्थों में सर्वप्राचीन है । इनके देशकाल का ठीक-ठीक परिचय प्राप्त नहीं होता, एक परम्परा के अनुसार इनको पाणिनि का अनुज कहा जाता है किन्तु इसका पुष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं है ।

पिङ्गल के टीकाकार—इसके सुप्रसिद्ध टीकाकार **भट्ट हलायुध** हैं, इनकी टीका का नाम है, **मृतसञ्जीवनी** । इसकी एक और प्रमाणिक टीका हस्तलेख के रूप में उपलब्ध होती है जिसका प्रकाशन अभी तक नहीं हो सका, इसका नाम है 'पिङ्गलनाग-छन्दोविचिति भाष्य' इसके रचयिता हैं—**यादवप्रकाश** । ये रामानुजाचार्य के गुरु थे । इस भाष्य का उपयोग **आचार्य भास्करराय** ने अपने छन्द सम्बन्धी ग्रन्थों में किया है । लौकिक छन्दों के वर्णन प्रसंग में ये **पिंगल** के पूरक सिद्ध होते हैं । पिङ्गल सूत्र के तृतीय व्याख्याकार के रूप में **आचार्य भास्करराय** हैं । ये अपने युग के अतवारी पुरुष माने जाते हैं । इन्होंने सत्रह वर्ष की अवस्था में **छन्दःकौस्तुभ** ग्रन्थ का निर्माण किया । बीसवें वर्ष में **वृत्तरत्नाकर** पर **मृतजीवनी** व्याख्या लिखी । पचासवें वर्ष में **वृत्तचन्द्रोदय** नामक प्रौढ़ छन्दोग्रन्थ की रचना की, अन्त में पिङ्गल सूत्र पर **भाष्यराज** की रचना काशी में की । आचार्य पिङ्गल की ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परम्परा में **जनाश्रयी-छन्दोविचिति** नामक छन्दोग्रन्थ की रचना हुई। अतः जनाश्रय की गणना छन्दःशास्त्रीय आचार्यों में की जाती है।

जयदेव—जनाश्रय के परवर्ती जयदेव की रचना **जयदेवच्छन्दः** नाम से विख्यात है। ये भी छन्दःशास्त्र के प्राचीन आचार्य थे। १००० इस्वी के परवर्ती ग्रन्थकारों ने इनका मत स्वीकारा है। इनका आधार भी पिङ्गलच्छन्दसूत्र ही है।

जयकीर्ति—ये कन्नड़ देश के जैन सम्प्रदाय के थे। आठ अधिकारों में विभक्त इस **छन्दोऽनुशासन** के सातवें अधिकार में कन्नण छन्दों का विवरण प्रस्तुत है इन्होंने मंगलाचरण के रूप में वर्धमान (जैनतीर्थंकर) की वन्दना की है।

यति मान्यता—इस परम्परा के आचार्य हैं—पिंगल, २. वसिष्ठ, ३. कौण्डिन्य, ४. कपिल, ५. कम्वलमुनि।

यति-अमान्यता—इस परम्परा के आचार्य हैं—१. भर, २. कोहल, ३. माण्डव्य, ४. अश्वतर ५. सैतव।

रत्नमञ्जूषा—इसके रचयिता अज्ञात हैं, रचना लघुकाय है। इसमें कुल ८५ उदाहरण हैं। ४० उदाहरण मुद्रा द्वारा अपने छन्द परिचय देते हैं। इनमें २५ उदाहरण सामुद्रिक का उल्लेख करते हैं। यह इसकी अपनी मौलिकता है। मंगलाचरण को देखने से ये भी जैन प्रतीत होते हैं।

केदारभट्ट--इनकी प्रौढ़ रचना **वृत्तरत्नाकर** है। इसमें छः अध्याय और १३६ श्लोक हैं। यह ग्रन्थ पिङ्गल के समान सूत्र वद्ध न होकर छन्दोवद्ध है।

वृत्तरत्नाकर के टीकाकार—१. त्रिविक्रम २. सुल्हण, ३. सोमचन्द्र-गणि, ४. रामचन्द्रविवुध, ५. समयसुन्दरगणि, ६. नारायणभट्ट, ७. भास्कर, ८. जनार्दनविवुध, ९. सदाशिव, १७. श्रीकण्ठ, ११. विश्वनाथ, १२, कृष्णसार, (उपनाम—देवेन्द्रभारती), १३. करुणाकरदास, १४. दिवाकर।

क्षेमेन्द्र—इनका **सुवृत्ततिलक** छन्दों के उपयोग के लिये एक उत्तम सोपान परम्परा है। इस ग्रन्थ में इसका मनोरम निर्देश है कि किस छन्द का किस रूप में कब कहाँ कैसे प्रयोग करना चाहिये। इन्होंने उन कवियों को दरिद्र कहा है जो अपने काव्यों में कम से कम छन्दों का प्रयोग करते हैं।

कालिदास—इसका **श्रुतबोध** लौकिक छन्दों की जानकारी के लिये सर्वाधिक उपयोगी ग्रन्थ है। इसके ४४ श्लोकों में कुल ३७ छन्दों का वर्णन है।

हेमचन्द्र—इनका **छन्दोऽनुशासन** छन्दःशास्त्र का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसकी विशेषता है प्राकृत तथा अपभ्रंश छन्दों की जानकारी देना। इस पर इनकी जो टीका है उसका नाम है **छन्दश्चूडामणि,** इसकी अध्याय संख्या ८ है।

गङ्गादास—इनकी रचना **छन्दोमञ्जरी** अत्यन्तलोकप्रिय है। जिस प्रकार विश्वनाथ की कृति साहित्यदर्पण अत्यधिक प्रिय हुई उसी प्रकार दूसरे उड़िया विद्वान् की यह लोकप्रिय कृति 'छन्दोमञ्जरी' है। इसके मंगलाचरण पद्य से ज्ञात होता है कि इनके माता-पिता का नाम वैद्यगोपालदास तथा सन्तोषी देवी था। ये उत्तम कवि थे। इसके अतिरिक्त इनकी ये कृतियाँ हैं—१. अच्युतचरित २. कंसारिशतक, ३. दिनेशशतक। इनका समय अनुमानतः १३०० ई० से १५०० ई० के बीच स्वीकार किया गया है। इस ग्रन्थ में छः स्तबक है।

छन्दःशास्त्र के परवर्ती आचार्यों ने पिङ्गल मुनि को ही अपना आधार माना है। जयदेव, जयकीर्ति, केदारभट्ट आदि आचार्य पिङ्गल के ही अनुयायी हैं। अग्निपुराण में भी इस दृष्टिकोण का समर्थन है। उसमें आठ अध्यायों द्वारा परिभाषा दैव्य आदि संज्ञा, पादाधिकार, उत्कृति आदि छन्द, आर्या मात्रिकवृत्त विषमवृत्त, अर्धसमवृत्त, प्रस्तार, आदि क्रम से विवेचित हैं। इसमें लिखा है—'छन्दो वक्ष्ये मूलशब्दैः पिङ्गलोक्तं यथाक्रमम्' (३२८।१)।

छन्दःशास्त्र पर आचार्य पिङ्गल का एकाधिपत्य होने पर भी एतत्सम्बन्धी अन्यसम्प्रदायों की उपेक्षा कथमपि स्वीकार नहीं की जा सकती है।

प्रस्तुत संस्करण की विशेषता--शकाब्द १७६३ (१८७१ सन्) में श्रीयुक्त भुवनचन्द्रवसाक की प्रार्थना से श्री हरिमोहनदास गुप्त द्वारा संशोधित तथा 'संवादज्ञान रत्नाकर यन्त्रालय' से प्रकाशित **छन्दोमञ्जरी** का प्रामाणिक संस्करण, प्रस्तृत छन्दोमञ्जरी के मूल पाठों का आधार है। जिसका अनुकरण समसामयिक लब्धप्रतिष्ठ लेखकों एवं प्रकाशकों ने कर इसका समादर किया है।

इस समय छन्दोमञ्जरी के जो अन्य संस्करण उपलब्ध हो रहे हैं, उनकी प्रामाणिकता इसके मूलपाठों से मिलान करने पर स्वयं सामने आ जायेगी।

छन्दोमञ्जरी का यह आदर्श संस्करण प्रस्तुत है, विषय के ज्ञान को एवम् अन्य संस्करणों से तुलना की दृष्टि से भी यह किसी से पीछे नहीं है। जो छन्द आपको मूल में उपलब्ध न हो उनको अक्षर संख्या आदि के अनुसार उन-उन छन्दों के नीचे टिप्पणी में देखें।

—डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

छन्दोमञ्जरी-विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठांक
मङ्गलाचरण	१
प्रस्तावना	२
विषयप्रवेश	३
वृत्तपरिचय	३
मात्राविचार	३
वृत्त-भेद	४
गणप्रतीक	४
गणप्रयोगविचार	५
गुरु-लघुनिर्देश	६
गण-चक्र	६
जाति-गणवर्णन	६
गुरु-लघु-सिद्धान्त	७
यति-विवेक	१०
उक्थादि-गणना	१४

वृत्तनाम	अक्षरवृत्ति	पृष्ठांक
अचलधृति	१९	९८
अतिकृति	२५	११६
अतिजगती	१३	५७
अतिधृति	१९	९८
अतिशर्करी	१५	६९
अतिशायिनी	१७	९२
अत्युक्था	२	१७
अत्यष्टि	१७	८४
अद्रितनया	२३	११२
अनङ्गशेखर	दण्डक	१२६
अनवसिता	११	४४
अनुकूला	११	४१
अनुष्टुप्	८	२४
,,	,,	१३६
अपरवक्त्र	अर्धसम	१२८
अपराजिता	१४	६६
अपवाह	२६	११८
अर्ण	दण्डक	११९
अर्णव	,,	,,
अशोकपुष्पमञ्जरी	दण्डक	१२१
अशोकमञ्जरी	,,	१२४
अश्वगति	१८	८४
अश्वगति	१६	९७
अश्वललित	२३	११२
अष्टि	१६	७६
असम्बाधा	१४	६४
आकृति	२२	११०
आख्यानकी	अर्धसम	१३१
आर्या	मात्रा	१३७
आर्यागीति	मात्रा	१४३
इन्द्रवज्रा	११	३३
इन्द्रवंशा	१२	४६
इन्दिरा	११	४४
उक्था	१	१६
उज्ज्वला	१२	५६
उत्कलिका	गद्य	१५०
उत्कृति	२६	११७
उद्गता	विषम	१३२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उद्गता	विषम	१३३
उद्गीति	मात्रा	१४३
उद्दाम	दण्डक	११९
उपचित्र	११	४४
,,	अर्धसम	१२६
उपजाति	११	३५
उपगीति	मात्रा	१४२
उपस्थित	११	४४
,, ,,	१३	६३
उपस्थिता	१०	३३
उपेन्द्रवज्रा	११	३४
उष्णिक्	७	२२
ऋषभगजविलसित	१६	७७
औपच्छन्दसिक	मात्रा	१४५
कन्दुक	१३	६३
कन्या	४	१८
कमला	९	३०
कलहंस	१३	६१
कान्ता	१७	९२
कालभारिणी	अर्धसम	१३०
कुपुरुषजनिता	११	४४
कुमारललिता	७	२३
कुसुमस्तवक	दण्डक	१२२
कुसुमितलतावेल्लिता	१८	९२
कुसुमविचित्रा	१२	५३
कृति	२०	१०३
केतुमती	अर्धसम	१३१
केसर	१८	९८
कोकिलक	१७	९०
कौमुदी	अर्धसम	१३१
क्रौञ्चपदा	२५	११६
गजगति	८	२७
गजतुरगविलसित	१६	७७
गरुडरुत	१६	८३
गायत्री	६	२०
गीतिका	२०	१०५
गीत्यार्या	मात्रा	१४२
चकिता	१६	७८
चञ्चरीकावली	१३	६३
चण्डवृष्टिप्रपात	दण्डक	११८
चण्डी	१३	५९
चन्द्ररेखा	१३	६३
चन्द्रलेखा	१५	७५
चन्द्रवर्त्म	१२	४५
चन्द्रिका	१३	६१
चपलार्या	मात्रा	१४०
चम्पकमाला	१०	३०
चल	१८	९८
चित्र	१६	७६
चित्रपदा	८	२४
चित्रा	१५	७६
चित्रलेखा	१८	९६
,, ,,	१८	९७
छाया	१९	९९
जगती	१२	४५
जघनचपलार्या	मात्रा	१४१
जलधरमाला	१२	५५
जलोद्धतगति	१२	४७
जीमूत	दण्डक	११९
तनुमध्या	६	२०
तरलनयन	१२	५६
तन्वी	२४	११५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तामरस	१२	५३	पुट	१२	५६
तूणक	१५	७४	पुष्पिताग्रा	अर्धसम	१२९
तोटक	१२	४८	पृथ्वी	१७	८५
त्वरितगति	१०	३२	प्रचितक	दण्डक	१२०
त्रिष्टुप्	११	३३	प्रतिष्ठा	४	१८
दीपकमाला	१०	३३	प्रबोधिता	१३	६२
दोधक	११	४२	प्रभावती	१३	६३
दोहडिका	मात्रा	१४७	प्रमाणिका	८	२६
द्रुतपद	१२	५६	प्रमिताक्षरा	१२	५१
द्रुतमध्या	अर्धसम	१३१	प्रवरललित	१६	८२
द्रुतविलम्बित	१२	५१	प्रहरणकलिका	१४	६६
द्रुता	११	४४	प्रहर्षिणी	१३	५७
धीरललिता	१६	८४	प्रियंवदा	१२	५६
धृति	१८	९२	प्रिया	५	२०
नन्दन	१८	९४	फुल्लदाम	१९	१०२
नर्दटक	१७	८९	बृहती	९	२८
नवमालिका	१२	५६	ब्रह्मरूप	१६	८४
नान्दीमुखी	१४	६९	भद्रक	२२	११२
नाराच	१८	९५	भद्रविराट्	अर्धसम	१३०
नाराचिका	८	२८	भद्रिका	९	३०
नारी	३	१७	,,	११	४४
पंक्ति	५	१९	भाराक्रान्ता	१७	९१
,,	१०	३०	भुजगशिशुभृता	९	२८
पज्झटिका	मात्रा	१४५	भुजङ्गप्रयात	१२	४८
पञ्चचामर	१२	५६	भुजङ्गविजृम्भित	२६	११७
,, ,,	१६	७९	भुजङ्गसङ्गता	९	२९
पणव	१०	३३	भ्रमरपदक	१८	९७
पथ्यार्या	मात्रा	१३८	भ्रमरविलसिता	११	४०
पथ्यावक्त्र	विषम	१३५	मकरन्दिका	१९	१०३
परामती	अर्धसम	१३०	मञ्जुभाषिणी	१३	६०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मञ्जुसौरभ	अर्धसम	१३०
मञ्जुहासिनी	१३	६३
मणिकल्पलता	१६	८४
मणिगुणनिकर	१५	७१
मणिमञ्जरी	१९	१०३
मणिमध्य	९	२९
मणिमाला	१२	५५
मत्तमयूर	१३	५८
मत्तमातङ्गलीलाकर	दण्डक	१२३
मत्तमातङ्गलीलाकर	दण्डक	१२४
मत्ता	१०	३१
मत्ताक्रीड	२३	११३
मदनललिता	१६	८०
मदलेखा	७	२४
मदिरा	२२	१११
मधुमती	७	२२
मध्या	३	१७
मनोरमा	१०	३२
मन्दाकिनी	१२	५२
मन्दाक्रान्ता	१७	८७
मयूरसारिणी	१०	३३
महामालिका	१८	९८
महास्रग्धरा	२२	११२
माणवक	८	२५
मालती	१२	५५
मालिनी	१५	७२
मुखचपलार्या	मात्रा	१४०
मृगी	३	१८
मृगीयवानी	अर्धसम	१३०
मृगेन्द्रमुख	१३	६१
मेघविस्फूर्जिता	१९	९८
मोटक	१२	५६
मोटनक	११	४३
मौक्तिकदाम	१२	५६
रथोद्धता	११	४१
रुक्मवती	१०	३०
रूपवती	१०	३०
रुचिरा	१३	५७
रूपामाली	९	३०
ललना	१२	५६
ललित	१२	५६
,,	विषम	१३४
ललिता	१२	५६
,,	अर्धसम	१३१
लालित्य	२२	११२
लीलाकर	दण्डक	११९
लीलाखेल	१५	७२
लोला	१४	६८
वंशपत्रपतित	१७	८६
वंशस्तनित	१२	४६
वंशस्थ	१२	४६
वंशस्थविल	१२	४६
वक्त्र	विषम	१३५
वरयुवति	१६	८४
वसन्ततिलक	१४	६५
वाणिनी	१६	८१
वातोर्मी	११	३९
वासन्ती	१४	६७
विकृति	२३	११२
विद्याधार	१२	५६
विद्युन्माला	८	२५
विद्युल्लेखा	६	२२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विध्वङ्कमाला	११	४४
विपरीताख्यानकी	अर्धसम	१३०
विपिनतिलक	१५	७३
विपुलार्या	मात्रा	१३९
विभु	१९	१०३
वृत्तक (चूर्णक)	गद्य	१४९
वृत्तगन्धि	गद्य	१५०
वृत्त	२०	१०५
वृत्ता	११	४४
वेगवती	अर्धसम	१२७
वैतालीय	मात्रा	१४४
वैश्वदेवी	१२	५०
व्याल	दण्डक	११९
शंख	,,	११९
शर्करी	१४	६४
शशिकला	१५	६९
शशिवदना	६	२१
शार्दूल	१८	९७
शार्दूलललित	१८	९६
शार्दूलविक्रीडित	१९	१००
शालिनी	२१	३८
शिखण्डित	११	४४
शिखरिणी	१७	८४
शुद्धविराट्	१०	३३
शोभा	२०	१०६
श्येनी	११	४४
श्रीः	१	१६
षट्पदा	अर्धसम	१३०
संस्कृति	२४	११५
सती	४	१९
समानिका	८	२७
समुद्रलता	१९	१०३
सरसी	२१	१०९
सान्द्रपद	११	४४
सारङ्ग	१२	५६
सिंहनाद	१३	६१
सिंहविक्रान्त	दण्डक	१२४
सिंहोद्धता	१४	६५
सुधा	१७	९७
सुन्दरी	अर्धसम	१२९
सुनन्दिनी	१३	६०
सुमुखी	११	३८
सुप्रतिष्ठा	५	१९
सुरसा	१९	१०१
सुवदना	२०	१०३
सोमराजी	६	२१
सौरभक	विषम	११३
स्रक्	१५	७०
स्रग्धरा	२१	१०८
स्रग्विणी	१२	४९
स्वागता	११	४२
स्त्री	२	१७
हंसरुत	८	२८
हंसी	१०	३३
,,	२२	११०
हरि	१७	९२
हरिणप्लुत	१८	९७
हरिणप्लुता	अर्धसम	१२७
हरिणी	१७	८८
हलमुखी	९	३०
हारिणी	१७	९०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छन्दसां प्रयोगनिरूपणदृष्ट्या सुवृत्ततिलकस्थ वृत्त-मुक्ता-सञ्चयः

प्रबन्धः सुतरां भाति यथास्थाननिवेशितैः ।
निर्दोषगुणसंयुक्तैः सुवृत्तैर्मौक्तिकैरिव ॥ १ ॥
काव्ये रसानुसारेण वर्णनानुगुणेन च ।
कुर्वीत सर्ववृत्तानां विनियोगं विभागवित् ॥ २ ॥
शास्त्रकाव्येऽतिदीर्घाणां वृत्तानां न प्रयोजनम् ।
काव्यशास्त्रेऽपि वृत्तानि रसायत्तानि काव्यवित् ॥ ३ ॥
तथाऽव्यवस्थासदृशैः साधुशब्दपदस्थिताः ।
सुवृत्तैरेव शोभन्ते प्रबन्धाः सज्जना इव ॥ ४ ॥
एकस्मिन्नेव यैर्वृत्ते कृतो द्वित्रेषु वा श्रमः ।
न नाम विनियोगार्हास्ते दरिद्रा इवोत्सवे ॥ ५ ॥
अनुष्टुप् सततासक्ता साभिनन्दस्य नन्दिनी ।
विद्याधरस्य वदने गुलिकेव प्रभावभूः ॥ ६ ॥
स्पृहणीयत्वचरितं पाणिनेरुपजातिभिः ।
चमत्कारैकसाराभिरुद्यानस्यैव जातिभिः ॥ ७ ॥
वृत्तच्छत्रस्य सा कापि वंशस्थस्य विचित्रता ।
प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाऽधिकीकृता ॥ ८ ॥
वसन्ततिलकारूढा वाग्वल्ली गाढसङ्गिनी ।
रत्नाकरस्योत्कलिका चकास्त्याननकानने ॥ ९ ॥
भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी ।
रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति ॥१०॥
सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता प्रवल्गति ।
सदश्वदमकस्येव काम्बोजतुरगाङ्गना ॥११॥
शार्दूलक्रीडितैरेव प्रख्यातो राजशेखरः ।
शिखरीव परं वक्त्रैः सोल्लेखैरुच्चशेखरः ॥१२॥
एवमुद्देशलेशेन वृत्तानां दर्शितः क्रमः ।
अनयैव दिशा सर्वं ज्ञेयं तज्ज्ञैर्यथोचितम् ॥१३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

॥ श्रीः ॥

श्रीगङ्गादासप्रणीता

छन्दोमञ्जरी

'सुषमा' 'सफला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्याभ्यां समन्विता

प्रथमः स्तबकः

मङ्गलाचरणम्

देवं प्रणम्य गोपालं वैद्यगोपालदासजः ।
सन्तोषातनयश्छन्दो गङ्गादासस्तनोत्यदः ॥ १ ॥

व्याख्याकर्तुर्मङ्गलाचरणम्

प्रत्यूहव्यूहचन्द्रस्य ग्रासकर्मणि राहवे ।
सिन्दूरारुणिताङ्गाय नमस्ते वेदवाहवे ॥ १ ॥

वस्तुनिर्देशात्मकं मङ्गलम्

आचार्यपिङ्गलमुनेः पथि वर्तमान-
च्छन्दोविदां सुकृतिनां समधीत्य सूक्तीः ।
अभ्यस्य शास्त्रवचनानि मया कथञ्चित्
व्याख्या कृताऽद्य सुषमा सफलाऽभिधाना ॥ २ ॥

खिस्तेवंशशिरोमणेर्निजगुरोः साहित्यवाचस्पतेः
शिष्येनाथ मया यदप्यधिगतं तेनैव सन्तन्यते ।
टीका कामदुधा भवेद् गुरुकृपापीयूषपाकोद्भवा
स्वात्मानं कृतिनं विनम्रशिरसा चेद् भावयिष्ये चिरम् ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेदाङ्गत्वेन विख्यातं छन्दःशास्त्रं पुरातनम् ।
तारादत्ततनूजेन तत्र वृत्तिर्विधीयते ।। ४ ।।

सुषमा–प्रारिप्सितस्य ग्रन्थस्य निर्विघ्नपरिसमाप्त्यर्थं स्वेष्टदेवतानमस्कारात्मकं मङ्गलं शिष्यशिक्षायै ग्रन्थकृन्निबध्नाति वैद्यः भिषक् यो हि गोपालदासः एतन्नामा पुरुषः तस्माज्जातः तत् पुत्रः, सन्तोषातनयः, सन्तोषेति तस्य मातुर्नाम सोऽयं गङ्गादासः, देवं कुलाधिदेवं, गोपालं श्रीकृष्णं, प्रणम्य नत्वा, अदः एतद्, छन्दः शास्त्रविशेषं, तनोति विस्तारयति ।

सफला—वैद्य गोपालदास तथा सन्तोषा (सन्तोषी) के पुत्र श्रीगङ्गादास अपने इष्टदेव श्रीकृष्ण का नमन करके 'छन्दोमञ्जरी' नामक छन्दःशास्त्र की रचना करते हैं ।। १ ।।

प्रस्तावना

सन्ति यद्यपि भूयांसश्छन्दोग्रन्था मनीषिणाम् ।
तथापि सारमाकृष्य नवकार्थो ममोद्यमः ।। २ ।।

सुषमा—यद्यपि सन्ति पिङ्गलाचार्यकृतच्छन्दःसूत्राणि तत् कथं पुनरत्र ग्रन्थनिर्माणे प्रवृत्तिरिति शङ्कां निवारयति । यद्यपि मनीषिणा छन्दःशास्त्रविदां पिङ्गलाद्याचार्याणां, भूयांसः अनेके, छन्दोग्रन्थाः छन्दःप्रतिपादकशास्त्राणि, सन्ति वर्तन्ते, तथापि सत्सु तेषु सारं काव्योपयोगितत्त्वांशम्, आकृष्य आदाय, वैदिकच्छन्दांसि विहायेत्याशयः, नवकार्थः नवः नवकः, स्वार्थे कन्, बालानां सुखबोधाय, मम गङ्गादासस्य, उद्यमः श्रमः प्रवृत्तिः वा, अस्तीति ।

सफला—यद्यपि पूर्ववर्ती पिङ्गल आदि आचार्यों ने अनेक छन्द सम्बन्धी ग्रन्थों की रचना की है, फिर भी बालकों (छन्दोविषयक अल्पज्ञों) के लिये पूर्वाचार्य कृत ग्रन्थों के सार भाग को लेकर छन्दोमञ्जरी की अभिनव रचना करने की ओर मेरा (गङ्गादास का) यह परिश्रम है ।। २ ।।

इयमच्युतलीलाढ्या सद्वृत्ता जातिशालिनी ।
छन्दसां मञ्जरी कान्ता सभ्यकण्ठे लगिष्यति ।। ३ ।।

सुषमा—इयं प्रस्तुता, अच्युतलीला श्रीकृष्णस्य जीवनवृत्तेन पूरिता, सद्वृत्ता चेतोहारिपद्यसंयुता, जातिशालिनी मात्राछन्दोभिः समलङ्कृता, कान्ता परमरमणीया, छन्दसां मञ्जरीं छन्दोमञ्जरीति भावः, सभ्यकण्ठे सभायां भवः सभ्य अतएव विद्वान् तस्य कण्ठप्रदेशे, लगिष्यति मिलिष्यति । तत्र प्रस्तुते छन्दो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृत्तान्ते अप्रस्तुतरमणीवृत्तान्तस्य परिस्फूर्त्या समासोक्त्यलङ्कारः। तत्र रमणी-पक्षे—अच्युतलीलाढ्या परिपूर्णहावभावादिभिर्मनोहारिणी, सद्वृत्ता सच्चरित्र-युक्ता, जातिशालिनी सत् कुलोत्पन्ना, इयं हारस्वरूपामञ्जरी सभ्यकण्ठे कुलीन-पुरुषस्य गले, लगिष्यति स्थानं प्राप्स्यतीति भावः ॥ ३ ॥

सफला—श्रीकृष्ण की बाललीलाओं से मनोहर, सरसपद्यों से परिपूर्ण, मात्रिकछन्दों से सुशोभित अतएव मनोहर यह छन्दोमञ्जरी विद्वानों के कण्ठ-प्रदेश में सुशोभित होगी।

वक्तव्य—ग्रन्थकार का अभिप्राय है कि पूर्वोक्त छन्दोग्रन्थ वैदिक तथा लौकिक विपुलछन्दःसामग्री से गुरुतर हो जाते थे। उनके उदाहरण भी उतने मनोरम नहीं थे। यह छन्दोमञ्जरी प्रसिद्ध लौकिक छन्दों के सरस उदाहरणों से युक्त है, अतः इसको विद्वान् तथा छात्र समान रूप से कण्ठस्थ करेंगे ॥ ३ ॥

विषय-प्रवेशः

वृत्तपरिचयः

पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा।
वृत्तमक्षरसङ्ख्यातं जातिर्मात्राकृता भवेत् ॥ ४ ॥

सुषमा—[1]पद्यं चतुष्पदी एकस्मित् पद्ये चत्वारः पादा भवन्तीति, तच्च चतुष्पात् समन्वितं पद्यं, [2]वृत्तं वृत्ताभिधं, जातिः जातिनामकमिति, द्विधा द्विविधं भवति। तत्रापि वृत्तम् अक्षरसङ्ख्यातं वर्णगणनापरिमितं भवति, जातिः मात्रा-कृता मात्रागणनापरिमिता भवति। तथोक्तं वृत्तमञ्जर्याम्—

अक्षरैर्गणना यत्र तद् वृत्तमिति कथ्यते।
मात्राभिर्गणना यत्र सा जातिरभिधीयते ॥

मात्राविचारः—एकमात्रो भवेद्ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनश्चार्द्धमात्रकम्।

सफला—एक श्लोक में चार पाद अथवा चार चरण होते हैं। इन चारों पादों से युक्त को पद्य या वृत्त कहते हैं। इस पद्य के पुनः दो भेद होते हैं, १—वृत्त और २—जाति। वृत्त में अक्षरों की गणना और जाति में मात्राओं की गणना होती है ॥ ४ ॥

---

१. पदेन संयोगात् पद्यम्। २. गायत्र्यादौ छन्दसि वर्तते इति, वृत्तम्। उभयत्र पिङ्गलः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृत्तभेदाः

समधर्मसमं वृत्तं विषमञ्चेति तत् त्रिधा ।
समं समचतुष्पादं भवत्यर्धसमं पुनः ॥ ५ ॥
आदिस्तृतीयवद् यस्य पादस्तुर्यो द्वितीयवत् ।
भिन्नचिह्नचतुष्पादं विषमं परिकीर्तितम् ॥ ६ ॥

सुषमा—पूर्वोक्तवृत्तभेदान् विवृणोति । वृत्तं–समम्, असर्धमं, विषमञ्चेति त्रिधा त्रिविधं भवति । समम् एतन्नामकं वृत्तं समचतुष्पादं समानचरणचतुष्टयं पुनः तदनन्तरम् अर्धसमं वृत्तम् कथयति—आदिः प्रथमः पादः तृतीयवत् तृतीय पाद समः तथा तुर्यः चतुर्थः पादः द्वितीयवद् द्वितीयपादसमः भवति, तत् अर्धसमम् । भिन्नचिह्नचतुष्पादं यस्य वृत्तस्य चत्वारो पादः पृथक् लक्षणवन्तः स्युः, तद् विषमं नाम वृत्तम्, परिकीर्तितं कथितम् ।

सफला–पूर्वोक्त वृत्त के तीन भेद होते हैं–१ सम, २ अर्धसम, ३ विषम । इनके क्रमशः लक्षण । **समवृत्त**—जिसके चारों पाद समान अक्षरवाले हों, जैसे—अनुष्टुप् । **अर्धसमवृत्त**—जिसका प्रथम चरण तीसरे चरण के समान और दूसरा चरण चौथे चरण के समान हो, उसे अर्धसमवृत्त, जैसे-हरिणप्लुता, और **विषमवृत्त**–जिसके चारों चरण भिन्न-भिन्न लक्षणों वाले हों, जैसे–उद्गत ।

वक्तव्य—उक्त तीनों भेदों का विस्तृत वर्णन छन्दोमञ्जरी के द्वितीय, तृतीय, एवं चतुर्थ स्तवकों में द्रष्टव्य है ॥ ५–६ ॥

गणप्रतीकाः

म्यरस्तजभ्नगैर्लान्तैरेभिर्दशभिरक्षरैः ।
समस्तं वाङ्मयं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना ॥ ७ ॥

सुषमा—म्यरस्तजभ्नगैर्लान्तैः–मश्च, यश्च, रश्च, सश्च, तश्च, जश्च, नश्च, गश्च, एषां ते म्यरस्तजभ्नगाः तैः, तथा च लकारः लघुः अन्ते येषां तैः, दशभिरक्षरैः दशसङ्ख्यायुक्तैः वर्णैः, समस्तं वैदिकं लौकिकञ्च वाङ्मयं छन्दःशास्त्रं व्याप्तं, यथा विष्णुना परमेश्वरेण त्रैलोक्यं भुवनत्रयमिव । मकाराद्यष्टभिर्गणैः गुरुलघुभ्याञ्च (एभिर्दशभिः) सर्वाणि छन्दांसि व्याप्तानीत्याशयः ॥

सफला—गणों के प्रतीक वर्णों का उक्त श्लोक में निर्देश किया गया है । यथा—मगण, यगण, रगण, सगण, तगण, जगण, भगण, नगण और गुरु, लघु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन दस प्रतीकात्मक वर्णों के द्वारा सम्पूर्ण छन्दःशास्त्र उस प्रकार व्याप्त है जिस प्रकार भगवान् विष्णु से तीनों लोक ॥ ७ ॥

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः ।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः ॥ ८ ॥

सुषमा—अथ वृत्तगणमात्रा निर्दिशति—अत्र त्रिभिस्त्रिभिरक्षरैरेको गण इति व्यवस्था । तत्र मः त्रिगुरुः, यस्मिन् गणे त्रयो वर्णाः लघवः स्युः सः **मगणः**, नः त्रिलघुः यत्र गणे त्रयो वर्णाः लघवः स्युः सः **नगणः**, भादिगुरुः प्रथमाक्षरः यत्र गुरुः सः **भगणः**, पुनः तदनन्तरम् आदिलघुर्यः यत्र गणे आदिमः वर्णः लघुः स्यात् सः **यगणः**, जो गुरुमध्यगतः यत्र मध्ये स्थितः वर्णः गुरुः स्यात् सः **जगणः** रलमध्यः यत्र मध्यस्थवर्णः लघुः स **रगणः**, सोऽन्तगुरुः यत्र अन्तिमो वर्णः गुरुः सः सगणः तथा अन्तलघुस्तः कथितः यत्र अन्तिमो वर्णः लघुः स्यात् सः तगणः कथितः । छन्दश्शास्त्रकोविदैः इतोऽपि सरला व्यवस्था पिङ्गलच्छन्दः सूत्रे प्रदत्ता—

आदिमध्यावसानेषु य-र-ता यान्ति लाघवम् ।
भ-ज-सा गौरवं यान्ति म-नौ तु गुरुलाघवम् ॥ १।८ ॥

अस्यायम्भावः—आदौ मध्ये अवसाने च क्रमेण यगणः, रगणः, तगणः, लघुः भवति, तथैव भगणः, जगणः, सगणः, गुरुः भवति अन्तिमौ मगण-नगणौ सर्वत्र क्रमेण गुरुलघू भवतः ।

सफला—वृत्त **गण** तीन-तीन अक्षरों के होते हैं । उक्तश्लोक में ८ (आठ) गणों के गुरु, लघु का विवेचन दिया गया है । जिसमें तीन वर्ण गुरु हों उसे **मगण**, जिसमें तीन वर्ण लघु हो उसे **नगण**, जिसमें आदि अक्षर गुरु हो वह **भगण,** जिसमें आदि वर्ण लघु हों वह **यगण,** जिसमें मध्यम वर्ण गुरु हो वह **जगण,** जिसमें मध्यमवर्ण लघु हो वह **रगण,** जिसमें अन्तिम वर्ण गुरु हो **सगण,** और जिसमें अन्तिम वर्ण लघु हो वह **तगण**, कहा गया है ॥ ८ ॥

गणप्रयोगविचारः

भो भूमिस्त्रिगुरुः श्रियं दिशति[1] यो वृद्धि जलं चादिलो
रोऽग्निर्मध्यलघुर्विनाशमनिलो देशाटनं सोऽन्त्यगः ।
तो व्योमान्त्यलघुर्धनापहरणं जोऽर्को रुजं मध्यगो
भश्चन्दो यश उज्ज्वलं मुखगुरुर्नो नाक आयुस्त्रिलः ॥

---

१. क्षेमं सर्वगुरुर्दत्ते मगणो भूमिदैवतः । भामहः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनौ सखायौ कथितौ भयौ भृत्यावुदीरितौ ।
उदासीनौ तजौ प्रोक्तौ सरौ शत्रू मताविह ॥

० गणचक्रम् ०

गण-नाम	मगण	यगण	रगण	सगण	तगण	जगण	भगण	नगण
,, चिह्नानि	SSS	ISS	SIS	IIS	SSI	ISI	SII	III
,, देवता	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	गगन	सूर्य	चन्द्र	स्वर्ग
,, फलम्	श्री	वृद्धि	विनाश	भ्रमण	धननाश	रोग	सुयश	आयु
,, मित्रादि-संज्ञा	मित्र	भृत्य	शत्रु	शत्रु	उदासीन	उदासीन	भृत्य	मित्र

गुरु-लघुनिर्देशः

गुरुरेको गकारस्तु लकारो लघुरेककः ।
क्रमेण चैषां रेखाभिः संस्थानं दर्श्यते यथा ॥ ९ ॥

सुषमा—गुरुरेको गकारस्तु एकः गकारः यत्र प्रयुक्तो भवति तस्य गुरुरिति संज्ञा, लकारो लघुरेककः, एककः एक एव लकारः यत्र प्रयुक्तो भवति तस्य लघुरिति संज्ञा भवति । एषां गुरुलघूणां रेखाभिः चिह्नविशेषैः संस्थानम् आकृतिः क्रमेण दर्श्यते । तद्यथा—(ऽ) रेखाङ्कितः गुरुः (।) रेखाङ्कितः लघु इति व्यवस्था ।

सफला—उक्त पद्य में गुरु, लघु का विवेचन किया गया है । लक्षणों में 'ग' अक्षर के प्रयोग से गुरु और 'ल' अक्षर के प्रयोग से लघु का सङ्केत ग्रहण होगा, यह ग्रन्थकार की प्रतिज्ञा है । उदाहरणों में इनके चिह्न इस प्रकार रहेंगे, गुरु=(ऽ), लघु=(।) ॥ ९ ॥

जातिगणवर्णनम्

ज्ञेयाः सर्वान्तमध्यादिगुरवोऽत्र चतुष्कलाः ।
गणांश्चतुर्लघूपेताः पञ्चार्यादिषु संस्थिताः ॥ १० ॥

सुषमा–पद्यस्य वृत्तभेदगतगणान् निर्दिश्य क्रमप्राप्तस्य जातेः गणान्निर्दिशति । अत्र आर्यादिषु जातिच्छन्दःसु, सर्वान्तमध्यादि गुरवः 'द्वन्द्वान्ते श्रूयमाणं पदं प्रत्येकं समभिवद्ध्यते' इति न्याय्यात् सर्वगुरुः (ऽऽऽ), अन्तगुरुः (।।ऽ), मध्यमगुरुः (।ऽ।), आदिगुरुः (ऽ।।) तथा चतुर्लघूपेताः चत्वारो वर्णाः यत्र लघवः (।।।।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्युः । तैः युक्ताः गणाः संस्थिताः ज्ञेयाः । अयम्भावः—यत् जात्यादिषु वृत्तभेदेषु प्रथमाश्चत्वारः म, स, ज, भगणाः, अन्तिमः चतुर्लघुः एकः गणः एवं पञ्चगणाः भवन्ति, इति ।

सफला—पद्य के द्वितीय भेद जाति गणों का उल्लेख किया जा रहा है। इसमें सर्वगुरु (मगण), अन्तगुरु (सगण), मध्यगुरु (जगण), आदिगुरु (भगण) और चतुर्लघु (जिस शब्द में चार मात्रायें हों,) ऐसे पाँच गण होते हैं। आर्या आदि छन्दों के मापदण्ड ये ही पाँच गण हैं ॥ १० ॥

गुरु-लघुसिद्धान्तः

सानुस्वारैश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत् ।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा ॥ ११ ॥

सुषमा—यथा लोके गुरुः अग्रणीर्भवति तथा छन्दःशास्त्रेऽपि, अतः गुरुवर्ण-परिचयमुदाहरति । सानुस्वारः अनुस्वारेण संयुक्तः स्वरः (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) एभिः स्वरैः संयुक्तं व्यञ्जनं च, दीर्घः च, दीर्घस्वराः (आ, ई ऊ, ए, ऐ, ओ औ), विसर्गी विसर्गाभ्यां संयुक्तः, संयोगपूर्वः च, 'हलोऽनन्तराः संयोगः' संयुक्तवर्णात् पूर्वस्थितो वर्णः तथा पादान्तगः अपि पदस्य अन्ते स्थितो लघुरपि वर्णः वा विभाषया गुरुः भवेत् ।

विशेष—जातिषु तु लघोः गुरोश्च गुरुत्वं विकल्पेन भवतीति सिद्धान्तः । पादान्तस्थगुरोर्लघुत्वे यदि बन्धशैथिल्यं न भवेत्तदा न दोषस्याशङ्का । यथोक्तं साहित्यदर्पणे—'दृष्टे यत्र पतन्ति मूढमनसामस्त्राणि वस्त्राणि च' । अत्र वस्त्रा-ण्यपि—इति लघुरपि 'इकारः' गौरवं विभर्ति । तस्मादत्र यः पादान्ते लघोरपि गुरुभावः कथितः सः सर्वत्र द्वितीयचतुर्थपादयोरेव, प्रथमतृतीयपादविषयस्तु वसन्ततिलकाइन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रासु एव । एवंप्रायेषु प्रथमतृतीयपादावसाने लघुवर्णसत्वेऽपि नाऽश्रव्यताऽनुभूयते सहृदयैः । अत एवोक्तं 'न पादान्तलघोर्गुरुत्वं च सर्वत्र' इति । अस्यायम्भावः—पादान्तगुरोर्लघुत्वं सर्वत्र सर्वस्मिन् वृत्ते न प्रयोक्तव्यमिति राद्धान्तः । पादान्तस्थो लघुः गुरुः भवेद्वा । यथा—

तरुणं सर्षपशाकं नवौदनं पिच्छिलानि च दधीनि ।
अल्पव्ययेन सुन्दरि ! ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति ॥

अत्र 'ग्रा' इति संयुक्ताक्षरस्य पूर्ववर्ती रकारस्योत्तरवर्ती 'इकारः' विकल्पेन लघुत्वं भजते । 'प्रह्ले वा' इति, पिङ्गलमुनेः विकल्पविधायकं सूत्रम् । तथा मत्पितुः पारिजातहरणनाटके—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिन्दूरपूरकृतकैरिकरागशोभे शश्वन्मदस्रवणनिर्झरवारिपूरे ।
सङ्ग्रामभूमिगतमत्तसुरेभकुम्भकूटे मदीयनखराशनयो विशन्तु ॥

अत्र तृतीय-चतुर्थपादान्तस्थलघ्वोर्गुरुत्वम् ।

तथा ममाऽच्युतचरितेऽपि—

रक्तेन केशिदशनक्षतसम्भवेन रेजे स मण्डिततरो हरिबाहुदण्डः ।
तद्दन्तसन्दलितभीमभुजप्रतापवह्नेरिव स्फुटकणप्रकरेण कीर्णः ॥

अत्र प्रथम-तृतीयपादान्तस्यापि लघोर्गुरुत्वम् ।

ततश्च यथा कुमारसम्भवे—

सा मंगलस्नानविशुद्धगात्री गृहीतप्रत्युद्गमनीयवस्त्रा ।
निवृत्तपर्जन्यजलाभिषेका प्रफुल्लकाशा वसुधेव रेजे ॥

अत्र प्रत्युद्गमनीयेति प्रशब्दे परे 'त्युद्' इति गुरोर्लघुत्वम् । अपरमपि यथा माघे—

प्राप्य नाभिह्लदमज्जनमाशु प्रस्थितं निवसनग्रहणाय ।
औपनीविकमरुन्ध किल स्त्री वल्लभस्य करमात्मकराभ्याम् ॥

अत्र 'ह्ल' पूर्ववर्ती 'इकारः' लघुत्वम्भजते । तीव्रप्रयत्नोच्चारणेनात्र लघुत्वम् इति 'सरस्वतीकण्ठाभरणे' यदुक्तम्—

यदा तीव्रप्रयत्नेन संयोगादेरगौरवम् ।
न च्छन्दोभंग इत्याहुस्तदा दोषाय सूरयः ॥

एवमेव—

झटिति प्रविश गेहं मा बहिस्तिष्ठ कान्ते !
ग्रहणसमयवेला वर्तते शीतरश्मेः ।
तव मुखमकलंकं वीक्ष्य राहुः स नूनं
ग्रसति तव मुखेन्दुं पूर्णचन्द्रं विहाय ॥ शृंगारतिलके ।

इत्यत्र प्रशब्दे परे झटिति इत्यत्र 'ति' शब्दस्य लघुत्वमेवोररीकृतम् । उक्तञ्च वृत्तरत्नाकरे—

पादादाविह वर्णस्य संयोगः क्रमसंज्ञकः ।
पुरःस्थितेन तेन स्याल्लघुताऽपि क्वचिद्गुरोः ॥

काशिकाकारस्तु तद्धि एवं व्याकुर्वते—'अवसाने यरो द्विश्च' यर् प्रत्याहारे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्वेषां व्यञ्जनानां ग्रहणं भवति, अतः अवसानस्थानां हलानां द्विर्भावित्वकथनात् तत्पूर्वस्थानां ह्रस्वानामपि गुरुत्वम् इति अभिप्रायो वा ।

अत्र पाणिनिः—ननु पादान्ते वर्तमानस्य ह्रस्वस्य पाणिनिना गुरुसंज्ञा न स्वीकृता । तस्य मते—'संयोगे गुरु' १।४।११ । 'दीर्घञ्च' १।४।१२ । इति । नायं संयोगादिः न च दीर्घः । अत्रोच्यते—पाणिनिना स्वशास्त्रप्रयोजनार्थं गुरु-लघुसंज्ञे कृते । पादान्ते वर्तमानस्य लघोर्गुरुत्वादेशे पाणिनेः प्रयोजनमेव नासीत् । अतः व्याकरणशास्त्रदृशा पादान्ते गुरुत्वं लघुत्वं च स्वेच्छया नोपपद्यते, तदर्थमेव पिङ्गलमुनिना '**गन्ते**' इति सूत्रं निरमायि ।

सफला—अनुस्वार वाला ह्रस्वस्वर या व्यञ्जन, दीर्घस्वरयुक्त व्यञ्जन, विसर्गों वाले स्वर या व्यञ्जन और संयुक्त वर्ण के पहिले स्थित स्वर तथा व्यञ्जन गुरु होता है । पाद के अन्त में स्थित ह्रस्व वर्ण भी आवश्यकतानुसार गुरु मान लिया जाता है ॥ ११ ॥

विशेष—जाति नामक वृत्त भेद में लघु और गुरु का गुरुत्व विकल्प से होता है । पादान्तस्थ गुरु को लघु मानने में यदि बन्धशैथिल्य दोष नहीं आता तो कोई हानि नहीं होती, यह छन्दःशास्त्र का सिद्धान्त है । जैसा ऊपर साहित्य-दर्पण के उदाहरण में दिखाया गया है कि 'वस्त्राण्यपि' यहाँ लघु 'इ'कार भी गुरु माना गया है ।

इस प्रकार जो पादान्त में लघु को गुरु के रूप में स्वीकार किया गया है वह केवल द्वितीय चतुर्थ पाद के अन्त में ही समझना चाहिये । वसन्ततिलका, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा में प्रथम तृतीय पाद के अन्त में भी आवश्यकतानुसार लघु को गुरु मान लिया जाता है । कुछ आचार्य गुरु, लघु आदि का निर्णय श्रव्यता-अश्रव्यता को देखते हुए लेते हैं । अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि पादान्त गुरु को लघु या लघु को गुरु आवश्यकतानुसार ही कविजनों ने स्वीकारा है ।

इस सम्बन्ध के परिचायक कतिपय शास्त्रीय उदाहरण इसी की संस्कृत टीका में दिये गये हैं, जो प्रस्तुत विषय के समाधान के लिये द्रष्टव्य हैं ।

व्याकरणशास्त्र के अनुसार गुरु, लघु का निर्णय—अवसान (पादान्त) में हल् (क से लेकर ह तक के) वर्णों को गुरु माना जाता है । अर्थात् लघु वर्ण को उक्तनियम के अनुसार गुरु मानना चाहिये ।

पिङ्गल मुनि के 'प्रह्ले वा' इस सूत्र के अनुसार और स्थानों पर संयुक्त का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आदि वर्ण गुरु होता है, किन्तु यदि 'प्र' 'ह्र' संयुक्ताक्षर के पूर्व कोई लघु वर्ण होगा तो वह गुरु नहीं माना जायेगा ॥ ११ ॥

यतिविवेकः

यतिर्जिह्वेष्टविश्रामस्थानं कविभिरुच्यते ।
सा विच्छेदविरामाद्यैः पदैर्वाच्या निजेच्छया ॥ १२ ॥

सुषमा—जिह्वेष्टविश्रामस्थानं जिह्वायाः रसनायाः इष्टम् अभीप्सितं विश्रामस्थाने पदच्छेदं कविभिः वृत्तविशेषज्ञैः यतिः विरामः, उच्यते कथ्यते । सा यतिः निजेच्छया वक्तुः कामनया, विच्छेदविरामाद्यैः पदच्छेद-विरामशब्दैर्वा वाच्या वक्तव्या । अयम्भावः—विच्छेदः, विरामः, विश्रामः, विरतिः, यतिः च एते पर्यायाः ।

विशेष—'श्लोकेषु नियतस्थले पदच्छेदं यतिं विदुः' । इति दण्डी । कविकल्पलतायां यतेः प्रयोजनम् एवमुक्तम्—

एवं यथा यथोद्वेगः सुधियां नोपजायते ।
तथा तथा मधुरतानिमित्तं यतिरिष्यते ॥ इति ॥

अन्यत्रापि—'अनुक्तयतिकेऽप्येवं कार्या श्रुतिसुखा यतिः' । तत्र पिङ्गलच्छन्दःसूत्रे यतिनियमस्थानानां संग्रहः—

यतिः सर्वत्र पादान्ते श्लोकार्द्धे तु विशेषतः ।
समुद्रादिपदान्ते च व्यक्ताव्यक्तविभक्तिके ॥
क्वचित्तु पदमध्येऽपि समुद्रादौ यतिर्भवेत् ।
यदि पूर्वापरौ भागौ न स्यातामेकवर्णकौ ॥
पूर्वान्तवत् स्वरः सन्धौ क्वचिदेव परादिवत् ।
द्रष्टव्यो यतिचिन्तायां यणादेशः परादिवत् ॥
नित्यं प्राक्पदसम्बन्धाश्चादयः प्राक्पदान्तवत् ।
परेण नित्यसम्बन्धाः प्रादयश्च परादिवत् ॥

अथैतेषां क्रमेणोदाहरणानि—१ लक्षणं—यतिः सर्वत्र पादान्ते, उदाहरणं—विशुद्धज्ञानदेहाय । २ लं०—श्लोकार्द्धे तु विशेषतः, इत्यत्र सन्धिकार्याभावः स्पष्टविभक्तित्वञ्च विशेषः, उ०—ईश्वराऽऽख्यं परं । ३ ल० समुद्रादिपदान्ते च व्यक्ताव्यक्तविभक्तिके । तत्र श्रूयमाणविभक्त्यन्तं व्यक्तविभक्तिकं, समासान्तर्भूतविभक्त्यन्तम् अव्यक्तविभक्तिमिति । उ०—यक्षश्चक्रे जनकतनया स्नानपुण्योदकेषु । ४ ल०—क्वचित्तु पदमध्येऽपि'''वर्णकौ, उ०—पर्याप्तं तप्तचामीमरकटतटे । अत्र स्रग्धरा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृत्ते प्रतिसप्तमाक्षरे यतिरिति नियमात्, अत्र चामीकरपदमध्ये सप्तमे मीकाराक्षरे यतिः । ५ ल०–'समुद्रादाविति' उ०–एतस्य इदमेव प्रयोजनमस्ति यत् पादान्त-यतिः पदमध्ये नोचितेति । उ०–प्रणमत भवबन्धक्लेशनाशाय नारा-यणचरण-सरोजद्वन्द्वमानन्दहेतुम् । इत्यत्र अपदान्तभूते पदमध्यस्थपादान्ते माभूदिति समुद्रादौ इति कथितम् । ६ ल०–यदि पूर्वापरौ भागौ, उ०–पूर्वापरांशयोः एकाक्षरत्वे सति उक्तसङ्ख्यापूर्त्यर्थं यः वर्णः पूर्वभागात् समाकृष्यते किं वा परभागात् समाकृष्यते, ईदृशी एकवर्णस्थला यतिः दुष्यति । यथा—एतस्या ग-ण्डतलममलं गाहते चन्द्रकक्षाम् । ७ ल०–पूर्वान्तवत् स्वरः सन्धौ० । उ०–स्यादस्थानो-पगत-यमुनासङ्गमेवाभिरामा । अत्र योऽयं पूर्वपरयोरेकादेशः स्वरसन्धौ विधीयते, स क्वचित् पूर्वस्यान्तवद् भवति, क्वचित् परस्यादिवत् । यथा च पाणिनिना निर्दिष्टम्—'अन्तादिवच्च' ६।१।८५ ॥ ८ ल०–यणादेशः परादिवत् । उ०–वितत-धनुतुषारक्षोदशुभ्रांशुपूर्णा-स्वविरलपदमालां श्यामलामुल्लिखन्तः । अत्र पूर्णासु + अविरल-पदयोः मध्ये यण्सन्धिकृतयतिदोषः समुत्पद्यते । ९ ल०–नित्यं प्राक्पद-सम्बन्धाः । अन्येषां वर्णानां पूर्वपदान्तवद्भावो माभूदित्यर्थः कारिकांशप्रयोगः । उ०–मन्दायन्ते न खलु सुहृदा—मभ्युपेतार्थकृत्याः । १० ल०–परेण नित्य-सम्बन्धाः । कर्मप्रवचनीयेभ्यः पराऽपि यतिर्भवतीति सिद्धान्तः । उ०–प्रियं प्रति स्फुरत्पादे मन्दायन्ते न खल्विति । श्रेयांसि बहुविघ्नानि भवन्ति महतामपि । ११ ल०–प्रादयश्च परादिवत् । अत्र तेभ्यः परा यतिः न भवतीति भावः । उ०–दुःखं मे-प्रक्षिपति हृदये, दुःखसहस्त्वद्वियोगे ।

सफला—उच्चारण काल में जीभ जहाँ अपनी इच्छा से रुक जाती है, उसे 'यति' कहते हैं । यह यति उच्चारण कर्ता के इच्छा के अधीन होती है । इसके विच्छेद, विराम, विरति, विश्राम पर्याय है ।

विशेष—श्लोकों के नियत स्थान में किये गये पदच्छेद को **यति** कहते हैं । यदि इसमें कोई व्यतिक्रम होता है तो वह यति भंग दोष कहा जाता है । चरण की समाप्ति में विराम होना आवश्यक है, श्लोकार्ध में तो अवश्य ही होना चाहिये, कहीं पर छन्द के लक्षण में निर्दिष्ट वर्णसमूह के अनन्तर यति का विधान होता है, उसका उल्लंघन अश्रव्यता में कारण होता है । अन्य सभी आचार्यों के अनुसार सुधीजनों का मनसोद्वेग न हो इसके लिये अथवा श्रुतिसुख (सुनने में सुख) प्राप्ति के लिये **यति** का प्रयोग आवश्यक माना गया है । विशेष विवेचन इसी श्लोक की संस्कृत टीका में देखें ॥ १२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्वचिच्छन्दस्यास्ते यतिरभिहिता पूर्वकृतिभिः
पदान्ते सा शोभां व्रजति पदमध्ये त्यजति च ।
पुनस्तत्रैवासौ स्वरविहितसन्धिः श्रयति तां
यथा कृष्णः पुष्णात्वतुलमहिमा मां करुणया ॥१३॥

सुषमा—अयं च श्लोकश्छन्दोगोविन्दे मम गुरोर्गङ्गादासस्य । पूर्वकृतिभिः पूर्वाऽऽचार्यैः, अभिहिता कथिता, यतिः विच्छेदः, क्वचिच्छन्दसि कुत्रचिच्छन्दः सम्बन्धे आस्ते दृष्टिगोचरतां याति । न तु सर्वत्र । पदान्ते पदसमाप्तौ वर्तमाना सा पूर्वोक्ता यतिः शोभां सुषमां, व्रजति याति किन्तु सा एव यतिः पदमध्ये विरामानामतिरिक्ते स्थाने शोभां त्यजति अश्रव्यताम् उत्पादयति । पुनः तत्र एव पदमध्ये एव, असौ यतिः, स्वरविहितसन्धिः स्वरजनितसन्धिसमन्विता सती तां यतिकृतां, शोभां श्रयति सौन्दर्यं प्राप्नोति । तत्रोदाहरणम् प्रस्तूयते— यथा—अतुलमहिमा अतुलः महान् महिमा गौरवं यस्यः सः, कृष्णः लीलावतारः करुणया दयया, मां ग्रन्थकर्तारं, पुष्णातु संरक्षतु । श्लोकेऽस्मिन् शिखरिणीवृत्तं, तस्य लक्षणम्—'रसैरुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी । अत्र प्रथमषडक्षरेषु यतिर्भवति । अस्मिन् पद्ये चतुर्थपादे 'पुष्णां-त्वे'त्यत्र सन्धिजनितं दुःश्रवत्वं स्वरसन्धि-सम्बन्धात् शोभत एव ॥ १३ ॥

सफला—छन्दःशास्त्र के विद्वानों ने कहीं छन्द के अन्त में यति का विधान किया है । यदि वह यति पद के अन्त में होती है तो शोभा को प्राप्त होती है किन्तु वही यति पद के बीच में आ जाती है तो यति जनित शोभा की हानि होती है, जिसे यतिभंग दोष कहते हैं । परन्तु यदि पद के मध्य में की गयी यति स्वरसन्धि से युक्त हो तो वह दुःश्रवता का कारण नहीं होती अपितु शोभाधायक होती है । इसका चतुर्थपाद ही स्वयं उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है । यहाँ चतुर्थपाद में 'पुष्णा-त्व' इस प्रकार छः अक्षरों पर यति का निर्देश शिखरिणी छन्द में होने के कारण था, किन्तु स्वरसन्धि (यण्) के कारण यहाँ शोभा की हानि स्वीकार नहीं की की जाती ॥ १३ ॥

श्वेतमाण्डव्यमुख्यास्तु नेच्छन्ति मुनयो यतिम् ।
इत्याह भट्टः स्वग्रन्थे गुरुर्मे पुरुषोत्तमः ॥ १४ ॥

सुषमा—श्वेतमाण्डव्यमुख्याः श्वेतमाण्डव्यप्रमुखाः मुनयः महर्षयः, यतिं विरामं, न इच्छन्ति न कामयन्ते । अयम्भावः—पूर्वोक्तपद्येषु व्याख्यासु वा यद् यतेः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

विवेचनं कृतमस्ति तदावश्यकं न स्वीकुर्वते । इति मे गङ्गादासस्य गुरुः आचार्यः पुरुषोत्तमभट्टः, स्वग्रन्थे छन्दोगोविन्देति नामधेये, आह कथयति ॥ १४ ॥

विशेष—श्वेतमाण्डव्यप्रभृतीनां यन्मतमत्रसमुद्धृतं तन्न सहृदयहृदयाह्लादकरम् । एवं स्वीकृते सति यतिभङ्गदोषापत्तिः सम्पत्स्यते । एतद्विषये दण्डिनः मतं काव्यादर्शे द्रष्टव्यम् । अतः निर्दिष्टस्थानेषु यतिप्रयोगः कर्तव्य एवेतिच्छन्दःशास्त्रविदां मतम् ॥ १४ ॥

अत एव मुरारिः—

सन्तुष्टे तिसृणां पुरामपि रिपौ कण्डूलदोर्मण्डली-
लीलालूनपुनः प्ररूढशिरसो वीरस्य लिप्सोर्वरम् ।
याञ्चादैन्यपराञ्चि यस्य कलहायन्ते मिथस्त्वं वृणु
त्वं वृण्वित्यमितो मुखानि स दशग्रीवः कथं कथ्यताम् ॥

शार्दूलविक्रीडितवृत्ते यतिः द्वादशाक्षरेषु सप्ताक्षरेषु च भवति । अत्र तृतीयपादस्थे 'कलहा+यन्ते' इत्यत्र सा न लक्ष्यते ।

जयदेवोऽपि—

साध्वी माध्वीकचिन्ता न भवति भवतः शर्करे कर्करासि,
द्राक्षे ! द्रक्ष्यन्ति के त्वाममृत ! मृतमसि क्षीर ! नीरं रसस्ते ।
माकन्द ! क्रन्द कान्ताधर ! धरणितलं गच्छ यच्छन्ति यावद्
भावं शृङ्गारसारस्वतमयजयदेवस्य विश्वग्वचांसि ॥

अत्र स्रग्धराच्छन्दसि तृतीयचरणे सप्तमाक्षरे यतिबाधः, स च स्वरसन्धिवशान्न तथा दोषावहः, किन्तु चतुर्थपादे सप्तमाक्षरे चतुर्दशाक्षरे च सर्वथाऽक्षम्य एव ।

एवमन्येऽपि—

कत्यद्रिप्रतिरोधिताः कति नदीपाथोनिधिप्लाविताः
कत्येवाटवितां गतः कति न वा भूदेवदेवैर्वृताः ।
भूम्यो भूमिपतीन्द्र ! तावकयशः प्रस्तावनामण्डली
कोष्ठीकृत्य जगद्धनं कति वराटीभिर्मुदं यास्यति ॥

अत्र शार्दूलविक्रीडिते वृत्ते चतुर्थपादे द्वादशाक्षरे यतिभङ्गः ।

सफला—श्वेतमाण्डव्य आदि महर्षि यति की आवश्यकता को स्वीकार नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करते हैं, ऐसा मेरे (गङ्गादास के) गुरु-आचार्य पुरुषोत्तमभट्ट ने अपने ग्रन्थ 'छन्दोगोविन्द' में लिखा है।

विशेष—श्वेतमाण्डव्य आदि महर्षियों का जो मत ऊपर ऊद्धृत किया गया है, वह सर्वजन सम्मत नहीं है, ऐसा करने से यतिभङ्ग दोष आ जायगा। उक्तमत का आचार्य दण्डी ने सर्वथा विरोध किया है, जैसा कि ऊपर हमने १२ वें श्लोक की टीका में लिखा है ॥ १४ ॥

उक्थादि-गणना

आरभ्यैकाक्षरात् पादादेकैकाक्षरवर्धितैः ।
पादैरुक्थादिसंज्ञं स्याच्छन्दः षड्विंशतिं गतम् ॥ १५ ॥
उक्थाऽत्युक्था तथा मध्या प्रतिष्ठाऽन्या सुपूर्विका ।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पङ्क्तिरेव च ॥ १६ ॥
त्रिष्टुप् च जगती चैव तथाऽतिजगती मता ।
शर्करी सातिपूर्वा स्यादष्टयत्यष्टी तथा स्मृते ॥ १७ ॥
धृतिश्चातिधृतिश्चैव कृतिः प्रकृतिराकृतिः ।
विकृतिः संस्कृतिश्चैव तथाऽतिकृतिरुत्कृतिः ॥ १८ ॥
इत्युक्ताश्छन्दसां संज्ञाः क्रमशो वच्मि साम्प्रतम् ।
लक्षणं सर्ववृत्तानां मात्रावृत्तानुपूर्वकम् ॥ १९ ॥

इति छन्दोमञ्जर्यां मुखबन्धाख्यः प्रथमः स्तवकः ।

⊕

सुषमा—एकाक्षरात् पादात् एकम् अक्षरं यस्मिन् तादृशात् पादात् चरणात् । अयम्भावः—समवृत्तेषु प्रत्येकस्मिन् पद्ये चत्वारः पादा इति सविस्तरं प्रागुक्तम् । आरभ्य आदाय, एकैकाक्षरर्वाधतैः एकम् एकम् अक्षरं तैः वृद्धिङ्गतैः, क्रमेण द्वित्रि-चतुरादिभिरक्षरैरित्याशयः, पादैः, चरणैः, षड्विंशतिं द्विगुणितत्रयोदशप्रकारतां, गतं वृत्तम्, उक्थादिसंज्ञं स्यात् । तत्र क्रमेण च्छन्दसां नामानि—१. उक्था, २. अत्युक्था, ३. मध्या, ४. सुप्रतिष्ठा, ६. गायत्री, ७. उष्णिक्, ८. अनुष्टुप्, ९. बृहती, १०. पङ्क्तिः, ११. त्रिष्टुप्, १२. जगती, १३. अतिजगती, १४. शर्करी, १५. अतिशर्करी, १६. अष्टि, १७. अत्यष्टिः १८. धृतिः, १९. अति-धृतिः, २०. कृतिः, २१. प्रकृतिः, २२ आकृतिः, २३. विकृतिः २४. संस्कृतिः,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२५. अतिकृतिः, २६. उत्कृतिः । एतदन्तम् एकैकाक्षरवर्धितानां छन्दसां संज्ञाः कथिताः । इतः परं मात्रावृत्तानुपूर्वकं साम्प्रतम् अधुना क्रमशः यथाक्रमं वच्मि वर्णयामि, वर्णयिष्यामीत्याशयः ।

इति सुषमाव्याख्यासंवलितायां छन्दोमञ्जर्यां प्रथमः स्तवकः ।

सफला—प्रत्येक छन्द के चार पाद होते हैं । एक अक्षर से लेकर छब्बीस अक्षर तक बढ़ने वाले उक्थादि संज्ञक समवृत्त छन्दों का क्रमशः नामोल्लेख यहाँ किया जा रहा है । यथा—एक अक्षर वाले छन्द का नाम उक्था, दो अक्षर वाले का नाम अत्युक्था शेष नाम ऊपर संस्कृत टीका में दे दिये गये हैं । इसके आगे मात्रावृत्तों (आर्या आदि) का लक्ष्य-लक्षण सहित वर्णन किया-जायगा ॥१५-१६॥

सफला हिन्दी व्याख्या सहित छन्दोमञ्जरी का प्रथमस्तबक समाप्त ।

Name	Party
Mr. Krishana Prd. Bhattarai	ने.कां.
Mr. Dr. Dilli Raman Regmi.	नै.रा.कां
Mr. Com. Manmohan Adhikari.	नेक.पा (एमाले)
Mr. Com. Dr. Baburam Bhattrai	संयुक्त जनमोर्चा नेपाल
Mr. Com. Mohan Bikram Singha.	नेकपा (मसाल)
Mr. Com. Narayanman Bijukcha	नेमकिपा
Mr. Com. Tulasi Lal Amatya	नेकपा (संयुक्त)
Mr. Com. Nara Bahadur Karmacharya	ने.का.पा. (एकता केन्द्र)
Mr. Surya Bahadur Thapa	रा.प्र.पा. (थापा)
Mr. Lokendra Bahadur Chanda	राप्र.पा. (चन्द)
Mr. Dr. Keshar Jang Rayamajhi	जनता दल (यू)
Mr. Com. Shambhu Ram Shrest	नेकपा (मालेमा)
Mr. Gajendra Narayan Shingha	नेपाल सद्भावना पार्टी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वितीयः स्तबकः

समवृत्तम्

उक्था (एकाक्षरा वृत्तिः)

ग

ऽ

ग् श्रीः ॥ १ ॥

श्रीस्ते । सास्ताम् ॥ १ ॥

सुषमा—तत्रभवान् पिङ्गलाचार्यः उक्थाधिकारे एकाक्षरवृत्तलक्षणं व्याकुर्वाणः 'मङ्गलमध्यानि शास्त्राणि प्रथन्ते' इति पतञ्जलिवचनात्, श्रीशब्द-प्रयोगेण ग्रन्थस्य मङ्गलमध्यतामभिलपन् श्रीवृत्तलक्षणमाह 'ग्' इति । तदेव गङ्गादासः स्वकीयग्रन्थेऽनुकरोति । एकाक्षरपादायाम् 'उक्थायाम्' प्रतिपादं गुरुत्वम् आम्नातम् । अत्र ग्रन्थकर्त्रा प्रतिवृत्तं तस्य लक्षणं तथा उदाहरणेषु च्छन्दसो नामोल्लेखनमकारि, इति वैशिष्टचम् ।

श्रीस्त इति । सा समस्तलोकेषु विराजमाना, श्रीः लक्ष्मीः किं वा सरस्वती, ते तव, आस्तां स्यादिति, आशीर्वादपक्षः । वृत्तविषये—**श्रीः** नामवृत्तं ते ज्ञानाय, आस्तां कल्पतामित्यर्थः ।

विशेषः—यथा प्राचीनैश्छन्दःशास्त्रप्रवर्तकैः गायत्रीमारभ्यैव वैदिकच्छन्दांसि प्रवर्तितानि तथैव लौकिकच्छन्दांस्यपि गायत्रीमारभ्यैव कृतानि यतो हि उक्थादि-पञ्चकस्यापि गायत्रीसंज्ञेति । यथोक्तं कात्यायनेन—"उक्थादिपञ्चकं कैश्चिद् गायत्रीत्येव कथ्यते ।" इति ।

सफला—पिङ्गलमुनि ने एकाक्षरा वृत्ति (उक्थ) के लक्षण में श्रीः शब्द का प्रयोग महर्षि पतञ्जलि के अनुसार किया है । इनका अभिमत है शास्त्र के आदि, मध्य तथा अन्त में मङ्गलाचरण करना चाहिये । अतएव उक्त छन्द के लक्षण में 'श्रीः' का प्रयोग पिङ्गल मुनि का अनुकरण कर गंगादास ने भी अपने ग्रन्थ में मंगलाचरण के लिये किया है ।

यहाँ ग्रन्थकर्ता ने प्रत्येक छन्द के लक्षण में उसके उदाहरण और नाम का समावेश किया है ।

आशीर्वाद पक्ष—सम्पूर्ण लोकों में विराजमान लक्ष्मी अथवा सरस्वती आपके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घर में सदा निवास करे। छन्दवर्णन पक्ष—श्रीः नामक वृत्त् आपके ज्ञान के लिये हो।

विशेष—जिस प्रकार प्राचीन छन्दःशास्त्र प्रवर्तकों ने वैदिक छन्दों का प्रारम्भ गायत्री छन्द से किया है, उसी प्रकार लौकिक छन्दों का प्रारम्भ भी गायत्री छन्द से ही हुआ है, ऐसा कात्यायन मुनि का मत है। वे उक्थादि पाँच छन्दों को गायत्री छन्द का ही अंग मानते हैं।

उक्था आदि २६ वृत्त समवृत्त कहे जाते हैं। समवृत्त होने के कारण इनके चारों पादों में गुरु लघु की समान वर्ण व्यवस्था है। दूसरे और चौथे पाद में पूर्णविराम दिया गया है। अतः उक्था छन्द में १–१ गुरु वर्ण का १–१ पाद है और अत्युक्था छन्द में २–२ गुरु वर्णों का एक-एक पाद है। इसी प्रकार आगे भी समझें॥ १॥

अत्युक्था (द्व्यक्षरावृत्तिः)

ग ग

ऽ ऽ

गौ स्त्री ॥ २ ॥

गोपस्त्रीभिः कृष्णो रेमे ॥ २ ॥

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे द्वौ वर्णौ गुरू भवतः, तत् **स्त्री** नाम वृत्तम्।

गोप इति—कृष्णः नन्दनन्दनः, गोपस्त्रीभिः गोपयुवतिभिः, रेमे क्रीडाश्चक्रे।

सफला—जिसके प्रत्येक पाद में दो वर्ण गुरु हों वह 'स्त्री' नामक वृत्त होता है।

श्रीकृष्ण ने गोपयुवतियों के साथ विहार किया॥ २॥

मध्या (त्र्यक्षरावृत्तिः)

म

ऽ ऽ ऽ

मो नारी ॥ ३ ॥

गोपानां नारीभिः। श्लिष्टोऽव्यात् कृष्णो वः ॥३ ॥

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे मगणः (त्रयो वर्णा गुरवः), तत् **नारी** नाम वृत्तम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोपानामिति—गोपानां गोपालानां, नारीभिः सुन्दरीभिः, श्लिष्टः आलिङ्गितः परिवारितो वा, कृष्णः राधिकारमणः, वः, युष्मान् सर्वान्, अव्यात् पालयतु।

सफला—जिसके प्रत्येक पाद में मगण अर्थात् तीन गुरुवर्ण हों, उसको **'नारी'** नामक वृत्त कहते हैं।

गोपियों से घिरे हुए अथवा आलिङ्गित श्रीकृष्ण आप लोगों की रक्षा करें ॥ ३ ॥

त्र्यक्षरावृत्तिभेदः—

र

ऽ । ऽ

रो मृगी।

सा मृगीलोचना। राधिका श्रीपतेः।

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे रगणः स्यात् तत् **मृगी** नाम वृत्तम्।

सेति—श्रीपतेः कृष्णावतारस्थस्य, साक्षान्नारायणस्य, मृगीलोचना हरिणाक्षी, सा पुराणेषु प्रसिद्धा, राधिका वल्लभासीदिति भावः।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में रगण अर्थात् आदि अन्त्य गुरु मध्य लघु वर्ण हों उसको **'मृगी'** नामक वृत्त कहते हैं।

मृगी के समान विशाल नेत्रों वाली राधिका श्रीकृष्ण की प्रिया हैं।

प्रतिष्ठा (चतुरक्षरावृत्तिः)

ग म

ऽ ऽ ऽ ऽ

ग्मौ चेत्कन्या ॥ ३ ॥

भास्वत् कन्या सैका धन्या। यस्याः कूले कृष्णोऽखेलत् ॥ ३ ॥

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे एकः गुरुः, एकः, मगणः च, तत् **कन्या** नाम वृत्तम्।

भास्वदिति—सा पापौघनाशिनी, एका अद्वितीया, भास्वत्कन्या सूर्यतनया यमुना, धन्या कृतकृत्या, यस्याः यमुनायाः, कूले तटे, कृष्णः नन्दनन्दन अखेलत् रेमे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सफला—जिसके प्रत्येक पाद में एक गुरु और मगण, अर्थात् चार गुरु वर्ण हों, उसको **'कन्या'** नामक वृत्त कहते हैं।

सूर्य की कन्या यमुना धन्य है, जिसके तट पर श्रीकृष्ण ने विहार किया।४।

चतुरक्षरावृत्तिभेदः—

न ग

। । । ऽ

नगि सती।

मुररिपो तव पदम्। नमति सा ननु सती।

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे नगि नश्च गश्च अनयोः समाहारः तस्मिन्, न नगणः गः गुरुः तत् **सती** नाम वृत्तम्।

मुररिपो इति—ननु इत्यवधारणे, मुररिपो ! मुरारे ! श्रीकृष्ण, सा सती राधिका, तव भवतः पदं चरणं, नमति प्रणमति।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण (तीन लघु वर्ण) और एक गुरु वर्ण हो उसको **'सती'** नामक वृत्त कहते हैं।

मुर नामक दैत्य के नाशक हे श्रीकृष्ण ! निश्चित ही वह सुशीला राधिका आपके चरणों का नमन करती है।

सुप्रतिष्ठा (पञ्चाक्षरावृत्तिः)

भ ग ग

ऽ । । ऽ ऽ

भ्गौ गिति पङ्क्तिः ॥ ५ ॥

कृष्णसनाथा तर्णकपङ्क्तिः। यामुनकच्छे चारु चचार ॥ ५ ॥

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे एकः भगणः गौ द्वौ गुरुवर्णौ च भवेताम्, तत् **सुप्रतिष्ठा** नाम वृत्तम्।

कृष्णेति—कृष्णसनाथा श्रीकृष्णेन संरक्षिता, तर्णकपङ्क्तिः गोवत्ससमूहः, यामुनकच्छे यमुनायाः पुलिने, चारु सुखेन, यथा तथा, चचार चरतिस्म भ्रमणं तृणादिभक्षणं च चकारेत्यर्थः।

सफला—जिसके प्रत्येक पाद में एक भगण (आदि गुरु दो लघु) और गुरु वर्ण हों, उसको **'सुप्रतिष्ठा'** नामक वृत्त कहते हैं ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पञ्चाक्षरावृत्तिभेदः—

स ल ग

। । ऽ । ऽ

सलगैः प्रिया ।

व्रजसुभ्रुवो विलसत्सकलाः । अभवन् प्रिया मुरवैरिणः ॥

सुषमा—यस्य वृत्तस्य प्रत्येकस्मिन् पादे सलगैः सगणः, लघुः, गुरुः च भवेत् तत् **प्रिया** नाम वृत्तम् ।

व्रजसुभ्रुव इति—विलसत्सकलाः प्रस्फुरन्नृत्यादिकलावत्यः, व्रजसुभ्रुवः व्रजवासिगोपाङ्गनाः, मुरवैरिणः मुरारेः श्रीकृष्णस्य, प्रियाः हृदयदयिताः, अभवन् जाता इति ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में सगण, लघु और गुरु वर्ण हों उसको **'प्रिया'** नामक वृत्त कहते हैं ।

नृत्यादिकलाओ से सुशोभित व्रज में रहने वाली गोपियाँ श्रीकृष्ण की अत्यन्त प्रिया थीं ।

गायत्री (षडक्षरावृत्तिः)

त य

ऽ ऽ । । ऽ ऽ

त्यौ चेत् तनुमध्या ॥ ६ ॥

मूर्तिर्मुरशत्रोरत्यद्भुतरूपा । आस्तां मम चित्ते नित्यं **तनुमध्या** ॥६॥

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे त्यौ तश्च यश्चेति द्वन्द्वः, चेत् यदि भवेताम्, अर्थात् एकः तगणः तथा यगणः च, तत् **तनुमध्या** नाम वृत्तम् ।

मूर्तिरिति—अत्यद्भुतरूपा अत्यन्तविलक्षणाकृतिः, लोकोत्तरेति भावः, तनुमध्या तनु मध्यं यस्याः सा, मुरशत्रोः मुरारेः श्रीकृष्णस्य, मूर्तिः प्रतिमा, नित्यं सर्वदा, मम (ग्रन्थकर्तुः, अध्येतुः वा) चित्ते, हृदये, आस्तां निवसतु ।

नश्यन्ति ददर्श वृन्दानि कपीन्द्रः । हारीण्यबलानां हारीण्यबलानाम् । इति भट्टिः ।

पादान्तस्थत्वेन 'ददर्श' इत्यत्र शकारस्य गुरुत्वम् ।

विशेषः—इतः पूर्वोक्तानां पञ्चाक्षरपर्यन्तानां छन्दसां प्रयोगाः प्रायः काव्य-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृतिषु दृशोर्विषयतां नैवायान्ति । केवलं षष्ठाक्षरावृत्तेः **तनुमध्या** वृत्तं भट्टि-काव्ये १०।१२ समुपलभ्यते ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक यगण हो उसको **'तनुमध्या'** वृत्त कहते हैं ।

मध्यभाग में कृशता युक्त भगवान् श्रीकृष्ण की लोकोत्तर अतएव विचित्र मूर्ति मेरे हृदय में सदैव निवास करे ।

विशेष—उक्था से पङ्क्ति तक के छन्दों का प्रयोग प्रायः महाकवियों के काव्यों में दृष्टिगोचर नहीं होता । केवल षडक्षरावृत्ति गायत्री छन्द जिनका लोक में **तनुमध्या** के रूप में प्रचार है, के 'भट्टिकाव्य' १०।१२ में दर्शन होते हैं ।।६।।

षडक्षरावृत्तेः द्वौ भेदौ—

न य

। । । ऽ ऽ

शशिवदना न्यौ ।

शशिवदनानां व्रजतरुणीनाम् । अधरसुधोर्मि मधुरिपुरैच्छत् ।।

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे न्यौ (नश्च यश्चेति द्वन्द्वः) चेत् यदि भवेताम् । अर्थात् एकः नगणः तथा यगणः च, तत् **शशिवदना** नाम वृत्तम् ।

शशिवदनेति–मधुरिपुः श्रीकृष्णः शशिवदनानां पूर्णचन्द्राननानां, व्रजतरुणीनां गोपयुवतीनाम्, अधरसुधोर्मिम् अधरोष्ठपीयूषतरंगम्, ऐच्छत् अकामयत् ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक यगण हो उसको **'शशिवदना'** वृत्त कहते हैं ।

मधु नामक दैत्य के शत्रु श्रीकृष्ण ने चन्द्रमुखी व्रजांगनाओं के अधरामृत-तरंगों को पीने की कामना की । यहाँ 'शशिवदनानाम्' में उपमा तथा 'अधर-सुधोर्मिम्' में रूपक अलङ्कार है ।

य य

। ऽ ऽ । ऽ ऽ

द्विया सोमराजी ।

हरे ! सोमराजी समा ते यशः श्रीः । जगन्मण्डलस्य भिनत्यन्धकारम् ।।

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे द्विया द्वौ यगणौ भवेताम्, तत् **सोमराजी** नाम वृत्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हरे इति—हे हरे ! श्रीकृष्ण !, सोमराजीसमा सोमः चन्द्रः तस्य राजी पङ्क्तिः, तत् समा तया सदृशी, ते भवतः, यशः श्रीः कीर्तिः कान्तिः, जगन्मण्डलस्य समस्तसंसारस्य, अन्धकारं ध्वान्तं पापमित्याशयः, भिनत्ति विनाशयति। सोमराजीसमेत्यत्रोपमालंङ्कारः ।

विशेषः—अत्रोदाहरणस्य तृतीये पादे 'स्य' इत्यस्य पादान्तस्थं गुरुत्वं स्वीकृतम् । अस्माकं मते 'भिनत्ति' इत्यस्य स्थाने 'च्छिनत्ति' इति क्रिया समीचीना।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में दो यगण हों, उसको **'सोमराजी'** नामक वृत्त कहते हैं ।

हे श्रीकृष्णचन्द्र ! चन्द्रकिरणों के सदृश आपकी कीर्तिकान्ति सम्पूर्ण संसार के पाप रूपी अन्धकार का विनाश करती है ।

विशेष—उक्त उदाहरण के तीसरे चरण के अन्त में 'स्य' यह लघु वर्ण है किन्तु पदान्त में होने से यह गुरु हो गया है । हमारे मत से यहाँ 'भिनत्ति' के स्थान पर 'च्छिनत्ति' क्रिया का प्रयोग होना चाहिये था, जो सर्वथा समीचीन है।*

उष्णिक् (सप्ताक्षरावृत्तिः)

न न ग

। । । । । । ऽ

ननगि मधुमती ।। ७ ।।

रविदुहितृतटे, वनकुसुमततिः । व्यधित मधुमती, मधुमथनमुदम् ।।७।।

---

* अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

म म

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

विद्युल्लेखा मो मः ।

विद्युल्लेखापीतं वर्णश्यामं श्यामम् । दृष्ट्वा राधा स्वान्ते मोदं भेजे कामम् ॥

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे मगण द्वयम् तत् **विद्युल्लेखा** नाम वृत्तम् । अस्य प्रयोगः क्वचिदेवावलोक्यते, न सर्वत्र ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण हों, उसको **विद्युन्माला** नामक छन्द कहते हैं । इसका प्रयोग कहीं-कहीं दिखलायी देता है ।

बिजली की रेखा के सदृश पीतवस्त्रों वाले तथा श्याम वर्ण युक्त श्रीकृष्ण का दर्शन कर राधा के हृदय में अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हुई ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे ननगि नश्च नश्च गश्च तेषां समाहारः ननग् तस्मिन्, अर्थात् नगणः नगणः एकः गुरुः च भवेत्, तत् **मधुमती** नाम वृत्तम् ।

रवीति—रविदुहितृतटे रवेः सूर्यस्य दुहिता कन्या सूर्यतनया यमुनेत्यर्थः, तस्याः तटे कूले मधुमती परागयुक्ता सद्यो विकसितेति भावः, वनकुसुमततिः काननपुष्पसमूहः, मधुमथनेमुदम् मधुमथनः श्रीकृष्णः, भ्रमरश्च तस्य, मुदं प्रीतिं, व्यधितं चक्रे । अत्र श्लोकस्योत्तरार्द्धे मकारपरम्परया वृत्त्यनुप्रासः, मधुमथने श्लेषालङ्कारश्च ।

विशेषः—यद्यप्यत्र मधुमतीशब्दः वनकुसुमततेर्विशेषणत्वेनोपात्तः किन्तु मधुमती नाम्नी एका सुप्रसिद्धा देवी, तस्या ध्यानं यथा—

अहिलतादलनीलसरोजयुक्, करयुगां मणिकाञ्चनपीठगाम् ।
अमरनागवधूगणसेवितां मधुमतीमखिलार्थकरीं भजे ॥

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और एक गुरु हो उसको **मधुमती** नामक वृत्त कहते हैं ।

यमुना नदी के तट पर तत्काल विकसित अतएव परागयुक्त वन में उगे हुए फूलों के समूह ने श्रीकृष्ण (अथवा भौंरों) को आनन्दित किया ॥ ७ ॥

सप्ताक्षरावृत्तेः द्वौ भेदौ—

ज स ग

। ऽ । । । ऽ ऽ

कुमारललिता ज्सगा ।

मुरारितनुवल्ली कुमारललिता सा । व्रजैणनयनानां ततान मुदमुच्चैः ॥

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे ज्सगाः जश्च सश्च गश्च तेषां द्वन्द्वः अर्थात् जगणः सगणः तथा एकः गुरुः वर्णः भवेत् तत् **कुमारललिता** नाम वृत्तम् ।

मुरारीति—मुरारितनुवल्ली मुरारेः मुररिपोः श्रीकृष्णस्य, तनुः शरीरं, वल्लीवलतेव नातिस्थूलत्वात् । कुमारललिता कुमारावस्थया हृदयहारिणी, व्रजैण-नयनानाम् एणस्य मृगस्य इव नयने नेत्रे यासां ताः व्रजहरिणनेत्राणाम्, उच्चैः अधिकं, मुदं प्रीतिं, ततान विस्तारयामास । अत्रोपमालङ्कारः ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, सगण और एक गुरु वर्ण हो उसको **कुमारललिता** नामक वृत्त कहते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बचपन के कारण मनोरम श्रीकृष्ण की शरीरलता ने वृज की मृगनयनियों को अत्यन्त आनन्दित किया।

म स ग
ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ
म्सौ गः स्यान्मदलेखा।

रङ्गे बाहुविरुग्णाद् दन्तीन्द्रान्मदलेखा।
लग्नाऽभून् मुरशत्रौ कस्तूरीरसचर्चा॥

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे, म्सौ मश्च सश्च तयोः द्वन्द्वः, गश्च भवेत्, अर्थात् मगणः सगणः तथा एकः गुरुः च तद् **मदलेखा** नाम वृत्तम्।

रङ्ग इति—रङ्गे युद्धभूमौ, बाहुविरुग्णात् दोर्भ्याम् प्रताडितात्, दन्तीन्द्रात् गजपुङ्गवात् कुवलयापीडादित्याशयः, मुरशत्रौ मुरारौ श्रीकृष्णे, लग्ना युक्ता, मदलेखा दानरेखा, कस्तूरीरसचर्चा मृगमदाङ्गरागः समभूत्। अत्र प्रतीयमानोत्प्रेक्षालङ्कारः।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण और एक गुरु वर्ण हो, उसको **मदलेखा** नामक वृत्त कहते हैं।

युद्ध भूमि में अपनी भुजाओं से मारे हुए कुवलयापीड़ नामक गजराज के शरीर से निकली हुई मदधारा, श्रीकृष्ण के शरीर में लगकर कस्तूरी के घोल (चन्दन) के समान दिखलायी दी (सुशोभित हुई)।

अनुष्टुप् (अष्टाक्षरावृत्तिः)

भ भ ग ग
ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ
चित्रपदा यदि भौ गौ॥८॥

यामुनसैकतदेशे, गोपवधूजलकेलौ।
कंसरिपोर्गतिलीला, चित्रपदा जगदव्यात्॥८॥

सुषमा—यस्य प्रत्येकस्मिन् पादे भौ द्वौ भगणौ तदन्तरं गौ द्वौ गुरुवर्णौ भवेताम्, तत् **चित्रपदा** नाम वृत्तम्।

यामुनेति—गोपवधूनां आभीरवनितानां, जलकेलौ जलक्रीडायां, यामुनसैकतदेशे यमुनायाः सिक्तामयदेशे वालुकायुक्त प्रदेशे तट इत्यर्थः, कंसरिपोः श्रीकृष्णस्य,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्रपदा लीलामयपदन्यासवती, गतिर्लीला गमनविलासः, नर्तनं, जगत् संसारम्, अव्यात् ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो भगण तथा दो गुरु वर्ण हों, उसको **चित्रपदा** नामक वृत्त कहते हैं ।

गोपियों की जलक्रीड़ा के अवसर पर यमुनाजी के वालुकामय तट पर स्थित श्रीकृष्ण का लीलामय चरणविन्यास (नृत्य) संसार की रक्षा करे ।। ८ ।।

अष्टाक्षरावृत्तेः पञ्चभेदाः—

भ त ल ग

S । । S S । । S

भात्तलगा माणवकम् ।

चञ्चलचूडं चपलैर्वत्सकुलैः केलिपरम् ।
ध्याय सखे ! स्मेरमुखं नन्दसुतं माणवकम् ।।

सुषमा–यस्य चतुर्षु पादेषु क्रमशः भात् भगणात् परं तगणः ततः एकः लघुः एकः गुरुः वर्णः च भवेत्, तद् **माणवकं** नाम वृत्तम् ।

चञ्चलेति—हे सखे ! हे सुहृद् ! चपलैः चञ्चलैः बाल्यत्वादिति, वत्सकुलैः गोवत्ससमूहैः, गोपवत्ससमूहैः सह वा, चञ्चलचूडं चपलशिखा (मयूरशिखा) युक्तं, केलिपरं क्रीडारतं, माणवकं बालकं, स्मेरमुखम् स्मितवदनं, नन्दसुतं श्रीकृष्णं, ध्याय चिन्तय ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु वर्ण हों, उसको **माणवक** नामक वृत्त कहते हैं ।

हे सखा ! चञ्चल गोवत्सों (बछड़ों) तथा गोपवत्सों (गोपबालकों) के समूह के साथ खेल में लगे हुए, चञ्चल मयूरशिखा वाले, प्रसन्नमुख बालक श्रीकृष्ण का ध्यान करो ।

म म ग ग

S S S S S S S S

मो मो गो गो विद्युन्माला ।

वासोवल्ली विद्युन्माला बर्हश्रेणी शाक्रश्चापः ।
यस्मिन् स स्तात् तापोच्छित्त्यै, गोमध्यस्थः कृष्णाम्भोदः ।।

93820

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुषमा—यस्य समेषु पादेषु क्रमेण मगणः मगणः गुरुः, गुरुः च वर्णः, भवेत्, तत् **विद्युन्माला** नाम वृत्तम् । अत्र चतुर्थाक्षरे यतिरिति, श्रुतवोधः ।

वास इति—यस्मिन् कृष्णाम्भोदे कृष्ण एव अम्भोदः मेघः तस्मिन्, वासोवल्ली वस्त्रलता पीताम्बरमित्याशयः, विद्युन्माला चपलापङ्क्तिः, बर्हश्रेणी मयूरपिच्छततिः, शाक्रः चापः इन्द्रधनुः, गोमध्यस्थः धेनुसमूहप्रावृतः, स एवम्भूतः, कृष्णाम्भोदः कृष्णरूपो घनः, तापोच्छित्त्यै घर्मजनिततापशान्त्यर्थं (मेघपक्षे), तापत्रयापनोदनाय (श्रीकृष्णपक्षे), स्तात् अस्तु । पद्येऽस्मिन् साङ्गरूपकालङ्कारः ।

सफला—जिस वृत्त के चारों चरणों में क्रमशः दो मगण और दो गुरुवर्ण हों अर्थात् आठों वर्ण गुरु हों, उसको **विद्युन्माला** नामक वृत्त कहते हैं ।

जिस मेघरूपी श्रीकृष्ण के पीताम्वर विजली के सदृश हैं और सिर पर लगाये हुए मयूर पंख इन्द्रधनुष के समान सुशोभित हो रहे हैं, गायों के वीच में विराजमान ऐसे श्रीकृष्ण सांसारिक प्राणियों के विविध तापों के विनाशकारक हो ।

ग ल र ज

ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ।

ग्लौ रजौ समानिका तु ।

यस्य कृष्णपादपद्ममस्ति हृत्तडागसद्म ।
धीः समानिका परेण नोचिताऽत्र मत्सरेण ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु ग्लौ गश्च लश्च तयोर्द्वन्द्वः, प्रथमः गुरुः द्वितीयः लघुवर्णः ततः रगणः ततः जगणः च भवेत्, तत् **समानिका** नाम वृत्तम् ।

यस्येति—कृष्णपादपद्म श्रीकृष्णचरणकमलम् एव यस्य परमवैष्णवस्य, भक्तस्य हृत् स्वान्तं, तडागसद्म तडागः पद्माकरः एव सद्म गृहं वर्तते । अत्र एतादृशि श्रीकृष्णपरे भक्ते, मत्सरेण कपटभावेन, परेण परकीयेण शत्रुवुद्धिमत्ता, समानिका समातुल्या वा धीः बुद्धिः, नोचिता न विधेयेति भावः ।

सफला—जिस परमवैष्णव (भक्त) का हृदय ही श्रीकृष्ण के चरणकमलों के लिये तालाव (पद्माकर) रूपी घर है, उस (भक्त) में कपटभावना से शत्रु के समान बुद्धि नहीं रखनी चाहिये, अर्थात् उसे मित्र समझना चाहिये ।

ज र ल ग

। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ

प्रमाणिका जरौ लगौ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
Risāmīya Prajātantra Party (Chanda)

पुनातु भक्तिरच्युता सदाऽच्युताङ्घ्रिपद्मयोः ।
श्रुतिस्मृतिप्रमाणिका भवाम्बुराशितारिका ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु जरौ जश्च रश्च जगणः रगणः तथा एकः लघुः एकः गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **प्रमाणिका** नाम वृत्तम् ।

पुनात्विति–श्रुतिस्मृतिप्रमाणिका श्रुतिः वेदाः, स्मृतिः धर्मशास्त्राणि, प्रमाणं यस्याः सा, भवाम्बुराशितारिका भवाम्बुराशेः संसारसागरस्य तारिका समुद्धरणशीला, अच्युता अनपायिनी, अच्युताङ्घ्रिपद्मयोः श्रीकृष्णचरणकमलयोः, भक्तिः अनुरागः, सदा सर्वदा, पुनातु पापरहितान् करोत्वित्यर्थः ॥ 'मतल्लिका मचर्चिका' इति अमरकोषे प्रमाणिका वृत्तस्य उदाहरणम् ।

सफला—जिसके सभी चरणों में क्रमशः जगण, रगण, लघु तथा गुरु वर्ण हों, उसको **प्रमाणिका** नामक वृत्त कहते हैं ।

वेद तथा शास्त्रों से प्रमाणित, संसार रूपी समुद्र से पार करनेवाली, श्रीकृष्ण के चरण कमलों की अनपायिनी भक्ति भक्तसमुदाय को सदा पवित्र करे ।

न भ ल ग
। । । ऽ । । । ऽ
नभलगा गजगति ।

रविसुतापरिसरे विहरतो दृशि हरेः ।
व्रजवधूगजगतिर्मुदमलं व्यतनुत ॥

सुषमा—यस्य समेषु पादेषु नभलगाः नश्च भश्च लश्च गश्च, इति द्वन्द्वः, नगणः भगणः लघुः गुरुः च वर्णाः भवेयुः, तत् **गजगतिः** नाम वृत्तम् ।

रविसुतेति— व्रजवधूगजगतिः व्रजवधूनां व्रजवासिवामनयनानां, गजगतिः गजस्य द्विपस्य गतिः गमनं मन्थरा गतिः, रविसुतापरिसरे सूर्यसुता यमुना तस्याः परिसरे निकटे, विहरतः क्रीडतः, हरेः श्रीकृष्णस्य, दृशि नेत्रयोः, अलम् पर्याप्तं, मुदं प्रीतिं, व्युतनुत विस्तारयामास । अत्र चतुर्थपादान्ते पादान्तस्थं गुरुरिति विज्ञेयः ।

अवतु वो गिरिसुता शशिभृतः प्रियतमा ।
वसतु मे हृदि सदा भगवतः पदयुगम् ॥ इति कस्यापि ॥

सफला—जिसके चारों पादों में क्रमशः नगण, भगण, लघु तथा गुरु वर्ण हों, उसको **गजगति** नामक वृत्त कहते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यमुना नदी के आस-पास विहार करते हुए श्रीकृष्ण की दृष्टि में व्रजवधुओं की हाथी के समान मन्दगति पर्याप्त आनन्द का विस्तार कर रही थी ।*

बृहती (नवाक्षरावृत्तिः)

न न म

। । । । । । ऽ ऽ ऽ

भुजगशिशुभृता नौ मः ।। ९।।

ह्रदतटनिकटक्षोणी भुजगशिशुभृता याऽऽसीत् ।
मुररिपुदलिते नागे व्रजजनसुखदा साऽभूत् ।। ९ ।।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु नौ नश्च नश्च इति द्वन्द्वः, नगणौ तथा मगणः भवेत् तत् **भुजगशिशुभृता** नाम वृत्तम् ।

ह्रदेति–या पूर्वोक्ता, ह्रदतटनिकटक्षोणी सरोवरतीरसमीपस्थभूमिः, भुजगशिशुभृता भुजङ्गबालकयुक्ता आसीत्, सा मुररिपुदलिते श्रीकृष्णेन विनाशिते, नागे कालिये, सति व्रजजनसुखदा व्रजवासिनाम् आनन्दप्रदा, अभूदिति ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, नगण, मगण हों, उसको **भुजगशिशुभृता** वृत्त कहते हैं ।

---

* अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

म न ग ग
ऽ ऽ ऽ । । । ऽ ऽ
म्नौ गौ हंसरुतमेतत् ।। १ ।।

त र ल ग
ऽ ऽ । ऽ । ऽ । ऽ
नाराचिका तरौ लगौ ।। २ ।।

सुषमा—यस्य समेषु चरणेषु म्नौ मगणः नगणः गौ द्वौ गुरू भवेताम्, तत् **हंसरुतं** तथा यस्य तरौ तगणः रगणः, लघुः, गुरुः च भवेताम्, तत् **नाराचिका** नाम वृत्तम् ।

विशेषः—अत्र पिङ्गलः स्वकीयग्रन्थस्य पञ्चमाऽध्याये वक्ति "इत्यादयो विपुला विकल्पाः सङ्कीर्णाश्चानुकोटिशः काव्येषु दृश्यन्तेऽनुष्टुप् छन्दसः" इति ।

सफला—जिसके चारों चरणों में मगण, नगण, दो गुरु वर्ण हों, उसको **हंसरुत** तथा जिसमें तगण, रगण, लघु एवं गुरु वर्ण हों उसको **नाराचिका** वृत्त कहते हैं ।

विशेष—आचार्य पिङ्गल ने अपने छन्दःसूत्र में अनुष्टुप् छन्द के अनेक भेदों की चर्चा महाकाव्यों के उदाहरण सहित की है। फिर अन्त में यह भी लिखा है कि इसके और भी करोड़ों भेद देखे जाते है ।। १–२ ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
Rashtriya Prajantra Party (Thapa)

जो कालियसरोवर की भूमि पहले सांपों के बच्चों से व्याप्त रहती थी, वह श्रीकृष्ण के द्वारा कालियनाग के वध कर देने पर व्रजवासियों के लिये सुखद हो गयी।

विशेष—उक्त कालियसरोवर ही वर्तमान 'कालियदह' है। यहाँ सौभरि ऋषि के शाप से गरुड़ नहीं आ सकता था, अतः इसमें कालियनाग सुख से रहता था॥ ६॥

नवाक्षरावृत्ते द्वौ भेदौ—

भ म स

S I I S S S I I S

स्यान्मणिमध्यं चेद्भमसाः।

कालियभोगाभोगगतस्तन्मणिमध्यष्फीतरुचा ।
चित्रपदाभो नन्दसुतश्चारु ननर्त स्मेरमुखः॥

सषमा—यस्य वृत्तस्य चतुर्षु पादेषु क्रमेण भमसाः भश्च मश्च सश्च, द्वन्दः, भगणः, मगण, सगणः चेद् भवेत्तर्हि तद् **मणिमध्यं** नाम वृत्तम्।

कालयेति—कालियभोगाभोगवतः कालियः प्रसिद्धः नागः तस्य भोगे फणायाम्, 'भोगः सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययोः।' इत्यमरः। किं वा 'भोगः सुखे धने चाहेः शरीरफणयोर्मतः।' इति विश्वः। तस्य आभोगगतः फणविस्तारमध्यस्थितः, तन्मणिमध्यस्फीतरुचा तस्य कालियनागस्य, मणिः स्वाभाविकशिरोभूषणं, ततः स्फीतरुचा विपुलप्रभया, चित्रपादाभः निर्मलपादकान्तिः, स्मेरमुखः, स्मिताननः, नन्दसुतः श्रीकृष्णः, चारु रुचिरं, यथा तथा ननर्त नागदमनलीलां चकार।

सफला—कालियनाग के फण के ऊपर विराजमान, उसके फण के बीच में स्थित नणि की चारों ओर फैली हुई कान्ति से निर्मलचरणों की शोभावाले, मन्दहास्ययुक्त श्रीकृष्ण ने सुन्दर नृत्य किया। यह कालियदह में हुई नागलीला का वर्णन है।

स ज र

I I S S S I S I S

सजरैर्भुजङ्गसङ्गता।

तरला तरङ्गरिङ्गितैर्यमुना भुजङ्गसङ्गता।
कथमेति बत्सचारकश्चपलः सदैव तां हरिः॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु सजरैः सश्च जश्च रश्च सजराः, तैः इति द्वन्द्वः, सगणः जगणः रगणः च भवेत्, तद् **भुजङ्गसङ्गता** नाम वृत्तम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

तरलेति—तरंगरिङ्गतैः ऊर्मिसञ्चलनैः तरला चञ्चला, एवम् भुजंगसंगता भुजंगैः अलगर्दादिभिः संगता संयुक्ता, यमुना अस्तीतिशेषः। तां यमुनामिति, वत्सचारकः गोवत्सचारणप्रवृत्तः सदैव चपलः बालभावात्सततचञ्चलः, हरिः श्रीकृष्णः, कथम् लोकोत्तरया गत्या, एति यातीत्यर्थः। अत्र 'तां कथम् एति' इत्यत्र 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे द्वितीया' इति नियमाद् **द्वितीया**। कथम् एतीत्यत्र, **भावध्वनिः**।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः सगण, जगण, और रगण हों, उसको **भुजङ्गसङ्गता** वृत्त कहते हैं।

तरंगों के निरन्तर उठने से चञ्चल तथा अलगर्द नामक पानी के साँपों से जो व्याप्त है। उस यमुना के तट पर वछड़ों को चराने में अनुरक्त एवं वचपन कारण सदा चञ्चल बालकृष्ण लोकोत्तर गति से जाते (विहार करते) हैं।[1]

पङ्क्तिः (दशाक्षरावृत्तिः)

भ म स ग

S I I S S S I I S S

रुक्मवती[2] सा यत्र भमसगाः ॥ १० ॥

कायमनोवाक्यैः परिशुद्धैर्यस्य सदा कंसद्विषि भक्तिः।
राज्यपदे हर्म्यादिरुदारा रुक्मवती विघ्नः खलु तस्य ॥ १० ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु भमसगाः भश्च मश्च सश्च गश्च ते, इति द्वन्द्वः, भगणः मगणः, सगणः तथा एको गुरुः च भवेत्, तत् **रुक्मवती** नाम वृत्तम्।

---

१. अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

र न स
S I S I I I I I S
राम्नसा विह **हलमुखी**।

न न स
I I I I I I I I S
द्विगुणनगणसहितः
सगण इह हि विहितः।
फणिपतिमतिविमला
क्षितिप ! भवति **कमला** ॥३॥

र न र
S I S I I I S I S
भद्रिका भवति रो नरौ।

S S S S S S S S S S
अंगोन्माना वर्णा यत्र स्युः
सर्वे दीर्घाः सर्पेशेनोक्तम्।
रूपामालीसंज्ञं तद् वृत्तं
यस्मिश्चेतः केषामुद्वृत्तम् ॥४॥

२. रुक्मवतीयं क्वचित्, चम्पकमाला च। इयमिति हलमुखी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
Nepal Conservative party

कायेति—यस्य विष्णुरातस्य परिशुद्धैः निर्मलैः पापरहितैरित्याशयः, कायमनोवाक्यैः कायः च मनः च वाक्यञ्च तैः, देहहृद्वचनैः, करणैः सदा सर्वकालं, कंसद्विषि कंसादिदुष्टदलनशीले श्रीकृष्णे, भक्तिः सेवाभावो भवति, तस्य विष्णुभक्तस्य, राज्यपदे लब्धराज्याधिकारे, उदारा सर्वगुणसम्पन्ना, रुक्मवती सुवर्णयुक्ता, हर्म्यालिः प्रासादपरम्परा, विघ्नः खलु अन्तराय एव ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः भगण, मगण, सगण और एक वर्ण गुरु हों, उसको **रुक्मवती** नामक वृत्त कहते हैं ।

पाप आदि दोषों से रहित अतएव निर्मल मन एवं वचन शरीर, वाले जिस मनुष्य की श्रीकृष्ण के चरणों में भक्ति (सेवाभाव) है, उसके लिये राज्यलाभ, धन-धान्य से सम्पन्न, सुवर्णजटित राजमहल आदि उक्त भक्ति में बाधक ही होते हैं ॥ १० ॥

दशाक्षरावृत्तेः त्रयो भेदाः—

म भ स ग

ऽ ऽ ऽ ऽ। । । । ऽ ऽ

ज्ञेया मत्ता मभसगसृष्टा ।

पीत्वा मत्ता मधु मधुपाली कालिन्दीये तटवनकुञ्जे ।
उड्डीव्यन्तीर्व्रजजनरामाः कामासक्ता मधुजिति चक्रे ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण मगणः भगणः सगणः एकः गुरुः च भवेत्, तत् **मत्ता** नाम वृत्तम् ।

पीत्वेति—कालिन्दीये यामुने यमुनासम्बन्धिनि, इति भावः तटवनकुञ्जे कूलस्थकानननिकुञ्जे, मधुपाली भ्रमरततिः, मधु परागं, पीत्वा निपीय, मत्ता प्रमत्ता, सती, उड्डीव्यन्तीः चाञ्चल्येन भ्रमन्तीः, व्रजजनरामाः व्रजवनिताः, मधुजिति मधुदानवरिपौ श्रीकृष्णे, कामासक्ताः कामविह्वलाः, चक्रे विदधे ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः मगण, भगण, सगण और एक वर्ण गुरु हों, उसको **मत्ता** नामक वृत्त कहते हैं ।

यमुना के किनारे पर स्थित वनकुञ्ज झाड़ी में विविध फूलों के परागों का पानकर मदमत्त मधुपावली ने नाचती-कूदती हुई व्रजवनिताओं को श्रीकृष्ण के प्रति कामासक्त किया । गोपियाँ यमुना तट को शोभा, तटस्थित वन कुञ्जों और उन पर मँडराते-गुनगुनाते हुए भौरों को देखकर श्रीकृष्ण में अनुरक्त हुई ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

न ज न ग

। । । । ऽ । । । । ऽ

त्वरितगतिश्च नजनगैः ।

त्वरितगतिर्व्रजयुवतिस्तरणिसुताविपिनगता ।
मुररिपुणा रतिगुरुणा सह मिलिता प्रमदमिता ॥

सुषमा—यस्य समेषु पादेषु क्रमेण नजनगैः नश्च, जश्च, नश्च गश्च तैः इति द्वन्द्वः, क्रमेण नगणः जगणः नगणः तथा एकः गुरुः भवेत् तत् **त्वरितगतिः** नाम वृत्तम् ।

त्वरितेति—तरणिसुताविपिनगता तरणिसुतायाः यमुनायाः, विपिनगता तीरस्थ क्रीडाकाननप्राप्ता, त्वरितगतिः चञ्चलगमना, व्रजकामिनी आभीरसुन्दरी, रतिगुरुणा लीलावतारेण श्रीकृष्णेन, सह साकं, मिलिता सहवासं प्राप्ता सती, प्रमदम् परां प्रीतिम्, इता प्राप्ता, इण् गतौ टापि रूपम् । 'मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसम्मदाः' । इत्यमरः ।

दण्डिनः काव्यादर्शात् प्रत्युदाहरणरूपेण प्रस्तुतं पद्यम्—

क्षितिविजितिस्थितिविहितिव्रतरतयः परगतयः ।
उरु रुरुधुर्गुरु दुधुवुर्युधि कुरवः स्वमरिकुलम् ॥ ३।८५ ॥

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रम से नगण, जगण, नगण और एक गुरु वर्ण हों, उसको **त्वरितगति** नामक वृत्त कहते हैं ।

यमुना के तटवर्ती वन (कुञ्ज) में गयी हुई चञ्चल गति वाली व्रजसुन्दरी लीलावतार रतिकलाकुशल श्रीकृष्ण से मिलकर अत्यन्त आनन्दित हुई ॥

न र ज ग

। । । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ

नरजगैर्भवेत् मनोरमा ।

तरणिजातटे विहारिणी व्रजविलासिनीविलासतः ।
मुररिपोस्तनुः पुनातु वः सुकृतशालिनां मनोरमा ॥

सुषमा—यस्य समेषु पादेषु नरजगैः नश्च रश्च जश्च गश्च तैः, इति द्वन्द्वः, क्रमेणः नगणः रगणः जगणः तथा एकः गुरुः भवेत्, तद् **मनोरमा** नाम वृत्तम् ।

तरणिजेति—तरणिजातटे यमुनायाः कूले, विहारिणीः विहारं कुर्वतीः, व्रजविलासिनीविलासतः व्रजकामिनीविहाराय, सुकृतशालिनां पुण्यवतां मनोरमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्कान्तःसुखदा, मुररिपोः मुरारेः श्रीकृष्णस्य, तनुः शरीरं, वः युष्मान्, पुनातु पवित्रीकरोतु ।

विशेषः–अत्र पद्ये 'विलासतः' इत्येतस्य स्थाने 'विलासिता' पाठः रुचिकरः । तदा 'व्रजविलासिनीविलासिता मुररिपोस्तनुः वः पुनातु' इत्यन्वयः स्यात् ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रम से नगण, रगण, जगण और एक गुरु वर्ण हों, उसको **मनोरमा** नामक वृत्त कहते हैं ।

यमुना के नीर तीर विहरणशील व्रजवनिताओं के बिहार के लिये विचरण करते हुए सुकृतीजनों को आनन्दित करने वाला श्रीकृष्ण का शरीर आप लोगों के पापों का विनाश करे ।*

त्रिष्टुप् (एकादशाक्षरावृत्तिः)

त त ज ग ग

ऽऽ। ऽऽ ।।ऽ ।ऽ ऽ

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः ॥ ११ ॥

गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा रुष्टेन्द्रवज्राहतिमुक्तवृष्टौ ।
यो गोकुलं गोपकुलञ्च सुस्थं चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणिः ॥११॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु तौ तगणः, तगणः, जगौ गः जगणः गुरू च भवेत्, तद् **इन्द्रवज्रा** नाम वृत्तं स्यादिति ।

गोष्ठ इति—चक्रपाणिः श्रीकृष्णः, रुष्टेन्द्रवज्राहतिमुक्तवृष्टौ रुष्टः क्रुद्धः च असौ इन्द्रः सुरेन्द्रः तेन, गोवर्धनपूजावसरे गोपैः तदीयनिरादरोऽकारि इति पौरा-

---

* अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

म स ज ग
ऽऽऽ ।।ऽ।ऽ। ऽ
म्सौ ज्यौ शुद्धविराडिदं मतम् ॥१॥

म न य ग
ऽऽऽ।।।।ऽऽऽ
म्नौ य्गौ चेति पणवनामेदम् ॥२॥

र ज र ग
ऽ।ऽ ।ऽ। ऽ। ऽऽ
जौ रगौ **मयूरसारिणी** स्यात् ॥३॥

त ज ज ग
ऽऽ।।ऽ।।ऽ।ऽ
तो जो गुरुणेयमुपस्थिता ॥४॥

भ म ज ग
ऽ।। ऽऽऽ ।ऽ। ऽ
दीपकामालां भ्मौ मता जगौ ॥५॥

म भ न ग
ऽऽऽऽ।।।।।ऽ
ज्ञेया हंसी मभनगयुता ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

णिकी कथाऽत्रानुसन्धेया। वज्राहत्या कुलिशनिपातेन, मुक्ता वृष्टिः यत्र, तत्र गोष्ठे गोस्थानके, सव्यकरेण दक्षिणेतरहस्तेन, गिरिं गोवर्धनाऽऽख्यं पर्वतं, धृत्वा उत्थाप्य, गोकुलं गोपनिकरं गवां समूहञ्च, सुस्थं सुखेन स्थितं, देवेन्द्रप्रदत्तकष्टरहितं, चक्रे कृतवान्, सः श्रीकृष्णः, नः अस्मान् तदीयभक्तान्, रक्षतु पात्वित्यर्थः।

एकदा श्रीकृष्णः स्वर्गीयराज्यमदोन्मत्तं देवेन्द्रं विज्ञाय तस्य गर्वखर्वकरणाय गोकुले प्रसिद्धामिन्द्रपूजामरुधत्, तेन कुपित इन्द्रस्तत्र अखण्डां वृष्टिं चकार। तदा गोकुलस्य गोपवृन्दस्य च रक्षणाय सप्तवर्षदेशीयः श्रीकृष्णः स्वकीयकनिष्ठिकांगुल्यग्रभागे गोवर्धनगिरिं धारयाञ्चकार। अतएव श्रीमद्भागवते—'क्व सप्तहायनो बालः क्व महाद्रिविधारणम्॥ १० स्क०॥

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः तगण, तगण, जगण और दो गुरु वर्ण हों, उसको **इन्द्रवज्रा** वृत्त कहते हैं।

वृजवासियों के अपमान से रुष्ट देवराज इन्द्र ने उनके ऊपर वज्र प्रहार और मूसलाधार वर्षा करना प्रारम्भ कर दिया, उस समय जिस श्रीकृष्ण ने गोशाला के समीप अपने बाँये हाथ से गोवर्धन पर्वत को उठा कर गायों तथा गोपकुल की रक्षा की वह चक्रसुदर्शनधारी श्रीकृष्ण हमारी रक्षा करें।

प्राचीन काल में वृजवासी इन्द्र की पूजा किया करते थे। एक बार जब श्रीकृष्ण ने देखा इन्द्र गर्वोद्धत हो गये हैं तो उन्होंने इनकी पूजा का विरोध किया। इस प्रकार अपना अपमान देख देवराज ने वज्र प्रहार मूसलाधार वर्षा प्रारम्भ कर दी। इससे त्राण देने के लिये श्रीकृष्ण ने सात वर्ष की अवस्था में अपने बाँये हाथ की कानी उंगली में गोवर्धन पर्वत को उठाकर इन्द्र के प्रयासों को विफल कर दिया॥ ११॥

एकादशाक्षरवृत्तेः द्वादशभेदाः—

ज त ज ग ग
ISI SSI ISI S S

[1]उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा।

उपेन्द्र! वज्रादिमणिच्छटाभिर्विभूषणानां छुरितं वपुस्ते।
स्मरामि गोपीभिरुपास्यमानं सुरद्रुमूले मणिमण्डपस्थम्॥

१. उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ। इति वृत्तरत्नाकरे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुषमा—इन्द्रवज्रायाः यदि प्रथमो वर्णो लघ्वक्षरेण युक्तो भवति तर्हि सा **उपेन्द्रवज्रा** इति कथ्यते। तदा एतस्याः लक्षणम् इत्थं भवेत् जगणः तगणः जगणः अन्ते द्वौ गुरू चेति।

उपेन्द्रेति—उपेन्द्र! इन्द्रावरज! श्रीकृष्णेत्याशयः, सुरद्रुमूले देवतरुतले, मणिमण्डपस्थं रत्नजटितमण्डपस्थितं, विभूषणानाम् अलङ्काराणां, वज्रादिमणिच्छटाभिः हीरकप्रभृतिमणिमुक्तारत्नकान्तिभिः, छुरितं व्याप्तं, गोपीभिः उपास्यमानम् आराध्यमानं, ते तव, वपुः कायं, स्मरामि ध्याये। अत्र स्मरामीत्यनेन नमस्कार आक्षिप्यते।

सफला—इन्द्रवज्रा छन्द का यदि आदि अक्षर लघु हों तो उसको **उपेन्द्रवज्रा** छन्द कहते हैं। तव उपेन्द्रवज्रा का लक्षण इस प्रकार होगा, यथा—जगण, तगण, जगण, और अन्त में दो गुरु वर्ण।

कल्पवृक्ष के नीचे मणियों द्वारा रचित मण्डप में विराजमान, आभूषणों में जड़े हुए हीरा-मोती आदि रत्नों की कान्ति से सुशोभित गोपियों द्वारा सेवित हे श्रीकृष्ण! मैं आपकी शरीर शोभा का स्मरण करता हूँ। यह स्मरणात्मक नमस्कार कवि प्रतिभा से प्राप्त है।

उपजातिवृत्तम्

ज त ज ग ग– त त ज ग ग
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ– ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
त त ज ग ग– ज त ज ग ग
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ– । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, वदन्ति जातिष्विदमेव नाम॥

ममैवाऽच्युतचरिते यथा—

काचिन्मुरारेर्वदनारविन्दं सङ्क्रान्तमालोक्य जले नवोढा।
व्यक्तं सलज्जा परिचुम्बितुं तत्तदर्थमेवाम्भसि निर्ममज्ज॥ १॥

मुखारविन्दैर्व्रजसुन्दरीणामामोदमत्युत्कटमुद्गिरद्भिः।
अहारि चित्तेन समं मुरारेर्हेमाम्बुजेभ्योऽपि मधुव्रतौघः॥ २॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तोयेषु तस्याः प्रतिबिम्बितासु व्रजाङ्गनानां नयनावलीषु ।
स्वबन्धुपङ्क्तिभ्रमतोऽतिमुग्धा गोष्ठीं शफर्यो रचयाम्बभूवुः ।।३।।

तथा ममैव गोपालशतके—

वनेषु कृत्वा सुरभिप्रचारं प्रकाममुग्धो मधुवासरेषु ।
गायन्कलं क्रीडति पद्मिनीषु मधूनि पीत्वा मधुसूदनोऽसौ ।।४।।

एवमनयोर्नानाविधा अप्युपजातयो बोद्धव्याः ।

तथा वंशस्थविलेन्द्रवंशयोरित्थमुदाहार्यम्—

इत्थं रथाश्वेभनिपादिनां प्रगे गणो नृपाणामथ तोरणाद्बहिः ।
प्रस्थानकालक्षमवेशकल्पनाकृतक्षणक्षेपमुदैक्षताच्युतम् ।। ५ ।।

सुषमा—यदीयौ यस्य वृत्तस्य सम्बन्धिनौ पादौ चरणद्वयम्, अनन्तरम्=प्रागेव,उदीरितयोः इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रयोः,लक्ष्मभाजौ चिह्नयुक्तौ स्याताम्, ताः उपजातयः, एतन्नामकानि वृत्तानि सम्भवन्तीत्याशयः, एवम्प्रकारेण अन्यासु इतरासु अपि, मिश्रितासु द्विविधलक्षणसम्मिलितासु, इदमेव उपजातिरिति नाम भवति।

विशेषः—यथा इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रयोः सम्मेलनेनोपजातयो भवन्ति, तथैव वंशस्थ-इन्द्रवंशयोः सम्मिश्रणेनापि उपजातयो भवन्ति । ग्रन्थान्तरेषु वंशस्थविलस्य नाम केवलं वंशस्थमिति दृश्यते । सुस्पष्टमिदं लक्षणं श्रीमद्वसन्तत्र्यम्बकशेवडेकृतवृत्तमञ्जर्याम्—

उपेन्द्रवज्राचरणः प्रयाति यत्रेन्द्रवज्राचरणेन योगम् ।
छन्दोविदस्तामुपजातिमाहुर्भवन्ति भेदा बहवस्तदीयाः' ।।

सफला—जिनके चरण उपर्युक्त इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के लक्षण वाले (बिना किसी क्रम से) हों, उन छन्दों का नाम **उपजाति** है ।

विशेष—उक्त छन्दों के आगे पीछे का कोई सुनिश्चित क्रम नहीं है । जैसा आगे दिये गये उदाहरणों से स्पष्ट होगा । इसी प्रकार एकादशाक्षरावृत्ति में कथित शालिनी और वातोर्मी छन्दों के मिश्रण से एवं द्वादशाक्षरावृत्ति में वंशस्थ (वंशस्थविल) तथा इन्द्रवंशा छन्दों के योग से भी उपजाति छन्द के उदाहरण देखे जाते हैं । पिङ्गलच्छन्दसूत्र की हलायुध वृत्ति में इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के योग से विशेष नामों सहित चौदह भेदों का उल्लेख किया है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपजाति-प्रसार-क्रम

त	त ज ग	ग	४ चरण		शुद्धा		इन्द्रवज्रा
प्र०	द्वि०	तृ०	च०	,,	उपजाति भेद		नाम
उ	इ	इ	इ	,,	१	,,	कीर्तिः
इ	उ	इ	इ	,,	२	,,	वाणी
उ	उ	इ	इ	,,	३	,,	माला
इ	इ	उ	इ	,,	४	,,	शाला
उ	इ	उ	इ	,,	५	,,	हंसी
इ	उ	उ	इ	,,	६	,,	माया
उ	उ	उ	इ	,,	७	,,	जाया
इ	इ	इ	उ	,,	८	,,	बाला
उ	इ	इ	उ	,,	९	,,	आर्द्रा
इ	उ	इ	उ	,,	१०	,,	भद्रा
उ	उ	इ	उ	,,	११	,,	प्रेमा
इ	इ	उ	उ	,,	१२	,,	रामा
उ	इ	उ	उ	,,	१३	,,	ऋद्धिः
इ	उ	उ	उ	,,	१४	,,	बुद्धिः
ज	त ज ग	ग	४ चरण		शुद्धा		उपेन्द्रवज्रा

ऐसा लगता है कि उपजाति के मूल छन्दों उपेन्द्रवजा और इन्द्रवज्रा के उदाहरणों द्वारा श्रीकृष्ण स्तवन करने के पश्चात् ग्रन्थकार ने इस छन्द का कोई विशेष उदाहरण नहीं लिखा, अतएव उनकी अन्य रचनाओं के पद्य यहाँ उदाहरण के रूप में उद्घृत किये हैं।

उपर्युक्त प्रथम उदाहरण में–इ इ इ उ आठवां **बाला** नामक उपजाति भेद है। दूसरे उदाहरण में–उ इ उ इ पाँचवा **हंसी** नामक उपजाति भेद है। तीसरे उदाहरण में—इ उ उ इ छठवाँ **माया** नामक उपजाति भेद है। चौथे उदाहरण में उ उ इ उ ग्यारहवां **प्रेमा** नाम उपजाति भेद है। पांचवा उदाहरण वंशस्थविल और इन्द्रवंशा के योग से निर्मित है। ये दोनों १२ अक्षर के छन्द हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न ज ज ल ग

। । । । S । । S । । S

नजजलगैर्गदिता सुमुखी ।

तरणिसुतातटकुञ्जगृहे वदनविधुस्मितदीधितिभिः ।
तिमिरमुदस्य मुखं सुमुखी हरिमवलोक्य चुचुम्ब चिरम्[1] ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु नजजलगैः नश्च, जश्च, जश्च, लश्च, गश्च तैः इति द्वन्द्वः, क्रमेण नगणः, जगणः, जगणः, लघुः तथा गुरुः भवेत् तत् **सुमुखी** नाम वृत्तम् ।

तरणीति—काचित् सुमुखी चन्द्रवदना मधुरभाषिणी च गोपिका, तरणिसुतातटकुञ्जगृहे यमुनातीरनिकुञ्जनिलये, वदनविधोः मुखशशिनः, स्मितदीधितिभिः मन्दहास्यकिरणप्रकाशैः तिमिरनिकुञ्जनिलयस्थितं तमः उदस्य दूरीकृत्य मुखं श्रीकृष्णवदनम्, अवलोक्य दृष्टिप्रथमवतार्य, चिरं चिरकालपर्यन्तं हरिं श्रीकृष्णं, चुचुम्ब चुम्बितवती ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, जगण, जगण, लघु तथा गुरु वर्ण हों, उसको **सुमुखी** नामक वृत्त कहते हैं ।

किसी मधुरभाषिणी शशिवदना गोपी ने यमुना नदी के तीरस्थित लतामण्डप में अपने मुख चन्द्र के मन्दहास्यजनित प्रकाश की किरणों से उक्त लतामण्डप के अन्धकार को दूर कर (वहाँ छिपे हुए) श्रीकृष्ण के मुख को देखकर (एकान्त में) चिरकाल तक उसको चूमा । उक्त पद्य में **रूपक** तथा **अतिशयोक्ति** अलंकार हैं ।

म त त ग ग

S S S S S । S S । S S

मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः ॥

अंहो हन्ति ज्ञानवृद्धिं विधत्ते धर्मं दत्ते काममर्थं च सूते ।
मुक्तिं दत्ते सर्वदोपास्यमाना पुंसा श्रद्धाशालिनी विष्णुभक्तिः ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु मात्तौ मगणात् परं तश्च तश्च तयोर्द्वन्द्वः, गश्च गश्च गौ गुरू वर्णौ च (मगणः तगणः तगणः गुरुः गुरुः च) भवेताम् तत् **शालिनी** नाम वृत्तम् । अत्र वेदलोकैः चतुर्भिः सप्तभिः च वर्णैः यतिः भवति ।

---

१. पाठभेदः—तिमिरमुदस्य वृतं सुमुखी हरिमवलोक्य जहास चिरम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अंहो हन्तीति। श्रद्धाशालिनी स्पृहायुक्ता 'श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा' इत्यमरः। विष्णुभक्तिः श्रीकृष्णचरणसेवाभावः, सर्वदा अहर्निशम्, उपास्यमाना परिचर्यां कुर्वंती, सती, 'वरिवस्या तु सुश्रूषा परिचर्य्याप्युपासना'। इत्यमरः। पुंसां मानवानाम्, अंहः पापं, हन्ति दूरीकरोति, ज्ञानवृद्धि विवेकस्फीर्ति, विधत्ते करोति, धर्मं सुकृतं, दत्ते ददाति, कामं मनोभिलषितम्, अर्थं विभवं, सूते उत्पादयति, मुक्ति कैवल्यं, दत्ते प्रयच्छति, अतः सर्वदा सर्वकालं श्रीकृष्णः सेव्य इति। अत्र दीपकालङ्कारः।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में मगण, तगण, तगण, गुरु और गुरु वर्ण हों एवं जिसके ४ तथा ७ अक्षरों में यति हो, उसको **शालिनी** वृत्त कहते हैं।

श्रद्धायुक्त विष्णुभक्ति पापों का विनाश, ज्ञानकी वृद्धि, पुण्यों का उदय, इच्छित पदार्थों एवं धन को उत्पन्न और मुक्ति को प्रदान करती हैं, अतः सदा श्रीकृष्ण की भक्ति करनी चाहिये। उक्त पद्य में श्रद्धायुक्तविष्णुभक्ति को ऐहलौकिक एवं पारलौकिक सुख समृद्धि का कारण दिखलाया गया है।

म भ त ग ग

ऽऽऽ ऽ।। ऽ ऽ । ऽ ऽ

वातोर्मीयं गदिता म्भौ तगौ गः॥

ध्याता मूर्तिः क्षणमप्यच्युतस्य श्रेणीं नाम्नां गदिता हेलयापि।
संसारेऽस्मिन् दुरितं हन्ति पुंसां वातोर्मी पोतमिवाम्भोधिमध्ये॥

सषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु म्भौ मश्च भश्च तौ, द्वन्द्वः मगणः भगणः तथा तगौ तश्च गश्च तौ, द्वन्द्वः। तगणः गुरुः गः गुरुः च भवेत् सा इयं **'वातोर्मी'** गदिता कथिता।

ध्यातेति—अच्युतस्य श्रीकृष्णस्य, मूर्तिः संस्थानम्, क्षणमपि मूहूर्तमपि, ध्याता स्मृतिपथं नीता सती, नाम्नां विष्णुसहस्रनाम्नां, श्रेणी ततिः, हेलया यदिच्छयाऽपि, गदिता स्पष्टतया कथिता, अस्मिन् संसारे कलियुगे जगति, पुंसाम् मानवानां दुरितम् पापं, वातोर्मी पवनवीचिः, अम्भोधिमध्ये समुद्रमध्ये, पोतं जलयानम्, इव हन्ति विनाशयति।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः मगण, भगण, तगण और दो गुरु वर्ण हों उसको **वातोर्मी** नामक वृत्त कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्षण भर भी ध्यान की हुई श्रीकृष्ण की मूर्ति और खेल ही खेल में उच्चारण किया हुआ श्रीकृष्ण के नामों का समूह, इस संसार में (कलियुग में) मनुष्यों के पापों का उस प्रकार विनाश करता है, जिस प्रकार तूफान की लहरें समुद्र के बीच में डुबोकर जहाज का (विनाश कर देती हैं)।

म ग न न ग
S S S S | | | | | | S
मो गो नौ गो भ्रमरविलसिता[1] ॥

मुग्धे ! मानं परिहर नचिरात्तारुण्यं ते सफलयतु हरिः।
फुल्ला वल्ली भ्रमरविलसिताभावे शोभां कलयति किमु ताम् ? ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु मगणः गुरुः, नौ द्वौ नगणौ, गुरुः, गुरुः च भवेत् तद् **भ्रमरविलसिता** नाम वृत्तम्।

मुग्धे इति—हे मुग्धे ! प्रस्फुरद् यौवने ! मानम् अभिमानम्, परिहर परित्यज, हरिः श्रीकृष्णः, ते तव, तारुण्यं यौवनं, न चिरात् सपदि एव, सफलयतु पूर्णं विदधातु। तत्र हेतुं निर्दशति—फुल्ला स्फुटिता, 'प्रफुल्लोत्फुल्लसम्फुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः'। इत्यमरः। वल्ली लता, भ्रमरविलसिताभावे भ्रमरविभ्रमातिरिक्ते, तां तादृशीम् अनुपमामित्यर्थः शोभां कान्ति, कलयति बिभ्रति किम्, न कलयतीति काक्वा ध्वन्यते।

सफला—जिसके सभी चरणों में क्रमशः मगण, गुरु, नगण, नगण, गुरु वर्ण हों उसको **भ्रमरविलसिता** अथवा **भ्रमरविलसित** वृत्त कहते हैं।

हे सुन्दरी (राधिका) तू अभिमान मत कर। श्रीकृष्ण तेरी युवावस्था को यथा शीघ्र सफल करें। कवि कारण निर्देश कर रहा है–क्योंकि विकसितलता भ्रमरों के स्पर्श (आलिङ्गन) पराग ग्रहण (चुम्बन) आदि के बिना वैसी शोभा को धारण कर सकती है क्या ? अर्थात् नहीं कर सकती।

विशेष—व्रजसुन्दरी की यौवन पूर्ण देहलता का श्रीकृष्ण द्वारा और पुष्पितलता का भ्रमर द्वारा उपयोग परस्पर विम्ब-प्रतिविम्बभाव धारण करते हैं। अतः यहाँ दृष्टान्तालङ्कार है।

१. भ्रमरविलसितं क्वापि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भ त न ग ग

ऽ ।।ऽऽ।।।।ऽऽ

स्यादनुकूला भतनगगाश्चेत् ।

वल्लववेशा मुररिपुमूर्ति-र्गोपमृगाक्षीकृतरतिपूर्तिः ।
वाञ्छितासिद्ध्यै प्रणतिपरस्य स्यादनुकूला जगति न कस्य ? ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु क्रमशः भतनगगाः भश्च, तश्च, नश्च, गश्च, गश्च, तेषां द्वन्द्वः, भगणः, तगणः, नगणः, गुरुः, गुरुः च वर्णः स्यात् तत् **अनुकूला** नाम वृत्तम् ।

वल्लवेति–वल्लववेशा गोपतुल्यपरिधानयुक्ता, गोपमृगाक्षीभिः वल्लवहरिण-नेत्राभिः, कृतरतिपूर्तिः कृता सम्पादिता, रतिपूर्तिः कामातिशयः यस्याः सा, मुररिपुमूर्तिः श्रीकृष्णप्रतिमा, जगति भुवने, प्रणतिपरस्य अभिवादनशीलस्य, कस्य पुंसः, वाञ्छितसिद्ध्यै मनोभिलषितपूरणाय, अनुकूला अनुग्रहकर्त्री, न स्यात्, अर्थात् श्रीकृष्णः सर्वेषां योगक्षेमं वहत्येव ।

सफला—जिसके सभी चरणों में क्रमशः भगण, तगण, नगण और अन्त में दो गुरु वर्ण हों, उसको **अनुकूला** नामक वृत्त कहते हैं ।

गोपवेशधारी, वृजमृगनयनियों का जिनके प्रति काम भाव जागृत है ऐसी श्रीकृष्ण की मूर्ति संसार में प्रणाम करने वाले किस मनुष्य की मनोरथपूर्ति में सहायक नहीं होती ? अर्थात् श्रीकृष्ण सबके योगक्षेम का वहन करते हैं ।

र न र ल ग

ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽ। ऽ

रात् परैर्नरलगै रथोद्धता ।

राधिका दधिविलोडनस्थिता कृष्णवेणुनिनदैरथोद्धता ।
यामुनं तटनिकुञ्जमञ्जसा सा जगाम सलिलाहृतिच्छलात् ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु रात् रगणात् परैः परवर्तिभिः नरलगैः नश्च, रश्च, लश्च गश्च तैरिति द्वन्द्वः अर्थात् नगणः, रगणः, लघुः, गुरु च वर्णः क्रमेण भवेत्, तद् **रथोद्धता** नाम वृत्तम् ।

राधिकेति–दधिविलोडने दधिमन्थनकर्मणि, तक्रनिर्माणे, स्थिता तत्परा, सा कृष्णप्रिया राधिका, कृष्णवेणुनिनदैः श्रीकृष्णस्य मुरलीरणितैः, उद्धता चञ्चला, अथ अनन्तरम्, 'मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येष्वथो अथ' । इत्यमरः । सलिला-हृतिच्छलात् पानीयाऽऽनयनव्याजेन, अञ्जसा त्वरितं, यामुनं यमुनासम्बन्धिनं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

तटनिकुञ्जं तीरनिकटस्थलतामण्डपं, जगाम प्रापेत्यर्थः । सलिलाहृतिच्छलादित्य अपह्नुत्यलङ्कारः ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः रगण, नगण, रगण, लघु औ गुरु वर्ण हों, उसको **रथोद्धता** नामक वृत्त कहते हैं ।

दधि-मन्थन में तत्पर राधिका सहसा श्रीकृष्ण की मुरली-धुन सुनकर व्याकु हो शीघ्र ही वह जल भरने के वहाने यमुना नदी के तट पर स्थित लतामण्ड में चली गयी, जहाँ श्रीकृष्ण वंशी बजा रहे थे ।

र न भ ग ग
S I S I I I S I I S S

स्वागता रनभगैर्गुरुणा च ।

यस्य चेतसि सदा मुरवैरी वल्लवीजनविलासविलोलः ।
तस्य नूनममरालयभाजः स्वागतादरकरः सुरराजः ॥

सुषमा—यस्य समेषु पादेषु रनभगैः रश्च, नश्च, भश्च, गश्चेति द्वन्द्वः तै एकेन गुरुणा च, अर्थात् यत्र रगणः, नगणः, भगणः, गुरुः, गुरुः च युक्तः वर्ण भवेत् **स्वागता** नाम वृत्तम् ।

यस्येति—वल्लवीजनविलासलोलः वल्लवीजनानां गोपयुवतीनां विला विभ्रमादौ, लोलः चपलः, मुरवैरी मुरारिः श्रीकृष्ण इत्यर्थः, यस्य सेवकस्य, चेतसि मनसि, सदा सर्वदा, विराजते, इत्याशयः । सुरराजः देवराड् इन्द्रः, अपि अमरालयभाजः स्वर्गं गतस्य, तस्य भक्तस्य, स्वागतेन शुभागमनप्रश्नेन, आदर करः सम्मानकर्ता, नूनं निश्चप्रचम् भवेदेव । पद्येऽत्र काव्यलिङ्गालङ्कारः ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगणः भगण और दो गुरु व हों, उसको **स्वागता** नामक वृत्त कहते हैं ।

व्रजवनिताओं के साथ विलास में तत्पर मुरनामक दैत्य के विनाश श्रीकृष्ण जिस भक्त के हृदय में सर्वदा निवास करते हैं । स्वर्ग में पहुँचने प उस वैष्णव का स्वागत (स्वयं) देवराज इन्द्र भी करते हैं ।

भ भ भ ग ग
S I I S I I S I I S S

दोधकमिच्छति भत्रितयाद् गौ ।

देव ! सदोध ! कदम्बतलस्थ ! श्रीधर ! तावकनामपदं मे ।
कण्ठतलेऽसुविनिर्गमकाले स्वल्पमपि क्षणमेष्यति योगम् ? ॥

सुषमा—
च, अर्थात् यत्र
नाम वृत्तम् ।

देवेति—
भगवन्, श्रीधर
श्रीकृष्ण, इति,
पुरुषस्य वा)
लप्स्यति किमि

सफला—
उसको **दोधक**

छोटे-छोटे
हे श्रीकृष्ण ! अ
क्षणों के लिये
सम्भव हो सके

रङ्गे ख
यः केलि

सुषमा—
लघुः, गुरुः च
मोटनकं नाम

रङ्ग इति
कृष्णः, केलिल
मोटनकं वधं,
वन्धनरूपरिपुं

सफला—
हों, उसको **मो**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु भत्रितयाद् भगणत्रयात् तथा, **गौ** गुरुवर्णद्वयात् च, अर्थात् यत्र भगणः, भगणः, भगणः, गुरुः गुरुः च वर्णः भवेत् तद् **दोधकं** नाम वृत्तम् ।

देवेति—सदोध वत्ससहित, कदम्वतलस्थ कदम्ववृक्षाऽधस्तात् स्थितः, देव भगवन्, श्रीधर लक्ष्मीश ! तावकनामपदं तव इदं तावकं त्वत्सम्बन्धिनामपदं श्रीकृष्ण, इति, असुविनिर्गमकाले प्राणप्रयाणसमये, मे मम (गङ्गादासस्य, पठतः पुरुषस्य वा) कण्ठतले वदने, स्वल्पं क्षणमात्रमपि, योगं सम्बन्धकम्, एष्यति लप्स्यति किमिति भक्तस्य आकाङ्क्षा ।

सफला—जिसके चारों चरणों में तीन भगण और अन्त में दो गुरु वर्ण हों उसको **दोधक** नामक वृत्त कहते हैं ।

छोटे-छोटे बछड़ों सहित कदम्ब की छाँव में विराजमान लक्ष्मीपति हे श्रीकृष्ण ! आपका (श्रीकृष्ण) नाम प्राण निकलते समय मेरे मुख में कुछ क्षणों के लिये स्थान प्राप्त करेगा ? अर्थात् यदि आपकी कृपा होगी तो यह सम्भव हो सकेगा ।

त ज ज ल ग

ऽ ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ

स्यान्मोटनकं तजजाश्च लगौ ।

रङ्गे खलु मल्लकलाकुशलश्चाणूरमहाभटमोटनकम् ।
यः केलिलवेन चकार स मे संसाररिपुं परिमोटयतु ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु तजजाश्च तश्च जश्च जश्च ते, द्वन्द्वः, लगौ लघुः, गुरुः च अर्थात् यत्र तगणः, जगणः, जगणः, लघुः, गुरुः वर्णः च भवेत्, तत् **मोटनकं** नाम वृत्तम् ।

रङ्ग इति—रङ्गे युद्धक्षेत्रे, मल्लकलाकुशलः वाहुयुद्धकलाकोविदः, यः श्रीकृष्णः, केलिलवेन क्रीडांशेन, चाणूरमहाभटमोटनकं चाणूरेति प्रसिद्धवीरस्य मोटनकं बधं, चकार विहितवान्, सः कृष्णः, मे मम ग्रन्थकर्तुः, संसाररिपुं भव-वन्धनरूपरिपुं परिमोटयतु विनाशं करोतु । संसाररिपुमित्यत्र रूपकालङ्कारः ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में तगण, जगण, जगण और लघु, गुरु वर्ण हों, उसको **मोटन** नामक वृत्त कहते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाहु युद्ध कला कुशल जिस श्रीकृष्ण ने युद्धभूमि में चाणूर नामक कंस श्रेष्ठ योद्धा का विनाश किया, वह (श्रीकृष्ण) मेरे (ग्रन्थकर्त्री के) संसार वांर-वार आवागमन रूप शत्रु का विनाश करे। अर्थात् मुझे भवबन्धन मुक्त करे।

र ज र ल ग
S I S I S I S I S I S

श्येन्युदीरिता रजौ रलौ गुरुः।

यस्य कीर्तिरिन्दुकुन्दचन्दनश्येन्यशेषलोकपावनी सदा।
जाह्नवीव विश्ववन्द्यविभ्रमातं भजामि भावगम्यमच्युतम् ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु रजौ रश्च जश्च तयोर्द्वन्द्वः, रलौ रश्च लघुश्च तयोर्द्वन्द्वः, अर्थात् यत्र रगणः, जगणः, रगणः लघुः गुरुः च वर्णः भवेत्, **श्येनी** उदीरिता।*

---

* अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

न न स ग ग
I I I I I I I S S S
ननसगगुरुरचिता **वृत्ता** ॥ १ ॥

न य भ ग ग
I I I I S S S I I S S
अनवसिता न्यौ भ्गौ गुरुरन्ते ॥२॥

न न र ल ग
I I I I I I S I S I S
ननरलगुरुभिश्च **भद्रिका** ॥ ३ ॥

त त त ग ग
S S I S S I S S I S S
विध्वङ्कमाला भवेत्तौ तगौ गः ॥४॥

ज स त ग ग
I S I I I S S S I S S
उपस्थितमिदं ज्सौ ताद् गकारौ ॥५॥

भ त न ग ल
S I I S S I I I I S I
सान्द्रपदं स्याद् भतनगलैश्च ॥६॥

ज स त ग ग
I S I I I S S S I S S
शिखण्डितमिदं ज्सौ त्गौ गुरुश्चेत् ॥७॥

र ज स ल ग
S I S I S I I I S I S
रेण जेन सेन लगयोर्द्रुता ॥८॥

स स स ल ग
I I S I I S I I S I S
उपचित्रमिदं ससमाल्लगौ ॥ ९ ॥

न र र ल ग
I I I S I S S I S I S
नररलैर्गुरा**विन्दिरा** मता ॥१०॥

न न र ग ग
I I I I I I S I S S S
कुपुरुषजनिता ननौ रो गौ ॥ ११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यस्येति—यस्य श्रीकृष्णस्य, कीर्तिः सुयशः, जाह्नवीव जह्नुसुता भागीरथी इव, इन्दुः सुधांशुः, कुन्दं माध्यं नाम पुष्पविशेषं, चन्दनञ्च, तद्वत् श्येनी शुभ्रवर्णा, सदा सर्वदा, अशेषलोकपावनी त्रिभुवनपवित्रीकरणसमर्था, विश्ववन्द्यविभ्रमा संसाराराध्यविलासयुक्ता, एवम्भूता यस्य कीर्तिः, तं भावगम्यम् अनन्यया भक्त्या सुलभम्, अच्युतं श्रीकृष्णं, भजामि सेवे । जाह्नवीवेत्यत्रोपमालङ्कारः ।

सफला—जिसके चारों पादों में क्रमशः रगण, जगण, रगण, लघु तथा गुरु वर्ण हों, उसको **श्येनी** नामक वृत्त कहते हैं ।

पूर्ण चन्द्र, कुन्दकुसुम (सफेद गुलाब), एवं चन्दन के समान (उज्वल, शान्तिदायक, शुभ्र, सुवासित, सुखद), सम्पूर्ण संसार के आराधनीय गङ्गा तुल्य जिस श्रीकृष्ण की कीर्ति सम्पूर्ण लोकों को पवित्र करती है । भक्ति भावना से प्राप्त होने वाले उस श्रीकृष्ण का मैं भजन करता हूँ ।

जगती (द्वादशाक्षरा वृत्तिः)

र न भ स

ऽ । ऽ । । । । ऽ । । । । ऽ

चन्द्रवर्त्म निगदन्ति रनभसः ॥ १२ ॥

चन्द्रवर्त्म पिहितं घनतिमिरै राजवर्त्म रहितं जनगमनैः ।
इष्टवर्त्म तदलङ्कुरु सरसे ! कुञ्जवर्त्मनि हरिस्तव कुतुकी ॥१२॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु रनभसः रश्च, नश्च, भश्च, सश्च तेषां द्वन्द्वः, अर्थात् रगणः, नगणः, भगणः, सगणः च भवेत् तत् **चन्द्रवर्त्म** नाम वृत्तम् ।

चन्द्रेति—सरसे ! शृङ्गारप्रिये !, घनतिमिरैः घनकृतान्धकारैः, चन्द्रवर्त्म चन्द्रस्य शशिनः वर्त्म मार्गम् आकाशम्, पिहितम् आच्छन्नम्, राजवर्त्म राजमार्गः, जनगमनैः मनुष्याणां गतागतिभिः, रहितं शून्यम्, इदानीं राजवर्त्म निर्मक्षिकं जातमित्याशयः, तत् तस्माद् हेतोः, त्वं कृष्णप्रिया गोपीति, इष्टवर्त्म ईच्छितं पन्थानम्, अलङ्कुरु शोभितं विधेहि, गच्छेत्याशयः, हरिः श्रीकृष्णः, तव ते, कुञ्जवर्त्मनि निकुञ्जमार्गे, कुतुको तव दर्शनाभिलाषुकः, आस्ते ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः रगण, नगण, भगण, सगण हों, उसको **चन्द्रवर्त्म** नामक वृत्त कहते हैं ।

हे सरस हृदय वाली गोपी (राधा) ! आकाश घने बादलों से छाया हुआ है, सड़क पर मनुष्यों का आना जाना बन्द हो चुका है, अतएव किसी के देखने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का भय भी नहीं है। इसलिये तुम अपने इच्छित स्थान (यमुना तट कुञ्ज) को पहुँचकर सुशोभित करो, (क्योंकि) श्रीकृष्ण लता मण्डप में उत्सुकता के साथ (तुम्हारे दर्शनों इच्छा से) वहाँ स्थित हैं ॥ १२ ॥

द्वादशाक्षरावृत्तेः पञ्चदशभेदाः—

ज त ज र

ISI SSI IIS ISIS

वदन्ति वंशस्थविलं[1] जतौ जरौ।

विलासवंशस्थविलं मुखानिलैः प्रपूर्य यः पञ्चमरागमुद्गिरन्।
व्रजाङ्गनानामपि गानशालिनां जहार मानं स हरिः पुनातु नः ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु जतौ जरौ क्रमेण जगणः, तगणः, जगणः रगणः च भवेत्, तद् **वंशस्थविलं** नाम वृत्तम्।

विलासेति–यः श्रीकृष्णः, मुखानिलैः वदनवायुभिः विलासवंशस्थविलं क्रीडार्थं वंशीस्थितच्छिद्रं, प्रपूर्य पूरयित्वा, पञ्चमरागं सप्तरागेष्वन्यतमं रागम् उद्गिरन् गायन् सन्, व्रजाङ्गनानां व्रजवासिवामनयनानां, गानशालिनां नारदप्रभृतीनामपि, मानं गायनप्रवीणताऽहङ्कारं, जहार दूरीकृतवान्, सः श्रीकृष्णः, नः ग्रन्थकर्तॄन् पाठकांश्च, पुनातु पवित्रतां नयतु।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः, जगण, तगण, जगण, रगण हों, उसको **वंशस्थविल,** उसी को **वंशस्तनित** या **वंशस्थ** वृत्त भी कहते हैं।

जिस श्रीकृष्ण ने अपनी मुख वायु से आनन्ददायक वंशी के छिद्र को फूंककर पञ्चम राग गाते हुए व्रजवधुओं तथा नारद आदि संगीत विशेषज्ञों के घमण्ड को समाप्त कर दिया, वह श्रीकृष्ण हम सबको पवित्र करे।

त त ज र

SSI SSI ISIS IS

तच्चेन्द्रवंशा प्रथमेऽक्षरे गुरौ।

दैत्येन्द्रवंशाग्निरुदीर्णदीधितिः पीताम्बरोऽसौ जगतां तमोऽपहः।
यस्मिन्ममज्जुः शलभा इव स्वयं ते कंसचाणूरमुखा मखद्विषः ॥

---

१. वंशस्तनितमिति, वंशस्थमिति च क्वचित्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु वंशस्थविलस्य गणाः स्युः किन्तु प्रथमेऽक्षरे गुरावित्यस्यायमभिप्रायोऽस्ति यद् वंशस्थविलस्य प्रथमः जगणः, तगण रूपे परिणमति शेषं पूर्ववत् । एवं प्रकारेण अस्मिन् वृत्ते तगणः, तगणः, जगणः, रगणः, क्रमेण भवेत् । अस्य नाम **इन्द्रवंशा** वृत्तम् ।

दैत्येन्द्रेति—उदीर्णदीधितिः अतिशयतेजोयुक्तः, जगतां भुवनानां, तमोपहः पापध्वान्तसंहारकः, असौ सम्मुखस्थः, पीताम्बरः श्रीकृष्णः, दैत्येन्द्रवंशाग्निः कंसकुलविध्वंसनाय अग्निरूपः, अस्तीतिशेषः, यस्मिन् कृष्णरूपात्मकेऽग्नौ, ते कुख्याताः, मखद्विषः यज्ञादिशुभकर्मविध्वंसकाः, कंसचाणूरमुखाः कंसचाणूरादयः, शलभाः इव पतङ्गाः इव, 'समौ पतङ्गशलभौ' इत्यमरः । ममज्जुः ब्रुडिता-इत्यर्थः । अत्र पद्ये रूपकालङ्कारः उपमालङ्कारश्च ।

सफला—यदि वंशस्थविल छन्द का प्रथम अक्षर गुरु हों तो वही **इन्द्रवंशा** छन्द हो जाता है । इसमें तगण, तगण, जगण, रगण होते हैं ।

अत्यन्त तेजस्वी संसार के पापरूपी अन्धकार के नाशक जो पीताम्बर (श्रीकृष्ण) महान् राक्षसों के वंश को जलाने के लिये अग्नि के समान हैं । जिस श्रीकृष्णरूपी आग में वे कुप्रसिद्ध यज्ञ नाशक कंस चाणूर आदि पतिंगों की भाँति स्वयं जल कर नष्ट हो गये ॥

ज स ज स

ISI IIS ISIIIS

जसौ जसयुतौ जलोद्धतगतिः ।

यदीयहलतो विलोक्य विपदं कलिन्दतनया जलोद्धतगतिः ।
विलासविपिनं विवेश सहसा करोतु कुशलं हली स जगताम् ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु जसौ जगणः सगणः तथा जसयुतौ जगणः सगणः एताभ्यां युतौ भवेताम्, तत् **जलोद्धतगतिः** नाम वृत्तम् ।

यदीयेति—जलोद्धतगतिः जलैः वीचिसञ्चरणैः उद्धतगतिः चञ्चलगतिः, कलिन्दतनया यमुना, यदीयहलतः बलरामसम्बन्धिलाङ्गलात्, विपदं विपत्ति, विलोक्य निरीक्ष्य, सहसा शीघ्रं, विलासविपिनं, क्रीडाविपिनं खेलावनं, विवेश गता, स हली हलं प्रहरणम् अस्यास्तीति हली, बलरामः, 'रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः' । इत्यमरः । जगतां लोकानां 'त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत्' । इत्यमरः । कुशलं क्षेमं, करोतु विदधातु । प्रत्युदाहरणम्—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सनाकवनितं नितम्बरुचिरं चिरं सुनिनदैर्नदैर्वृतममुम् ।
मता फणवतोऽवतो रसपरा परास्तवसुधा सुधाधिवसति ॥

सफला—जिसके चारों चरणों में जगण, सगण, जगण, सगण हों, उसको **जलोद्धतगति** नामक वृत्त कहते हैं ।

जिस बलराम के हल के भय से लहराती हुई यमुना उनके केलिकानन में स्वयं आ गयी, वह बलराम संसार का कल्याण करे ।

विशेष—सुना जाता है कि एक बार बलराम ने गोपियों के साथ विहार करने की इच्छा से अपने केलिकानन में यमुना जी को बुलाया था और वह उनके हलास्त्र से भयभीत होकर स्वयं चली आयी थी ।

य य य य
।ऽऽ ।ऽऽ।ऽऽ। ऽऽ
भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः ।

सदारात्मजज्ञातिभृत्यो विहाय स्वमेतं ह्रदं जीवनं लिप्समानः ।
मया क्लेशितः कालियेत्थं कुरु ! त्वं भुजङ्ग ! प्रयातं द्रुतं सागराय ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण चत्वारो यगणाः भवेयुः तत् **भुजङ्गप्रयातं** नाम वृत्तम् ।

सदारेति—कालिय! सर्पविशेष! त्वं मया श्रीकृष्णेन, इत्थम् अनेन विधिना क्लेशितः दण्डितः असि, अतस्त्वं सदारात्मजज्ञातिभृत्यः स्त्रीसुतबन्धुसेवकादिसहितः अर्थात् समस्तपरिवारयुक्तः जीवनं प्राणान्, लिप्समानः कामयमानः, एतं प्रस्तुतं, स्वं कालियाऽऽख्यं, सरः ह्रदं विहाय त्यक्त्वा, द्रुतं शीघ्रं, सागराय-सिन्धुसमीपगमनाय, प्रयातं शीघ्रतया गमनं, कुरु विधेहि ।

सफला—जिसके चारों चरणों में चार यगण हों, उसको **भुजङ्गप्रयात** नामक छन्द कहते हैं ।

हे कालिय ! मैंने (श्रीकृष्ण ने) तुमको इस प्रकार (नागलीला के द्वारा) दण्डित किया है, अतः तुम अपने परिवार (स्त्री, पुत्र, बन्धु, सेवक) के साथ अपने प्राणों की रक्षा करते हुए इस कालियदह को छोड़कर समुद्र में चले जाओ ।

स स स स
।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ
वद तोटकमब्धिसकारयुतम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यमुनातटमच्युतकेलिकलालसदङ्घ्रिसरोरुहसङ्गरुचिम् ।
मुदितोऽट कलेरपनेतुमघं यदि चेच्छसि जन्म निजं सफलम् ॥

सुषमा —यस्य चतुर्षु चरणेषु चत्वारः सगणाः भवेयुः तत् **तोटकम्** नाम वृत्तम् ।

यमुनेति—हे मानव ! यदि चेत्, कलेः तुरीययुगस्य, अघं दुरितसमूहम्, अपनेतुं दूरीकर्तुं, निजं जन्म स्वकीयजनुषं, सफलं सार्थकं, कर्तुम् इच्छसि अभिलषसि । गर्भस्थितः प्राणी प्रतिज्ञां करोति यत्—'यदि योन्याः प्रमुच्येऽहं ध्याये ब्रह्म सनातनम्' इति गर्भोपनिषदि । इत्येष प्रसङ्गोऽत्रानुसन्धेयः । तदा मुदितः प्रसन्नः सन्, अच्युतकेलिकलालसदङ्घ्रिसरोरुहसङ्गरुचिम् अच्युतस्य श्रीकृष्णस्य या केलिकला क्रीडाप्रकारः नर्तनादिविधिः तया, लसदङ्घ्रिसरोरुहस्य शोभायुक्तचरणकमलस्य सङ्गेन सम्पर्केण, रुचिः प्रभाः यस्य तत्, यमुनातटं कालिन्दीतीरम्, अट विहारं कुरु । तत्र यमुनाश्रीकृष्णयोः सम्पर्कात् पापौघनाश इति भावः ।

सफला—जिसके चारों चरणों में चार सगण हों, उसको **तोटक** नामक वृत्त कहते हैं ।

हे मानव ! यदि तू कलियुग के पाप समूहों को दूर कर अपने (मनुष्य) जन्म को सफल करना चाहता है तो प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण की नृत्यकला से युक्त हाव-भाव पूर्ण चरणकमलों से सुशोभित यमुना के तट पर विचरण किया करे।

र र र र
S I S S I S S I S S I S
कीर्तितेषा चतूरेफिका स्रग्विणी ।

इन्द्रनीलोपलेनेव या निर्मिता शातकुम्भद्रवालङ्कृता शोभते ।
नव्यमेघच्छविः पीतवासा हरेर्मूर्तिरास्तां जयायोरसि स्रग्विणी ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु चत्वारो रगणाः भवेयुः तत् **स्रग्विणी** नाम वृत्तम् ।

इन्द्रेति—या नव्यमेघच्छविः नवीनपयोदशोभाशालिनी, पीतवासाः हरिद्राभपीतवस्त्रलसिता, अत एव इन्द्रनीलोपलेन निर्मिता मरकतमणिरचिता, शातकुम्भद्रवालङ्कृता सुवर्णरसरञ्जिता इव शोभते विभाति, उरसि हृदये, स्रग्विणी हारयुक्ता, सा हरेः श्रीकृष्णस्य, मूर्तिः शरीरं, जयाय विजयलाभाय, आस्ताम् स्यादित्यर्थः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सफला—जिसके चारों चरणों में चार रगण हों, उसको **स्रग्विणी** नाम वृत्त कहते हैं।

बादलों के सदृश श्यामवर्ण वाले, पीताम्बरधारी नीलम मणि घटित सोने के पानी से रंजित के समान सुशोभित तथा हार (वनमाला) से विभूषित श्रीकृष्ण की मूर्ति सबके विजय (उत्कर्ष) के लिये हो।

म म य य

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ

वाणाश्वैश्छिन्ना वैश्वदेवी ममौ यौ।

अर्चामन्येषां त्वं विहायाऽमराणामद्वैतेनैकं विष्णुमभ्यर्च भक्त्या।
तत्राशेषात्मन्यर्चिते भाविनी ते भ्रातः! सम्पन्नाराधना वैश्वदेवी॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु ममौ द्वौ मगणौ यौ द्वौ च यगणौ। मगणः मगणः यगणः यगणः भवेताम्, तथा वाणाश्वैश्छिन्ना पञ्चमे सप्तमे च वर्णे यतिः स्यात् तत् **वैश्वदेवी** नाम वृत्तम्।

अर्चामिति—कश्चिद् भक्तः स्वसखायं प्रति कथयति—भ्रातः! सखे!, त्वं अन्येषाम् इतराणाम्, अमराणां सुराणाम् अर्चाम् अपचितिं, विहाय त्यक्त्वा अद्वैतेन एकाग्रबुद्ध्या, भक्त्या श्रद्धया, च एकं केवलं विष्णुं श्रीकृष्णम्, अभ्यर्च आराधय, तथोक्तं गीतायाम्—

> अनन्यांश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
> तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥

अशेषात्मनि समस्तभुवनात्मके, तत्र तस्मिन् श्रीकृष्णे—

> मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।
> मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः॥

इति भगवद्वाक्यात्सङ्गच्छते। अर्चिते पूजिते, ते तव, वैश्वदेवी सकलदेवसंहतिः, सम्पन्नाराधना कृतपूजा, भाविनी भविष्यतीति। तथोक्तं—'सर्वदेवनमस्कारः केशवम्प्रति गच्छति'। अतः विष्णोराराधने सकलदेवतासन्तुष्टिर्भवतीति भावः।

सफला—जिसके चारों चरणों में दो मगण और दो यगण हों, पाँचवें तथा सातवें वर्ण पर यति हो, उसको **वैश्वदेवी** वृत्त कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक भक्त अपने मित्र भक्त से कह रहा है। भाई ! तुम सभी देवताओं की पूजा को छोड़कर एकाग्रचित्त होकर भक्ति के साथ विष्णु (कृष्ण) भगवान् की आराधना करो। क्योंकि समस्त लोकों के आधार उस विष्णु की पूजा कर लेने पर अन्य सभी (३३ करोड़) देवताओं की पूजा हो जायगी।

स ज स स

I I S I S I I I S I I S

प्रमिताक्षरा स ज स सैः कथिता।

अमृतस्य शीकरमिवोद्गिरती रदमौक्तिकांशुलहरीच्छुरिता।
प्रमिताक्षरा मुररिपोर्भणितिर्व्रजसुभ्र्वामधिजहार मनः॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु सजससैः सश्च, जश्च, सश्च, सश्च, ते, तैः, इति द्वन्द्वः, सगणः, जगणः, सगणः, सगणः च भवेत् सा **प्रमिताक्षरा** कथिता उक्तेत्यर्थः।

अमृतस्येति—अमृतस्य पीयूषस्य शीकरम् अम्बुकणम्, 'शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः', इत्यमरः। शीकरशव्दः दन्त्यादिः तालव्यादिश्च, इव, उद्गिरन्तीव, रदमौक्तिकांशुलहरीच्छुरिता रदमौक्तिकानां दशनमुक्ताफलानाम्, अंशुलहर्या किरणसमूहेन, च्छुरिता संवलिता, प्रमिताक्षरा परिमितवर्णयुक्ता, मुररिपोः श्रीकृष्णस्य, भणितिः उक्तिः, व्रजसुभ्रुवां व्रजविलासिनीनाम्, मनः स्वान्तम्, अधिजहार स्वस्मिन्नार्कर्पितं चक्रे। पद्येऽस्मिन्नुत्प्रेक्षालङ्कारः काव्यलिङ्गञ्च। प्रत्युदाहरणम्—

प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति वहुसाधनता।
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः वहुसाधनता॥ माघः॥

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः सगण, जगण, सगण, सगण हों, उसको **प्रमिताक्षरा** वृत्त कहते हैं।

मानो अमृतकणों को बिखेरती हुई दन्तमुक्ताओं के किरणजाल से व्याप्त सूत्र के समान स्वल्पाक्षरों वाली मुरारि (श्रीकृष्ण) की सूक्ति ने व्रजवनिताओं के मन को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया।

न भ भ र

I I I S I I S I I S I S

द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तरणिजापुलिने नववल्लवीपरिषदा सह केलिकुतूहलात् ।
द्रुतविलम्बितचारुविहारिणं हरिमहं हृदयेन सदा वहे ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु नभौ नश्च भश्च तयोर्द्वन्द्वः, भरौ भश्च र तयोर्द्वन्द्वः, अर्थात् नगणः, भगणः, भगणः, रगणः च भवेत्, तद् **द्रुतविलम्बि** नाम वृत्तम् ।

तरणिजेति—तरणिजापुलिने यमुनायाः तटे, नववल्लवीपरिषदा वयस व्रजवधूसमूहेन, सह साकं, केलिकुतूहलात् क्रीडाकाङ्क्षया, द्रुतविलम्बितचा विहारिणं त्वरितमन्दगत्या रुचिरलास्यतत्परं, हरिं श्रीकृष्णम्, अहं ग्रन्थक हृदयेन हृदा, सदा सर्वदा, वहे स्मरामि इत्याशयः ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, भगण, भगण, रगण हे उसको **द्रुतविलम्बित** वृत्त कहते हैं ।

भक्त (गङ्गादास) कहता है—यमुना नदी के तट पर व्रजयुवतियों के सा विलास की इच्छा से द्रुत-विलम्ब (चञ्चल) गति से नृत्य में तत्पर श्रीकृष्ण मैं हृदय से ध्यान करता हूँ ।

न न र र
। । । । । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ

न न र र घटिता तु मन्दाकिनी ।

बलिदमनविधौ बभौ सङ्गता पदजलरुहि यस्य मन्दाकिनी ।
सुरनिहितसिताम्बुजस्रङ्निभा हरतु जगदघं स पीताम्बरः ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु ननररघटिता नश्च नश्च रश्च रश्च ए घटिता युक्ता (नगणः, नगणः, रगणः, रगणः, च) सा **मन्दाकिनी** भवति ।

बलीति—मन्दाकिनी गङ्गा, बलिदमनविधौ बलिदैत्यस्य बन्धनाव यस्य श्रीकृष्णस्य, पदजलरुहि पादपद्मे, सङ्गता मिलिता सती, सुरनिहि सिताम्बुजस्रङ्निभा सुरनिहिता देवैः प्रदत्ता, या सिताम्बुजस्रक् श्वेतकम माला, तन्निभा तया सदृशी, बभौ शुशुभे, इत्थम्भूतः सः पीताम्बरः पीतवा कृष्णः जगदघं संसारजन्यं पापं, हरतु दूरीकरोतु । प्रत्युदाहरणे—

सह शरधि निजं तथा कार्मुकं वपुरतनु तथैव संवर्मितम् ।
निहितमपि तथैव पश्यन्नसिं वृषभगतिरुपाययौ विस्मयम् ॥ भारविः ।
वति सुरभिरभाजि पुष्पश्रियामतनुतरतयेव सन्तानकः ।
तरुणपरभृतः स्वनं रागिणामतनुत रतये वसन्तानकः ॥ माघः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, नगण, रगण, रगण हों, उसको **मन्दाकिनी** छन्द कहते हैं।

बलिदानव को पाताल पहुँचाते समय जिस (श्रीकृष्ण) के तीसरे चरण कमल में लिपटी हुई गङ्गा देवताओं द्वारा चढ़ाई सफेद कमलमाला के समान शोभित हुई वह पीतवस्त्रधारी श्रीकृष्ण संसार के पापों (भवबन्धन) को दूर करें।

न य न य

। । । । S S । । । । S S

नयसहितौ न्यौ कुसुमविचित्रा।

विपिनविहारे कुसुमविचित्रा कुतुकितगोपीमहितचरित्रा।
मुररिपुमूर्तिर्मुखरितवंशा चिरमवताद्वस्तरलवतंसा॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु नयसहितौ नश्च यश्च नयौ ताभ्यां सहितौ, न्यौ नगणयगणौ च (नगणः, यगणः, नगणः, यगणः) भवेताम् तद् **कुसुमविचित्रा** नाम वृत्तम्।

विपिनेति—विपिनविहारे विहारार्थं रचिते विपिनम् उद्यानं तस्मिन् केलिकानने, कुसुमविचित्रा विविधपुष्पैः शोभिता, कुतुकितगोपीमहितचरित्रा उत्कण्ठिताभिः गोपीभिः पूजितकृत्या, मुखरितवंशा वाद्यमानवंशीवाद्या, तरलवतंसा चपलकर्णाभूषणा, मुररिपुमूर्तिः श्रीकृष्णस्य तनुः, वः युष्मान्, चिरं चिराय, अवताद् पालयतु।

सफला—जिसके चारों चरणों में नगण, यगण, नगण और यगण हों उसको **कुसुमविचित्रा** छन्द कहते हैं।

क्रीडा-कानन में विहार करते समय रंग-बिरंगे फूलों से सुशोभित श्रीकृष्ण की लीलाओं के प्रति उत्सुक व्रजललनाओं से आराधित चरित्र वाले, वंशीवादन करते एवं चपल कर्णावतंस युक्त श्रीकृष्ण आपलोगों की सदैव रक्षा करें।

न ज ज य

। । । । S । । S । । S S

इह वद तामरसं नजजा यः।

स्फुटसुषमामकरन्दमनोज्ञं व्रजललनानयनालिनिपीतम्।
तव मुसतामरसं मुरशत्रो ! हृदयतडागविकाशि ममास्तु॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु नजजाः नश्च जश्च जश्च तेषां द्वन्द्वः तथा य (नगणः, जगणः, जगणः, यगणः च) भवेत् तत् इह छन्दःशास्त्रे **तामर**स नाम वृत्तं वद ।

स्फुटेति–मुरशत्रो ! मुरारे ! श्रीकृष्णेत्याशयः, स्फुटसुषमा व्यक्तोत्तमकान्ति सा एव, मकरन्दमनोज्ञम् पुष्परसः परागेत्यर्थः, तेन मनोज्ञं मनोहरं, व्रजललन नयनालिनिपीतम् व्रजललनानां वल्लवीनां, नयनालिभिः नेत्रभ्रमरैः, निपी सोत्कण्ठं दृष्टं, तव भवतः, मुखतामरसं मुखकमलम्, मम ग्रन्थकर्तुं, हृदयतड मनः सरोवरे, विकाशि शोभितम्, अस्तु स्यादित्यर्थः । पद्येऽस्मिन् रूपकालङ्कारः

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, जगण, जगण, यगण ह उसको **तामरस** नामक छन्द कहते हैं ।

हे श्रीकृष्ण ! चारों ओर फैली हुई सुषमारूपी पराग से सुवासित, व्रजवधु के नेत्ररूपी भ्रमरों से पान किया गया अर्थात् पिपासित नेत्रों द्वारा अवलोकि आपका मुखकमल मेरे हृदय सरोवर में विकास को प्राप्त हो (शोभित हो)

न ज ज र

। । । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

भवति नजावथ मालती जरौ ।

इह कलयाऽच्युत ! केलिकानने मधुरससौरभसारलोलुपः ।
कुसुमकृतस्मितचारुविभ्रमामलिरपि चुम्बति मालतीं मुहुः ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु नजौ, जरौ, नगणः, जगणः, जगणः, रगण च भवति तत् **मालती** नाम वृत्तम् ।

इहेति—अच्युत ! श्रीकृष्ण !, कलय विलोकय, किमिति तन्निर्दिशति केलिकानने क्रीडारामे, मधुरससौरभसारलोलुपः मधुररसस्य परागस्य, सौरभसा सुरभी, लोलुपः आकृष्टः; अलिः भ्रमरः, अपि कुसुमकृतस्मितचारुविभ्रमा कुसुमकृतस्मितं पुष्पविहितमन्दहास्यं, तदेव चारुविभ्रमः मनोज्ञविलासः, यस्या ताम्, मालतीं जातिं, 'सुमना मालती जातिः' इत्यमरः । मुहुः वारं वार चुम्बति । अत्र पद्ये प्रस्तुतायां लतायाम् अप्रस्तुताया नायिकायाः प्रतीतिः त प्रस्तुते भ्रमरे अप्रस्तुतस्य नायकस्य प्रतीतेः समासोक्त्यलङ्कारः । प्रत्युदाहरणम्

अयि ! विजहीहि दृढोपगूहनं त्यज नवसङ्गमभीरु ! वल्लभम् ।
अरुणकरोद्गम एष वर्तते वरतनु ! सम्प्रवदन्ति कुक्कुटाः ।।भारविः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सफला—जिसके चारों चरणों में नगण, जगण, जगण, रगण हों, उसको **मालती** नामक वृत्त कहते हैं।

हे श्रीकृष्ण ! देखिये इस केलिकानन में फूलों के पराग के प्रति ललचाये ए भ्रमर फूलों के विकसित होने रूप मन्द हास्य वाली इस मालती लता को ार-बार चूम रहे हैं।

विशेष—यहाँ प्रस्तुत भ्रमर में अप्रस्तुत नायक की तथा प्रस्तुत मालती ता में अप्रस्तुत नायिका की प्रतीति होने से समासोक्ति अलङ्कार है।

त य त य

S S I I S S S S I I S S

त्यौ त्यौ मणिमाला छिन्ना गुहवक्त्रैः ।

प्रह्वामरमौलौ रत्नोपलक्लृप्ते जातप्रतिबिम्बा शोणा मणिमाला ।
गोविन्दपदाब्जे राजी नखराणामास्तां मम चित्ते ध्वान्तं शमयन्ती ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु त्यौ, त्यौ तगणः, यगणः, तगणः, यगणः च भवेत् तथा गुहवक्त्रैः षडक्षरैः छिन्ना **मणिमाला** भवति।

प्रह्वेति—रत्नोपलक्लृप्ते पद्मरागादिमणिशकलजटिते, प्रह्वामरमौलौ विनतसुरसमूहमुकुटे, जातप्रतिबिम्बा उत्पन्नप्रतिच्छाया, 'प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया'। इत्यमरः। अत एव शोणा रक्ताभा, मणिमाला रत्नमाल्यमिव 'माल्यं माला स्रजौ'। इत्यमरः। गोविन्दपदाब्जे श्रीकृष्णचरणकमले, नखराणां कररुहाणां, राजी ततिः, मम ग्रन्थकर्तुः चित्ते हृदये, ध्वान्तम् अज्ञानान्धकारं शमयन्ती विनाशयन्ती, आस्तां चिरं राजतामित्याशयः।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में तगण, यगण, तगण और यगण हों और ६–६ अक्षरों पर यति हो उसको **मणिमाला** छन्द कहते हैं।

पद्मराग आदि मणिसमूह से युक्त चरणानत देवताओं के मुकुटों में प्रतिबिम्बत श्रीकृष्ण के चरण-कमलों की रक्ताभ नखपंक्ति मेरे हृदय में अज्ञान-अन्धकार का विनाश करती हुई सदा विराजमान रहे।

म भ स म

S S S S I I I I S S S S

मो भः स्मौ चेज्जलधरमालाऽब्ध्यन्त्यैः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

या भक्तानां कलिदुरितोत्तप्तानां तापच्छेदे जलधरमाला नव्या
भव्याकारा दिनकरपुत्रीकूले केलीलोला हरितनुरव्यात्सा वः

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु मो भः स्मौ मगणः भगणः सगणः मगणः भवेत् तथा अब्ध्यन्त्यैः चतुर्भिः अष्टभिः च अक्षरैः यतिः चेत् तदा **जलधरमा**[ला] नामकं वृत्तम् ।

या भक्तानामिति–या श्रीकृष्णमूर्तिः, कलिदुरितोत्तप्तानां कलिकलुषसन्त[प्त] मानसानां भक्तानां, तापच्छेदे सन्तापापनोदे, नव्या अभिनवा, जलधरमाला मे[घ] पङ्क्तिः, सा मूर्तिः, दिनकरपुत्रीकूले सूर्यतनयातटे यमुनातीरे केलीलोला विला[स] चपला, भव्याकारा मङ्गलदायिनी, हरितनुः श्रीकृष्णमूर्तिः, 'स्त्रियां मूर्तिस[्त]नुस्तनूः' इत्यमरः । वः युष्मान्, अव्यात् रक्षतु । पद्येऽस्मिन् रूपकालङ्कारः ।*

---

*अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

न न म य
। । । । । । S S S । S S
वसुयुगविरतिर्नौ म्यौ **पुटो**ऽयम् ॥१॥

न भ न य
। । । S । । । । । । S S
द्रुतपदं भवति नभनयाश्चेत् ॥ २॥

न भ ज र
। । । S । S । । । S । S । S
भुवि भवेन्नभ जरैः **प्रियवंदा**॥३॥

म म म म
S S S S S S S S S S S S
सर्वे मा यस्मिन् सोऽयं **विद्याधारः**स्यात्॥[४]॥

त भ ज र
S S । S । । । S । S । S
धीरैरभाणि **ललिता** नभौ जरौ ॥ ५ ॥

ज र ज र
। S । S । S । S । S । S
लघुर्गुरुर्वदन्ति **पञ्चचामरम्** ॥ ६॥

न न भ र
। । । । । । S । । S । S
ननभरसहिता गदि**तोज्ज्वला** ॥ ७ ॥

त त त त
S S । S S । S S । S S ।
सारङ्गसंज्ञं समस्तैस्तकारैस्तु ॥ ८॥

न ज भ य
। । । । S । S । । । S S
इह **नवमालिका** नजभयैः स्यात् ॥ ९ ॥

ज ज ज ज
। S । । S । S । । S ।
समस्तजमीरथ **मौक्तिकदाम** ॥१[०]॥

भ म स स
S । । S S S । । S । । S
पञ्चमुनी म्भौ स्यात् सयुगा **ललना** ॥११॥

म भ भ भ
S । । S । । S । । S । ।
मोटकनाम समस्तभमीरय ॥१[२]॥

न न म र
। । । । । । S S S S । S
ललितमभिहितं नौ म्रौ नामतः ॥१३॥

न न न न
। । । । । । । । । । । ।
रविलघु **तरलनयन**मिह ॥ १[४]॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सफला—जिसके चारों चरणों में मगण, भगण, सगण, मगण हों, चार तथा अन्तिम आठ अक्षरों में यति हो, उसको **जलधरमाला** छन्द कहते हैं ।

जो (श्रीकृष्ण की) मूर्ति, कलिकलुषों से सन्तप्त भक्तों के सन्ताप को दूर करने के लिये नवीन मेघमाला के समान है, यमुना नदी के तट पर रासलीला में तत्पर मनमोहिनी श्रीकृष्ण की वह मूर्ति आप लोगों की रक्षा करे ।

अतिजगती (त्रयोदशाक्षरा वृत्तिः)

म न ज र ग

S S S । । । । S । S । S S

त्र्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम् ॥ १३ ॥

गोपीनामधरसुधारसस्य पानैरुत्तुङ्गस्तनकलशोपगूहनैश्च ।
आश्चर्यैरपि रतिविभ्रमैर्मुरारेः संसारे मतिरभवत्प्रहर्षिणीह ॥१३॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु मनजरगाः मश्च नश्च जश्च रश्च गश्च ते, द्वन्द्वः; अर्थात् मगणः, नगणः, जगणः, रगणः, गुरुः च भवेत्, तथा त्र्याशाभिः त्रिभिः दशभिः च वर्णैः यतिः स्यात्सेयम् **प्रहर्षिणी** इति ।

त्र्यशाभिरिति—इह भूलोके, गोपीनां व्रजवधूनाम्, अधरसुधारसस्य अधरामृतस्य, पानैः सञ्चूषणैः, उत्तुङ्गस्तनकलशोपगूहनैः पीनस्तनघटपरिरम्भणैः, आश्चर्यैः नदनवैः अत एव विस्मयोत्पादकैः, रतिविभ्रमैः रमणप्रकारैः, च, मुरारेः मुधुसूदनस्य श्रीकृष्णस्य, प्रहर्षिणी प्रकृष्टोल्लासदायिनी, मतिः बुद्धिः, अभवत् बभूवेत्यर्थः ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः मगण, नगण, जगण, रगण और एक गुरु वर्ण हों तथा तीन एवं दस अक्षरों में यति हो, उसको **प्रहर्षिणी** छन्द कहते हैं ।

इस भूलोक में गोपियों के अधरसुधारसपान से, उनके स्तनों के आलिंगन से तथा आश्चर्यजनक रति-क्रीडाओं से श्रीकृष्ण की वुद्धि और भी अधिक आनन्दों की प्राप्ति के लिये प्रवृत्त हुई ॥ १३ ॥

त्रयोदशाक्षरावृत्तेः अष्टौ भेदाः—

ज भ स ज ग

। S । S । । । । S । S । S

जभौ सजौ गिति रुचिरा चतुर्ग्रहैः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुनातु वो हरिरतिरासविभ्रमी परिभ्रमन् व्रजरुचिराङ्गनान्तरे।
समीरणोल्लसितलतान्तरालगो यथा मरुत्तरलतमालभूरुहः ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु जभौ सजौ गिति, जगणः भगणः सगणः जगणः गुरु च वर्णः, भवेत् तथा चतुर्ग्रहैः चतुर्भिः नवभिः वर्णैः यतिः स्यात् तत् **रुचिरा** नाम वृत्तम्।

पुनात्विति—अतिरासविभ्रमी रासक्रीडायाम् अतिशयविहरणशीलः, हरिः साक्षाद् विष्णुरूपः श्रीकृष्णः, समीरणोल्लसितलतानां मन्दपवनान्दोलितव्रततीनाम् अन्तरालगः मध्यभागस्थितः, मरुत्तरलः पवनचपलः, तमालाभिधतरुः, यथा तथा व्रजस्य गोकुलस्य, रुचिराङ्गनान्तरे रमणीयरमणीमध्ये, परिभ्रमन् सविलासं नृत्यन्, वः युष्मान्, पुनातु निष्कल्मषान् विदधातु। प्रत्युदाहरणम्—

अभून्नृपो विबुधसखः परन्तपः श्रुतान्वितो दशरथ इत्युदाहृतः।
गुणैर्वरं भुवनहितच्छलेन यं सनातनः पितरमुपागतः स्वयम् ॥ भट्टिः ॥

सफला–जिसके चारों चरणों में जगण, भगण, सगण, जगण और एक गुरु वर्ण हों, चार तथा नौ वर्णों में यति हो, उसको **रुचिरा** नामक छन्द कहते है।

रासलीला में अत्यन्त विहरणशील, साक्षाद् विष्णुरूपी श्रीकृष्ण, मन्दपवन से लहराती हुई लताओं के बीच में स्थित वायु से चञ्चल तमालवृक्ष के सदृश, व्रज की रमणीय रमणियों के बीच में हाव-भाव पूर्ण नृत्य करते हुए आप सबके पापों का विनाश करें।

म त य स ग
SSS S S I I S S I I S S

वेदै रन्ध्रैर्म्तौ यसगा मत्तमयूरम्।

लीलानृत्यन्मत्तमयूरध्वनिकान्तं नृत्यन्नीपामोदिपयोदानिलरम्यम्।
रासक्रीडाकृष्टमना गोपवधूभिः कंसध्वंसी निजनवृन्दावनमाप ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु म्तौ यसगाः मगणः, तगणः, यगणः, सगणः, गुरुः च भवेत्, वेदैः चतुर्भिः तथा रन्ध्रैः नवाक्षरैः यतिः स्यात्, तद् **मत्तमयूरम्** नाम वृत्तम्।

लीलेति–गोपवधूभिः व्रजवनिताभिः सह, रासलीलाप्रेरितहृदयः कंसध्वंसी कंसरिपुः, लीलानृत्यन्मत्तमयूरध्वनिकान्तं लीलया हाव-भावाभ्यां नृत्यतां नर्तनम् आचरतां, मत्तमयूराणां प्रमत्तबर्हिणां, ध्वनिभिः केकारवैः, कान्तं कमनीयं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नीपामोदी कदम्बपुष्पसुगन्धिसंपृक्तः, 'नीपप्रियककदम्बास्तु हरिप्रिये' । इत्यमरः । पयोदानिलः मेघसंसर्गजशीतवायुः तेन रम्यं मनोहारि, निर्जनवृन्दावनं सर्वथा एकान्तं वृन्दारण्यम्, नृत्यन् सविलासं पादक्षेपं कुर्वन्, आप गतवान् । प्रत्युदाहरणम्—

हा तातेति क्रन्दितमाकर्ण्य विषण्णस्तस्यान्विष्यन् वेतसमूढं प्रभवं सः ।
शल्यप्रोतं वीक्ष्य सकुम्भं मुनिपुत्रं तापादन्तः शल्य इवासीत्क्षितिपोऽपि ।।रघुवंशे।।

सफला—जिसके चारों चरणों में मगण, तगण, यगण, सगण और एक गुरु वर्ण हों तथा चार एवं नौ अक्षरों में यति हो, उसको **मत्तमयूर** नामक छन्द कहते हैं ।

रासलीला में गोपियों द्वारा आकृष्ट चित्त कंस के विनाशक श्रीकृष्ण, हाव-भाव पूर्वक नृत्य करते हुए (घनश्याम को देखकर) मदमत्तमयूरों के केकारव से रमणीय कदम्बकुसुमों के सुवास से सुवासित, बादलों के सम्पर्क से शीतल पवन से आनन्ददायी, सब प्रकार से एकान्त वृन्दावन में नाचते हुए (श्रीकृष्ण) पहुँचे ।

न न स स ग
।।।।।।।।ऽ।।ऽ ऽ
नयुगलसयुगलगैरिति चण्डी ।

जयति दितिजरिपुताण्डवलीला कुपितकवलकरकालियमौलौ ।
चरणकमलयुगचापलचण्डी पदनखरुचिजितभोगमणिश्रीः ।।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु नयुगलसयुगलगैः नयुगलं नगणद्वयं, सयुगलं सगण द्वयं गश्च तेषां द्वन्द्वः एभिः युतं वृत्तं **चण्डी** नामकं भवति ।

जयतीत—कुपितकवलकरकालियमौलौ स्वगृहागमनात् कुपितस्य, कवल-करस्य कवलं ग्रासं तत् करस्य आददानस्य, कालियस्य एतन्नामकस्य सर्पविशेषस्य मौलौ शिरसि, अर्थात् यदा श्रीकृष्णः कालियदमनार्थं तत्र गतः तदाः सः तद्भक्ष-णाय मुखं व्यादात् पदनखरुचिजितभोगमणिश्रीः श्रीकृष्णस्य चरणनखानां या रुचिः कान्तिः तया जिता मन्दीकृता भोगमणिश्रीः कालियशिरस्थमणिशोभा, चरणकमलयुगचापलचण्डी पादरक्तोत्पलद्वयपरिवर्तनभयदा, दितिजरिपोः दानव-शत्रोः श्रीकृष्णस्य, ताण्डवलीला नर्तनविभ्रमः, जयति सर्वोत्कर्षेण विराजते ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, नगण, सगण, सगण और एक गुरु वर्ण हों, उसको **चण्डी** नामक वृत्त कहते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपने घर आये अपरिचित व्यक्ति को देखकर क्रोध से उसको निगल जा[ने] के लिये मुख खोले हुए कालिय सर्प के सिर पर चढ़कर (श्रीकृष्ण) अपने चर[ण] नख कान्ति से फण में स्थित मणि-शोभा को तिरस्कृत कर दोनों चरणकमल[ों] की चपलता से भयावह श्रीकृष्ण का नृत्य लोकोत्तर (अनुपम) था।

स　ज　स　ज　ग

।।S. ।S।।।S।S।S

सजसा जगौ च यदि मञ्जुभाषिणी[1]।

अमृतोर्मिशीतलकरेण लालयंस्तनुकान्तिरोचितविलोचनो हरे !
नियतं कलानिधिरसीति बल्लवी मुदमच्युते व्यधित मञ्जुभाषिणी[2]।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु सजसा जगौ सगणः, जगणः, सगणः, जगण[ः] गुरु च वर्णः भवेत्, तद् **मञ्जुभाषिणी** नाम वृत्तम्।

अमृतोर्मीति—हरे ! भगवन् श्रीकृष्ण ! तनुकान्तिरोचितविलोचनः तनु[ः] कान्त्या देहप्रभया, रोचितः विलोचनः साभिलाषीकृतसर्वनेत्रः, अमृतोर्मिशीतल[-] करेण पीयूषतरङ्गसमशिशिरहस्तैः, किरणैः वा, लालयन् सस्नेहं परिस्पृशन्[्] अस्मानिति भावः, नियतं ध्रुवं, कलानिधिः चन्द्रमाः असि, इति एवम्प्रकारेण मञ्जुभाषिणी प्रियालापिनी, वल्लवी गोपवनिता, अच्युते श्रीकृष्णे तन्मनसि मुदं प्रीतिं, व्यधित जनयामास। पद्येऽस्मिन् काव्यलिङ्गमलङ्कारः।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में सगण, जगण, सगण, जगण और ए[क] गुरु वर्ण हों, उसको **मञ्जुभाषिणी** छन्द कहते हैं।

हे हरे (श्रीकृष्ण) ! आप अपने शरीर की सुन्दरता से व्रजवासी जनों [के] नेत्रों को आकृष्ट कर लेते हैं और अमृत लहरों के समान शीतल करों (हाथ[ों] या किरणों) से स्नेह सहित हमको स्पर्श करते हैं। अतः आप निःसन्दे[ह] (आह्लादक तथा शीतस्पर्श होने के कारण) चन्द्रमा हैं, इस तरह मधुरभाषिणी गोपिका ने श्रीकृष्ण के मन को आनन्दित किया।

न　न　त　त　ग

।।।।।।SS।SS।S

ननततगुरुभिश्चन्द्रिकाश्वर्तुभिः।

---

१. सुनन्दिनीति नामभेदो ग्रन्थान्तरे।

२. तनुकान्तिचोरितविलोचनः। इति पाठभेदः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शरदमृतरुचश्चन्द्रिकाक्षालिते दिनकरतनयातीरदेशे हरिः ।
विहरति रभसाद्वल्लवीभिः समं त्रिदिवयुवतिभिः कोऽपि देवो यथा ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु ननततगुरुभिः नगणः, नगणः, तगणः, तगणः गुरुः च वर्णः भवेत् तथा अश्वऋतुभिः अश्वैः सप्तभिः, ऋतुभिः षडक्षरैः यतिः स्यात्, तत् **चन्द्रिका** नाम वृत्तम् ।

शरदमृतेति—हरिः श्रीकृष्णः, शरदमृतरुचः शारदीयचन्द्रमसः चन्द्रिकाभिः क्षालिते निर्मलीकृते, दूरीकृतान्धकारेत्याशयः, दिनकरतनयातीरदेशे यमुनातट-भूमौ, वल्लवीभिः गोपाङ्गनाभिः समं साकं, त्रिदिवयुवतिभिः सुरवनिताभिः, समं, कोऽपि देवः अन्यतमः सुर इव, रभसात् हर्षातिरेकात्, विरहति विहारं करोतीति । प्रत्युदाहरणम्—

इह दुरधिगमैः किञ्चिदेवागमैः सततमसुतरं वर्णयन्त्यन्तरम् ।
अमुमतिविपिनं वेद दिग्व्यापिनं पुरुषमिव परं पद्मयोनिः परम् ॥ भारविः ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में नगण, नगण, तगण, तगण तथा गुरु वर्ण हों तथा सात और छः अक्षरों में यति हो, उसको **चन्द्रिका** नामक छन्द कहते हैं ।

श्रीकृष्ण शरत् कालीन चन्द्रमा की कान्ति से प्रभावित यमुना नदी के तट पर गोपियों के साथ विहार कर उस प्रकार प्रसन्न हो रहे हैं, जिस प्रकार अप्सराओं के साथ विहार करने पर देवता प्रसन्न होते हैं ।

स ज स स ग

। । S । S । । । S । । S S

सजसा सगौ च कथितः कलहंसः[1] ।

यमुनाविहारकुतुके कलहंसो व्रजकामिनीकमलिनीकृतकेलिः ।
जतचित्तहारिकलकण्ठनिनादः प्रमदं तनोतु तव नन्दतनूजः[2] ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु सजसाः सगणः, जगणः, सगणः, सगौ सगणः, गुरुः च भवेत्, तत् **कलहंसः** नाम वृत्तम् ।

यमुनेति—यमुनाविहारकुतुके सूर्यतनयाजलक्रीडाकौतुके, 'कौतूहलं कौतुकञ्च कुतुकञ्च कुतूहलम्' इत्यमरः । व्रजकामिनीकमलिनीकृतकेलिः व्रजकामिन्यः व्रजसुन्दर्यः एव कमलिन्यः पद्मिन्यः, तासु कृतकेलिः रचितक्रीडः,

१. 'उत्पलिनीति' केचित् । २. 'सिंहनादः' क्वापि ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जनचित्तहारि-कलकण्ठनिनादः जनचित्तहारी मानवमनमोहकः, यः कलकण्ठ निनादः मधुरकलरवः, कलहंसः हंसविशेषः, नन्दतनूजः नन्दतनयः श्रीकृष्ण तव भवतः, प्रमदम् आनन्दातिशयं, तनोतु विस्तारयतु। पद्येऽस्मिन्–व्रजकामिनीकमलिनीत्यत्र रूपकालङ्कारः।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, जगण, सगण, सगण और एक गुरु वर्ण हों उसको **कलहंस** नामक छन्द कहते हैं।

अपने घर में आये हुए व्यक्ति को देखकर कुपित कालियनाग मुख खोलकर श्रीकृष्ण को खाने के लिए ज्यों ही तैयार हुआ उसी समय उसके फण पर चढ़ गये और अपने चरणनखों की कान्ति से सर्पमणि की कान्ति को हतप्रभ कर (उस समय) दैत्यों के विनाशक श्रीकृष्ण की नृत्यलीला आप सबको आनन्दित करे।

स ज स ज ग

। । ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ । ऽ

सजसा जगौ च भवति प्रबोधिता[1]।

शयिता मृषा चटुलमाननिद्रया रतिकेलिकुञ्जनिलये विलासिनी।
मुरवैरिणा वदनचुम्बनादिना स्मितमाततान सपदि प्रबोधिता[2]॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु सजसाः सगण-जगण-सगणाः तथा जगौ जगणः एकः गुरु वर्णः च भवेत्, तत् **प्रबोधिता** नाम वृत्तम्।

शयितेति—मृषा वितथं, 'मृषा मिथ्या च वितथे' इत्यमरः। चटुलमाननिद्रया चपलप्रणयरोषस्वापेन, रतिकेलिकुञ्जनिलये रमणहेतुकविहारलतागृहे, शयिता निद्राणा, विलासिनी काचिद्व्रजवधूटी, मुरवैरिणा श्रीकृष्णेन, वदनचुम्बनादिना मुखचुम्बनादिव्यवहारेण, सपदि त्वरितं, प्रबोधिता विनिद्रीकृता, सती, स्मितम् मन्दहास्यम्, आततान अकरोदित्यर्थः। सपदि निर्माना जातेत्याशयः।

सफला—जिसके चारों चरणों में सगण, जगण, सगण, जगण और एक गुरुवर्ण हों, उसको **प्रबोधिता** नामक छन्द कहते हैं।

विहार के लिये निर्मित लतामण्डप में क्षणभंगुर प्रणय कोप से झूठे ही सोने का स्वांग रची हुई किसी विलास करने की इच्छुक गोपी को श्रीकृष्ण ने

---

१. मञ्जुभाषिणीप्रबोधितयोरेकलक्षणत्वादिदं लक्षणान्तरकरणं प्रामादिकमिति।
२. 'श्रवणखर्जनादिना' इत्यपि पाठभेदः क्वचित्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुख चुम्बन द्वारा जगा दिया और वह तत्काल उठकर मुस्कुराने लगी, अर्थात् उसका भानभङ्ग हो गया।

विशेष—प्रस्तुत छन्द के पूर्व ग्रन्थकार ने 'मञ्जुभाषिणी' का भी समावेश इस ग्रन्थ में किया है जब प्रबोधिता और मञ्जुभाषिणी के लक्षण में कोई अन्तर नहीं है। अतः इसको ग्रन्थकार का प्रमाद ही कहा जायगा।

न ज ज र ग

। । । । S । । S । S । S S

भवति मृगेन्द्रमुखं नजौ जरौ गः

गुरुभुजवीर्यभरं हरिं मदान्धा युधि समुपेत्य न दानवा जिजीवुः।
क्षुधितमृगेन्द्रमुखं मृगा उपेत्य क्व नु खलु बिभ्रति जीवनस्य योगम् ?॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु नजौ जरौ गः नगणः, जगणः, जगण, रगणः, गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **मृगेन्द्रमुखं** नाम वृत्तम्।

गुरुभुजेति—मदान्धाः गर्वेण दृष्टिशून्याः, दानवाः दैत्याः, युधि आजौ, गुरुभुजवीर्यभरं महद्बाहुशक्त्यतिशयः यस्य तं, हरिं श्रीकृष्णं, समुपेत्य प्राप्य, न नहि, जिजीवुः प्राणान् धारितवन्तः, अर्थात् गतासवः समभवन्। इदमेव प्रकारान्तरेण निर्दिशति—मृगाः हरिणादयो वन्यपशवः क्षुधितमृगेन्द्रमुखं बुभुक्षितसिंहसम्मुखम्, उपेत्य गत्वा, क्व नु खलु जीवनस्य स्वकीयजीविताशायाः, योगं संयोगं, बिभ्रति धारणं कुर्वन्ति अर्थात् न केऽपीत्याशयः।*

---

* अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

य म र र ग
। S S S S S S । S S । S S
यमौ रौ विख्याता **चञ्चरीकावली** गः॥१॥

य य य य ग
। S S । S S । S S । S S S
इदं **कन्दुकं** यत्र येभ्यश्चतुर्भ्यो गः॥५॥

न स र र ग
। । । । । S S । S S । S S
नसरयुगगैश्चन्द्ररेखर्तुलोकैः ॥२॥

ज स त स ग
। S । । । S S S । । । S S
उपस्थितमिदं ज्सौ त्सौ सगुरुकं चेत् ॥३॥

ज त स ज ग
। S । S S । । । S । S । S
जतौ सजौ गो भवति **मञ्जुहासिनी**॥४॥

त भ स ज ग
S S । S । । । । S । S । S
एते क्रमात्तभसजसंज्ञका गणा
गश्चान्ततो यदि निहितो महीपते !।
वेदैर्ग्रहैश्च भवति यतिश्च शोभना
नागाधिपो वदति तथा **प्रभावतीम्**॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सफला—जिसके चारों चरणों में नगण, जगण, जगण, रगण और एक गुरु वर्ण हों उसको **मृगेन्द्रमुख** नामक छन्द कहते हैं।

अपने बल-पराक्रम के मद से उन्मत्त दानव युद्धभूमि में लोकोत्तर सामर्थ्य युक्त भगवान् श्रीकृष्ण के सामने पहुँचकर जीवित नहीं रह सके। जैसे मृग आदि जंगली पशु भूखे सिंह के सामने पड़कर कहीं अपने जीवन का त्राण नहीं पाते अर्थात् मार दिये जाते हैं, उसी प्रकार श्रीकृष्ण के सामने आये हुए दानवों की स्थिति हुई।

शर्करी (चतुर्दशाक्षरा वृत्तिः)।

म गग न न म

S S S S S I I I I I I S S S

मो गौ नौ मश्चेच्छरनवभिरसम्बाधा ॥१४॥

वीर्याग्नौ येन ज्वलति रणवशात्क्षिप्ते दैत्येन्द्रे जाता धरणिरियमसम्बाधा।
धर्मस्थित्यर्थं प्रकटिततनुसम्बन्धः साधूनां बाधां प्रशमयतु स कंसारिः।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमशः मगणः, द्वौ गुरुवर्णौ, नगणः, नगणः मगणः च भवेत् पञ्चभिः नवभिः च अक्षरैः यतिः स्यात्, तत् **असम्बाधा** नाम वृत्तम्।

वीर्याग्नाविति—येन श्रीकृष्णेन, रणवशात् युद्धं कृत्वा, ज्वलित प्रदीप्ते वीर्याग्नौ शक्तिरूपे वह्नौ, दैत्येन्द्रे कंसे, क्षिप्ते पातिते सति, इयं धरणिः भूमिः असम्बाधा आधिव्याधिरहिता, जाता बभूवेत्याशयः धर्मस्थित्यर्थं धर्मस्य रक्षार्थं प्रकटिततनुसम्बन्धः उत्पादितशरीरपरिग्रहः येन तादृशः, निर्गुणोऽपि सगुणरूपं दधानः स प्रसिद्धः, कंसारिः श्रीकृष्णः, साधूनां महापुरुषाणां, बाधां दुःखं प्रशमयतु दूरीकरोतु।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः मगण, दो गुरुवर्ण, नगण, नगण मगण हों और पाँच-नौ अक्षरों में यति हो, उसको **असम्बाधा** नामक छन्द कहते हैं।

जिस भगवान् श्रीकृष्ण ने युद्ध की रचना कर अपनी प्रज्वलित प्रतापरूपी अग्नि में दैत्यराज कंस को भस्मकर के इस भारतभूमि को सब प्रकार से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निरुपद्रव कर दिया, धर्म की पुनः स्थापना के लिये जिन्होंने श्रीकृष्ण रूप शरीर को धारण किया, ऐसे कंसारि (श्रीकृष्ण) सज्जनों के कष्टों को दूर करें।

त भ ज ज ग ग

SSI SII ISI ISI SS

ज्ञेयं वसन्ततिलकं तभजा जगौ गः।

फुल्लं वसन्ततिलकं तिलकं वनाल्या
लीलापरं पिककुलं कलमत्र रौति।
वात्येष पुष्पसुरभिर्मलयाद्रिवातो
यातो हरिः स मथुरां विधिना हताः स्मः[1] ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु तभजा जगौ गः अर्थात् तगणः, भगणः, जगणः, जगणः तथा द्वौ गुरुवर्णौ भवेतां तत् **वसन्ततिलकं** नाम वृत्तम्।

फुल्लमिति—वनाल्याः काननपङ्क्तेः, तिलकं विशेषकरूपं, वसन्ततिलकम् ऋतुसार्वभौमस्य तिलकं क्षुरकवृक्षपुष्पं, 'तिलकः क्षुरकः श्रीमान्'। इत्यमरः। फुल्लं विकसितम्, अत्र वसन्ताऽऽख्ये काले, लीलापरं विहारानुरक्तं पिककुलं परभृतसमूहः, कलम् अस्फुटमधुरं, यथा तथा 'ध्वनौ तु मधुराऽस्फुटे, कलः'। इत्यमरः। रौति कूजतीत्याशयः, पुष्पसुरभिः कुसुमसौरभेण आनन्ददायकः, मलयाद्रिवातः दक्षिणदेशस्थमलयगिरिसमीरः, वाति शनैः शनैः वहति। इत्थं सर्वविधसौख्यदायकं वस्तु अत्र सन्निहितं वर्तते। सः सकलजनमनोहरः, हरिः श्रीकृष्णः, मथुरां वसुदेवगृहे, यातः गतः, अतः वयं वृन्दावनवासिनः, विधिना भाग्येन, हताः क्लेशिताः स्म इति। विरहविधुरव्रजवल्लवीनाम् इयमुक्तिः।

विशेष—छन्दःशास्त्रप्रवर्तकैः प्राक्तनैराचार्यैः वसन्ततिलकवृत्तस्य नामान्तराणि इत्थमाम्नातानि—

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौगः, सिंहोन्नतेयमुदिता मुनिकाश्यपेन।
उद्धर्षिणीति गदिता मुनिसैतवेन, रामेण सेयमुदिता मधुमाधवीति ॥

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरुवर्ण हों, उसको **वसन्ततिलक** नामक छन्द कहते हैं।

वनपंक्ति (रूपीस्त्री) के माथे पर तिलक की भांति तिलक-पुष्प खिला है, क्रीड़ा में आसक्त कोकिल समूह मधुर कलरव कर रहा है और यह सुगन्धित

1. 'सिंहोद्धता' क्वापि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मलय पवन बह रहा है। उपर्युक्त सभी सुखद उपकरण उपस्थित हैं, किन्तु ह लोगों (वृजवासियों) का दुर्भाग्य है कि ऐसे समय में श्रीकृष्ण (हम सब छोड़कर) मथुरा (वसुदेव के घर) चले गये हैं, अतः उन्होंने हमको निरा कर डाला। अर्थात् उनके विरह से हम निष्प्राण हो गयी हैं।

न न र स ल ग

। । । । । । ऽ । । । । ऽ । ऽ

ननरसलघुगैः स्वरैरपराजिता।

यदनवधिभुजप्रतापकृतास्पदा, यदुनिचयचमूः परैरपराजिता
व्यजयत समरे समस्तरिपुव्रजं, स जयति जगतां गतिर्गरुडध्वजः

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु ननरसलघुगैः नगणः, नगणः, रगणः, सगण एकः लघुः, एकः गुरुः च भवेत् तत् **अपराजिता** नाम वृत्तम्।

यदिति—यस्य श्रीकृष्णस्य, अनवधिभुजप्रतापकृतास्पदा अनवधौ सीमारहि अपारे, भुजप्रतापे बाहुबले, कृतं विहितम् आस्पदं स्थितिः यया सा तथोक्ता, अ एव परैः रिपुभिः, अपराजिता अपराभूता, यदुनिचयचमूः यादवानां सेना, स आहवे, समस्तम् अखिलं, रिपुव्रजं शत्रुसमूहं, व्यजयत जितवतीत्यर्थः, जग भुवनानां, गतिः आश्रयस्थानं, स सुविदितः, गरुडध्वजः विष्णोरवतारस्वरू श्रीकृष्णः, जयति सर्वोत्कर्षेण वर्ततेतमाम्।

सफला—जिसके चारों चरणों में नगण, नगण, रगण, सगण, एक ल और एक गुरु वर्ण हों, उसको **अपराजिता** छन्द कहते हैं।

जिस श्रीकृष्ण के निःसीम बाहुबल के प्रताप से यादवों की सेना ने अ समस्त शत्रुओं को जीता, तीनों लोकों के आश्रयस्थान, सुप्रसिद्ध, गरुड़वाहनवा विष्णु के अवतार स्वरूप भगवान् श्रीकृष्ण की जय हो।

न न भ न ल ग

। । । । । । ऽ । । । । । । ऽ

ननभनलगिति प्रहरणकलिका।

व्यथयति कुसुमप्रहरण! कलिका, प्रमदवनभवा तव धनुषि तत
विरहविपदि मे शरणमिह ततो, मधुमथनगुणस्मरणमविरतम्

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु ननभनलगिति नगणः, नगणः, भग नगणः, लघुः, गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **प्रहरणकलिका** नाम वृत्तम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यथयतीति–कुसुमप्रहरण ! पुष्पसायक ! कामदेवेत्यर्थः, 'शम्बरारिर्मनशिजः कुसुमेषुरनन्यजः'। इत्यमरः। तव भवतः, धनुषि कार्मुके, तता वितता, आरोपितेत्यर्थः, प्रमदवनभवा अन्तःपुरोद्यानसञ्जाता, कलिका कोरकः, व्यथयति उद्वेजयति, मामित्यन्वयः ततः तस्माद् हेतोः, इह अस्यां, विरहविपदि वियोग-रूपकष्टे, अविरतं सततं, मधुमदनस्य मधुसूदनस्य श्रीकृष्णस्य, गुणस्मरणं सद्गुण-चिन्तनं, ध्यानमेव, मे मम ग्रन्थकर्तुः, शरणम् आश्रयस्थानमस्तीति भावः। कस्याश्चित् कृष्णविरहविह्वलाया गोपवनिताया इयमुक्तिः।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, नगण, भगण, नगण, लघु और गुरुवर्ण हों, उसको **प्रहरणकलिका** छन्द कहते हैं।

किसी विरहिणी गोपी का यह कथन है—हे कामदेव ! बाण के रूप में आपके धनुष पर चढ़ी हुई रनिवास के वगीचे में उत्पन्न फूल की कलिका मेरे हृदय को पीड़ित कर रही है। इसलिये इस विरहजनित विपत्ति की स्थिति में निरन्तर श्रीकृष्ण का गुणानुवाद (ध्यान) मात्र ही मेरी रक्षा का साधन है। क्योंकि भगवत् स्मरण सब प्रकार की विपत्तियों को दूर करता है।

म त न म ग ग

ऽऽ ऽऽऽ।।।।।ऽऽऽ ऽऽ

मात्तो नो मो गौ यदि गदिता वासन्तीयम्।

भ्राम्यद्भृङ्गीनिर्भरमधुरालापोद्गीतैः
श्रीखण्डाद्रेरद्भुतपवनैर्मन्दान्दोला।
लीलालोला पल्लवविलसद्धस्तोल्लासैः
कंसारातौ नृत्यति सदृशी वासन्तीयम्॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु मात्तो नो मो गौ मगणः, तगणः, नगणः, मगणः, गुरुः, गुरुः च भवेत्, तद **वासन्ती** नाम वृत्तम्।

भ्राम्यदिति—कंसारातौ कंसशत्रौ श्रीकृष्णे, नृत्यति नृत्यं कुर्वति सति, श्रीखण्डाद्रेः मलयगिरेः, अद्भुतपवनैः विस्मयजनकवायुभिः, चन्दनस्पर्शात् तत्र अद्भुतत्वम्, मन्दान्दोला मन्दः स्वल्पः आन्दोलः चलनं यस्याः सा तथोक्ता, भ्राम्यद्भृङ्गीनिर्भरमधुरालापोद्गीतैः भ्राम्यन्तीनां परिभ्रमणशीलानां, भृङ्गीणां भ्रमरवनितानां, निर्भरैः अत्यधिकैः, मधुरालापैः कर्णसुखदगुञ्जनैरेव, उद्गीतैः गीतिभिः संयुता लीलालोलाः क्रीडाभिः चपलाः पल्लवाः किसलयाः एव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विलसन्तः शोभां प्राप्नुवन्तः, हस्तोल्लासाः उल्लसितहस्तैः युक्ता, इयं वासन्ती माधवीलता तत्तुल्या अभूदित्यर्थः ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, तगण, नगण, मगण और दो गुरु वर्ण हों, उसको **वासन्ती** नामक छन्द कहते हैं ।

यमुना की कछारों के समीप जब श्रीकृष्ण नृत्य कर रहे थे, उस समय यह वासन्ती लता इधर-उधर उड़ती हुई भ्रमरियों की गुनगुनाहट को लेकर मानो गा रही थी, मलयाचल की सौरभपूर्ण वायु से यह अठखेलियां लेने लगी जो नृत्य में स्वाभाविक है । इस प्रकार हिलने-डुलने से इसके पत्ते ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानों यह अपने हाथों को नचा रही हो । इस पद्य में **उत्प्रेक्षाऽलंकार** है।

म स म भ ग ग

ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ

द्विःसप्तच्छिदि लोला म्सौ म्भौ गौ चरणे चेत् ।

मुग्धे ! यौवनलक्ष्मीर्विद्युद्विभ्रमलोला,
त्रैलोक्याद्भुतरूपो गोविन्दोऽतिदुरापः ।
तद् वृन्दावनकुञ्जे गुञ्जद्भृङ्गसनाथे,
श्रीनाथेन समेता स्वच्छन्दं कुरु केलिम् ।।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु म्सौ म्भौ गौ मगणः, सगणः, मगणः, भगणः, गुरुद्वयं च भवेत्, तत् **लोला** नाम वृत्तम् । अत्र सप्तभिः सप्तभिः च वर्णैः यतिः भवति ।

मुग्धे इति–काचित् सखी स्वां मुग्धां सखीम् इत्थं प्रतिबोधयन्ती कथयति-मुग्धे ! सरले !, मुह् वैचित्त्ये धातोः क्तप्रत्ययान्तमिदं रूपम् । यौवनलक्ष्मीः तरुणावस्थायाः शोभा, विद्युद्विभ्रमलोला तडिद्विलासचञ्चला, त्रैलोक्याद्भुतरूपा त्रैलोक्ये भुवनत्रितये, अद्भुतरूपः लोकोत्तरस्वरूपश्रिया युक्तः, गोविन्दः श्रीकृष्णः अतिदुरापः अत्यन्तं कष्टेन प्राप्तुं योग्यः, अर्थात् सुकृतशतैर्लभ्य इत्याशयः। त्वया तु इदानीं स लब्धः, अतस्त्वं, तत् ततः, गुञ्जद्भृङ्गसनाथे गुञ्जद्भ्रमर-विलसिते, वृन्दावनकुञ्जे वृन्दावनस्थितलतामण्डपे, श्रीनाथेन श्रीकृष्णेन, समेता सङ्गता सती, स्वच्छन्दं निश्चिन्ता भूत्वा सुखेन, केलिं सर्वविधक्रीडां, कुरु विधेहि।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः मगण, सगण, मगण, भगण और दो गुरुवर्ण हों उसको **लोला** नामक छन्द कहते हैं। इसमें सात-सात वर्णों पर यति होती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोई सखी अपनी सीधी-साधी सखी को समझाती हुई कह रही है—हे सरल स्वभाव वाली ! जवानी बिजली की चमक के समान क्षणभंगुर है और लोकोत्तरसौन्दर्य युक्त श्रीकृष्ण की प्राप्ति भी कठिन है। (इस समय श्रीकृष्ण तुम्हारे सामने विराजमान हैं) अतः तुम भ्रमरों की गुन-गुनाहट से मुखरित इन वृन्दावन के लतामण्डपों में श्रीकृष्ण के साथ स्वच्छन्द हो विहार करो।

न न त त ग ग

।।।। ।। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

स्वरभिदि यदि नौ तौ च नान्दीमुखी गौ।

सरसखगकुलालापनान्दीमुखीयं लहरिभुजलया चारुफेनस्मितश्रीः।
मुरहर ! कलयासत्तिमासाद्य किं ते प्रमुदितहृदया भानुजा नृत्यतीह ? ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु नौ तौ गौ नगणः, नगणः, तगणः, तगणः, गुरुद्वयम् च भवेत्, तत् **नान्दीमुखी** नाम वृत्तम्। अत्र सप्त-सप्तवर्णैः यतिः।

सरसेति–मुरहर ! मुरारे !, सरसखगकुलालापनान्दीमुखी सरसा कर्णसुखदा, यः खगकुलस्य पक्षिसमूहस्य, कलरवः, स एव नान्दीमुखं भद्रस्तुतिप्रारम्भः यस्याः सा, चारुफेनस्मितश्रीः चार्वी मनोहरा, फेन एव स्मितश्रीः मन्दहासशोभा यस्याः सा, लहरिभुजलया लहर्यः तरङ्गा एव भुजलया सङ्गीतजहस्तलयसनाथा, इयं भानुजा यमुना, ते तव आसत्तिं सामीप्यम्, आसाद्य लब्ध्वा, प्रमुदितहृदया प्रसन्नचित्ता इव, नृत्यति किम् नर्तनं करोति किम् इति कलय।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, नगण, तगण, तगण और दो गुरु वर्ण हों, उसको **नान्दीमुखी** नामक छन्द कहते हैं। इसमें सात-सात वर्णों पर यति होती है।

हे मुरारि (श्रीकृष्ण) ! आपको अपने तट पर पाकर प्रसन्नता से मानो यमुना नाच रही है। पक्षिगण अपने मधुरकलरव द्वारा नान्दीपाठ (मंगलगान) कर रहे हैं। इसका सफेद झाग ही मधुर मुसकान की शोभा है और लहर रूपी भुजायें ताल दे रही हैं। इस पद्य में उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकार है।

अतिशर्करी (पञ्चदशाक्षरा वृत्तिः)

।।।।।।।।।।।।।।ऽ

गुरुनिधनमनुलघुरिह शशिकला ॥ १५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDH

मलयजतिलकसमुदितशशिकला, व्रजयुवतिलसदलिकगगनगता।
सरसिजनयनहृदयसलिलनिधिं, व्यतनुत विततरभसपरितरलम्।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु चतुर्दशाक्षराणां पश्चादन्ते एकः गुरुः वर्ण भवेत् तद् वृत्तं **शशिकला** नाम।

मलयजेति—व्रजयुवतिलसदलिकगगनगता व्रजवनितानां व्रजाङ्गनानां, लसत् शोभां बिभ्रत् अलिकं ललाटं, 'ललाटमलिकं गोधि'। इत्यमरः। तदेव गगन नभः, तत्र गता प्राप्ता, मलयजतिलकसमुदितशशिकला मलयजस्य चन्दनस्य 'घनसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम्'। इत्यमरः। तिलकं विशेषकं तदेव समुदिता उत्पन्ना, शशिकला चन्द्रलेखा, सरसिजनयनहृदयसलिलनिधिं सरसिज नयनस्य पुण्डरीकलोचनस्य श्रीकृष्णस्येत्यर्थः, हृदयम् मानसमेव, सलिलनिधि समुद्रः तम्, विततरभसपरितरलम्=विततेन व्यायतेन, रभसेन हर्षेण, परितरलं अत्यन्तचपलं, व्यतनुत चकारेत्यर्थः। अत्र रूपकालङ्कारः।

सफला—जिसके चारों चरणों में १४वें लघु वर्ण के पश्चात् अन्तिम (१५ वां) वर्ण गुरु हो, उसको **शशिकला** नामक छन्द कहते हैं।

व्रजयुवतियों के मस्तक रूपी आकाश में स्थित (लगाये हुए) चन्दन तिलक रूपी चन्द्रकला ने श्रीकृष्णचन्द्र के हृदय-समुद्र को अत्यन्त प्रसन्नता के कारण सहसा चञ्चल बना दिया।

विशेष—जिस प्रकार चन्द्रमा की प्रारम्भिक १४ कलायें लघु होती हैं और १५ वीं कला पूर्ण (गुरु) होती हैं, ठीक उसी प्रकार यह छन्द भी मात्रा की दृष्टि से अपना नाम सार्थक कर रहा है॥ १५॥

पञ्चदशाक्षरावृत्तेः अष्टौ भेदाः—

स्रगियमपि च रसनवरचितयतिः।

अयि! सहचरि! रुचिरतरगुणमयी, म्रदिमवसतिरनपगतपरिमला।
स्रगिव निवस विलसदनुपरमसा, सुमुखि! मुदितदनुजदलनहृदये।

सुषमा—यतिभेदाच्छन्दोभेदस्तस्य उदाहरणम्—शशिकलावृत्ते यदि रसन वरचितयतिः रसैः षड्भिः, नवभिः च वर्णैः यतिः स्यात्, तदा **स्रक्** नाम वृत्तम्।

अयीति—अयि! सुमुखि! शोभनानने! सहचरि! सखि!, रुचिरतरगुणमयी रुचिरतरा सुन्दरतरा, गुणमयी समस्तसद्गुणसमन्विता, किंवा रुचिरतरसूत्र युक्ता, म्रदिमवसतिः म्रदिम्नः कोमलतायाः वसतिः निकेतनं, अनपगतपरिमला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शयः, अनपगतपरिमला सौरभयुक्ता, पक्षे—अनास्वादितयौवनरसा, विलसदनुपमरसा शोभमानाद्वितीयास्वादा, परागः च, यस्याः सा तादृशी त्वं, मुदितदनुजदलनहृदये प्रसन्नमुरारिवक्षःस्थले, स्रगिव वनमालेव, निवस वासं कुरु।

सफला—स्रक् नामक छन्द में ६ और ९ वर्णों पर यति होती है। शेष लक्षण **शशिकला** के समान हैं।

कोई सखी अपनी सखी से कह रही है कि तुम उस वनमाला के समान हो जिसको भगवान् सदा धारण करते हैं। हे सखि ! वह माला सुन्दर डोरे में पिरोई गई है, पराग युक्त होने कारण सुगन्धित और भगवान् के हृदय में विराजमान है। तथा तुम्हारे में अनेक गुण हैं; तुम कुसुम कोमल, सुवासयुक्त, अनुरागमय हो अतः माला के सदृश उनके हृदय में धारण करने के योग्य हो।

वसुमुनियतिरिति मणिगुणनिकरः।
नरकरिपुरवतु निखिलसुरगति-रमितमहिमभरसहजनिवसतिः।
अनवधिमणिगुणनिकरपरिचितः, सरिदधिपतिरिव धृततनुविभवः॥

सुषमा—यतिभेदाच्छन्दोभेदस्तस्य उदाहरणम्—शशिकलावृत्ते यदि वसुमुनियतिरिति अष्टाभिः सप्तभिः च यतिः स्यात् तदा **मणिगुणनिकरः** नाम वृत्तं भवेत्।

नरकेति—निखिलसुरगतिः समस्तदेवगणस्य आश्रयः, अमितमहिमभरसहजनिवसतिः अमितः पर्याप्तः यः महिमभरः महिमातिशयः तस्य सहजा नैसर्गिकी निवसतिः वासस्थानम्, अनवधिमणिगुणनिकरपरिचितः अनवधयः सीमारहिताः, ये मणयः रत्नानि तदिव भासमानाः गुणाः मनोहरत्वादयः, तेषां निकरेण समूहेन, परिचितः सुविज्ञातः। समुदपक्षे—प्रभूतमणिसद्गुणसमूहदीप्यमानः, सरिदधिपतिः सिन्धुः इव, धृततनुविभवः गृहीतशरीरसम्पत्तिः, एवम्भूतः नरकरिपुः नरकासुरनाशकः, भगवान् श्रीकृष्णः, अवतु पातु। पद्येऽस्मिन् 'सरिदधिपतिरिवे'त्यत्रोपमालङ्कारः।

सफला—यति भेद से छन्द भेद का दूसरा उदाहरण—यदि शशिकला छन्द में आठ और सात वर्णों पर यति हो तो इसको **मणिगुणनिकर** छन्द कहते हैं।

सम्पूर्ण देवताओं के आश्रयस्थान, निस्सीम माहात्म्य के जन्मजात निवासस्थान, अगणित मणिगण के सदृश प्रकाशमान गुणों से चमकने वाले समुद्र के समान शरीरसम्पत्ति से युक्त नरकासुर के विनाशक भगवान् श्रीकृष्ण रक्षा करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDH

न न म य य
।।।।।।SSS।S S।SS

ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ।

मृगमदकृतचर्चा पीतकौशेयवासा
रुचिरशिखिशिखण्डाऽऽबद्धधम्मिल्लपाशा ।
अनृजुनिहितमंसे वंशमुक्त्वाणयन्ती
धृतमधुरिपुलीला मालिनी पातु राधा ।।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु ननमयययुता नगणः, यगणः, मगणः, यगणः यगणः तथा भोगिलोकैः अष्टभिः सप्तभिः च वर्णैः यतिः भवेत् तत् मालिनी नाम वृत्तम् ।

मृगमदेति—मृगमदकृतचर्चा कस्तूरिकयाकृताऽऽलेपा, कृष्णेन सह कृतवर्णसाम्या, पीतकौशेयवासा पीतक्षौमवस्त्रं दधाना, रुचिरशिशिखण्डाऽऽबद्धधम्मिल्लपाशा रुचिरैः सुन्दरैः शिखिनां बर्हिणां शिखण्डैः बर्हैः आबद्धः संयतः धम्मिल्लपाशः केशसमूहः यया सा, मालिनी स्रग्विणी, अंशे स्कन्धदेशे, अनृजुनिहितं तिर्यक्स्थापितं वंशं वाद्यविशेषम्, उत्क्वाणयन्ती उच्चैः वादयन्ती, अत एव सर्वात्मना धृतमधुरिपुलीला स्वीकृतश्रीकृष्णविलासा राधा, पातु रक्षतु ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण, यगण हों तथा आठ और सात अक्षरों में यति हो, उसको मालिनी छन्द कहते हैं ।

अपने (गौरवर्ण के) शरीर में कस्तूरी का अङ्गराग लगाकर (अर्थात् अपने को साँवली बनाकर), पीले रेशमी वस्त्र धारण कर, मनोहर मयूर पंखों को अपने जूड़ा में लगाकर, गले में माला धारण कर, तिरछे कन्धे पर मुरली को रखकर बजाती हुई, इस प्रकार (सब भाँति) श्रीकृष्ण का अनुकरण करने वाली राधा रक्षा करे ।

म म म म म
SSSS SS SSSS S SSSS

एकन्यूनो विद्युन्मालापादो चेल्लीलाखेलः ।

पायाद्वो गोविन्दःकालिन्दीकूलक्षोणीचक्रे
रासोल्लासक्रीडद्गोपीभिः सार्धं लीलाखेलः ।
मन्दाकिन्यास्तीरोपान्ते स्वैरक्रीडाभिर्लोलो
यद्वद् देवानामीशः स्ववेंश्याभिः खेलन्तीभिः ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुषमा–विद्युन्माला, अष्टाक्षरावृत्तिः, द्विगुणिताद् विद्युन्मालावृत्ततः प्रत्येकस्मिन् पादे एकाक्षरस्य न्यूनत्वे **लीलाखेलः** नाम वृत्तं भवेत्। इदं सर्वगुरु भवति।

पायादिति—कालिन्दीकूलक्षोणीचक्रे यमुनातीरस्थितवर्तुलाकारभूप्रदेशे, रासोल्लासक्रीडद्गोपीभिः रासलीलायां हर्षातिशयेन नृत्यन्तीभिः व्रजसुन्दरीभिः, सार्धं सह, लीलाखेलः विलासपूर्विकाक्रीडा यस्य तादृशः, मन्दाकिन्यास्तीरोपान्ते मन्दाकिनी नद्यास्तीरभूमौ, स्वैरक्रीडाभिः स्वच्छन्दखेलाभिः, खेलन्तीभिः विहरन्तीभिः, स्वर्वेश्याभिः सुरसुन्दरीभिः, लोलः विलासेन चपलः, देवानामीशः यद्वत् सुरेन्द्रः तदिव, गोविन्दः श्रीकृष्णः, वः युष्मान्, पायाद् रक्षां कुर्यात्। पद्येऽस्मिन्नुपमालङ्कारः। प्रत्युदाहरणम्—

मः कान्ते ! पक्षस्यान्ते पर्याकाशे देशे स्वाप्सीः
कान्तं वक्त्रं वृत्तं पूर्णं चन्द्रं सत्वा रात्रौ चेत्।
क्षुत्क्षामः प्राटंश्चेतश्चेतो राहुः क्रूरः प्राद्या-
त्तस्माद् ध्वान्ते हर्म्यस्यान्ते शय्यैकान्ते कर्तव्या॥

इति कण्ठाभरणे॥

सफला—विद्युन्माला आठ गुरु वर्णों का छन्द है। इसकी दो बार आवृत्ति करें और उसमें से प्रतिपाद में एक अक्षर घटा देने से **लीलाखेल** नामक छन्द होता है।

यमुना नदी के तीर पर गोलाई में रासलीला के प्रति अत्यन्त उत्साह के साथ क्रीडा करती हुई गोपियों के साथ स्थित देवताओं के राजा इन्द्र के समान (इन्द्र के छोटे भाई) श्रीकृष्ण आप सबकी रक्षा करें।

न स न र र
। ।। ।।ऽ ।।।ऽ।ऽऽ। ऽ

विपिनतिलकं नसनरेफयुग्मैर्भवेत्।

विपिनतिलकं विकसितं वसन्तागमे
मधुकृतमदमधुकरैः क्वणद्भिर्वृतम्।
मलयमरुता रचितलास्यमालोकयन्
व्रजयुवतिभिर्विहरति स्म मुग्धो हरिः॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण नगणः, सगणः, नगणः, रगणः, रगणः च भवेत्, तद् **विपिनतिलकं** नाम वृत्तम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
Janamukh Mirche, Nepal.

विपिनेति—मुग्धः प्रकृत्या सुन्दरः, हरिः श्रीकृष्णः, वसन्तागमे पुष्पसमयस्य प्रारम्भे, 'वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिः' । इत्यमरः । विकसितं पुष्पितं, मधुकृतमद मधुकरैः मधुना परागेण कृतः समुत्पादितः, मदः हर्षातिरेकः, येषां तादृशैः क्वणद्भिः गुञ्जद्भिः, वृतम् परिवृतं, मलयमरुता मलयजपवनेन, रचितला नृत्यं कुर्वन्, विपिनतिलकं कानोत्थक्षुरकपुष्पम्, आलोकयन् दृष्टिपथमवतार सन्, व्रजयुवतिभिः व्रजरमणीभिः, सह विहरति स्म विहारं करोति स्म ।

सफला—जिसके चारों चरणों में नगण, सगण, नगण, रगण, रगण हो उसको **विपिनतिलक** छन्द कहते हैं ।

सकलजनमनोहर भगवान् श्रीकृष्ण वसन्त ऋतु के आरम्भ में खिले हु पुष्प पराग का पान करने से मदमत्त हो गुन-गुनाहट करते हुए भ्रमरों से यु मलयगिरि के सुगन्धित पवन के स्पर्श से नाचते हुए जंगली तिलक वृक्ष के पु को देखते हुए व्रजवनिताओं के साथ विहार करते थे ।

ग ल र ज ग ल र ल ग
S I S I S I S I S I S I S I S

तूणकं समानिकापदद्वयं विनाऽन्तिमम् ।

सा सुवर्णकेतकं विकासि भृङ्गपूरितं
पञ्चबाणबाणजालपूर्णहेमतूणकम् ।
राधिका वितर्क्य माधवाऽद्य मासि माधवे
मोहमेति निर्भरं त्वया विना कलानिधे ! ॥

सुषमा-अन्तिमम् अन्तिमाक्षरं विना समानिकापदद्वयं, द्विरावृत्तं समानिक वृत्तं, **तूणममिति** कथ्यते । एतस्य लक्षणम् अष्टाक्षरावृत्तिप्रकरणे निर्दिष्टम् ।

सेति—कलानिधे ! चतुःषष्टिकलाविशारद !, माधव ! श्रीकृष्ण !, ह राधिका अद्य माधवे मासि वैशाखमासे, वसन्ततौं इति, विकासि विकसनशील भृङ्गपूरितं भ्रमरैः परिवृतं, सुवर्णकेतकं पीतकेतककुसुमम्, पञ्चबाणबाणजालपू हेमतूणकम् कामदेवशरसमूहव्याप्तसुवर्णमयतूणीरं, वितर्क्य विचार्य, त्वया विना अर्थात् त्वद्विरहवेदनार्ता सती. निर्भरं प्रकामम्, मोहं निःसंज्ञताम्. एति गच्छ तीत्याशयः ।

सफला—द्विगुणित समानिका वृत्त के प्रत्येक चरण में से एक अक्षर घ देने पर **तूणक** नामक छन्द होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अखिलकलाकुशल श्रीकृष्ण ! वह (तुम्हारी अत्यन्त प्रिय) राधिका आज (इस) वैशाख मास में कुसुमित, भ्रमरों से घिरे हुए पीतवर्ण के केवड़ा के फूल को कामदेव के वाणों से भरा हुआ सुवर्ण से रचित तरकस समझकर, आपके विना मूर्च्छित हो रही है।

म र म य य

ऽ ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ। ऽ ऽ

म्रौ मो यौ चेद्भवेतां सप्ताष्टकैश्चन्द्रलेखा।

विच्छेदे ते मुरारे ! पाण्डुप्रकाशा कृशाङ्गी
म्लानच्छायं दुकूलं न भ्राजते बिभ्रती सा।
राधाऽम्भोदस्य गर्भे लीना यथा चन्द्रलेखा
किञ्चार्ता त्वां स्मरन्ती धत्ते ध्रुवं जीवयोगम् ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु म्रौ मो यौ मगणः, रगणः, मगणः, यगणः, भवेत् तथा सप्ताष्टकैः सप्तभिः अष्टभिः च वर्णैः यतिः स्यात् तद् **चन्द्रलेखा** नाम वृत्तम्।

विच्छेदे इति—मुरारे ! हे श्रीकृष्ण !, ते तव, विच्छेदे विरहे, कृशाङ्गी क्षीणावयवा, पाण्डुप्रकाशा शुभ्रकान्तियुक्ता, सा पूर्वोक्ता, राधा गोपकन्या, म्लानच्छायं मलिनरुचं, दुकूलं कौशयं, बिभ्रती धारणं कुर्वती, अम्भोदस्य पयोदस्य, गर्भे मध्ये, लीना अन्तर्हिता, चन्द्रलेखा इव सुधांशुकलामिव, न भ्राजते न राजते, अतः विरहणी सा त्वां भवन्तं, स्मरन्ती विचिन्तयन्ती, जीवयोगं प्राणसम्बधं धारयति, ध्रुवं निश्चप्रचम्।

सफला—जिसके चारों चरणों में मगण, रगण, मगण, यगण, यगण हों उसको **चन्द्रलेखा** नामक वृत्त कहते हैं। इसमें सात और आठ अक्षरों में यति होती है।

हे श्रीकृष्ण ! आपके विरह में उस (पूर्वकथित) राधा का शरीर अत्यन्त दुर्बल है, चेहरा पीताभ हो गया है और वह मलिन वस्त्रों को धारण कर बादलों के वीच में छिपी हुई चन्द्रकला की भाँति मलिन होने के कारण शोभित नहीं हो रही है। अतः वह विरह से पीड़ित आपको याद करती हुई किसी प्रकार अपने प्राणों को धारण की हुई है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID-

म म म य य

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

चित्रा नाम च्छन्दश्चित्रं चेत्त्रयो मा यकारौ ।

गोपालीलीलालोला यद्वत् कलिन्दात्मजाऽन्ते
खेलन्मुक्ताहाराऽऽरण्यस्रग्लसन्मूर्धचित्रा ।
कंसारातेर्मूर्तिस्तद्वन्मे हृदि क्रीडतीयं
कोऽन्यः स्वर्गो मोक्षो वाऽस्माद्विद्यते तन्न जाने ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु त्रयो माः यकारौ मगणः, मगणः, मग यगणः, यगणः भवेत्, तद् **चित्रा** नाम वृत्तम् ।

गोपालीति—गोपालीलीलालोला वल्लवीनां क्रीडया चपला, खे मुक्ताहारा हृदये क्रीडां कुर्वन् मुक्ताहारः यस्याः सा, आरण्यस्रग्लसन्मूर्धचि काननोत्पन्नपुष्पमालया शोभमानः यः मूर्धा मस्तकं तेन चित्रा विचित्रा सुन्दरीति कंसारातेः श्रीकृष्णस्य, इयं प्रस्तुता मूर्तिः प्रतिमा, यद्वत् यथा, कलिन्दात्मजा यमुनातटे, क्रीडति विहरति तद् तथा, मे हृदि मम मानसे, क्रीडति, इत्याशय अस्मात् श्रीकृष्णस्मरणाद् अतिरिक्तं स्वर्गः मोक्षः वा न इति जाने विश्वसिमि

सफला—जिसके चारों चरणों में तीन मगण तथा दो यगण हों, उस **चित्रा** नामक अलंकार कहते हैं ।

व्रज की गोपललनाओं के साथ विविध प्रकार के विलासों में तत्पर वक्ष स्थल पर चलायमान मोतियों की मालाओं से सुशोभित, जिन्होंने वनमाला अपने बालों को संजो रखा है, ऐसे श्रीकृष्ण की यह मूर्ति जिस प्रकार यमुना तीर पर विहार करती है, उसी प्रकार वह मेरे (भक्त के) हृदय में विहार क रही है । इस श्रीकृष्ण के स्मरण के अतिरिक्त भी स्वर्ग अथवा मोक्ष कुछ हो है, यह मैं नहीं जानता हूँ । अर्थात् जिसके हृदय में श्रीकृष्ण विराजमान उसके लिये स्वर्ग अथवा मोक्ष उसके हाथ में ही है ।

अष्टिः (षोडशाक्षरावृत्तिः)

ग ल र ज ग ल र ज

ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ।

चित्रसंज्ञमीरितं समानिकापदद्वयन्तु ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्रुमारुणाधरौष्ठशोभिवेणुवाद्यहृष्ट-
वल्लवीजनाङ्गसङ्गजातमुग्धकण्टकाङ्ग ! ।
त्वा सदैव वासुदेव ! पुण्यलभ्यपाद ! देव !
वन्यपुष्पचित्रकेश ! संस्मरामि गोपवेश ! ॥

सुषमा—अष्टाक्षरावृत्तौ समानिका लक्षणमुक्तम्, तस्याः पादयुग्मकेन प्रस्तुतस्य छन्दसः एकः पादः भवति ।

विद्रुमेति—विद्रुमः प्रवालः इर अरुणः रक्तवर्णः, यः अधरोष्ठः अधरपल्लवः, तत्र शोभते राजते इति, स च असौ वेणुः मुरलिकाः तस्याः वाद्येन वादनकर्मणा, हृष्टानां सन्तुष्टान्तरङ्गानां, वल्लवीजनानां व्रजवासिनीनाम्, अङ्गसङ्गेन शरीरस्य मृदुलस्पर्शेन, जातः समुद्भूतः, मुग्धः चेतोहरः, कण्टकः रोमाञ्चः, यत्र तथा भूतम् अङ्गं, यस्य तत् सम्बोधने, पुण्येन सत्कर्मणा, लभ्यौ साक्षात्कारणीयौ, पादौ चरणौ यस्य सः, तत् सम्बुद्धौ, हे पुण्यलभ्यपाद !' वन्यपुष्पैः काननकुसुमैः, चित्राः विचित्राः, केशाः यस्य तत्सम्बुद्धौ हे वन्यपुष्पचित्रकेश !, गोपवेश ! गोपानां वेशे विराजमान !, देव ! भगवन् ! वासुदेव ! वसुदेवात्मज ! श्रीकृष्ण ! अहं ग्रन्थकर्ता, त्वां भवन्तं, सदैव नित्यं, संस्मरामि ध्याये ।

सफला—अष्टाक्षरावृत्ति में समानिका छन्द का लक्षण निर्दिष्ट है । इस छन्द की दो बार आवृत्ति करने पर प्रस्तुत चित्रसंज्ञ छन्द का लक्षण होता है ।

प्रवाल (मूंगा) के सदृश लाल वर्ण के होंठ पर सुशोभित मुरली के बजाने के प्रसन्न वज्रयुवतियों के शरीरस्पर्श से रोमाञ्चित भगवान् श्रीकृष्ण ! आपके चरण अत्यन्त पुण्यों से प्राप्त होते हैं । गोपों के वेश को धारण करने वाले भगवन् वन में उत्पन्न फूलों से आपके केश सुशोभित हो रहे हैं । मैं आपका सदा ध्यान करता हूँ ।

भ र न न न ग
S I I S I S I I I I I I I I I S
भ्रत्रिनगैः स्वरात्खमृषभगजविलसितम् ।[1]

यो हरिरुच्चखान खरतरनखशिखरै-दुर्जयदैत्यसिंहसुविकटहृदयतटम् ।
किन्विह चित्रमेतदखिलमपहृतवतः[2], कंसनिदेशदृप्यदृषभगजविलसितम्॥

१. गजतुरगविलसितमिति, शम्भौ ।
२. चित्रमेव यदखिलमपहृतवान् । पाठभेदः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु भ्रत्रिनगैः भगणः, रगणः, नगणः, न नगणः, गुरुः च वर्णः भवेत्, तत् **ऋषभगजविलसितम्** नाम वृत्तम्। सप्तभिः वर्णै अङ्कैः नवभिः च यतिः।

यो हरिरिति—यः हरिः, खरतरैः प्रखरैः नखशिखरैः कररुहमुखैः दुर्ज जेतुमशक्यस्य; दैत्यसिंहस्य, 'स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुङ्गवर्षभकुञ्जराः। सिंहशा नागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः'। इत्यमरः। सुविकटम् अतिविस्तृतं, हृदय उरःस्थलम्, उच्चखान द्विधा कृतवान्, (असौ श्रीकृष्णः) अखिलं सम् हृतवतः अपहरणकर्त्तुः, कंसनृपतेः एतन्नाम्नो राज्ञः, निदेशेन प्रेरणया, दृप्त दर्पं कुर्वतोः, ऋषभगजयोः धृतबलीवर्दगजरूपयोः, अरिष्टकुवलयनाम्नोः रा विशेषयोः, विलसितं कर्म, यद् व्यर्थं चकार, एतत् किं चित्रम् आश्चर्यम् किमपीत्याशयः।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण, नगण, नगण, नगण एक गुरु वर्ण हो, उसको **ऋषभगजविलसित** नामल छन्द कहते हैं। इ सात तथा नौ अक्षरों पर यति होती है।

जिस हरि (नृसिंहावतार धारण किये हुए विष्णु) ने अपने तेज ना द्वारा अजेय हिरण्यकशिपु की कठिन छाती को चीर दिया, उस श्रीकृष्ण ने कंस की आज्ञा से गर्वयुक्त ऋषभ और गज का रूप धारण करने वाले अ एवं कुवलयापीड़ नामक दैत्यो की चेष्टाओं को व्यर्थ कर दिया तो इसमें आ ही क्या है। अर्थात् श्रीकृष्ण भगवान् विष्णु के ही अवतार हैं।

भ स म त न ग

S I I I I S S S S S S I I I I S

भात् समतनगैं रष्टच्छेदे स्यादिह चकिता।

दुर्जयदनुजश्रेणीदुश्चेष्टाशतचकिता,
यद्भुजपरिघत्राता याता साध्वसविगमम्।
दीव्यति दिविषन्माला शश्वन्नन्दनविपिने,
गच्छत शरणं कृष्ण तं भीता भवरिपुतः॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु पादेषु भात् समतनगैः भगणात् परैः सगणमगणत नयणगुरुभिः युक्ता **चकिता** कथिता। अत्र अष्टच्छेदैः अष्टभिः वर्णैः यतिः भव

दुर्जयेति—दुर्जया अजेया, या दनुजानां, दैत्यानां, श्रेणी पङ्क्तिः, त दुश्चेष्टाशतैः शताधिकैर्दुर्व्यवहारैः, चकिता आश्चर्ययुक्ता, दिविषदां देवानां, म परम्परा, यद्भुजपरिघत्राता यस्य श्रीकृष्णस्य भुजः बाहुः एव परिघः परिघात तेन त्राता रक्षिता, साध्वसस्य भीतेः विगमं नाशं, याता गता, नन्दनवि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवेन्द्रस्य गृहोद्याने, दीव्यति क्रीडति, भवरिपुतः संसाररूपरिपुतः भीता कान्दिशीकतां गता यूयं तं कृष्णं, शरणम् परमाश्रयं गच्छत।

सफला—जिसके चारों चरणों में भगण, सगण, मगण, तगण, नगण तथा गुरु वर्ण हों उसको **चकिता** नामक छन्द कहते हैं। इसमें ८-८ अक्षरों में यति होती है।

देवताओं से बलवान् अतएव अजेय दैत्यों के विविध उत्पातों से डरे हुए देवतागण जिनकी भुजा रूपी परिघ से सुरक्षित नन्दनवन निश्चिन्त हो विहार करते हैं, भवबन्धन रूपी शत्रु से भयभीत आपलोग उसी श्रीकृष्ण की शरण में जाइये।

ज र लग ज र लग

। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ

प्रमाणिकापदद्वयं वदन्ति पञ्चचामरम्।

सुरद्रुमूलमण्डपे विचित्ररत्ननिर्मिते
लसद्वितानभूषिते सलीलविभ्रमालसम्।
सुराङ्गनाभवल्लवीकरप्रपञ्चचामर-
स्फुरत्समीरवीजितं सदाऽच्युतं भजामि तम॥

सुषमा—अष्टाक्षरावृत्तिप्रसङ्गे प्रमाणिकालक्षणमुक्तम्। द्विगुणितं तद् वृत्तं **पञ्चचामरं** नाम भवेत्।

सुरद्रुमूलेति—विचित्रैः अनेकप्रकारकैः, रत्नैः मणिभिः, निर्मिते रचिते, लसद्वितानभूषिते शोभमानोल्लोचनालङ्कृते, सुरद्रुमूलमण्डपे कल्पवृक्षस्याधः-स्थिते मण्डपे, सलीलविभ्रमालसं सलीलः सहेलः यः विभ्रमः विलासः तेन अलसं परिश्रान्तं, सुराङ्गनाभवल्लवीकरप्रपञ्चचामरस्फुरत्समीरवीजितं सुराङ्गनानां देववनितानां, तद् वद् आभा यासां ताः इत्थम्भूताः याः तासां वल्लवीनां गोपसुन्दरीणां, करेषु हस्तेषु प्रपञ्चा विस्तारं प्राप्ताः ये चामराः पुच्छविशेषाः, तेभ्यः स्फुरता वीजयता, समीरेण पवनेन, वीजितं सञ्चालितं, तं वेदैकवेद्यम् वेदेषु अन्यतमं ज्ञेयम्, अच्युतं श्रीकृष्णरूपेण वर्तमानं हरिं, सदा सर्वदा भजामि स्मरामि, इत्याशयः। श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं 'शिवताण्डवस्तोत्रम्' पञ्चचामरच्छन्दसि एव प्रोतं विद्यते।

सफला—अष्टाक्षरावृत्ति के प्रसंग में **प्रमाणिका** छन्द का लक्षण लिखा गया है। उसी को दूना करने पर **पञ्चचामर** छन्द होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विविध प्रकार के रत्नों से जड़ित चंदवा से अलंकृत, कल्पवृक्ष के नीचे निर्मित मण्डप में वर्तमान अनेक प्रकार की लीलाओं से थके हुए, देववनिताओं के समान सुन्दर आकृतिवाली गोपियों के हाथों में स्थित बड़े-बड़े चामरों की वायु से वीजित श्रीकृष्ण के रूप में स्थित विष्णु भगवान् का मैं ध्यान करता हूँ।

म भ न म न ग

ऽ ऽ ऽ ऽ। । ।।। ऽ ऽ ऽ। ।। ऽ

म्भौ नो म्नौ गो मदनललिता वेदैः षड्ऋतुभिः ।

विभ्रष्टस्रग्गलितचिकुरा धौताधरपुटा
ग्लायत्पत्रावलिकुचतटोच्छ्वासोर्मितरला ।
राधाऽत्यर्थं मदनललिताऽऽन्दोलालसवपुः
कंसाराते रतिरसमहो ! चक्रेऽति चटुलम् ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु म्भौ नौ म्नौ गौ मगणः, भगणः, नगणः, मगणः, नगणः, गुरुः च वर्णो भवेत्, तत् **मदनललिता** नाम वृत्तम् । अत्र वेदैः चतुर्भिः षड्ऋतुभिः षड्भिः षड्भिः च वर्णैः यतिः भवति ।

विभ्रष्टेति–विभ्रष्टस्रग्गलितचिकुरा विभ्रष्टा निपतिता, स्रक् माला यस्याः सा, गलिताः, व्यस्ततां गताः चिकुराः कचाः यस्याः सा, धौताधरपुटा निर्मृष्टरागाऽधरा, ग्लायत्पत्रावलिकुचतटोच्छ्वासोर्मितरला ग्लायन्ती मलिनतां यान्ती या पत्रावलिः पत्ररचना, यत्र तादृशं कुचतटं स्तनाग्रभागं यस्याः सा, उच्छ्वासाः श्रमजनितप्रवृद्धश्वासा, ऊर्मयः तरङ्गाः इव, तैः तरला चपला, मदनललिताऽऽन्दोलालसवपुः मदनललितेन कामक्रीडाजनितेन विलासेन, यः आन्दोलः चपलता तेन अलसं शिथिलीकृतं, वपुः गात्रं यस्याः सा, तादृशी राधा, कंसारातेः श्रीकृष्णस्य, अतिचटुलम् अतिचपलम्, अत्यर्थम् अत्यधिकं, रतिरसं कामजनितं प्रेम, चक्रे चकार, अहो इत्याश्चर्यम् ।

सफला—जिसके चारों चरणों के मगण, भगण, नगण, मगण, नगण और गुरु वर्ण हों, उसको **मदनललिता** नामक छन्द कहते हैं। इसमें चार और छः छः वर्णों पर यति होती है।

राधा के रूप-सौन्दर्य का वर्णन कवि निम्न प्रकार से कर रहा है—पहली बार सम्भोग के कारण राधा की माला गिर चुकी थी, केश बिखर गये थे, अधरों की लालिमा चुम्बन के कारण दूर हो गयी थी, स्तनों पर की गयी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पत्ररचना मिट गयी थी, लहरों के समान लम्बी सांसों ने उसको चंचल बना दिया था और रतिजनित परिश्रम से वह अलसायी थी, फिर भी श्रीकृष्ण उसको देखकर सम्भोग के लिये उत्सुक हो गये, यह महान् आश्चर्य है।

न ज भ ज र ग

। । । । S । S । । । S । S । S S

नजभजरैर्यदा भवति वाणिनी गयुक्तैः !

स्फुरतु ममाननेऽद्य ननु वाणि ! नीतिरम्यं
तव चरणप्रसादपरिपाकतः कवित्वम् ।
भवजलराशिपारकरणक्षमं मुकुन्दं
सततमहं स्तवैः स्वरचितैः स्तवानि नित्यम् ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु नजभजरैः गयुक्तैः नगणः, जगणः, भगणः, जगणः, रगणः, गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **वाणिनी** नाम वृत्तम् ।

स्फुरत्विति—वाणि ! सरस्वति ! तव भवत्याः, चरणप्रसादपरिपाकतः पादसेवनफलपरिणामतः, नीतिरम्यं नयमनोहरं, कवित्वं कवेः भावः, तत्, मम आनने मदीयमुखे, अद्य स्फुरतु प्रकटयतु, येन अहं स्वरचितैः स्वकीयाभिरनुपम-रचनाभिः, सनातनं, स्तवैः स्तुतिभिः, भवजलराशिपारकरणक्षमं संसाराब्धि-तरणे सक्षमं नित्यं मुकुन्दं श्रीकृष्णं, सततं निरन्तरं, स्तवानि स्तुतिं करवाणि ।

सफला—जिसके चारों चरणों में नगण, जगण, भगण, जगण, रगण और गुरु वर्ण हो, उसको **वाणिनी** नामक छन्द कहते हैं ।

हे सरस्वती ! आपकी चरण-सेवा के परिणाम स्वरूप नीतियुक्त (धर्मशास्त्र-सम्मत) कविता करने की सामर्थ्य मेरे मुख में आज उत्पन्न हो जाय, जिससे मैं संसार-समुद्र से पार करने की क्षमता रखने वाले सनातन श्रीकृष्ण (विष्णु भगवान्) की निरन्तर स्तुति कर सकूँ ।

विशेष—उपर्युक्त पद्य में ग्रन्थकर्ता ने सरस्वती से कवित्वशक्ति-लाभ की प्रार्थना की है । जैसा कि ग्रन्थारम्भ में इन्होंने प्रतिज्ञा की है, 'इयमच्युत-लीलाढ्या', अर्थात् यह छन्दोमञ्जरी श्रीकृष्ण लीलाओं से परिपूर्ण है । इस दृष्टि से उक्त पद्य ग्रन्थकार की ग्रन्थारम्भ में की हुई प्रतिज्ञा से कुछ दूर हटकर लिखा गया सिद्ध होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID-

य म न स र ग

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ

यमौ नस्रौ गश्च प्रवरललितं नाम वृत्तम् ।

भुजोत्क्षेपः शून्ये चलवलयझङ्कारयुक्तो
मुधा पादन्यासः प्रकटिततुलाकोटिनादः ।
स्मितं वक्त्रेऽकस्माद् दृशि पटुकटाक्षोर्मिलीला
हरौ जीयादीदृक् प्रवरललितं वल्लवीनाम् ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु यमौ नस्रौ गश्च यगणः, मगणः, नगणः, सगणः, रगणः, गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **प्रवरललितं** नाम वृत्तम् ।

भुजोत्क्षेप इति—शून्ये नभसि, चलवलयझङ्कारयुक्तः चञ्चलकङ्कणध्वनि-समन्वितः, भुजोत्क्षेपः बाहुसारः, प्रकटिततुलाकोटिनादः विदितनूपुरनिनादः 'पादाङ्गुदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम्' । इत्यमरः । मुधा व्यर्थं पादन्यासः चरणविन्यासः, अकस्मात् सहसा, वक्त्रे वदने, स्मितं मन्दहासः, दृशि नेत्रे, पटुकटाक्षोर्मिलीला चतुरापाङ्गदर्शनपरम्पराविलासः, हरौ श्रीकृष्णे वल्लवीनां गोपाङ्गनानाम्, ईदृक् प्रवरललितं प्रकृष्टविभ्रमः, जीयात् सर्वोत्कर्षेण वर्तते, इति भावः अत्र जीयादिति क्रियया नमस्कार आक्षिप्यते ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, रगण और एक गुरु वर्ण हो, उसको **प्रवरललित** नामक छन्द कहते हैं ।

गोपाङ्गनायें अपने हाव-भावों से श्रीकृष्ण को आकृष्ट करना चाह रही हैं। हाथों को ऊपर उठाकर अपने कङ्कणों की झनकार, नूपुरों की ध्वनि को प्रकट करने के लिये अकारण पैरों को पटकना, मन्द मुसकान और कुशलता से कटाक्ष प्रदर्शन के द्वारा प्रकट किया गया हरि के प्रति गोपियों का विलास विजयी हो, सबके लिये सुखद हो ।

ल

। । । । । । । । । । । । । । । । । ।

द्विगुणितवसुलघुभिरचलधृतिरिह ।

तरणिदुहितृतटरुचिरतरवसतिरमरमुनिमुखजनविहितनुतिरिह
मुररिपुरभिनवजलधररुचि...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुषमा—यस्य वर्णसङ्ख्या द्विगुणितवसुभिः षोडशभिरित्यर्थं सा च लघुभिः वर्णैः इह छन्दःशास्त्रे स्यात् तत् **अचलधृति**रिति वृत्तम् ।

तरणीति—इह अत्र जगति, तरणेः भानोः, दुहितुः पुत्र्याः यमुनायाः, तटे तीरभूमौ, रुचिरतरा मनोज्ञा, वसतिः वासः यस्य सः, अमरमुनिषु सुरर्षिषु, मुखजनैः श्रेष्ठैः, नारदप्रभृतिभिः, विहिता कृता, नुतिः स्तवः, यस्य तथोक्तः, अभिनवः प्रत्यग्रः, वर्षणशीलः, यः मेघः, तस्य रुचिः छविः यस्याः तादृशी तनुः देहः यस्य तथाभूतः, अचला सुस्थिरा, धृतिः धैर्यं यस्य सः एतादृशः मुररिपुः मुरारिः श्रीकृष्णः सुकृतिनां पुण्यवतां, हृदि मनसि, उदयति प्रकाशितः भवति, खलु ध्रुवमिति ।

सफला—जिस पद्य की वर्ण संख्या ८+८=१६ लघु वर्ण हो, उसको **असलधृति** नामक छन्द कहते हैं ।

सूर्य की कन्या यमुना के तीर पर जिसका स्थायी निवास-स्थान है, देवर्षि नारद आदि जिसकी स्तुति करते हैं, नवीन बादलों के सदृश (श्याम) जिसकी शरीर की कान्ति दिखलायी देती है, हिमालय के समान जो धैर्यवान है, वह भगवान् श्रीकृष्ण सुकृती जनों के हृदय में ज्ञान का प्रकाश करता है ।

न ज भ ज त ग

। । । । ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ

गरुडरुतं नजौ भजतगा यदा स्युस्तदा ।

अमरमयूरमानसमुदे पयोदध्वनि-
गंरुडरुतं सुरारिभुजगेन्द्रसन्त्रासने ।
धरणिभरावतारविधिडिण्डिमाडम्बरः
स जयति कंसरङ्गमुनि सिंहनादो हरेः ।।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु नजौ भजतगाः नगणः, जगणः, भगणः, जगणः, तगणः, गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **गरुडरुतं** नाम वृत्तम् ॥

अमरमयूरेति—अमरमयूरमानसमुदे अमराः सुराः एव मयूराः बर्हिणः, तेषां मानसस्य चेतसः, मुदे प्रसन्नतायै, पयोदध्वनिः मेघशब्दः, सुरारिभुजगेन्द्रसन्त्रासने सुराणाम् अमराणाम्, अरयः रिपवः, एव भुजगेन्द्राः फणयः, तेषां सन्त्रासने भयभीतकरणाय, गरुडरुतं तार्क्ष्यशब्दः, धरणिभरावतारविधिडिण्डिमाडम्बरः धरणेः भूमेः भारावतारविधौ भरदूरीकरणसम्बन्धे, डिण्डिमस्य वाद्यान्यतमस्य, आडम्बरः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

शब्दः, हरेः श्रीकृष्णस्य, कंसरङ्गभुवि कंसयुद्धभूभौ, सः भगवत्कृतः, सिंहनादः गर्जनम्, जयति सर्वोत्कर्षेण वर्तते । अत्र पद्ये रूपकालङ्कारः ।*

सफला—जिसके चारों चरणों में नगण, जगण, भगण, जगण, तगण और गुरु वर्ण हो, उसको **गरुडरुत** नामक वृत्त कहते हैं ।

देवता रूपी मोरों के चित्त को प्रसन्न करने के लिये बादल-गर्जन, देवताओं के शत्रु (दैत्य) रूपी साँपों को डराने के लिए गरुड़ का शब्द, भूमि के गुरुतर भार को दूर करने का सूचक डिण्डिमघोष तथा श्रीकृष्ण की सिंह-गर्जना कंस के रणक्षेत्र में विजय प्राप्त करती हैं ।

अत्यष्टिः (सप्तदशाक्षरा वृत्तिः) ।

य म न स भ ल ग

ISSSSS IIIIISS IIIS

रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ॥ १ ॥

करादस्य भ्रष्टे ननु शिखरिणी दृश्यति शिशो-

र्विलीनाः स्मः सत्यं नियतमवधेयं तदखिलैः ।

---

* अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

भ र न र न ग

SIIS IS III SI S III S

सङ्कथिता भरौ नरनगाश्च **धीरललिता** ॥ १ ॥

भ भ भ भ भ ग

SII SII SII SII SII S

पञ्चभकारयुताऽश्वगतिर्यदि चान्त्यगुरुः ॥ २ ॥

न ज र भ भ ग

IIIISISISS IISIIS

नजरभेण गेन च स्यान्मणिकल्पलता ॥ ३ ॥

ग

SS SSSSSSSS SSSSS

यस्मिन् सर्वे गा राजन्ते ब्रह्माद्यं तद्रूपं नाम ॥ ४ ॥

भ र य न न ग

SIISISIIS IIIIIIS

भो रयना नगौ च यस्यां वरयुवतिरियम् ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इति त्रस्यद्गोपाऽनुचितनिभृतालापजनितं
स्मितं बिभ्रद्देवो जगदवतु गोवर्धनधरः ।।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु यमनसभलागः यगणः, मगणः, नगणः, सगणः, भगणः, लघुः तथा गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **शिखरिणी** नाम वृत्तम् । अस्मिन् रसैरुद्रैश्छिन्ना षड्भिः एकादशभिः च वर्णैः यतिः भवति ।

करादस्येति—ननु निश्चये, ईदृशि एवं प्रकारके, शिखरिणि गोवर्धनगिरौ, अतिशिशोः सप्तहायनात्मकस्य बालकस्य, अमुष्य श्रीकृष्णस्य, करात् हस्तात्, भ्रष्टे च्युते सति, सत्यं नूनम् एव, विलीनाः स्मः विनाशं गमिष्यामः-तत् तस्मात् कारणात्, अखिलैः समस्तैः अस्माभिः व्रजवासिभिः, नियतं निश्चयम्, अवधेयं ध्यानं दातव्यम्, इति इत्थं, त्रस्यतां भयभीतानां गोपानाम्, अनुचितेन असाम्प्रतिकेन, निभृतेन सुगुप्तेन, आलापेन वार्तया, जनितं समुपस्थितं, स्मितं मन्दहास्यं, बिभ्रत् धारयन्, गोवर्धनधरः गोवर्धनपर्वतधारकः, देवः श्रीकृष्णः, जगत् समस्तं त्रैलोक्यम्, अवतु पात्वित्यर्थः ।

सफला—जिसके चारों चरणों में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु और गुरु वर्ण हों, उसको **शिखरिणी** नामक छन्द कहते हैं । इसमें ६ और ११ वर्णों पर यति होती है ।

श्रीकृष्ण की अलौकिक शक्ति से अपरिचित गोप इस प्रकार कह रहे हैं—ऐसा महान् गोवर्धन पर्वत सात वर्ष के बालक श्रीकृष्ण के हाथ से यदि गिर जायगा तो सचमुच हम सबका विनाश हो जायगा, यह हम सब व्रजवासियों को समझ लेना चाहिये । डरते हुए गोपों की इस प्रकार की गुप-चुप बातों से उत्पन्न मन्दहास्य वाले गोवर्धनधारक भगवान् श्रीकृष्ण सम्पूर्ण त्रैलोक्य की रक्षा करें ।

सप्तदशाक्षरावृत्तेः-अष्टौ भेदाः—

ज स ज स य ल ग
। ऽ । । । ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ
जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः ।

दुरन्तदनुजेश्वरप्रकरदुःस्थपृथ्वीभरं
जहार निजलीलया यदुकुलेऽवतीर्याशु यः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स एष जगतां गतिर्दुरितभारमस्मादृशां
हरिष्यति हरिः स्तुतिस्मरणचाटुभिस्तोषितः ।।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु जसौ जसयला: जगणः, सगणः, जगण सगणः, यगणः, लघुः तथा गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **पृथ्वी** नाम वृत्तम् । अस्मि वसुग्रहयतिः च अष्टाभिः नवभिः च वर्णैः यतिः भवति ।

दुरन्तेति—यः हरिः श्रीकृष्णः, यदुकुले यदूनां वंशे, अवतीर्य आविर्भू निजलीलया स्वमायया, दुरन्तानां जेतुमशक्यानां, दनुजेश्वराणां कंसप्रमुखान प्रकरेण सङ्घातेन, दुःस्थः स्थातुमसमर्थः, पृथ्वीभरः भूभारः तम्, आशु त्वरि जहार अपहृतवान्, जगतां गतिः समस्तजगदाधारः, सः सर्वव्याप्तः, एषः हरि भगवान्, स्तुत्या स्तवनेन, स्मरणेन चिन्तनेन, चाटुभिः मधुरालापैः, तोषित प्रसन्नीकृतः, अस्मादृशां मद्विधानां, पापिनां पापकर्मकर्तृणां, दुरितभारं पा समूहं, हरिष्यति विनाशयिष्यति ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, सगण, जगण, सग यगण, लघु तथा गुरु वर्ण हो, उसको **पृथ्वी** छन्द कहते हैं । इसमें ८+९ व पर यति होती है ।

जिस हरि ने यदुकुल में अवतार लेकर अपनी लीला से अत्यन्त बलशा कंस आदि दैत्यों के समूह से पृथ्वी के भार को अतिशीघ्र दूर किया, वह ती लोकों का आधार भगवान् श्रीकृष्ण अनेक प्रकार की स्तुतियों, स्मरण आदि प्रसन्न किया गया हमारे जैसे पापियों के पापसमूह का विनाश करेगा ।

भ र न भ न ल ग
S I I S I S I I I S I I I I I I S

दिङ्मुनि वंशपत्रपतितं[1] भरनभनलगैः ।

नूतनवंशपत्रपतितं रजनिजललवं
पश्य मुकुन्द ! मौक्तिकमिवोत्तममरकतगम् ।
एष च तं चकोरनिकरः प्रपिबति मुदितो
वान्तमवेत्य चन्द्रकिरणैरमृतकणमिव ।।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु भरनभनलगैः भगणः, रगणः, नगणः, भग

१. वंशपत्रपतिता, इति केचित् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नगणः, लघुः तथा गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **वंशपत्रपतितं** नाम वृत्तम् । अस्मिन् दिङ्मुनिभिः दशभिः सप्तभिः च वर्णैः यतिः भवति ।

नूतनेति—हे मुकुन्द ! श्रीकृष्ण !, नूतनं नूत्नं, यद् वंशपत्रं त्वक्सारदलं, तत्र पतितं स्थितं, रजनिजललवं नीहारकणम्, उत्तममरकतगं श्रेष्ठगारुत्मतमणिरचितपात्रस्थं, मौक्तिकम् इव, पश्य अवलोकय । एष च चकोरनिकरः, चकोरसमूहः, चन्द्रकिरणैः शशिमयूखैः वान्तं निःस्यन्दितम्, अमृतकणं पीयूषविन्दुम्, अवेत्य विज्ञाय, मुदितः प्रसन्नः सन्, प्रपिबति अतिशयेन आचामति । पद्येऽस्मिन् पूर्वार्धे उत्प्रेक्षालङ्कारः–उत्तरार्धे च भ्रान्तिमान् । प्रत्युदाहरणम्—

सम्प्रति लब्धजन्म शनकैः कथमपि लघुनि
क्षीणपयस्युपेयुषि भिदां जलधरपटले ।
खण्डितविग्रहं बलभिदो धनुरिह विविधाः
पूरयितुं भवन्ति विभवः शिखरमणिरुचः ॥

सफला–जिसके चारों चरणों में क्रमशः भगण, रगण, नगण, भगण, नगण, लघु तथा गुरु वर्ण हो, उसको **वंशपत्रपतित** नामक छन्द कहते हैं । इसमें १०+७ वर्णों पर यति होती है ।

हे मुकुन्द (कृष्ण) ! यह बांस के नूतन पत्र पर पड़े हुए ओस के कण इस प्रकार शोभित हो रहे हैं, मानो मरकत (पन्ना) मणि के पात्र में मोती रक्खें हों । यह चकोरपक्षियों का समूह चन्द्रमा की किरणों से निकली हुई अमृत की बूंदें समझकर प्रसन्नता के साथ इसको पी रहा है । इस पद्य के पूर्वार्ध में उत्प्रेक्षा और उत्तरार्ध में भ्रान्तिमान् अलंकार है ।

म भ न त त गग
S S S S I I I I I S S I S S I S S
मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम् ।

प्रेमालापैः प्रियवितरणैः प्रीणितालिङ्गनाद्यै-
र्मन्दाक्रान्ता तदनु नियतं वश्यतामेति बाला ।
एवं शिक्षावचनसुधया राधिकायाः सखीनां
प्रीतः पायात् स्मितसुवदनो देवकीनन्दनो नः ॥

सुषमा–यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण मगणः, भगणः, नगणः, तगणः, तगणः,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुरु: तथा गुरु: वर्ण: भवेत्, तत् **मन्दाक्रान्ता** नाम वृत्तम् । अस्मिन् चतुर्भि षड्भि: सप्तभिश्च वर्णै: यति: भवति ।

प्रेमालापैरिति—प्रेमालापै: स्निग्धवाग्व्यवहारै: स्वेष्टपदार्थप्रदानै:, आलि ङ्गनाद्यैश्च संरम्भणैश्च, प्रीणिता तोषं गमिता, तदनु तत्पश्चात्, मन्दं शनै आक्रान्ता आवृता, बाला युवती, नियतं नूनं, वश्यताम् एति वशीभूता भवति एवम् अनेन प्रकारेण, राधिकाया: सखीनां राधिकया सहचारिणीनां, शिक्षावचन सुधया उपदेशवागमृतै: प्रीत: मुदित:, अतएव स्मितेन, सुवदन: सुन्दरमुख देवकीनन्दन: श्रीकृष्ण:, न: अस्मान्, पायात् रक्षां कुर्यात् ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में मगण, भगण, नगण, तगण, नगण, गु और गुरुवर्ण हों, उसको **मन्दाक्रान्ता** छन्द कहते हैं । इसमें चार छः सात व पर यति होती है ।

मधुर वार्तालापों से, इच्छित वस्तुओं के वितरण से तथा आलिङ्गन-चुम्ब आदि से सन्तुष्ट की गयी नवयौवना नायिका निश्चित रूप से वश में हो जा हैं। राधा की सखियों के उपर्युक्त उपदेश-वाक्यों से प्रसन्नमुख देवकी के पु श्रीकृष्ण हमारी रक्षा करें।

न स म र स ल ग

।।।।।S S S S S।S।।S । S

नसमरसला ग: षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता ।

व्यधित स विधिर्नेत्रं नीत्वा ध्रुवं हरिणीगणाद्
व्रजमृगदृशां सन्दोहस्योल्लसन्नयनश्रियम् ।
यदयमनिशं दूर्वाश्यामे मुरारिकलेवरे
व्यकिरदधिकं बद्धाकाङ्क्षे विलोलविलोचनम् ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु नगण:, सगण:, मगण:, रगण:, सगण:, ल गुरु: च वर्ण: भवेत् तद् **हरिणी** नाम वृत्तम्, अस्मिन् षड्भि:, चतुर्भि:, सप्त च अक्षरै: यति: भवति ।

व्यधितेति—स: निर्माणपटु: सृष्टिरचनाकुशलेत्याशय:, विधि: ब्रह्मा, हरि गणात् हरिणीति वन्यमृगी, तस्या समूहात्, नेत्रं दृष्टिं, नीत्वा गृहीत्वा, व्रजमृ दृशां गोपाङ्गनानां, सन्दोहस्य निकरस्य उल्लसन्तीं शोभासनाथां, नयनश्रियं दृ प्रभां, व्यधित रचितवान्, इति ध्रुवं नूनम्, यद् यस्मात् कारणात्, अयं व्रजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नानां समूहः, दूर्वाश्यामे दूर्वाभरूपे, वद्धा सम्बद्धा, आकाङ्क्षा दर्शनाभिलाषः, मुरारिकलेवरे श्रीकृष्णस्य देहे, विलोलं चपलं, विलोचनं चक्षुः, अनिशं प्रतिदिनम्, अधिकं सातिशयं यथा तथा, व्यकिरत् चिक्षेप, यथा हरिण्यः दूर्वाम् आत्मसात् कर्तुम् अभिलषन्ति, तथैव व्रजवल्लभाः दूर्वाभं श्रीकृष्णम् सस्पृहं वीक्ष्य आत्मसात् कर्तुं वाञ्छन्ति । पद्येऽस्मिन् स्वभावोक्त्यलङ्कारः ।

सफला–जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, लघु और गुरु वर्ण हों, उसको **हरिणी** नामक वृत्त कहते हैं। इसमें छः चार और सात वर्णों पर यति होती है।

सृष्टि-रचना चतुर विधाता ने हरिणियों की नेत्र-शोभा को लेकर व्रज-वनिताओं की नेत्र-रचना की है, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं। इसी कारण ये व्रजवनितायें दूर्वादलश्यामल मनमोहक श्रीकृष्ण के शरीर की ओर साभिलाष-दृष्टि से देखती रहती हैं।

न ज भ ज ज ल ग

I I I I I S I I S I I I S I I S I I S

यदि भवतो नजौ भजजला गुरु नर्दटकम् ।

व्रजवनितावसन्तलतिकाविलसन्मधुपं
मधुमथनं प्रणम्रजनवाञ्छितकल्पतरुम् ।
विभुमभिनौति कोऽपि सुकृती मुदितेन
हृदा रुचिरपदावलीघटितनर्दटकेन कविः ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण नगणः, जगणः, भगणः, जगणः जगणः, लघुः, गुरुः च वर्णः भवेत्, तत् **नर्दटकम्** नाम वृत्तम् ।

व्रजवनितेति–व्रजवनिता व्रजस्त्रियः, एव वसन्तलतिका कुसुमसमयजवल्लयः तासु विलसन्तं, विलासं कुर्वन्तं, मधुपं भृङ्गाऽऽकृतिं, प्रणम्रजनानां भक्तसमूहानां, वाञ्छितस्य अभीप्सितस्य, वस्तुनः पदार्थस्य, वितरणे कल्पतरुं कल्पवल्लीलतां, विभुं व्यापकम् ईश्वरम्, मधुदैत्यविनाशकं, श्रीकृष्णं, कोऽपि सुकृती कश्चन पुण्यात्मा, कविः कवनशीलः, मुदितेन प्रसादयुक्तेन, हृदा मानसेन, रुचिराभिः रुच्याभिः; पदावलीभिः शब्दसन्तानैः, घटितेन कल्पितेन, नर्दटकेन एतन्नाम्ना छन्दसा अभिनौति प्रणमति इति ।

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में नगण, जगण, भगण, जगण, जगण, लघु और गुरुवर्ण हों, उसको **नर्दटक** नामक वृत्त कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्रजवनिता रूपी वासन्ती लताओं में विहार करने वाले, भ्रमररूपी भ्र की अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाले मधुदैत्य के विनाशक (मधुसूदन) भगव श्रीकृष्ण का स्तवन कोई (विरला) पुण्यात्मा कवि प्रसन्नचित्त होकर म मोहक सरस पदावली से रचित नर्दटक छन्द द्वारा करता है। अर्थात् उन प्रणमन करता है।

हयऋतुसागरैर्यतियुतं यदि कोकिलम् ।
लसदरुणेक्षणं मधुरभाषणमोदकरं
मधुसमयागमे सरसकेलिभिरुल्लसितम् ।
अलिललितद्युति विसुतावनकोकिलकं
ननु कलयामि तं सखि ! सदा हृदि नन्दसुतम् ॥

सुषमा—यदि नर्दटकं नाम वृत्तं हयऋतुसागरैः सप्त-षड्चतुर्भिः वर्णैः य युतं विरामयुतं भवेत्, तर्हि तत् **कोकिलकं** नाम वृत्तम् ।

लसदिति—ननु सखि ! हे सखि ! लसती शोभायुक्ते, अरुणे रक्ताभे ई नेत्रे, यस्य सः तम्, मधुरेण चित्ताकर्षकेण, भाषणेन संलापेन, मोदकरं हर्षप्र मधुसमयागमे प्रारब्धवसन्तकाले, सरसकेलिभिः, रम्यखेलाभिः, उल्लसितम् प्र दितम्, अलिललितद्युति भ्रमराभश्यामलकान्तियुक्तं, रविसुतावनकोकि यमुनातीरोद्यानस्थकोकिलाकारं तं नन्दसुतं श्रीकृष्णं सदा सर्वदा, हृदि मन कलयामि ध्याये।

सफला–यदि नर्दटक नामक छन्द से ७, ६, ४ वर्णों पर यति हो तो उसी **कोकिलक** नामक छन्द कहते हैं। यहाँ यतिभेद से छन्द का नाम भेद हुआ है

हे सखि ! शोभायुक्त लाल कनीनिका युक्त नेत्रों वाले अपने प्रिय वचनों सबके चित्तों को आकर्षित करने वाले, वसन्त ऋतु के आरम्भ में ललितकेलि से आनन्दित करने वाले, भ्रमर के सदृश साँवले और यमुनातटस्थित उद्यान कोकिल नन्दनन्दन श्रीकृष्ण का मैं सदा हृदय में ध्यान करती हूँ।

म भ न म य ल ग
SSS S I I I I I S SSS I SS I S

वेदर्त्वश्वैर्मभनमयला गतश्चेत्तदा हारिणी ।
यस्या नित्यं श्रुतिकुवलये श्रीशालिनी लोचने
रागः स्वीयोऽधरकिसलये लाक्षारसारञ्जनम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गौरी कान्तिः प्रकृतिरुचिरा रम्याङ्गरागच्छटा
सा कंसारेरजनि न कथं राधा मनोहारिणी ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण मगणः, भगणः, नगणः, मगणः, यगणः, लघुः गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **हारिणी** नाम वृत्तम्, अस्मिन् वेदैः चतुर्भिः ऋतुभिः षड्भिः, अश्वैः सप्तभिः च वर्णैः यतिः भवति ।

यस्या इति—यस्याः राधिकायाः, श्रिया कान्त्या, शालिनी शोभमाने, लोचने नेत्रे, एव श्रुतिकुवलये कर्णकमलकम्रे, अधरकिसलये अधरोष्ठपल्लवे, स्वीयः आत्मीयः, रागः लालिमा एव, लाक्षारसाञ्जनम् लाक्षारसेन अलक्तकद्रवेण, आरञ्जनम् रागकरम् प्रकृतिरुचिरा निसर्गमनोहरा, कान्तिः शोभाः एव, रम्याङ्गरागच्छटा रुचिरशरीरशोभाकारकद्रव्यसेकजनितद्युतिः, एतादृशी राधा, कंसारेः श्रीकृष्णस्य, मनोहारिणी चित्ताकर्षिका, कथं न अजनि इति काक्वा समाधीयते यत् मनोहारिणी अभूदित्येव ।

सफला—जिसके चारों चरणों में मगण, भगण, नगण, मगण, यगण, लघु तथा गुरु वर्ण हों, उसको **हारिणी** नामक छन्द कहते हैं । इसमें चार छः सात वर्णों पर यति होती है ।

जिस राधा की शोभा से अलंकृत नेत्र ही उसके कनफूल हैं, अधर किसलय पर स्वभाव से होनेवाली लालिमा ही लाक्षारस (होठों की लाली) है, स्वाभाविक ढंग से गौर वर्ण का नयनाभिराम शरीर-सौन्दर्य ही जिसका अंगराग (सौन्दर्यवर्धक अनुलेपन) है, इस प्रकार जन्मजात शोभातिशय से युक्त राधा श्रीकृष्ण के मन को अपनी ओर आकृष्ट क्यों नहीं करती, अर्थात् अवश्य करती है ।

म भ न र स ल ग
S S S S । । । । । S । S । । S । S

भाराक्रान्ता मभनरसला गुरुः श्रुतिषड्हयैः ।

भाराक्रान्ता मम तनुरियं गिरीन्द्रविधारणात्
कम्पं धत्ते श्रमजलकणं तथा परिमुञ्चति ।
इत्यावृण्वञ्जयति जलदस्वनाकुलवल्लवी-
संश्लेषोत्थं स्मरविलसितं विलोक्य गुरुं हरिः ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण मगणः, भगणः, नगणः, रगणः, सगणः,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लघुः, गुरुः च वर्णः भवेत्, तद् **भाराक्रान्ता** नाम वृत्तम् । अस्मिन् श्रुतिभिः चतुर्भिः, षड्भिः, हयैः सप्तभिः च यतिः भवति ।

भारेति–हरिः भगवान् श्रीकृष्णः, गुरुं पूज्यजनं, विलोक्य निरीक्ष्य, गिरीन्द्रविधारणात् गिरीन्द्रस्य गोवर्धनपर्वतस्य, विधारणात्, उच्छ्रयणात्, भाराक्रान्ता भारपीडिता, इयं पुरोदृश्यमानं, मम मदीयं, तनुः देहः, कम्पं वेपथुं, धत्ते धारयति, एवञ्च श्रमजलकणं परिश्रमोत्थस्वेदलवं, परिमुञ्चति त्यजति, इति, अनेन विधिना, जलदस्वनेन मेघारावेण, आकुलानां त्रस्तानां, वल्लवीनां गोपपत्नीनां, संश्लेषेण उपगूहनेन, उत्थम् उद्भूतं, स्मरविलसितं कामविकृतिम्, आवृण्वन् आवृतीकुर्वन्, जयति सर्वोत्कर्षेण वर्तते ।*

सफला—जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, नगण, रगण, सगण, लघु और गुरु वर्ण हों, उसको **भाराक्रान्ता** नामक छन्द कहते हैं । इसमें चार, छः, सात अक्षरों पर यति होती है ।

मेघ की गर्जना से भयभीत गोपियों ने श्रीकृष्ण का (अपनी रक्षा के लिये) आलिङ्गन किया, इससे उत्पन्न (अपने) काम विचार को वे गुरुजनों (माता-पिता आदि) के सामने इस प्रकार छिपा रहे हैं कि गुरुतर पर्वत को धारण करने के भार से मेरा शरीर दबा हुआ है अत एव काँप रहा है और पसीना निकल रहा है, ऐसे श्रीकृष्ण विजय को प्राप्त हों ।

(धृतिः अष्टादशाक्षरा वृत्तिः)

म त न य य य
S SSSS।।।।।।SS।S S।S S
स्याद् भूतर्त्वश्वैः कुसुमितलतावेल्लिता म्तौ नयौ यौ ।। १८ ।।

---

* अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

न न म र स लग
।।।।।।SSS S।S। ।S।S
रसयुगहययुङ् नौ म्रौ सो लगौ हि यदा **हरिः** ।। १ ।।

य भ न र स लग
।SSS ।।।।।S।S ।।S।S
भवेत्**कान्ता** युगरसहयैर्यभौ नरता लगौ ।। २ ।।

स स ज भ ज गग
।।S।।S।S ।S ।।।S।SS
ससजं **रतिशायनी** मता भजपरैर्गुरुभ्याम् ।। ३ ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रीडत्कालिन्दीललितलहरीवारिभिर्दाक्षिणात्यै-
वर्तैः खेलद्भिः कुसुमितलतावेल्लिता मन्दमन्दम् ।
भृङ्गालीगीतैः किसलयकरोल्लासितैर्लास्यलक्ष्मीं
तन्वाना चेतो रभसतरलं चक्रपाणेश्चकार ॥

सफला—यस्य चतुर्षु चरणेषु मगणः, तगणः, नगणः, यगणः, यगणः, यगणः च भवेत् **कुसुमितलतावेल्लिता** नाम वृत्तम् । अस्मिन् भूतैः पञ्चाभिः, ऋतुभिः षड्भिः अश्वैः सप्तभिश्च वर्णैः यतिः स्यात् ।

क्रीडदिति—क्रीडन्ति प्रसर्पयन्ति, यानिकालिन्द्याः सूर्यतनयायाः यमुनायाः, ललितलहरीणां नेत्रसुखदवीचीनां, वारिणी सलिलानि, तैः सह खेलद्भिः क्रीडद्भिः, 'क्रीडा खेला च कूर्दनम्' । इत्यमरः । दाक्षिणाशासमुत्पन्नैः, एवम्भूतै, वातैः, मन्दं मन्दं शनैः शनैः, वेल्लिता ईषच्चलिता, भृङ्गालीनां मधुव्रतानां, यीतैः गानचर्याभिः, किसलयानि नूतनपत्राणि एव कराः हस्ताः, तेषाम् उल्लसितैः अभिनयप्रकारैः, लास्यलक्ष्मीं नृत्यशोभां, तन्वाना विस्तारयन्ती, कुसुमितलता पुष्पाव्रतती, चक्रपाणेः श्रीकृष्णस्यः, चेतः स्वान्तं, रभसेन हर्षेण 'रभसोवेग-हर्षयो' चञ्चलं चपलं, चकार कृतवानित्याशयः । प्रत्युदाहरणम्—

ग्राम्याब्जानूपं पिशितलवणं शुष्कशाकं नवान्नं
गौडं पिष्टान्नं दधि सकृशरं निर्जलं मद्यमम्लम् ।
धाना वल्लूरं समशनमथो गुर्वसात्म्यं विदाहि
स्वप्नं चरात्रो श्वयथुगदवान् वर्जयेदङ्गनाञ्च ॥ वैद्यके ।

सफला—जिसके चारों चरणों में मगण, तगण, नगण, यगण, यगण, यगण हो, उसको **कुसुमितलतावेल्लित।** नामक वृत्त कहते हैं । इसमें पाँच छः सात वर्णों पर यति होती है ।

यमुना नदी की मनमोहक लहरों के चपल जल के साथ खेलते हुए (अत-एव शीतल) दक्षिण देश (मलय) की धीरे-धीरे कम्पन तथा पुष्पित लता ने (अत एव मन्द और सुगन्ध), भ्रमरों के गीतों तथा पल्लव रूपी हाथों के अभिनयों के द्वारा नृत्य की शोभा को दिखलाते हुए, श्रीकृष्ण का मन प्रसन्नता से चपल कर दिया ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अष्टादशाक्षरावृत्तेः चत्वारो भेदाः—

न ज भ ज र र

। । । । ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ऽ

नजभजरैस्तु रेफसहितैः शिवैर्हयैर्नन्दनम् ।

तरणिसुतातरङ्गपवनैः सलीलमान्दौलितं
मधुरिपुपादपङ्कजरजःसुपूतपृथ्वीतलम् ।
मुरहरचित्रचेष्टितकलाकलापसंस्मारकं
क्षितितलनन्दनं व्रज सखे ! सुखाय वृन्दावनम् ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु नगणः, जगणः, भगणः, जगणः रगणः, रगणः, भवेत् तद् **नन्दनम्** नाम वृत्तम् । अस्मिन् शिवैः एकादशभिः, हयैः सप्तभिः, यतिः भवति ।

तरणिसुतेति—सखे ! मित्र !, तरणिसुतायाः यमुनायाः, तरङ्गपवनैः वीचिवायुभिः, 'भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिरथोर्मिषु' । इत्यमरः । सलीलं लीलयासहितं, यथा तथा आन्दोलितम् उपवीजितम्, मधुरिपोः श्रीकृष्णस्य, पादपङ्कजरजसा चरणपद्मसुमनसां रजसा, सुपूतं समीचीनप्रकारेण पावितं, पृथ्वीतलं भूभागः, यत्र तथोक्तम्, मुरहरस्य मुरारेः श्रीकृष्णस्य, यानि चित्राणि विस्मयजनकानि, चेष्टितानि व्यवहाराणि, कलाः नाट्यविद्याः, तासां कलापस्य वृन्दस्य, संस्मारकं स्मृतिदायकं, क्षितितलनन्दनं भूतलस्थेन्द्रकाननं वृन्दावनं, सुखाय मनोविनोदाय, व्रज याहि इति । प्रत्युदाहरणम्—

अहत धनेश्वरस्य युधि यः समेतमायोधनं
तमहमितो विलोक्य विबुधः कृतोत्तमायोधनम् ।
विभवमदेन निह्नुतह्रियाऽतिमात्रसम्पन्नकं
व्यथयति सत्पथादधिगताऽथवेह सम्पन्नकं ? ॥ भट्टिः ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, जगण, भगण, जगण, रगण, रगण हों, उसको **नन्दन** नामक छन्द कहते हैं । इसमें ग्यारह और दस वर्णों में यति होती है ।

हे मित्र ! यमुना नदी से चञ्चल तरङ्गों से शीतल वायु के द्वारा उपवीजित, श्रीकृष्ण के चरण-कमल-रज से पवित्र भूमि से युक्त, श्रीकृष्ण के गोवर्धन पर्वत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उठाने आदि कार्यों तथा रासलीला आदि कलाओं के स्मारक भूलोक में नन्दन वन के समान (इन्द्र के बगीचे के सदृश) वृन्दावन के लिये प्रस्थान करो।

न न र र र र

।। ।।।।ऽ।ऽऽ। ऽऽ।ऽऽ।ऽ

इह ननरचतुष्कसृष्टन्तु नाराचमाचक्षते।

दिनकरतनयातटीकानने चारुसञ्चारिणी
श्रवणनिकटकृष्टमेणेक्षणा कृष्ण ! राधा त्वयि।
ननु विकिरति नेत्रनाराचमेषाऽतिहृच्छेदनं
तदिह मदनविभ्रमोद्भ्रान्तचित्तां विधत्स्व द्रुतम्[1] ॥

सुषमा—यस्य चतुर्ष चरणेषु क्रमेण नगणः, नगणः, रगणः, रगणः, रगणः, रगणः भवेत् तत् **नाराचं** नाम वृत्तम्।

दिनकरेति-हे कृष्ण ! दिनकरतनया यमुना, तस्याः तटीकानने तीरोद्याने, चारु सुन्दरं; यथा तथा, संचारिणी भ्रमणशीला, एण्या हरिण्या, ईक्षणे नयने इव नेत्रे यस्याः सा, राधा, त्वयि, श्रवणनिकटम् आकर्णान्तिकं, कृष्टं विततं, अतिहृच्छेदनम् अत्यन्तहृद्विभेदकं, नेत्रनाराचं नयनबाणम्, 'पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः। प्रक्ष्वेडनास्तुनाराचाः' इत्यमरः। विकिरति विक्षिपति, तत् तस्मात्, इह विपिने, द्रुतं शीघ्रं, मदनविभ्रमेण कामजनितहावभावेन, उद्भ्रान्तं चपलं, चित्तं यस्याः तादृशी, विधेहि पद्येऽस्मिन् रूपकालङ्कारः, उपमालङ्कारः च। प्रत्युदाहरणम्—

रघुपतिरपि जातवेदोविशुद्धां प्रगृह्य प्रियां
प्रियसुहृदि विभीषणे सङ्गमय्य श्रियं वैरिणः।
रविसुतमहितेन तेनानुयातः ससौमित्रिणा
भुजविजितविमानरत्नाधिरूढः प्रतस्थे पुरीम् ॥ रघौ।

सफला-जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, नगण, रगण, रगण, रगण, रगण हों, उसको **नाराच** नामक छन्द कहते हैं।

हे कृष्ण ! यमुना के नीर-तीर स्थित उपवनों में भ्रमण करती हुई मृगनयनी यह राधा आपके प्रति मर्मभेदक कानों तक खिंचे हुए नेत्ररूपी बाण (कटाक्ष)

१. उद्भ्रान्तचित्ताऽवधत्स्व द्रुतम्। इति पाठभेदः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छोड़ रही है। अत एव इस समय आप शीघ्र ही रतिक्रीड़ा से इस (राधा) का हृदय स्थिर कीजिये।

म भ न ल त त ग ग
ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

मन्दाक्रान्ता नपरलघुयुता कीर्तिता चित्रलेखा।

शङ्केऽमुष्मिञ्जगति मृगदृशां साररूपं यदासी-
दाकृष्येदं व्रजयुवतिसभा वेधसा सा व्यधायि।
नैतादृक् चेत्कथमुदधिसुतामन्तरेणाच्युतस्य
प्रीतं तस्यां नयनयुगमभूच्चित्रलेखाद्भुतायाम्॥

सुषमा—यदि मन्दाक्रान्ता नपरलघुयुता नगणात् परेण लघुवर्णयुक्ता स्यात् तर्हि सा चित्रलेखा नाम वृत्तं स्यात्। अतोऽत्र छन्दसि मगणः, भगणः, नगणः, लघुः, तगणः, तगणः, गुरुः, गुरुः च वर्णव्यवस्था भवति।

शङ्के इति—अमुष्मिञ्जगति इह लोके, मृगदृशां कुरङ्गीसदृशनेत्रवतां, यत् साररूपं महत्त्वपूर्णं सौन्दर्यं वर्तते स्म, वेधसा सृष्टिकर्त्रा, एतत्साररूपम् आकृष्य गृहीत्वा, सा पूर्वोक्ता, व्रजयुवतिसभा व्रजललनासमाजः, व्यधायि कृता, इति शङ्के मन्ये, चेद् यदि, एतादृग् एवंविधं न स्यात् तर्हि कथम्, उदधिसुतां सिन्धुतनयां लक्ष्मीमित्यर्थः, अन्तरेण, विना तां त्यक्त्वा, चित्रलेखाद्भुतायां भित्तिलिखितायामिव विस्मयरूपायां, तस्यां सभायाम्, अच्युतस्य श्रीकृष्णस्य नयनयुगं नेत्रमिथुनं, प्रीतं तुष्टम्, अभूत्।

सफला—यदि मन्दाक्रान्ता छन्द के लक्षण में नगण के आगे लघु वर्ण हो तो उसे **चित्रलेखा** नामक वृत्त कहते हैं। इस प्रकार छन्द में मगण, भगण, नगण, लघु, तगण, तगण, गुरु और गुरु वर्ण होते हैं।

इस लोक में सुन्दरी स्त्रियों का जो महत्वपूर्ण सौन्दर्य था उसको लेकर ही विधाता ने व्रजयुवतियों की रचना की है। यदि ऐसा न होता तो (वैकुण्ठ में) लक्ष्मी जी को छोड़कर भगवान् श्रीकृष्ण का मन व्रज में रहने वाली गोपियों के प्रति कैसे आकर्षित होता।

म स ज स त स
ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । । । ऽ

मः सो जः सतसा दिनेशऋतुभिः शार्दूलललितम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृत्वा कंसमृगे पराक्रमविधिं शार्दूलललितं
यश्चक्रे क्षितिभारकारिषु दरं चैद्यप्रभृतिषु ।
सन्तोषं परमं तु देवनिवहे त्रैलोक्यशरणं
श्रेयो नः स तनोत्वपारमहिमा लक्ष्मीप्रियतमः ॥

सुषमा–यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण मगणः, सगणः, जगणः, सगणः, तगणः, सगणः भवेत् तत् **शार्दूलललितम्** नाम वृत्तम् । अस्मिन् पद्ये दिनेशऋतुभिः, दिनेशैः द्वादशभिः, ऋतुभिः षड्भिः यतिः भवति ।

कृत्वेति—यः श्रीकृष्णः, कंसरूपिणे हरिणे, शार्दूलललितं व्याघ्रवद् रमणीयं, पराक्रमविधिं शूरतासम्पन्नं कार्यं कृत्वा, क्षितिभारकारिषु भूभारविधायकेषु, चैद्यप्रभृतिषु चेदिवंशस्य राजा शिशुपालः तत् प्रमुखेषु, दरं त्रासं, देवनिवहे सुरसङ्घे, परमम् अत्यधिकं, सन्तोषं मोदं, चक्रे कृतवान्, सः त्रैलोक्यशरणं समस्तलोकरक्षकं, अपारः अतीवमहान्, महिमा महत्वं यस्य सः, लक्ष्मीप्रियतमः श्रीकृष्णः, नः अस्माकं, श्रेयः शिवं, तनोतु विस्तृतं करोतु ।*

---

* अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

म स ज ज भ र
S S S I I S I S I I S I S I I S I S
मात्सो जौ भरसंयुतौ करिवाणकैर्**हरिणप्लुतम्** ॥ १ ॥

भ भ भ भ भ स
S I I S I I S I I S I I S I I I I S
पञ्चभकारयु**ताश्वगति**र्यदि चान्तसरचिता ॥ २ ॥

य म न स त स
I S S S S S I I I I I S S S I I I S
सुधा तर्कैस्तर्कैर्भवति ऋतुभिर्यो मोनसतसाः ॥ ३ ॥

म न न त त म
S S S I I I I I I S S I S S I S S S
वर्णाश्वैर्मननततमकैः कीर्तिता **चित्रलेखेयम्** ॥ ४ ॥

भ र न न न स
S I I S I S I I I I I I I I I I S
भाद् रनना नसौ **भ्रमरपदक**मिदमभिहितम् ॥ ५ ॥

म स ज स र म
S S S I I S I S I I I S S I S S S S
शार्दूलं वद मासषट्कयति मः सो जसौ रो मश्चेत् ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, सगण, हों, उसको **शार्दूलललित** छन्द कहते हैं। इसमें बारह और छः वर्णों में यति होती है।

जिन्होंने कंसरूपी मृग पर बाघ के समान अपनी शक्ति दिखाकर चेदि वंश राजा शिशुपाल आदि भूमि के ऊपर भार करने वालों को भयभीत तथा देवताओं प्रसन्न कर दिया वे समस्त लोकों के रक्षक तथा अपार महिमा वाले लक्ष्मीपति भगवान् श्रीकृष्ण हम सबका कल्याण करें।

अतिधृतिः (ऊनविंशत्यक्षरा वृत्तिः)

य म न स र र ग

ISS SSS IIIIISSISSIS S

रसर्त्वश्वैर्य्मौन्सौ ररगुरुयुतौ मेघविस्फूर्जिता स्यात्।

कदम्बामोदाढ्या विपिनपवनाः केकिनः कान्तकेका
विनिद्राः कन्दल्यो दिशि दिशि मुदा दर्दुरा दृप्तनादाः।
निशा नृत्यद्विद्युद्विलसितलसन्मेघविस्फूर्जिता चेत्
प्रियः स्वाधीनोऽसौ दनुजदलनो राज्यमस्मात्किमन्यत्॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण यगणः, मगणः, नगणः, सगणः, रगणः रगणः, गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **मेघविस्फूर्जिता** नाम वृत्तम्। अस्मिन् रसर्त्वश्वैः रसैः षड्भिः, ऋतुभिः षड्भिः, अश्वैः सप्तभिः च वर्णैः यतिः भवति।

कादम्बेति-विपिनपवनाः काननमरुतः, कदम्बामोदाऽऽढ्याः कदम्बसुवास-पूरिताः, केकिनः मयूराः कान्तकेकाः सरसवचनमुखराः, कन्दल्यः, अजिनयोनिहरिण-

---

म भ न य र र
SSSSIIIIIISSSISSIS
अथाश्वाश्वैर्मभनयरयुगैर्वृत्तं मतं **केसरम्**॥ ७॥

म भ न ज भ र
S S S SIIIIIIISISIIS IS
म्भौ न्जौ भ्रौ चेच्चलमिदमुदितं युगैर्मुनिभिः स्वरैः॥ ८॥

न न र र र र
IIIIIIS IS SISSISSIS
यदिह नयुगलं ततो वेदरेफैर्महामालिका॥ ९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भेदाः, 'कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावपि ।' इत्यमरः । विनिद्राः प्रबुद्धाः, दिशि दिशि चतुर्दिक्षु, दर्दुराः भेकाः, मुदा प्रसन्नतया, दृप्तनादाः अवलिप्तशब्दवन्तः, निशा रात्रिः, नृत्यन्तीनां नाट्याभिनयं कुर्वतीनां, विद्युतां तडितां, विलासितेन चाकचक्येन, लसन् शोभां लभमानः, यः मेघः तस्य विस्फूर्जितं स्तनितं, यस्यां तयोक्ता अस्तीति, चेद् यदि, प्रियः स्निग्धः, असौ दनुजदलनः दैत्यविनाशकः श्रीकृष्णः, स्वाधीनः मदधीनः, स्यात् तदा अस्मात् श्रीकृष्णसंगमात् परम् अन्यत् तदपरं, राज्यं राज्यसम्पत्तिजन्यं सुखमपि किम्, नास्ति किमपीति शेषः ।

उदञ्चत्कावेरीलहरिषु परिष्वङ्गरङ्गे लुठन्तः
कुहूकण्ठीकण्ठीरवरवलवत्रासितप्रोपितेभाः ।
अमी चैत्रे मैत्रावरुणीकेलिकङ्केलिमल्लौ-
चलद्वल्लीहल्लीसकसुरभयश्चण्डि ! चञ्चन्ति वाताः ॥ कस्यचित् ॥

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः यगणः, मगण, नगण, सगण, रगण और गुरु वर्ण हों, उसको **मेघविस्फूर्जिता** छन्द कहते हैं ।

वनपवन कदम्बकुसुमों की सुवास से सुवासित है, मोरों का समूह मधुर केका का उच्चारण कर रहा है, मृगियाँ जग गयी हैं, चारों ओर मेढक जोरदार टर्र-टर्र की रटन लगा रहे हैं, चमकती हुई बिजली की चकाचौंध से रात्रि शोभित हो रही है, (राधिका कह रही है) ऐसे समय में यदि हृदयदयित श्रीकृष्ण मेरी इच्छा के अनुकूल व्यवहार करने लगे तो इससे बढ़कर फिर मेरे लिये स्वर्गीय सुख भी कुछ नहीं है ।

ऊनविंशत्यक्षरावृत्तेः चत्वारो भेदाः—

य म न स त त ग
ISS SSS III IIS SSI SSI S

भवेत्सैवच्छाया तयुगगयुता स्याद् द्वादशान्ते यदा ।

अभीष्टं जुष्टो यो वितरति लसद्दोश्चारुशाखोज्ज्वलः
स्फुरन्नानारत्नस्तवकिततनुश्चित्रांशुकालम्बितः ।
न यस्याङ्घ्रेश्छायामुपगतवतां ससारतीव्रातप-
स्तनोति प्रोत्तापं स जगदवतात् कंसारिकल्पद्रुमः ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण यगणः, मगणः, नगणः, सगणः, तगणः, तगणः, गुरुः च वर्णः भवेत तत् छाया नाम वृत्तम् । अर्थात् सा पूर्वोक्तलक्षणा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'मेघविस्फूर्जिता' एव यदि द्वादशान्ते तयुगगयुता स्यादित्यर्थः। यतिक्रमस्तु 'मेघविस्फूर्जिता' वृत्तवदेव ६+६+७ ज्ञेयः।

अभीष्टमिति—लसन्तः शोभां लभमानाः, दोषः भुजा एव, चारुशाखाः नयनाभिरामस्कन्धाः, 'स्कन्धशाखाशाले', इत्यमरः। ताभिः उज्जवलः प्रदीप्तः, स्फुरद्भिः प्रकाशयुक्तैः, नानारत्नैः विविधमणिभिः, स्तवकिता गुच्छयुक्ता, 'स्याद् गुच्छकस्तु स्तवकः'। इत्यमरः। तनुः शरीरं, यस्य सः तथोक्तं चित्रं सुन्दरम्, अंशुकालम्बितः कौशेयवस्त्रपरिवेष्टितः, कंसारिकल्पद्रुमः कंसरूपशत्रोः विनाशाय कल्पद्रुमवत् फलप्रदः श्रीकृष्णः जुष्टः प्रीत्या सेवितः, अभीष्टम् अभिलषित वस्तु वरं वा वितरति प्रयच्छति, यस्य भगवतः अङ्घ्रेः चरणयुगमस्य, छायाम् मूलम्, उपगतवताम् आश्रितवतां भक्तानां, संसारतीव्रातपः जगत् एव चण्डघर्मः प्रोत्तापं प्रकृष्टसन्तापं पीडां, न तनोति न विस्तारयति, स भगवान् जगत् त्रैलोक्यम् अवतात् पालयतु।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रम से यगण, मगण, नगण, सगण, तगण, तगण, गुरु वर्ण हों, उसको **छाया** नामक छन्द कहते हैं। अर्थात् 'मेघविस्फूर्जिता' छन्द के बारह अक्षरों के बाद दो तगण और एक गुरु हों तो **छाया** वृत्त होता है। यति क्रम पूर्ववत् है।

मनमोहक भुजारूपी शाखाओं से सुशोभित चमकते हुए अनेक प्रकार के रत्नों द्वारा जिसका शरीर फूलों के गुच्छे के सदृश दिखायी दे रहा है, और जिसने सुन्दर (पीले) वस्त्र धारण किये हैं, कंस के विनाश के लिये कल्पवृक्ष के समान ऐसे श्रीकृष्ण सेवा करने पर भक्तों की इच्छित फल प्रदान करते हैं। और जिनको श्रीकृष्ण के चरणों की छाया प्राप्त हो गयी है ऐसे भक्तों को भवबाधा-रूपी प्रचण्ड धूप सन्ताप प्रदान नहीं कर सकती, वे श्रीकृष्ण त्रैलोक्य की रक्षा करें।

म स ज स त त ग

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ

सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।

गोविन्दं प्रणमोत्तमाङ्ग ! रसने ! तं घोषयाऽहर्निशं
पाणी ! पूजय तं, मनः ! स्मर, पदे ! तस्यालयं गच्छतम्।
एवञ्चेत्कुरुथाखिलं मम हितं शीर्षादयस्तद् ध्रुवं
न प्रेक्षे भवतां कृते भवमहाशार्दूलविक्रीडितम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण मगणः, सगणः, जगणः, सगणः, तगणः, तगणः, गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **शार्दूलविक्रीडितम्** नाम वृत्तम्। अस्मिन् सूर्यैः द्वादशभिः, अश्वैः सप्तभिश्च वर्णैः यतिः भवति।

गोविन्दमिति—हे उत्तमाङ्ग! शिरः! गोविन्दं, प्रणम प्रणामं कुरु, रसने रसज्ञे, 'रसज्ञा रसना जिह्वा'। इत्यमरः। तं श्रीकृष्णम्, अहर्निशं रात्रिन्दिनं, घोषय रट, पाणी! करौ, तं पूजयतम् अर्चनां कुरुताम्, मनः! हृदय!, तं श्रीकृष्णं स्मर स्मरणं कुरु, पदे! चरणौ, तस्य श्रीकृष्ण, आलयं देवालयं गच्छतं यातं, शीर्षादयः शिरः प्रभृतीनि शरीरावयवानि, एवञ्चेत् इत्थम्, अखिलम् उपर्युक्तं सर्वं, मम हितं मदीयं कल्याणं, कुरुथ चेत्, तदा भवतां कृते त्वत् कृपया भवमहाशार्दूलविक्रीडितं संसाररूपभीषणव्याघ्रचेष्टितं न प्रेक्षे न अवलोकये।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और गुरु वर्ण हों, उसको **शार्दूलविक्रीडित** छन्द कहते हैं। इसमें बारह और सात वर्णों में यति होती है।

हे सिर! भगवान् श्रीकृष्ण को प्रणाम कर, जीभ! रात-दिन उसी का जप करो, हाथो! तुम उसकी पूजा करो, मन! उसका स्मरण कर और पैरो! तुम भगवान् के मन्दिर में जाओ, हे मेरे सिर आदि अंगो! तुम सब उपर्युक्त प्रकार से मेरा हित करो। तुम्हारे सहयोग से मुझे भव व्याघ्र की लीलाओं के दर्शन नहीं करने पड़ेंगे।

म र भ न य न ग

ऽ ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ।।।।।। ऽ ऽ।।। ऽ

म्रौ भ्नौ यो नो गुरुश्चेत्स्वरमुनिकरणैराह सुरसाम्[1]।

कामक्रीडासतृष्णो मधुसमयसमारम्भरभसात्
कालिन्दीकूलकुञ्जे विहरणकुतुकाकृष्टहृदयः।
गोविन्दो वल्लवीनामधररससुधां प्राप्य सुरसां
शङ्के पीयूषपानैः प्रचुरकृतसुखं व्यस्मरदसौ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण मगणः, रगणः, भगणः, नगणः, यगणः, नगणः, गुरुः च वर्णः भवेत्, तत् **सुरसा** नाम वृत्तम्। अस्मिन् स्वरैः सप्तभिः, मुनिभिः सप्तभिः, करणैः पञ्चभिश्च यतिः भवति।

१. 'पीयूषपानप्रचय'। इति पाठभेदः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कामक्रीडेति—मधुसमयसमारम्भसात् कुसुमसमयप्रादुर्भावप्रमोदात्, कामक्रीडासतृष्णः, सम्भोगाभिलाषुकः, कालिन्दीकूलकुञ्जे यमुनातटनिकुञ्जे, विहरणे विहारकर्मणि, यत् कुतुकम् औत्सुक्यं, तेन आकृष्टं स्वायत्तीकृतं हृदयं यस्य सः तथोक्तः असौ गोविन्दः पुरःस्थितः श्रीकृष्णः, सुरसां मनोज्ञां, वल्लवीनां गोपपत्नीनाम्, अधररससुधाम् अधरोष्ठास्वादपीयूषं, प्राप्य आस्वाद्य, पीयूषपानैः सुधाऽऽचमनैः, प्रचुरकृतसुखं लब्धप्रभूताऽऽनन्दं, व्यस्मरद् विस्मृतो बभूवेति शङ्के मन्ये । पद्येऽस्मिन्नुत्प्रेक्षाऽलङ्कारः ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, नगण और गुरु वर्ण हों, उसको **सुरसा** नाम छन्द कहते हैं । इसमें सात, सात, पांच अक्षरों में यति होती है ।

बसन्त ऋतु के प्रारम्भ होने कारण कामक्रीडा के प्रति उत्सुक श्रीकृष्ण यमुना नदी के तीर स्थित कुञ्ज में विहार के लिये उत्सुक हुए, अत एव वे गोपवनिताओं के अधरामृत का पान कर बार-बार सुलभ स्वर्गीय अमृत पान के आनन्द को भूल गये ।

म ग ग न न त त ग ग

S S S SS ||||||S S|SS|SS

मो गौ नौ तौ गौ शरहयतुरगैः फुल्लदाम प्रसिद्धम् ।

शश्वल्लोकानां प्रकटितकदनं ध्वस्तमालोक्य कंसं
हृष्यच्चेतोभिस्त्रिदिववसतिभिर्व्योमसंस्थैर्विमुक्तम् ।
मुग्धामोदेन स्थगितदशदिगाभोगमाहूतभृङ्गं
मौली दैत्यारेर्न्यपतदनुपमं स्वस्तरोः फुल्लदाम ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु च चरणेषु क्रमेण मगणः, द्वौ गुरुवर्णौ, द्वौ नगणौ, द्वौ तगणौ, पुनः द्वौ गुरू च भवेताम्, तत् **फुल्लदाम** नाम वृत्तम् । अस्मिन् शरहयतुरगैः पञ्च-सप्त-सप्तभिः वर्णैः यतिः भवति ।

शश्वदिति—शश्वत् पुनः, 'पुनः सहर्थयोः शश्वत्' । इत्यमरः । लोकानां जनानां, प्रकटितकदनं जातहननं, तथोक्तं कंसं राजानं, ध्वस्तं हतम्, आलोक्य निरीक्ष्य, हृष्यच्चेतोभिः प्रसन्नमनस्कैः त्रिदिवे सुरलोके, वसतिः वासः, येषां तैः, व्योमसंस्थैः गगनस्थैः, विमुक्तम् परित्यक्तम्, मुग्धामोदेन चेतोहरणशीलेन सुवासेन, स्थगितः समन्ताद् व्याप्तः दशदिशाभोगम् सर्वासु दिक्षु विस्तारः येन तथाभूतम्,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आहूताः सुगन्धिप्रसारेण आकारिताः, भृङ्गाः द्विरेफा येन तथाभूतम्, अनुपमं नास्ति अन्यः उपमा यस्य तथाभूतं, स्वस्तरोः स्वर्गस्थवृक्षस्य, फुल्लदाम पुष्पस्रक्, दैत्यारेः कंसादिविनाशकस्य, श्रीकृष्णस्य, मौलौ शिरसि, न्यपतत् आपतिता।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः मगण, दो गुरु, दो नगण, दो तगण और दो गुरु वर्ण हों उसको **फुल्लदाम** नामक छन्द कहते हैं। इसमें पाँच, सात तथा सात वर्णों पर यति होती है।

संसार के प्राणियों को बार-बार पीड़ित करने वाले कंस को विनष्ट देखकर प्रसन्न चित्त होकर स्वर्ग स्थित देवताओं ने आकाश (कुछ समीप) में आकर अपनी मनमोहक सुगन्ध से समस्त दिशाओं को मह-महा देने वाली भ्रमर समूह को सहसा आकृष्ट करने वाली स्वर्गीय पारिजातपुष्पों की माला श्रीकृष्ण के ऊपर गिरायी।*

कृतिः (विंशत्यक्षरा वृत्तिः)

म र भ न य भ ल ग

S S S S | S S | | | | | | S S S | | | S

ज्ञेया सप्ताश्वषड्भिर्मरभनययुता भ्लौ गः सुवदना ॥ १ ॥

---

* अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

म त न स त त ग

S S S S S | | | | | | S S S | S S | S

वृत्तं विभ्वाख्यं शरमुनितुरगैर्म्तौंग्सौ ततौ चेद् गुरुः ॥ १ ॥

य म न स ज ज ग

| S S S S S | | | | | S | S | | S | S

रसैः षड्भिर्लोकैर्यमनसजजा गुरुर्मकरन्दिका ॥ २ ॥

य भ न य भ ज ग

| S S S | | | | | | S S S | | | S | S

इनाश्वैः स्याद् यभनयभजगाः कीर्तिश्च **मणिमञ्जरी** ॥ ३ ॥

ज स ज स त भ ग

| S | | | S | S | | | S S S | S | | S

गजाब्धितुरगैर्जसौ जसतभा गश्चेत् **समुद्रलता** ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रत्याहृत्येन्द्रियाणि त्वदितरविषयान्नासाऽग्रनयना
त्वां ध्यायन्ती निकुञ्जे परतरपुरुषं हर्षोत्थपुलका।
आनन्दाश्रुप्लुताक्षी वसति सुवदना यौगैकरसिका
कामार्ति त्यक्तुकामा ननु नरकरिपो! राधा मम सखी॥

सुषमा–यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण मगणः, रगणः, भगणः, नगणः, यगणः, भगणः, लघुः, गुरुः च वर्णः भवेत्, तत् **सुवदना** नाम वृत्तम्। अस्मिन् सप्ताश्व-षड्भि, सप्तभिः, सप्तभिः, षड्भिः च वर्णैः यति भवति।

प्रत्याहृत्येति—ननु इति सम्बोधनार्थे प्रयुक्तमव्ययम्, नरकरिपो नरकासुर-विनाशक! सुवदना सुन्दराकृतिः सरसभाषिणी च, मम काचिदपरा राधायाः सखी कथयति, सखी मित्रं, राधा अस्तीति सम्बन्धः, कामार्ति कामजनितशरीर-तापं, त्यक्तुकामा दूरीकर्तुं वाञ्छती, यौगैकरसिका तपसि तत्परा, निकुञ्जे कस्मिंश्चिल्लतामण्डपे, वसति निवासं करोति। तस्यास्तपसः प्रकारं निर्दिशति कविः–त्वदितरविप्रयात् त्वत्तोऽन्यसांसारिकविषयात्, इन्द्रियाणि नेत्रादीनि, प्रत्या-हृत्य सन्नियम्य, नासाऽग्रे नासिकायाः अग्रभागे, नयने चक्षुषी यस्याः सा तथोक्ता सती परतरपुरुषं जगदीश्वरं त्वां, ध्यायन्ती चिन्तयन्ती, हर्षेण त्वत्प्राप्तिकामनया, उत्थम् उत्पन्नं, पुलकं रामहर्षणं यस्याः सा तथोक्ता, आनन्दश्रुभिः स्नेहोत्थवाष्प-बिन्दुभिः, प्लुते व्याप्ते, अक्षिणी नयने यस्याः सा तथोक्ता वर्तत इति शेषः। योगप्रकारः—'एकाकी यतचित्तात्मा, तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा, सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं, मत्संस्थामधिगच्छति'। गीतायां षष्ठाध्याये।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रम से मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, भगण, लघु और गुरु वर्ण हों, उसको **सुवदना** नामक वृत्त कहते हैं। इसमें सात, सात, छः वर्णों पर यति होती है।

नरकासुर के विनाशक हे भगवान् श्रीकृष्ण! मेरी सखी राधा सुन्दर मुखा-कृतिवाली है। कामजनित सन्तान को दूर करने की इच्छा से वह योग साधना में तत्पर हो कुञ्ज में निवास कर रही है। उसने आपके अतिरिक्त सम्पूर्ण विषयों से अपनी चक्षु आदि इन्द्रियों को हटा लिया है। वह गीता में कथित ध्यानयोग के अनुसार नासिका के अग्रभाग में दृष्टि लगाकर परमपुरुष आपका ध्यान करते हुए आनन्द के कारण रोमाञ्चित हो जाती है और स्नेह के कारण उसके आँखों में आँसू भर जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विंशत्यक्षरावृत्तेः त्रयो भेदाः—

स ज ज भ र स ल ग

। । ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

सजजा भरौ सलगा यदा कथिता तदा खलु गीतिका।

करतालचञ्चलकङ्कणस्वनमिश्रणेन मनोरमा
रमणीयवेणुनिनादरङ्गिमसङ्गमेन सुखावहा।
बहुलानुरागनिवासरासमुद्भवा भवरागिणं
विदधौ हरिं खलु वल्लवीजनचामरगीतिका। महाकाव्ये।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण सगणः, जगणः, जगणः, भगणः, रगणः, सगणः, लघुः, गुरुः च वर्णः भवेत् तद् **गीतिका** नाम वृत्तम्।

करतालेति—करतालेन करतलध्वनिना, चञ्चलं चपलं, यत् कङ्कणं करभूषणं, तस्य स्वनस्य शब्दस्य मिश्रणेन सम्पर्केण, मनोरमा मनोज्ञा, रमणीयः कर्णप्रियः, यः वेणुनिनादः मुरलीरणितं तस्य यः रङ्गिमा लयः, तस्य सङ्गमेन संसर्गेण, सुखावहा प्रमोदप्रदा बहुलानुरागस्य प्रवृद्धस्नेहस्य, निवासः आश्रयः, यः रासः प्रसिद्धा रासक्रीडा, तत्र समुद्भवा उत्पन्ना, वल्लवीजनस्य गोपवधूसमूहस्य, चारु रुचिरं, चामरं चमरीमृगविशेषस्य, पुच्छं यस्यां, सा चासौ गीतिका, हरिं श्रीकृष्णं, भवरागिणं सांसारिककार्येष्वनुरक्तं, विदधौ कृतवान्।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रम से सगण, दो जगण, भगण, रगण, सगण, लघु तथा गुरु वर्ण हों, उसको **गीतिका** नामक छन्द कहते हैं।

ताली बजाते समय हिलते हुए परस्पर कंकणों की झनकार के मिश्रण से, मनोरम कर्णप्रिय जो वंशी की धुन उसके लय के संसर्ग से, सुखदायक, अत्यन्त प्रेम का परिचायक रासलीला में गोपियों द्वारा डुलाये गये चामर पवन युक्त सरस गीतिका ने श्रीकृष्ण को सांसारिक कार्यों में अनुरक्त कर दिया।

विशेष—यह उदाहरण ग्रन्थकर्ता ने अपने द्वारा रचित 'अच्युतचरित' महाकाव्य से उद्धृत किया है।

र ज र ज र ज ग ल

ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ।

वृत्तमीदृशन्तु नामतो रजौ रजौ रजौ गुरुर्लघुश्च।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्तवृत्तिलीलया[1] निसर्गरम्यदेहरूपविभ्रमेण
राजमानसद्वयोविलाससम्पदा कलाकुतूहलेन ।
यः समं व्रजाङ्गनाजनैः सुराङ्गनानिभैः सुखं समेत्य
विष्णुरुल्लास चित्तपद्मकोषषट्पदः स मे सदास्तु ।।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण रगणः, जगणः, रगणः, जगणः, रगणः, जगणः, गुरुः, लघुः च वर्णः भवेत्, तद् **वृत्तं** नाम वृत्तम् ।

चित्तवृत्तिरिति—यः विष्णुः, चित्तवृत्तिलीलया मानसविचारमात्रेण, राजमानं भ्राजमानं, यत् सद्वयः कैशोराद्यवस्थाविशेषः, तस्य विलाससम्पदा हाव-भावादि-सम्पत्या, कलाकुतूहलेन नृत्याद्यौत्सुक्येन, निसर्गरम्यः प्रकृतिसुन्दरः, यः देहः, तस्य रूपविभ्रमेण सौन्दर्यविलासहेतुना, सुराङ्गनानिभैः देवस्त्रीसदृशैः, व्रजाङ्गनाजनैः व्रजयुवतीभिः, समं साकं, सुखं सानन्दं, समेत्यः मिलित्वा, उल्लासक्रीडां चक्रे, सः विष्णुरूपः श्रीकृष्णः, मे मम, चित्तपद्मकोषषट्पदः मानसकमलकुड्मल-स्थितभ्रमरस्वरूपः, सदा अस्तु । पद्येऽस्मिन् रूपकालङ्कारः ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः रगण, जगण, रगण, जगण, रगण, जगण, गुरु तथा लघु वर्ण हों, उसको **वृत्त** नामक वृत्त कहते हैं ।

जो विष्णु अपने सङ्कल्प मात्र से शोभायमान अपने शरीर की सुन्दरता से कान्तिमान् युवावस्था के हाव-भावादि की उत्सुकता से देवाङ्गनाओं के सदृश व्रजललनाओं के साथ सुख लाभ में प्रसन्न होते हैं, वे विष्णु रूपी भगवान् श्रीकृष्ण मेरे हृदयकमल में भ्रमररूप होकर निवास करें ।

विशेष—प्रस्तुत ग्रन्थ के पाठों का आधार जिसे छन्दोमञ्जरी को मान कर हम चले हैं, उसमें दिया हुआ **'चित्तवृत्तिलीलया'** यह पाठ रुचिकर प्रतीत नहीं होता, अन्य प्रतियों में उपलब्ध 'चित्रवृत्तलीलया' यह पाठ समीचीन प्रतीत होता है । क्योंकि ग्रन्थ की परम्परा है प्रत्येक लक्षण के उदाहरण में निर्दिष्ट छन्द के नाम का समावेश करना, यदि हम मूल में दिये गये पाठ का पक्षपात करते हैं, तो यह परम्परा खण्डित हो जाती है । मालूम होता है यहाँ उक्त पाठ किसी प्रमाद के कारण उद्धृत हो गया है ।

य म न न ग र र ग
ISS S S S I I I I I I S S I S S I S S
रसाश्वाश्वैः शोभा नयुगगजठरा मेघविस्फूर्जिता चेत् ।

१. 'चित्रवृत्तलीलया' । इति पाठान्तरः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सदा पूषोन्मीलत्सरसिजयुगला मध्यनम्रा फलाभ्यां
तयोरूर्ध्वं राजत्तरलकिसलयाश्लिष्टसुस्निग्धशाखा।
लसन्मुक्तारक्तोत्पलकुवलयवच्चन्द्रबिम्बिश्चिताग्रा
महाशोभा मौलौ मिलदलिपटलैः कृष्ण ! सा काऽपि वल्ली।।

सुषमा–यदि मेघविस्फूर्जिता छन्दसः जठरमध्ये नगणद्वयं गुरुश्च वर्णः स्यात् तदा तत् **शोभा** नाम वृत्तं भवति। तदा तस्य गणगणनाक्रमः एवम्प्रकारेण स्यात्- यगणः, मगणः, नगणः, नगणः, गुरुः, रगणः, रगणः, गुरुः च। अस्मिन् रसाश्वाश्वैः षट्-सप्त-सप्तभिः वर्णैः यतिः।

सदेति—हे कृष्ण ! भगवन् ! सदा प्रतिदिनम्, पूष्णा आदित्येन, उन्मीलद् विकासं प्रापद्, सरसिजयुगलं पद्ममिथुनम्, चरणकमलद्वयमित्याशयः सा, फलाभ्यां स्तनरूपफलाभ्याम्, मध्यनम्रा विनतमध्यभागा, तयोरूर्ध्वं स्तनयोरुपरिभागे, राजत्तरलकलिसलयाश्लिष्टसुस्निग्धशाखाः शोभमानचञ्चलपल्लवाबद्धचिक्कण-बाहुसनाथा, लसन् मुक्तारक्तोत्पलकुवलयवच्चन्द्रबिम्वाञ्चिताग्रा विराजमान-मौक्तिकदन्ताधरबिम्वनेत्रयुगलमुखमण्डलशोभमानसम्मुखप्रदेशा, मौलौ शिरसि, मिलद्भिः संयुतैः, अलिपटलैः द्विरेफसमजैः सह, महाशोभा कापि लोकोत्तरा कान्तिः, सा सुप्रसिद्धा, वल्ली राधिकारूपिणी लता, त्वदभिमुखम् स्थितेति शेषः। अत्र अतिशयोक्तिः, नाम अलङ्कारः।

सफला—यदि मेघविस्फूर्जिता छन्द के मध्य में दो नगण और एक गुरु वर्ण का सन्निवेश कर दिया जाता है तो उसको **शोभा** नामक छन्द कहते हैं। तब इसके गणों का क्रम इस प्रकार होगा—यगण, मगण, दो नगण, गुरु, दो रगण और गुरु वर्ण। इसमें छः, सात, सात वर्णों पर यति होती है।

हे श्रीकृष्ण ! सदा सूर्य के उदय होने पर विकसित होने वाले उसके कमल (चरण) शोभित हो रहे हैं, दो गुरुतर फलों (स्तनों) से उसका मध्यभाग (कटिप्रदेश) झुका है, फलों के ऊपरी भाग में चञ्चलकिसलयों (कर पल्लवों) से युक्त कमनीय शाखायें (भुजायें) शोभित हो रही हैं। उस लता का आगे का हिस्सा (मुखभाग) स्वच्छमोतियों (दाँतों), लालकमलों (अधरों) तथा कुवलयों (नेत्रों) से सम्वन्धित चन्द्रविम्व (मुख) से अलंकृत है। सिर पर स्थित भ्रमरसमूह (साँवले एवं घुंघराले बालों) से उसकी महती शोभा हो रही है। ऐसी एक लोकोत्तर (अनुपम) लता (राधा) श्रीकृष्णरूपी वृक्ष के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूप विराजमान है। विषय का निगरण होने के कारण उक्त पद्य में अति-शयोक्ति अलंकार है।

प्रकृतिः (एकविंशत्यक्षरा वृत्तिः)

म र भ न य य य

ऽ ऽ ऽ,ऽ ।ऽ,ऽ ।।,।।।,।ऽ ऽ,।ऽ ऽ,।ऽ ऽ

म्रभ्नैर्याणां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ॥ १ ॥

व्याकोषेन्दीवराभा कनककषलसत्पीतवासाः सुहासा
बर्हैरुच्चन्द्रकान्तैर्वलयितचिकुरा चारुकर्णावतंसा ।
अंसव्यासक्तवंशीध्वनिसुखितजगद् वल्लवीभिर्लसन्ती
मूर्तिर्गोपस्य विष्णोरवतु जगतिः नः स्रग्धरा हारिहारा ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण मगणः, रगणः, भगणः, नगणः, यगणः, यगणः, यगणः च भवेत् तत् **स्रग्धरा** नाम वृत्तम् । अस्मिन् सप्त-सप्त-सप्तभिश्च यतिः भवति ।

व्याकोषेति—व्याकोषं पुष्पितं, यद् इन्दीवरं नीलकमलम्, 'इन्दीवरञ्च नीलेऽस्मिन्', इत्यमरः । तस्य आभा इव आभा यस्याः सा, कनककषः स्वर्णरेखा, तद्वत् लसद्शोभां प्रापद्, पीतवासाः पीतवस्त्रयुक्ता, सुहासा मन्दहास्या, उच्चन्द्र-कान्तैः, ऊर्ध्वभागे चन्द्रकाणां मयूरपिच्छाग्रवर्तिनाम्, अन्ताः निम्नप्रदेशाः यत्र तादृशैः, बर्हैः नीलकण्ठपिच्छैः, वलयिता आवद्धाः, चिकुराः केशाः यस्यां सा, चारुकर्णावतंसा सुन्दरश्रोत्राभरणाः, अंसव्यासक्तवंशीध्वनिसुखितजगत् स्कन्ध-प्रदेशस्थितमुरलीरणनोल्लसितलोका, वल्लवीभिर्लसन्ती गोपाङ्गनाभिः विराज-माना, स्रग्धरा वनमालाविभूषिता, हारिहारा मनोज्ञमुक्तामालासनाथितकण्ठप्रदेशा गोपस्य विष्णोः गोपवंशसमुत्पन्नस्य विष्णुरूपस्य श्रीकृष्णस्य, मूर्तिः रूपं, नः अस्मान्, अवतु पातु ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण और तीन यगण हों उसको **स्रग्धरा** नामक छन्द कहते हैं। इसमें सात, सात, सात वर्णों पर यति होती है।

नीलकमल के समान सुन्दर, सुवर्ण रेखा (जरी) के सदृश पीतवस्त्र युक्त, मन्दमुसकान से शोभित मुख वाली, सिर पर बंधे हुए बालों के ऊपर मोरमुकुट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धारण की हुई, कानों में कुण्डल, कन्धे पर रखी हुई वंशी की धुन संसा[र] मोहित की हुई, (नक्षत्ररूपी) गोपियों के बीच में (चन्द्रमा के समान) विराजमान वनमाला तथा मुक्ताहार से अलंकृत भगवान् श्रीकृष्ण की मूर्ति हम सबकी रक्षा करे।

एकविंशत्यक्षरावृत्तेः भेदः—

न ज भ ज ज ज र

।।।।ऽ।ऽ।।।ऽ।।ऽ।।ऽ।ऽ।ऽ

नजभजजा जरौ यदि तदा गदिता सरसी कवीश्वरैः।

चिकुरकलापशैवलकृतप्रमदासु लसद्रसोर्मिषु
स्फुटवदनाम्बुजासु विलसद्भुजबालमृणालवल्लिषु।
कुचयुगचक्रवाकमिथुनानुगतासु कलाकुतूहलो
व्यरचयदच्युतो व्रजमृगीनयनासरसीषु विभ्रमम्॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण नगणः, जगणः, भगणः, त्रयो जगणाः, रगणः च भवेत् तत् **सरसी** नास वृत्तम्। अन्यत्र सिंहकमिति नाम।

चिकुरेति—चिकुरकलापः केशवेशः, एव शैवलं शैवालं, 'जलनीली तु शैवालं शैवलोऽथ।' इत्यमरः। तेन कृतः प्रमदः मोदः याभि, तासु, रसाः अनुरागाः एव जलानि वारीणि, लसन्त्यः शोभमानाः रसोर्मयः रसभङ्गाः, यासु तासु, स्फुटानि पुष्पितानि, वदनानि वक्त्राण्येवाम्बुजानि कमलानि, यासु तासु, विलसन्तः शोभां प्राप्नुवन्तः, भुजाः बाह्वः एव बालमृणालानां नूतनविसानां वल्लयो लताः, यासां तासु, 'मृणालं विसमब्जादिः'। इत्यमरः। कुचयुगानि स्तनद्वयमेव चक्रवाकमिथुनानि कोकयुगलानि, 'कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वय-नामकः।' इत्यमरः। तैरनुगतासु सम्पृक्तासु, व्रजमृगीनयना व्रजवनिता एव सरस्यः सरोवराणि, तासु कलाकुतूहली क्रीडाकुशलः, अच्युतः श्रीकृष्णः, विभ्रमं हाव-भावादिकं व्यरचयत् चक्रे।

प्रत्युदाहरणम्—

तुरगशताकुलस्य परितः परमेकतुरङ्गजन्मनः
प्रमथितभूभृतः प्रतिपथं मथितस्य भृशं महीभृता।
परिचलतो बलानुजबलस्य पुरः सततं धृतश्रिय-
श्चिरगलितश्रियो जलनिधेश्च तदाभवदन्तरं महत्॥ माघे॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

...फला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, जगण, भगण, तीन जगण या रगण हों, उसको **सरसी** नामक छन्द कहते हैं। मल्लिनाथ इसको **पञ्चकावली** तथा अन्य आचार्य सिंहक छन्द कहते हैं।

...गोपियों के साथ विहार के लिये उत्सुक श्रीकृष्ण व्रजललनारूपी सरोवर में स्नान करते थे, जिसमें उनके केश समूह सिवार थे, अनुरागरूपी जललहरें ... रहा था, मुखरूपी कमल विकसित हो रहे थे, भुजरूपी कमल नाल थे और उनके स्तनों के जोड़े चकवा-चकई के रूप में सुशोभित हो रहे थे।

विशेष—श्रृंगारतिलक में इसी आशय का एक पद्य मिलता है—

बाहू द्वौ च मृणालमास्यकमलं लावण्यलीलाजलं
श्रोणीतीर्थशिला च नेत्रशफरी धम्मिल्लशैवालकम्।
कान्तायाः स्तनचक्रवाकयुगलं कन्दर्पबाणानलै-
र्दग्धानामवगाहनाय विधिना रम्यं सरो निर्मितम्॥

आकृतिः (द्वाविंशत्यक्षरा वृत्तिः)

म म ग ग न न न न ग ग
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । । । । । । । । ऽ ऽ

मौ गौ नाश्चत्वारो गो गो वसुभुवनयतिरिति भवति हंसी॥ २२॥

साधं कान्तेनैकान्तेऽसौ विकचकमलमधु सुरभि पिबन्ती
कामक्रीडाकूतस्फीतप्रमदसरसतरमलघु रसन्ती।
कालिन्दीये पद्मारण्ये पवनपतनपरितरलपरागे
कंसाराते पश्य स्वेच्छं सरभसगतिरिह विलसित हंसी॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण द्वौ मगणौ, द्वौ गुरू, चत्वारो नगणाः पुनः द्वौ गुरुवर्णौ भवेताम् तत्, **हंसी** नाम वृत्तम्। अस्मिन् वसुभिः अष्टाभिः, भुवनैः चतुर्दशभिः तथा दशभिः च वर्णैः यतिः भवति।

सार्धमिति—हे कंसाराते! कंसान्तक!, कान्तेन प्रियेण, सार्धं सह, एकान्ते विजने, कालिन्दीये यमुनातटवर्तिनि, पवनपतनेन वायुसञ्चलनेन, परितरलः चपलः, परागः सुमनोरजः, यत्र तादृशे, पद्मारण्ये कमलकानने, सुरभि मनोरमगन्धयुक्, विकचकमलमधुविकसितपद्मपरागं, पिबन्ती, पानं कुर्वन्ती, कामक्रीडाकूतेन रतिकेलिकुतुकेन स्फीतेन वृद्धिगतेन प्रवृद्धेन प्रमदेन अत्यधिकप्रसन्नतया,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDE

सरसतरम् मधुरतरम्, अलघु तारस्वरेण, रसन्ती शब्दं । अथ...
गतिः, असौ हंसी वरटा, 'हंसस्य योषिद् वरटा' । इत्यमर आस्व...
विलसति विहरति, इति पश्य आलोकय ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः दो म... तगण और दो गुरु वर्ण हों, उसको **हंसी** नामक छन्द ... चौदह, दस वर्णों पर यति होती है ।

कोई गोपी कृष्ण से कह रही है—हे कृष्ण ! देखिये—...देऽभूत् अपने प्रिय हंस के साथ एकान्त यमुना के तीरस्थित कमलकानन में ... से हिलने के करण उन (कमलों) का पराग बिखरा है, सुगन्धयुक्त पुष्परस का पान करती हुई रतिकेलि के लिये उत्सुक होने से कलमधुर किन्तु उच्चस्वर से गाती हुई अपनी इच्छा के अनुसार विहार कर रही है ।

द्वाविंशत्यक्षरावृत्तेः भेदः—

भ भ भ भ भ भ भ ग

S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S

सप्तभकारयुतैकगुरुर्गदितेयमुदारतरा मदिरा ।

माधवमासि विकस्वरकेसरपुष्पलसन्मदिरा मुदितै-
र्भृङ्गकुलैरुपगीतवने वनमालिनमालि ! कलानिलयम् ।
कुञ्जगृहोदरपल्लवकल्पिततल्पमनल्पमनोजरसं
तं भज माधविकामृदुनर्तकयामुनवातकृतोपगमा ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण सप्तभगणाः तथा एकः गुरु वर्णः भवेत् तत् **मदिरा** नाम वृत्तम् । अत्र यतिविचारो नास्ति ।

माधवेति–हे आलि ! वयस्ये !, माधवमासि वैशाखे, वसन्ततौ वा विकस्वराणि विकसनशीलानि, 'विकासी तु विकस्वरः' इत्यमरः । यानि केसरपुष्पाणि वकुलकुसुमानि तेषु लसन्त्यो शोभां प्राप्नुवन्त्या, मदिरया मादकेन, मकरन्देन पुष्परसेन, मुदितैः प्रसीदद्भिः, भृङ्गकुलैः द्विरेफवृन्दैः, उपगीतवने गुञ्जितकानने माधविकायाः माधवीलतिकायाः, मृदु ईषत्, नर्तकेन, नृत्येन, यामुनवातेन शीतलस्पर्शवता यामुनपवनेन, कृतः विहितः सान्निध्यं सामीप्यं, यस्याः तथाभूता, त्वं, कुञ्जगृहोदरे लतामण्डपमध्ये, पल्लवैः किसलयैः, कल्पितं निर्मितं, तल्पं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाम ... अनल्पः अधिकः, मनोजरसः कामजं प्रेम यस्य तम्, ... कला-मर्मज्ञं, श्रीकृष्णं, भज सेवस्व ।

... कला—जिसके ... चरणों में क्रम से सात भगण और एक गुरु वर्ण ... वा रगण हों, उसे ... वृत्त कहते हैं । इसमें यति विचार नहीं है ।

... कावली तथा अन्य आ... गोपियों के साथ ... (वैशाख या वसन्त ऋतु) में खिले हुए मौलसिरी-स्नान ... करते थे, जि... मदमत्त भौंरों की गुञ्जार से घर के वगीचे में ६४ कला ... रहा था, गुलल... उनके स्तनों ... रतिप्रणयी श्रीकृष्ण के लतामण्डप में पत्तों द्वारा निर्मित शय्या पर जाकर उनका भजन करो, वहाँ अपनी मन्द गति से माधवीलता को नचाने वाला यमुना की तरंगों के संग से शीतल पवन तुम्हारी सेवा करेगा ।*

विकृतिः (त्रयोविंशत्यक्षरा वृत्तिः)

न ज भ ज भ ज भ ल ग

I I I I S I S I I I S I S I I I S I S I I I S

नजभजभा जभौ लघुगुरू बुधैस्तु गदितेयमद्रितनया¹ ।

खरतरशौर्यपावकशिखापतङ्गनिभभग्नदृप्तदनुजो

जलधिसुताविलासवसतिः सतां गतिरशेषमान्यमहिमा ।

भुवनहितावतारचतुरश्चराचरधरोऽवतीर्ण इह हि

क्षितिवलयेऽस्ति कंस ! शमनस्तवेति तमवोचदतिनद्रया ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण नगणः, जगणः, भगणः, जगणः, भगणः, जगणः, भगणः, लघुः, गुरुः च वर्णः भवेत् तत् **अद्रितनया** नाम वृत्तम् ।

---

* अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

भ र न र न र न ग

S I I S I S I I I S I S I I I S I S I I I S

भ्रौ नरना रनावथ गुर्दिगर्कविरमं हि **भद्रक**मिदम् ॥ १ ॥

म स र स त ज न ग

S S S I I S S I S I I S S S I I S I I I I S

लालित्यं भुजगेन्द्रेण भाषितमेतच्चेन्मसरस्तजनगुरुः ॥ २ ॥

स ज त न स र र ग

I I S I S I S S I I I I I S S I S S I S S

सजता नसौ ररौ गः फणितुरगहयैः स्यान्**महास्रग्धरा**ऽऽख्या ॥ ३ ॥

१. अश्वललितमिदमन्यत्र ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDE

खरतरेति—हे कंस ! खरतरम् अतिप्रवृद्धं गयो अथ... अग्निः तस्य शिखया ज्वालया, 'शिखा ज्वाला समान आस्व...' इति मेदिनी । पतङ्गनिभाः शलभाकाराः, भग्ना ... दनुजा राक्षसाः, येन तथोक्तः, जलधिसुतायाः, विलास... निवासः, सतां सज्जनानां गतिः सहायः अशेषैः सर्वैः श्रीपु... महिमा गौरवं, यस्य सः भुवनानां जगतां, हिताय ... देह... भूमावागमने, चतुरः कुशलः, चराचरधरः स्थावरजङ्गमात्मकेन देऽभूत् तव कंसस्य, शमनः गर्वशान्तिकारकः इह अस्मिन्, क्षितिवलये भूमण्डले, ...ह निश्चयेन, अवतीर्णः इति । अद्रितनया गिरिजा तम् अहङ्कारपूर्णं कंसम्, अवोचत् कथितवती ।

विशेषः—यदा कंसः वसुदेवदुहितां हन्तुमुद्यतो बभूव तदा तस्य हस्तात् स्खलिता सा भगवती आकाशगिरा अवोचत् यत् तव शासको भूमण्डलेऽवतीर्णं इति । प्रत्युदाहरणम्—

विलुलितपुष्परेणुकपिशं प्रशान्तकलिकापलासकुसुम–
कुसुमनिपातचित्रवसुधं सशब्दनिपतद्द्रुमोत्कशकुनम् ।
शकुननिनादितककुब्विलोलविपलायमानहरिण–
हरिणविलोचनाधिवसतिं बभञ्ज पवनात्मजो रिपुवनम् ॥ भट्टौ ।

सफला–जिसके चारों चरणों में क्रमशः नगण, जगण, भगण, जगण, भगण जगण, भगण, लघु और गुरु वर्ण हों, उसको **अद्रितनया** नामक छन्द कहते हैं ।

पर्वतराज पुत्री (देवी) ने कंस से कहा–हे कंस ! अत्यन्त पराक्रमशील अग्नि के समान तेजस्वी जिसकी तेजोमयी ज्वाला में बड़े बड़े दैत्य पतिंगे के समान जल भुनकर भस्म हो जाते हैं, जो लक्ष्मी की रति क्रीडा का एक मात्र आश्रय स्थान है, सज्जनों का सहायक है, लोकों की रक्षा के लिये अवतार धारण करता है, सम्पूर्ण चराचर के रक्षक श्रीकृष्ण ने तुमको दण्ड देने के लिये निश्चित रूप से भूमण्डल में अवतार ले लिया है ।

त्रयोविंशत्यक्षरा वृत्तेः भेदः—

म म ग ग ल ग
ऽऽऽ ऽऽऽ ऽ ऽ।। ।।।।।।।।।।।ऽ

मत्ताक्रीडं वस्विष्वाशायति मयुगगयुगमनुऋघुगुरुभिः ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[illegible]त्ताक्रीडं मधुसमयसुलभमधुररसाद्
[illegible]ञ्चित्स्पन्दत्पदमरुणनयनयुगलसरसिजम् ।
[illegible]कम्रव्रजयुवतिवलयविहितभुजरसं
[illegible]वृन्दारण्ये स्मरत हरिमनघचरणपरिचयम् ॥

[illegible] चरणेषु मगणद्वयं गुरुद्वयम् अनुपश्चात् चतुर्दशलघुवर्णाः [illegible] भवेत्, तत् **मत्ताक्रीडं** नाम वृत्तम् । अस्मिन् वसुभिः अष्टभिः, इषुभिः पञ्चभिः, आशाभिः दशभिः वर्णैः यतिः भवति ।

मुग्धेति—भो सज्जनाः ! यूयं वृन्दारण्ये वृन्दावनप्रदेशे, मुग्धं रमणीयं, यथा तथा उन्मीलन्ती उत्पत्स्यमाना, मत्तस्य पानविह्वलस्य, इव आक्रीडं विभ्रमं, मधुसमये वसन्ततौं, सुलभं मिलितं, मधुरं सुस्वादु, यद् मधु मकरन्दः, 'मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रे' । इत्यमरः । तस्य रसाद् आस्वादनहेतोः, गाने गीते, याने यात्रायां च, किञ्चिद् ईषत्, स्पन्दत् प्रस्फुरत्, पदं सुप्तिङन्तरूपं, चरणं च यस्य तम्, अरुणं रक्ताभं, नयनयुगलसरसिजं नेत्रद्वयपद्मं यस्य तम्, रासे रासलीलायाम्, उल्लासेन प्रसन्नतया, क्रीडन्तीनां विहारमाचरन्तीनां, कम्राणां रतिमदमत्तानां, व्रजयुवतीनां व्रजरमणीनां, वलयेषु परिधिषु, विहितः रचितः, भुजरसः अन्योन्यालिङ्गनं येन तम्, सान्द्रः घनः, आनन्दः यस्य तम्, अनघचरणपरिचयं निष्पापभूतपादसेवनम्, इत्थम्भूतं, तं हरिं श्रीकृष्णं स्मरत जपत ।

सफला—जिसके चारों चरणों में दो मगण, दो गुरु वर्ण, इसके पश्चात् चौदह लघु वर्ण और एक गुरु वर्ण हो, उसको **मत्ताक्रीड** नामक वृत्त कहते हैं । इसमें आठ, पांच और दस वर्णों में यति होती है ।

जिसकी मदमत्त के समान लीलायें सुप्रसिद्ध हैं । वसन्त ऋतु में सरस पुष्पों के पराग के पान करने से आगे और चलने में जिनके पद (वाक्य तथा पैर) कुछ डाँवाडोल से हो रहे हैं, जिनके दोनों नेत्र कमल के सदृश रक्ताभ हो गये हैं, जो सम्भोग सुख से प्रसन्न एवं काम से उन्मत्त हो व्रजवनिताओं के मण्डलों में (एक होते हुए भी अनेक रूप धारण कर) एक दूसरे की भुजाओं को पकड़े हैं, जो स्वयं आनन्द मग्न हो रहे हैं और जिनके चरण कमलों की सेवा से पाप समूह का विनाश हो जाता है, हे सज्जन पुरुषो ! आप सब वृन्दावनविहारी उन भगवान् श्रीकृष्ण का ध्यान करें ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDE

संस्कृतिः (चतुर्विंशत्यक्षर

भ त न स भ

SII SSI III IIS SII S

भूतमुनीनैर्यतिरिह भतनाः स्भौ भनयाश्च य

माधव ! मुग्धैर्मधुकरविरुतैः कोकिलकूजितम

कम्पमुपेता मलयजसलिलैः प्लावनतोऽप्य देऽभूत्

पद्मपलाशैर्विरचितशयना देहजसंज्वरभरपरिदूनै-

र्निश्वसती सा मुहुरति पुरुषं ध्यानलये तव निवसति तन्वी ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण भगणः, तगणः, नगणः, सगणः, भगणद्वयम्, नगणः, यगणः, च भवेत् तत् **तन्वी** नाम वृत्तम् । अस्मिन् भूतैः पञ्चभिः, मुनिभिः सप्तभिः, इनैः सूर्यैः द्वादशभिश्च यतिः भवति ।

माधवेति–हे माधव ! लक्ष्मीपते श्रीकृष्ण !, मुग्धैः श्रुतिसरसैः, मधुकराणां द्विरेफानां, विरुतैः भणितिभिः, कोकिलानां पिकानां, कूजितैः विरतैः, मलयसमीरैः मलयाचलागतपवनैः, कम्पमुपेताः वेपथुम्प्राप्ताः, मलयजसलिलैः चन्दनलेपैः, प्लावनतोऽपि सिञ्चनादपि, अविगतः पूर्ववत् स्थितः, तनोः देहस्य, दाहः ऊष्मा यस्याः तथाभूता, देहजः शरीरस्यः, यः संज्वरभरः सन्तापभारः, तेन परिदूनैः परिक्लिष्टैः, पद्मपलाशैः पुण्डरीकपत्रैः, विरचितं निर्मितं, शयनं शयनीयं यस्याः तथाभूता, तन्वी कृशा, सा राधा, अतिपरुषम् अतिकरुणं, मुहुः वारम्वारं निःश्वसती निःश्वासम् मुञ्चन्ती, तव भवतः, ध्यानलये चिन्तनविधौ निवसति देहं धारयतीत्यर्थः ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः भगण, तगण, नगण, सगण, दो भगण, नगण हों, उसको **तन्वी** नामक छन्द कहते हैं । इसमें पाँच, सात, बारह अक्षरों में यति होती है ।

हे लक्ष्मीपति भगवान् श्रीकृष्ण ! श्रवण सुखद भ्रमरों के गुञ्जन, कोकिलों का कलरव और मलय पवन के स्पर्श से काँपती हुई राधिका बार-बार लम्बी उसासें भर कर आपके ध्यानयोग में तत्पर है । आपके विरह से उसके शरीर में उत्पन्न विरहाग्नि चन्दन रस के सेवन से भी शान्त नहीं हो रही है, कमलपत्रों पर वह शयन करती है वे भी उसके शारीरिकसन्ताप से मुरझा जाते हैं । इस प्रकार अत्यन्त कष्ट से वह जी रही है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(पञ्चविंशत्यक्षरा वृत्तिः)

भ ल ग

।ऽ ऽ।।।।।।।।।।।।।।।।ऽ

...सभाश्चेदिषुशरवसुमुनियतिरिनलघुगैः ॥ १ ॥

...त्रिततीरा मदकलखगकुलकलकलरुचिरा
...श्रणिविलासा मधुमुदितमधुपरवरभसकरी ।
...विलासप्रोज्ज्वलहासा ललितलहरिभरपुलकितसुतनुः
पश्य हरेऽसौ कस्य न चेतो हरति तरलगतिरहिमकिरणजा ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण भगणः, मगणः, सगण, भगणः, द्वादश-लघुवर्णाः, एकः गुरुः च भवेत्, तत् **क्रौञ्चपदा** नाम वृत्तम् । अस्मिन् इषुशर-वसुमुनिभिः पञ्चभिः, पञ्चभिः, अष्टभिः, सप्तभिः च वर्णैः यतिः भवति ।

क्रौञ्चपदेति—क्रौञ्चानां क्रूङ्पक्षिणां, पदालीभिः चरणततिभिः, चित्रितम् अङ्कितं तीरं यस्याः सा, मदकलानां मदेन मधुरविराविणां खगानां पतत्रिणां कलस्य वृन्दस्य, कलकलेन रुतेन, 'कोलाहलः कलकलस्तिरश्चां वाशितं रुतम्' । इत्यमरः । रुचिरा रसिकजनरमणीया, फुल्लानां पुष्पितानां, सरोजानां पद्मानां, श्रेण्याः पङ्क्त्याः, विलासः विभ्रमः यस्याः सा तथोक्ता, मधुना परागस्यास्वाद-नेन, मुदितानां सन्तुष्टानां मधुपानां भृङ्गानां रवेण रणितेन, रभसकरी हर्षकरी, फेनानां हिण्डीराणां, विलासः विभ्रमः तस्य उत्पत्तिरेव, प्रोज्ज्वलः प्रवृद्धः, हासः प्रसन्नता यस्याः सा, ललितेन रुचिकरेण, लहरिभरेण ऊर्मिसन्तत्या, पुलकिता जातरोमाञ्चा, सुतनुः रमणीयवपुः, तरलगतिः चपलगमनं यस्याः सा, असौ अहिम-किरणजा सूर्यपुत्री यमुना, कस्य सचेतसः, चित्तं मानसं, न हरति, नाकृष्टं करोति ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः भगण, मगण, सगण, भगण, बारह-लघु वर्ण हों, **क्रौञ्चपदा** छन्द कहते हैं । इसमें पाँच-पाँच, आठ और सात वर्णों पर यति होती है ।

कवि यमुना तट का वर्णन करता हुआ कह रहा है—यह यमुना नदी का तीर क्रौञ्च पाक्षियों के चरण चिह्नों से चिह्नित है, मद के कारण मधुर कलरव करने वाले पक्षि समूह यहाँ चह-चहा रहे हैं विकसित कमलों भी शोभा अनुपम है, पराग का आस्वादन कर प्रमत्त भौंरे अपने से यहाँ आनन्द की वृद्धि कर रहे हैं, लहरों द्वारा निकला हुआ फेन ही इसका हास है, तरङ्गों को देखने से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

ऐसा लग रहा है कि यमुना का शरीर पुलकित हो [illegible] इस प्रकार यह यमुना किस सरस हृदय वाले [illegible] गयो अथा [illegible] समान आस्व [illegible] आकृष्ट नहीं कर रही है ?

उत्कृतिः (षड्विंशत्यक्षरा वृ[illegible]

म म त न न न र [illegible] ज र ग

S S S S S S S S | | | | | | | | | | S | S | S |

वस्वीशाश्वैश्छेदोपेतं भमतनयुगनरसलगैर्भुजङ्गविजृम्भितम् ॥ [illegible] श्वा पु [illegible] न्नत्र्देह [illegible] देऽभूत [illegible]

हेलोदञ्चन्न्यञ्चत्पादप्रकटविकटनभरो रणत्करतालक-
  श्चारुप्रेङ्खच्चूडाबर्हः श्रुतितरलनवकिसलयस्तरंगितहारधिक् ।
त्रस्यन्नागस्त्रीभिर्भक्त्या मुकुलितकरकमलयुगं कृतस्तुतिरच्युतः
  पायान्नश्छिन्दन् कालिन्दीहृदकृतनिजवसतिबृहद्भुजङ्गजृम्भितम् ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण द्वौ मगणौ, तगणः, त्रयो नगणाः, रगणः, सगणः, लघुः, गुरुः च वर्णः भवेत्, तत् **भुजङ्गविजृम्भितं** नाम वृत्तम् । अस्मिन् वस्वीशाश्वैश्छेदोपेतं वसुभिः अष्टभिः, ईशैः एकादशभिः, अश्वैः सप्तभिः च यतिः भवति ।

हेलेति—हेलया लीलया, 'हेला लीलेत्यमी भावाः क्रियाः श्रृङ्गारभावजाः ।' इत्यमरः । उदञ्चन्तौ, न्यञ्चन्तौ अधः पतन्तौ, पादौ अङ्घ्री, यस्मिन् सः तथोक्तः, प्रकटः स्फुटः, विकटः विलक्षणः, नटनभरः नृत्तविभ्रमः, यस्य सः, रणत् शब्दं कुर्वन् करतालकं करतालशब्दं यस्य सः, चारु सुन्दरं, यथा तथा, प्रेङ्खत् चपलः, चूडाबर्हः शीर्षस्थमयूरपिच्छं यस्य सः, श्रुत्योः श्रवणयोः, तरलं चपलं, नवकिसलयं प्रत्यग्रपल्लवं, यस्य सः, तरङ्गितहारधृक् चपलस्रग्धारकः, त्रस्यन्तीभिः उद्विजन्तीभि,, नागस्त्रीभिः कालियनारीभिः, भक्त्या नम्रीभावेन, मुकुलितं बद्धं करकमलयोर्युगं यस्मिन् तत् बद्धाञ्जलिपुटं, कृतस्तुतिः विहितस्तवः, अच्युतः श्रीकृष्णः, कालिन्दीह्रदे यमुनाया अगाधजले, 'तत्राऽगाधजलो ह्रदः' । इत्यमरः । कृतनिजवसतिः विहितनिवासः, येन तादृशः यः बृहद्भुजङ्गमः कालियः, तस्य विजृम्भितं व्यवहारं, छिन्दन् कृन्तन् सन्, नः अस्मान्, सन्, पायात् अवतु ।

सफला—जिसके चारों चरणों में क्रमशः दो मगण, तगण, तीन नगण, रगण, सगण, लघु और गुरु वर्ण हों, तो उसको **भुजङ्गविजृम्भित** नामक छन्द कहते हैं । इसमें आठ, ग्यारह, सात वर्णों पर यति होती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

... नृत्य के समय पैरों को उठा रहे तथा भूमि पर रख ... कला—जिसके ... नल्पजनके माथे पर लगाया हुआ मयूरपंख कलात्मक ... या रगण हों, ... लामर्मे कर्णाभूषण के रूप में अपने कानों में किसलय ... कावली तथा अन्य आ... जिनकी माला हिल रही है, जिनके भय से भीत ... गोपियों के साथ ...क्ति-श्रद्धापूर्वक करबद्ध हो स्तुति कर रही हैं और ... स्नान ... करते थे, जि... जल में रहने वाले कालिय नाग को सर्वथा निश्चेष्ट ... रहा था, मुरारि ... श्रीकृष्ण हमारी रक्षा करें।*

उनके स्तनों ...

अथ दण्डकः

न न र र र र र र र

। । । । । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ

यदिह नयुगलं ततः सप्त रेफास्तदा चण्डवृष्टिप्रपातो भवेद्दण्डकः ॥१॥

प्रलयघनघटामहारम्भमेघावलीचण्डवृष्टिप्रपाताकुलं गोकुलं
सपदि समवलोक्य सव्येन हस्तेन गोवर्धनं नाम शैलं दधल्लीलया।
कमलनयन ! रक्ष रक्षेति जल्पत्त्रसन्मुग्धगोपाङ्गनाऽऽलिङ्गनानन्दितो
गलदभिनवधातुधाराविचित्राङ्गरागो मुरारातिरस्तु प्रमोदाय नः ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु क्रमेण द्वौ नगणौ सप्तरगणाः भवेयुः तदा **चण्डवृष्टिपातो** नाम दण्डकः भवति।

प्रलयेति—गोकुलं स्थाननाम, प्रलये कालविशेषे, घन-घटानामिव पयोद-समूहानामिव, महान् बृहत् आरम्भः आडम्बरः, यस्याः तादृश्याः, मेघावल्याः पयोदपङ्क्त्याः, चण्डवृष्टिप्रपातेन तीव्रधारासम्पातेन, आकुलं व्याकुलं, समवलोक्य निरीक्ष्य, सपदि तत्क्षणं, लीलया सहसा, सव्येन दक्षिणेतरपाणिना, गोवर्धनं नाम शैलं महीध्रं, दधत् धारणं कुर्वत्, गलन्तीभिः उपरिस्खलन्तीभिः, अभिनवाभिः प्रत्यग्राभिः, धातूनां मनःशिलाप्रभृतीनां, धाराभिः परम्पराभिः विचित्रः विभिन्न-वर्णयुक्तः, अङ्गानां रागः शरीरशोभाकरः प्रकारविशेषः, यस्य सः, हे कमल नयन ! पद्मनेत्र !, रक्ष रक्षेति त्राहि त्राहि इति, जल्पन्तीनां, कथयन्तीनां,

---

* अन्य संस्करणों का प्रक्षिप्त छन्द—

म न न न न न न स ग ग

ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ

मो नाः षट् सगगिति यदि नवरसरसशरयतियुतमपदाहाख्यम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDE

त्रसन्तीनां भयाकुलानां, मुग्धानां गोपाङ्गनानां व... परिम्भणेन, आनन्दितः प्रहृष्टः, मुराराति: मुरसू... गयो अथा... प्रमोदाय प्रसन्नार्थम्, अस्तु भवतु । ...

सफला–जिसके चारों चरणों में क्रम से दो न... र ... ग ... **चण्डवृष्टिप्रपात** नामक दण्डक कहते हैं । ... । ऽ । ...

प्रलय कालिक बादलों के समान आडम्बर वा... अत्यन्त वर्षा से गोकुल को पीड़ित देखकर अनायास ह... पर्वत को धारण कर, मैनसिल आदि धातुओं की गिरती हुई ध... अंग विभिन्न रंगों से व्याप्त हो गये हैं, (ऐसे श्रीकृष्ण से) हे कमलनेत्र ... ! बचाओ, बचाओ, ऐसा कहती हुई व्रजवनिताओं के आलिङ्गन आदि से प्रसन्न श्रीकृष्ण हम सबके आनन्दवर्धक हों ।

अर्णः-दण्डकः

।।।।।।ऽ।ऽऽ ।ऽऽ।ऽ
प्रतिचरणविवृद्धरेफाः स्युरर्णोऽर्णव-
ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽऽ
व्यालजीमूतलीलाकरोद्दामशङ्खादयः ।। २ ।।

जय जय जगदीश ! विष्णो ! हरे ! राम ! दामोदर ! श्रीनिवासाच्युतानन्त ! नारायण !, त्रिदशगणगुरो ! मुरारे ! मुकुन्दासुरारे ! हृषीकेश ! पीताम्बर ! श्रीपते ! माधव ! । गरुडगमन ! कृष्ण ! वैकुण्ठ गोविन्द ! विश्वम्भरोपेन्द्र ! चक्रायुधाधोक्षज ! श्रीनिधे, ! बलिदमन ! नृसिंह ! शौरे ! भवाम्भोधिघोरार्णसि त्वं निमज्जन्तमभ्युद्धरोपेत्य माम् ।।[1]

सुषमा—उक्तलक्षणे **सप्त** दण्डकभेदानां निर्देशः कृतो विलसति । तत्र आदिमः 'अर्णः' नाम दण्डकभेदः । एषु दण्डकेषु प्रारम्भे नगणद्वयम्भवत्येव तदनु रगणसप्तके पूर्वोक्तः **चण्डवृष्टिप्रपातः** प्रदर्शितः । तत्र गणतया अक्षराणां सङ्ख्या सप्तविंशतिर्भवति । तत्पश्चात् प्रस्तुते 'अर्णः' दण्डकभेदे एकरगणवृद्ध्या साऽक्षरसङ्ख्या त्रिंशत्-परिमिता जायते । एवं क्रमेण अर्णव-व्याल-जीमूत-लीलाकर-उद्दाम-शङ्खभेदेषु एकैका रगणवृद्धिः करणीयेति विवेकः । अस्य चतुर्षु चरणेषु इयमेव व्यवस्था ।

जयेति—हे जगदीश ! विष्णो ! जय जय सर्वोत्कर्षेण वर्तस्व, शेषं सर्वं भगवतः सम्बोधनान्येव अन्ते हे शौरे ! त्वम् उपेत्य मत्समीपमागत्य भवाम्भोधि-

१. एवमर्णवादीनामप्युदाहरणानि ज्ञातव्यानि ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सामे ... हे निमज्जन्तं मग्नतां यान्तं, माम् भक्तम्, अभ्युद्धर

... फला—जिसके नल

धा रगण हों, उ... लाममें दण्डकों के सात भेदों का निर्देश किया गया है। **कावली** तथा अन्य आ दण्डक भेद है। सभी दण्डकों के प्रारम्भ में दो नगण ... गोपियों के साथ पर **चण्डवृष्टिप्रपात** का निर्देश हो चुका है। उसमें स्नान ... रते थे, ... जि। इस **अर्ण** नामक दण्डक में एक रगण के बढ़ जाने से रहा था, मुक्त ... = ३० तीस हो गयी है। इसी प्रकार **अर्णव** में ३३ उनके स्तन, **जीमूत** में ३६, **लीलाकर** में ४२, **उद्दाम** में ४५ और **शङ्ख** में ४८ अक्षर संख्या होगी।

हे विष्णु भगवान् ! आप सर्वश्रेष्ठ हैं, आप मेरे समीप आकर दुस्तार संसार सागर में डूबते हुए मेरा उद्धार कीजिये। शेष सब भगवान् के सम्बोधन मात्र हैं।

प्रचितक-दण्डकः

न न य य य य य य य

। । । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

प्रचितक समभिधो धीरधोभिः स्मृतो दण्डको नद्वयादुत्तरैः सप्तभिर्यैः ॥३॥

मुरहर ! यदुकुलाम्भोधिचन्द्र ! प्रभो देवकीगर्भरत्न ! त्रिलोकैकनाथ !
प्रचितकपटसुरारिव्रजोद्दामदन्तावलस्तोमविद्रावणे केसरीन्द्र !
चरणनखरसुधांशुच्छटोन्मेषनिःशोषितध्यायिचेतोनिविष्टान्धकार !
प्रणजनपरितापोग्रदावानलोच्छेदमेघ ! प्रसीद प्रसीद प्रसीद ॥

सुषमा—यस्य दण्डकाऽऽख्यवृत्तस्य चतुर्षु चरणेषु नगणद्वयाद् उत्तरं सप्तयगणाः भवेयुः तत् प्रचितकेन समा अभिधा नाम यस्य सः तन्नामा (**प्रचितकः**) दण्डकभेदः स्मृतः।

मुरहरेति—हे मुरहर ! मुरारे ! यदुकुलाऽम्भोधिचन्द्र ! विशालयदुवंशानन्दक !, प्रभो ! स्वामिन् !, देवकीगर्भरत्न ! दीप्यमानप्रतिभात्वेन रत्नत्वं सार्थकं त्रिलोकैकनाथ ! विष्णो !, प्रचितः सञ्चितः, कपटः दम्भः, यस्य तथाभूतः यः सुरारिव्रजः देवद्विट्सङ्घः, स एव उद्दामः प्रचण्डः, दन्तावलस्तोमः गजसमूहः, तस्य विद्रावणे पलायनकर्मणि, केसरीन्द्र ! सिंहोपम !, चरणनखररूपाः पादनखाद्धतयः, ये सुधांशवः चन्द्रमसः, तेषां छटोन्मेषेण चन्द्रिकायाः प्रभया, निःशेषितः दूरीकृतः, ध्यायिनां भक्तानां, चेतोनिविष्टः हृदन्तर्गतः अन्धकारः ध्वान्तं, येन सः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

तत्सम्बोधनम्, प्रणतजनानाम् उपासकानां यः प...
उग्रः प्रवृद्धः, दावानलः दवाग्निः तस्य उच्छेदे शम...
प्रसीदेति त्रिरुक्तिः आर्तां स्थितिं सूचयति भक्तस्...

सफला—यदि दो नगणों के बाद सात यगण हे...
विशेषज्ञों ने **प्रचितक** समभिधदण्डक स्वीकार किया ...

मुरनामक दैत्य के विनाशक ! यदुकुलरूपी समुद्र ...
को प्रसन्न करने वाले ! देवकी के पुत्र रत्न ! तीन लोको ...
हाथियों का विनाश करने के लिये सिंह स्वरूप भगवन् ! अपने च...
चन्द्रमा की प्रकाशकिरणों से जिन्होंने हृदयस्थित अाज्ञानान्धकार का विनाश करने वाले एवं भक्तों के मानसिक सन्ताप रूपी प्रचण्डदावानल को बुझाने के लिये मेघरूपी भगवन् आप हमारे प्रति प्रसन्न होइये, यह आर्त भक्त की उक्ति है।

अशोकपुष्पमञ्जरी-दण्डकः

ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ। ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।

यत्र दृश्यते गुरोः परो लघुःक्रमात्स उच्यते बुधैरशोकपुष्पमञ्जरीति ॥४॥

मूर्ध्नि चारुचम्पकस्रजा सलीलवेष्टनं लसल्लवङ्गचारुचन्द्रिका कचेषु
कर्णयोरशोकपुष्पमञ्जरीवतंसको गले च क्रान्तकेसरोपक्लृप्तदाम ।
फुल्लनागकेसरादिपुष्परेणुरूषणं तनौ विचित्रमित्युपात्तवेश एष
केशवः पुनातु नः सुपुष्पभूषितः सुमूर्तिमानिवागतो मधुर्विहर्तुमत्र ॥

सुषमा–यस्य चतुर्षु चरणेषु गुरुः लघुः एवं क्रमेण अष्टविंशतिवर्णाः भवेयुः सः, बुधैः **अशोकपुष्पमञ्जरी** नाम दण्डकः कथितः ।

मूर्ध्नीति—मूर्ध्नि मस्तके, चारु मनोज्ञा, या चम्पकस्रक् हेमपुष्पकमाला, 'चम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ।' इत्यमरः । तया सलीलं सविभ्रमं, वेष्टनं ग्रन्थनं, कचेषु कुन्तलेषु, लसन्ति लवङ्गानि देवकुसुमानि, 'लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञमथ', इत्यमरः । चारुचन्द्रिका सुन्दरमल्लिका पुष्पं च, कर्णयोः श्रोत्रयोः, अशोकपुष्पमञ्जरीवतंसकः अशोककुसुममञ्जरीरचितालङ्करणं, गले कण्ठप्रदेशे, कान्तं रुचिरं, केसरोपक्लृप्तं वकुलपुष्पनिर्मितं, दाम माला, तनौ देहे, फुल्लानां, पुष्पितानां, नागकेशरादिपुष्पाणां रेणुभिः सुमनसां रजोभिः, रूषणं रागकरणम्, एवम्प्रकारेण, विचित्रम् आश्चर्यकरं यथा तथा उपात्तः धृतः, वेशः परिधानं येन तथाभूता, सुपुष्पैः नवीन कुसुमैः, भूषितः सुशोभितः अत्र अस्मिन्, कानने वने,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सामर्थ... मूर्तिमान् शरीरवान्, वसन्तः इव ऋतुराडिव, ...कला—जिसके ... नन्दनन्दनः, नः अस्मान्, पातु अवतु।

...या रगण हों, उसको ला... गों में गुरु, लघु क्रम से अठाईस वर्ण हों, उसको ...कावली तथा अन्य आचा... ञ्जरी नामक दण्डक कहते हैं।

...गोपियों के साथ वि... स्नान ...रते थे, ...म्पकमाला को लपेटे, बालों में सुरभित लवङ्ग तथा ...रहा था, ...अशोकमञ्जरी को कनफूल की भाँति लगाये, गले में उनके स्तनों के... के पुष्पों की माला तथा शरीर पर नागकेशर आदि पुष्पों के ... का अंगराग लगाकर वन-विहार के लिये आये हुए शरीरधारी वसन्त-ऋतु के सदृश भगवान् श्रीकृष्ण हमारी रक्षा करें।

कुसुमस्तबकः-दण्डकः

।। ऽ, ।। ऽ, ।। ऽ, ।। ऽ, ।। ऽ, ।। ऽ, ।। ऽ, ।। ऽ, ।। ऽ,
सगणः सकलः खलु यत्र भवेत्तमिह प्रवदन्ति बुधाः कुसुमस्तबकम् ॥५॥

विरराज यदीयकरः कनकद्युतिबन्धुरवामदृशः कुचकुड्मलगो
भ्रमरप्रकरेण यथाऽऽवृतमूर्तिरशोकलताविलसत्कुसुमस्तबकः।
स नवीनतमालदलप्रतिमच्छवि बिभ्रदतीव विलोचनहारि वपु-
श्चपलारुधिरांशुकवल्लिधरो हरिरस्तु मदीयहृदम्बुजमध्यगतः॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु सकलः सम्पूर्णः सगणः एव भवेत् तम् इह बुधाः **कुसुमस्तबकम्** नाम दण्डकं प्रवदन्ति कथयन्ति।

विरराजेति—यदीयकरः यस्य हस्तः, कनकद्युतिवत् सुवर्णद्युतिनिभा, बन्धुरा सुन्दरा या वामदृक् वामनयना, तस्याः कुचकुड्मले स्तनकोरके, गच्छति याति इति, भ्रमरप्रकरेण द्विरेफसमूहेन, आवृता परिवृता, मूर्तिः आकारः यस्य तथाभूतः, अशोकलतायाः अशोकशाखायाः, विलसन् शोभां लभमानः, कुसुम-स्तबकः पुष्पगुच्छकः, तथा तत्सदृशं, विरराज शोभामाप, नवीनं नूतनं, यत् तमालदलं तमालपर्ण, तत्प्रतिमा तदाकारा, छविः शोभा, यस्य तादृशम्, अतीव अत्यर्थं, विलोचनहारि नयनानन्दप्रदं, वपुः देहः, बिभ्रद् दधत्, चपलावद् विद्युदिव, रुचिरा सुन्दरा, या अंशुकवल्लिः कौशेयशाटकप्रसारः तां धरतीति तथाभूतः, स हरिः भगवान् श्रीकृष्णः, मदीयं मामकीनं, हृदयमेव अम्बुजं हृत्कमलं, तस्य मध्यगतः तन्मध्यवर्ती, अस्तु भवतु।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सफला—जिसके चारों चरणों में नौ बार ... गयी अर्था ...
हुआ हो, उसको विद्वज्जन **कुसुमस्तबक** दण्डक ...
जिनका हाथ स्वर्ण के समान चमकने वाली ... समान आस्व ...
कुच (स्तन) कलिकाओं पर शोभा पा रहा है, जिसके ...
अशोक वृक्ष के फूलों के गुच्छ के सदृश अलंकृत है, नूतन ...
कान्ति वाले और चराचर के नेत्रों को आनन्द देने ...
बिजली के सदृश पीले दुपट्टा को धारण किये हुए मेरे ...
विराजमान हों।

मत्तमातङ्गलीलाकरः-दण्डकः

र र र र र
S I S S I S S I S S I S S I S
यत्र रेफः परं स्वेच्छया गुम्फितः स स्मृतो
र र र र
S I S S I S S I S S I S
दण्डको मत्तमातङ्गलीलाकरः ॥ ६ ॥

हेमगौरे वसानोंऽशुके शक्रनीलासिते वर्ष्मणि स्पष्टदिव्यानुलेपाङ्किते
तारहारांशुवक्षोनभश्चित्रमालाऽञ्चितो भव्यभूषोज्ज्वलाङ्गःसमं सीरिणा।
अञ्जनाभाम्बरेणेन्दुकुन्दाभदेहेन लीलापरीहासोर्मिकौतूहलैः
कंसरङ्गाद्रिगः पातु नश्चक्रपाणिर्गतिक्रीडया मत्तमातङ्गलीलाकरः ॥

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु स्वेच्छया रगणः गुम्फितः भवेत् स **मत्तमातङ्गलीलाकरः** दण्डकः स्मृतः कथितः।

हेमेति—शक्रनीलासिते इन्द्रनीलमणिरिव श्यामाकारे, स्पष्टः सुविशदः, दिव्यः स्वर्गीयः, यः अनुलेपः अङ्गरागविशेषः, तेन अङ्किते लेपिते, वर्ष्मणि शरीरे, हेम-गौरं स्वर्णवदुज्ज्वलम्, अंशुकं कौशेयवस्त्रं, वसानः दधानः, तारः दीर्घतरः, यः हारः स्रक्, तस्य अंशवः किरणाः, यत्र तादृशं वक्षः वक्षस्थलं, तदेव नभः वियत्, तस्मिन् चित्रमालया विविधवर्णयुक्तस्रजा, अञ्चितः शोभितः, भव्या शोभना, या भूषा अलङ्करणं तया, उज्ज्वलं कान्तिमदङ्गं, यस्य सः, अञ्जनाभं मेघश्यामम्, अम्बरं वस्त्रं, यस्य तेन, इन्दुकुन्दाभदेहेन गौरवर्णवता, सीरिणा बलरामेण, समं साकं, लीला क्रीडा, परीहासः परिहासः, हास्यं, तेषाम्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

...लैः कुतुकैः च संयुतः, कंसस्य रङ्गः युद्धक्षेत्रं, स ... कला—जिसके ...ति तथोक्तः, गतिक्रीडया गमनलीलया हेतुना, ...रगण हों, उसको ... हस्तिनः, लीलां विभ्रमं करोतीति तथोक्तः, ...कावली तथा अन्य आ..., पातु अवतु ।

... गोपियों के साथ ...रों चरणों में क्रम से नौ बार रगण का प्रयोग किया ...स्नान करते थे, ...**तङ्गलीलाकर** दण्डक कहते हैं ।

...ें रहा था, ... दृश साँवला वर्ण वाले, दिव्य अङ्गराग से सुशोभित देह ...उनके स्तनों के ... पीत वस्त्रों को धारण किए हुए, लम्बे हार की किरणों से ... वक्षःस्थलरूपी आकाश में अनेक वर्ण की मालाओं तथा सुन्दर भूषणों से शोभित और अपनी मदमाती चाल द्वारा गजराज की लीला करने वाले सुदर्शन चक्रधारी विष्णु भगवान् कंस की रणभूमि रूपी पर्वत पर विराजमान नीलवस्त्रधारी तथा चन्द्रमा एवं कुन्द पुष्प के समान अत्यन्त गौरवर्ण वाले बलराम के साथ हास-परिहास करते हुए हमारी रक्षा करें ।

---

* अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

य य य य य
। S S । S S । S S । S S । S S
यकारैः कवीच्छाऽनुरोधान्निबद्धैः प्रसिद्धो
य य य य य
। S S । S S । S S । S S । S S
विशुद्धोऽपरोदण्डकः **सिंहविक्रान्त**नामा ॥ १ ॥

र ज र ज र ज
S । S । S । S । S । S । S । S । S । S ।
स्वेच्छया रजौ क्रमेण सन्निवेशयत्युदारधी क-
र ज र ज र
S । S । S । S । S । S । S । S
विः स दण्डकः स्मृतो जगत्य**शोकमञ्जरी** ॥ २ ॥

र र र र र र र
S । S S । S S । S S । S S । S S । S S । S
यत्र रेफान् कविः स्वेच्छया पाठसौकर्यसापेक्षया रोपय-
र र र र र र
S । S S । S S । S S । S S । S S । S
त्येष धीरैः स्मृतो दण्डको **मत्तमातङ्गलीलाकरः** ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनङ्गशेखरः–दण्डक [illegible]

।ऽ। ऽ।ऽ।ऽ ।ऽ ।ऽ।ऽ।ऽ। ऽ। [illegible]

लघुर्गुर्रुर्निजेच्छया यदा निवेश्यते तदैष दण्ड [illegible]

उदेत्यसौ सुधाकरः पुरो विलोकयाद्य राधिके ! [illegible]

रतिस्वहस्तनिर्मितः कलाकुतूहलेन चारुचम्पकै [illegible]

इति प्रमोदकारिणीं प्रियाप्रसादलक्षणां गिरं स [illegible]

प्रदोषकालसङ्गमोल्लसन्मना मनोजकेलिकौतुकी करो [illegible]

इति छन्दोमञ्जर्यां समवृत्ताख्यो द्वितीयः स्तबकः ।

सुषमा—यस्य चतुर्षु चरणेषु निजेच्छया प्रथमः लघुः द्वितीयः गुरुः वर्णः भवेत् तथा एवम्प्रकारेण अष्टविंशतिवर्णाः स्युः सः **अनङ्गशेखरः** नाम दण्डकः भवति ।

उदेत्यसाविति–हे राधिके ! अद्य इदानीम्, पुरः पुरस्तात्; विजृम्भमाणाः शोभमानाः, गौरवर्णाः दीधितयः, यस्य तथोक्तः, असौ सुधाकरः सुधांशुः, उदेति उदयं गच्छति, इति विलोकय पश्य, असौ सम्मुखस्थः चन्द्रः, कलाकुतूहलेन विविधशिल्पकुतुकेन हेतुना, चारुचम्पकैः पीतचम्पककुसुमैः, रत्या कामदेवस्त्रियाः स्वहस्तेन निर्मितः निजकरयुगलेन रचितः, अनङ्गस्य स्मरस्य, शेखरः मुकुटं किमु ? इति, प्रमोदकारिणीम् आनन्ददायिनीम्, प्रियायाः राधायाः, प्रसादः हर्षः, तल्लक्षणां तल्लक्षणयुक्ताम्, अद्भुतां विस्मयकारिणीं, गिरं वाणीं, समुद्गिरन् निगदन् सन्, मनोजस्य मनसिजस्य, या केलिः खेला, तत्र कौतुकी समुत्सुकः, प्रदोषकाले रजनीमुखे, 'प्रदोषो रजनीमुखम्', इत्यमरः । यः सङ्गमः सम्भोगः, तस्मिन् उल्लसत् तत्परं मनः यस्य तथाभूतः, मुरारिः श्रीकृष्णः, वः युष्माकं, कृतार्थतां सफलमनोरथतां, करोतु विदधातु ।

इति सुषमाव्याख्यासंवलितायां छन्दोमञ्जर्यां द्वितीयः स्तबकः ।

सफला—जिसके चारों चरणों में स्वेच्छा से प्रथम लघु और द्वितीय वर्ण गुरु हों, इस प्रकार जिसमें कुल २८ अक्षर हों वह **अनङ्गशेखर** दामक दण्डक होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सामने ... पने निर्मलकान्ति वाले चन्द्रमा का उदय हो रहा ... चारों ओर फैल रही हैं। मानो कामदेव की स्त्री ... दिखलाने के लिये स्वयं चम्पक पुष्पों से कामदेव ... इस प्रकार अपने प्रियतम को प्रसन्न करने वाली सरस- ... रते हुए जिसका मन प्रदोष काल में सम्भोग के लिये ... जो काम क्रीड़ा के लिये उत्कण्ठित है, उनको भगवान् ...

फला—जिसके ... या रगण हों, उसको ... **कावली** तथा अन्य ... गोपियों के साथ ... स्नान करते थे, जि... रहा था, मुक्त... उनके स्तनों ...।

सफला हिन्दी व्याख्या सहित छन्दोमञ्जरी का द्वितीयस्तबक समाप्त।

तृतीयः स्तबकः

अर्धसमवृत्तम्

स स स ल ग भ भ भ ग ग

। । S । । S । । S । S S । । S । । S । । S S

विषमे यदि सौ सलगा दले, भौ युजि भाद् गुरुकावुपचित्रम् ॥ १ ॥

द्विरावृत्त्या पूरणीयः श्लोकः ।

> मुरवैरिवपुस्तनुतां मुदं, हेमनिभांशुकचन्दनलिप्तम् ।
> गगनं चपलामिलितं यथा, शारदनीधरैरुपचित्रम् ॥

सुषमा—यदि विषमे (प्रथमे, तृतीये) दले पादे सौ सगणद्वयं, सलगाः सगणः लघुः, गुरु च स्यात्, युजि युग्मे (द्वितीये, चतुर्थे) पादे भाद् भगणान्तरं भौ भगणद्वये गुरुकौ द्वौ गुरुवर्णौ भवेतां, तदा **उपचित्रं** नाम वृत्तम् । ११+११ =२२ ॥

मुरवैरिवपुरिति—हेमनिभांशुकचन्दनलिप्तं स्वर्णाभं वस्त्रं चन्दनद्रवलिप्तं च मुरवैरिणः श्रीकृष्णस्य वपुः शरीरं, चपलामिलितं विद्युता युक्तं, शारदनीरधरैः शरत्समयजमेघैः, उपचित्रं विविधचित्रयुक्तं, गगनं आकाशं, यथा इव, मुदम् प्रीतिं, तनुतां कुरुताम् । पद्येऽस्मिन् पूर्णोपमाऽलङ्कारः ।

सफला—यदि विषम चरणों (पहले-तीसरे) में तीन सगण, तथा लघु, गुरु वर्ण हों और सम चरणों (दूसरे-चौथे) में तीन भगण, दो गुरु वर्ण हों तो उसको **उपचित्र** नामक छन्द कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDE

सुवर्ण वर्णवाले (पीत) वस्त्र से अलंकृत, ... गयी अर्था...
हुआ श्रीकृष्ण का शरीर बिजली की कान्ति से ... समान आस्व...
व्याप्त गगन के सदृश दिखायी दे रहा था, वह स...

ल ल भ   भ   ग ग भ   भ   भ ... ज र ग

I I S I I S I I S S S I I S I I S I ... I S I

विषमे प्रथमाक्षरहीनं, दोधकमेव हि वेगवती ...

स्मर वेगवती व्रजरामा, केशववंशरवै... ऽभूत् ।

रभसान्न गुरून् गणयन्ती, केलिनिकुञ्जगृहाय जगाम ॥

सुषमा—यदि विषमे (प्रथमे, तृतीये) पादे प्रथमाक्षर (गुरुवर्ण) रहितं स्यात् समे (द्वितीये, चतुर्थे) पादे यथावत् स्यात्, तदा **वेगवती** नाम वृत्तम् । १०+११=२१ ।

स्मरेति–स्मरवेगवती कामोन्मत्ता, काचिद् व्रजरामा व्रजसुन्दरी, केशवस्य श्रीकृष्णस्य, वंशीरवैः मुरलीरणितिभिः, अतिमुग्धा अत्यन्तम् आकृष्टहृदया, गुरून् श्वसुरप्रभृतीन्, नगणयन्ती उपेक्षां विदधती, केलिनिकुञ्जगृहाय क्रीडार्थरचित-कुञ्जम्प्रति, रभसात् त्वरितं, जगाम वव्राज ।

सफला—यदि विषम चरणों (पहले-तीसरे) में दो लघुवर्ण, दो भगण, गुरु वर्ण हों तथा सम चरणों (दूसरे-चौथे) में तीन भगण और दो गुरु वर्ण हों, तो उसको **वेगवती** नामक छन्द कहते हैं । उक्त लक्षण का यह आशय है— यदि दोधक वृत्त का पहला अक्षर हटा दिया जाय तो प्रथम तृतीय चरण और अविकल रूप से रहने पर द्वितीय-चतुर्थ चरण होते हैं ।

कोई कामपीडिता व्रजवनिता श्रीकृष्ण की मुरली-धुन को सुनकर आकृष्ट हृदय होकर घर के बड़ों (श्वशुर आदि) की परवाह (अकेली जाते देख कोई मुझे क्या कहेगा, इन वातों की चिन्ता) न करके केलिकुञ्ज की ओर शीघ्रता से चली गयी ।

ल ल भ   भ   र   न   भ   भ   र

I I S I I S I I S I S I I I S I I S I I S I S

अयुजि प्रथमेन विवर्जितं द्रुतविलम्बितकं हरिणप्लुता ॥३॥

स्फुटफेनचया हरिणप्लुता, बलिमनोज्ञतटा तरणेः सुता ।

कलहंसकुलारवशालिनी, विहरतो हरति स्म हरेर्मनः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साम
फला—जिसके
या रगण हों, उसको ...लाम
कावली तथा अन्य अ
गोपियों के साथ
स्नान करते थे, जि
रहा था, मुकुन्द
उनके स्तनों ...।

...पने निर्मलकान्ति वाले चन्द्रमा का उदय हो रहा ...चारों ओर फैल रही हैं। मानो कामदेव की स्त्री ...दिखलाने के लिये स्वयं चम्पक पुष्पों से कामदेव ...इस प्रकार अपने प्रियतम को प्रसन्न करने वाली सरस- ...रते हुए जिसका मन प्रदोष काल में सम्भोग के लिये ... जो काम क्रीड़ा के लिये उत्कण्ठित है, उनको भगवान्

सफला हिन्दी व्याख्या सहित छन्दोमञ्जरी का द्वितीयस्तबक समाप्त।

तृतीयः स्तबकः

अर्धसमवृत्तम्

स स स ल ग भ भ भ ग ग
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ

विषमे यदि सौ सलगा दले, भौ युजि भाद् गुरुकावुपचित्रम् ॥ १ ॥

द्विरावृत्त्या पूरणीयः श्लोकः।

मुरवैरिवपुस्तनुतां मुदं, हेमनिभांशुकचन्दनलिप्तम्।
गगनं चपलामिलितं यथा, शारदनीधरैरुपचित्रम् ॥

सुषमा—यदि विषमे (प्रथमे, तृतीये) दले पादे सौ सगणद्वयं, सलगाः सगणः लघुः, गुरुः च स्यात्, युजि युग्मे (द्वितीये, चतुर्थे) पादे भाद् भगणान्तरं भौ भगणद्वये गुरुकौ द्वौ गुरुवर्णौ भवेतां, तदा **उपचित्रं** नाम वृत्तम्। ११+११ =२२ ॥

मुरवैरिवपुरिति—हेमनिभांशुकचन्दनलिप्तं स्वर्णाभं वस्त्रं चन्दनद्रवलिप्तं च मुरवैरिणः श्रीकृष्णस्य वपुः शरीरं, चपलामिलितं विद्युता युक्तं, शारदनीरधरैः शरत्समयजमेघैः, उपचित्रं विविधचित्रयुक्तं, गगनं आकाशं, यथा इव, मुदम् प्रीतिं, तनुतां कुरुताम्। पद्येऽस्मिन् पूर्णोपमाऽलङ्कारः।

सफला—यदि विषम चरणों (पहले-तीसरे) में तीन सगण, तथा लघु, गुरु वर्ण हों और सम चरणों (दूसरे-चौथे) में तीन भगण, दो गुरु वर्ण हों तो उसको **उपचित्र** नामक छन्द कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुवर्ण वर्णवाले (पीत) वस्त्र से अलंकृत, [illegible] गयी अथा [illegible]
हुआ श्रीकृष्ण का शरीर विजली की कान्ति से [illegible] समान आस्व [illegible]
व्याप्त गगन के सदृश दिखायी दे रहा था, वह स [illegible]

ल ल भ भ ग ग भ भ भ [illegible] ज र ग

। । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ । [illegible] । ऽ । [illegible]

विषमे प्रथमाक्षरहीनं, दोधकमेव हि वेगवत [illegible] ॥

स्मर वेगवती व्रजरामा, केशववंशरवै [illegible] देऽभूत् ।
रभसान्न गुरून् गणयन्ती, केलिनिकुञ्जगृहाय जगाम ॥

सुषमा—यदि विषमे (प्रथमे, तृतीये) पादे प्रथमाक्षर (गुरुवर्ण) रहितं स्यात् समे (द्वितीये, चतुर्थे) पादे यथावत् स्यात्, तदा **वेगवती** नाम वृत्तम् । १०+११=२१ ।

स्मरेति–स्मरवेगवती कामोन्मत्ता, काचिद् व्रजरामा व्रजसुन्दरी, केशवस्य श्रीकृष्णस्य, वंशीरवैः मुरलीरणितिभिः, अतिमुग्धा अत्यन्तम् आकृष्टहृदया, गुरून् श्वसुरप्रभृतीन्, नगणयन्ती उपेक्षां विदधती, केलिनिकुञ्जगृहाय क्रीडार्थरचित-कुञ्जम्प्रति, रभसात् त्वरितं, जगाम वव्राज ।

सफला—यदि विषम चरणों (पहले-तीसरे) में दो लघुवर्ण, दो भगण, गुरु वर्ण हों तथा सम चरणों (दूसरे-चौथे) में तीन भगण और दो गुरु वर्ण हों, तो उसको **वेगवती** नामक छन्द कहते हैं । उक्त लक्षण का यह आशय है—यदि दोधक वृत्त का पहला अक्षर हटा दिया जाय तो प्रथम तृतीय चरण और अविकल रूप से रहने पर द्वितीय-चतुर्थ चरण होते हैं ।

कोई कामपीडिता व्रजवनिता श्रीकृष्ण की मुरली-धुन को सुनकर आकृष्ट हृदय होकर घर के बड़ों (श्वशुर आदि) की परवाह (अकेली जाते देख कोई मुझे क्या कहेगा, इन वातों की चिन्ता) न करके केलिकुञ्ज की ओर शीघ्रता से चली गयी ।

ल ल भ भ र न भ भ र

। । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ

अयुजि प्रथमेन विवर्जितं द्रुतविलम्बितकं हरिणप्लुता ॥३॥

स्फुटफेनचया हरिणप्लुता, वलिमनोज्ञतटा तरणेः सुता ।
कलहंसकुलारवशालिनी, विहरतो हरति स्म हरेर्मनः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[illegible] मे, तृतीये) पादे प्रथमेन प्रथमाक्षरेण विवर्जितं [illegible] समे [illegible] चतुर्थे) पादे द्रुतविलम्बितकस्य लक्षणेन युक्तं [illegible] म् । ११+१२=२३ ।

स्फुटेति—स्फुटफे [illegible] स्पष्टहिण्डीरसमूहयुक्ता, हरिणप्लुता मृगप्लवनसनाथा, बलिमनोज्ञतटा [illegible] त्तसमर्पितपुष्पचयशोभिततटप्रदेशा, कलहंसकुलारव-शालिनी सुन्द[illegible] मुख[illegible] रवशोभिता, तरणेः सुता सूर्यतनया यमुना, विहरतः तटे पर्यट[illegible] कृष्णस्य, मनः हरतिस्म जहार ।

सफला—यदि विषम चरणों में प्रथम अक्षर से रहित तथा सम चरणों में द्रुतबिलम्बित छन्द का पूरा लक्षण हो, तो उसको **हरिणलुप्ता** छन्द कहते हैं ।

स्वच्छ झाग समूह से युक्त तीर पर नाचने-कूदने वाले मृगों से, पूजा के लिये चढ़ाये गये पुष्प आदि से सुशोभित और रमणीय हंसों के कलरव से मुखरित यमुना नदी ने श्रीकृष्ण के चित्त को अपनी ओर आकृष्ट किया ।

न न र ल ग न ज ज र

।।।,।।।,ऽ।ऽ,।ऽ,।,।।।,।ऽ।,।ऽ।,ऽ।ऽ

अयुजि ननरला गुरुः समे, तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ ॥ ४ ॥
स्फुटसुमधुरवेणुगीतिभिः, तमपरवक्त्रमवेत्य माधवम् ।
मृगयुवतिगणैः समं स्थिता, व्रजवनिता धृतचित्तविभ्रमाः ॥

सुषमा—यस्य अयुजि (प्रथमे, तृतीये) पादे, ननरला गुरुः नगणद्वयं, रगणः लघुः, गुरुः स्यात्, समे (द्वितीये, चतुर्थे) पादे नजौ जरौ नगणः, जगणद्वयं रगणः च स्यात् तत् **अपरवक्त्रं** नाम वृत्तम् । ११+१२=२३ ।

स्फुटसुमधुरेति—स्फुटाः सुव्यक्ताः सुमधुरा प्रकामस्वादुतां धारयन्त्यः च याः वेणुगीतयः मुरलीनिनदाः ताभिः, अपरम् अलौकिकं, वक्त्रं वदनं यस्य तं, माधवं लक्ष्मीपतिं श्रीकृष्णम्, अवेत्य विज्ञाय, धृतचित्तविभ्रमाः साश्चर्या, व्रज-वनिताः व्रजस्त्रियः, मृगयुवतिगणैः हरिणीभिः, समं साकं, स्थिताः उपविष्टाः ।

सफला—जिसके विषम चरणों में दो नगण, रगण, लघु तथा गुरु वर्ण हों और सम चरणों में नगण, दो जगण, रगण हों तो उसको **अपरवक्त्र** नामक छन्द कहते हैं ।

सुमधुर मुरली की धुन से श्रीकृष्ण को वंशीवादन का विशेषज्ञ समझकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

आश्चर्यचकित व्रजललनायें मृगियों के साथ रुक गयी अर्थात् कृष्ण के सौन्दर्य तथा वंशीधुन का गोपियों एवं मृगियों ने समान आस्वादन किया ।

न न र य न ज ज र ग

।।। ।।। ऽ।ऽ ।ऽऽ ।।। ।ऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ ऽ

अयुजि नयुगरेफतो यकारो, युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा[1] ।

करकिसलयशोभया विभान्तो, कुचफलभारविनम्रदेहयष्टिः ।
स्मितरुचिरविलासपुष्पिताग्रा, व्रजयुवतिर्व्रततिर्हरेर्मुदेऽभूत् ।।

सुषमा—यस्य अयुजि (प्रथमे, तृतीये) पादे नगणद्वयं, रगणः, यगणः, तथा युजि (द्वितीये, चतुर्थे) पादे नगणः, जगणद्वयं, रगणः, गुरुः च वर्णः स्यात् तत् **पुष्पिताग्रा** नाम वृत्तम् । १२+१३=२५ ।

करकिसलयेति—करकिसलयशोभया हस्तपल्लवसुषमया, विभान्ती शोभमाना, कुचफलभारविनम्रदेहयष्टिः स्तनौ एव फले तयोः भारेण विनम्रा विनता देहयष्टिः शरीरलता यस्याः सा, स्मितरुचिरविलासपुष्पिताग्रा स्मितस्य मन्दहास्यस्य रुचिरः शोभनः, विलासः विभ्रमः, स एव पुष्पं तत् सञ्जातम् अस्य तदेवाग्रं वदनं मुखं यस्याः सा, हरेः श्रीकृष्णस्य, मुदे प्रसन्नतायै, अभूद् अभवत् । अत्र चतुष्पाद् रूपकम् ।

सफला—जिसके विषम चरणों में दो नगण, रगण, यगण तथा सम चरणों में नगण, दो जगण, रगण और गुरु वर्ण हों, उसको **पुष्पिताग्रा** वृत्त कहते हैं ।

करपल्लवों की कमनीय कान्ति से शोभित, स्तन रूपी फलों से झुकी हुई, मन्दहास्य रूपी पुष्पों से पुष्पित अग्रभाग (मुख) वाली किसी व्रजवनिता ने श्रीकृष्ण के चित्त को आनन्दित किया ।

विशेष—वैतालीय तथा पुष्पिताग्रा छन्द को कुछ विद्वान् अपरवक्त्र कहते हैं ।

स स ज ग स भ र ल ग

।।ऽ ।।ऽ ।ऽ। ऽ ।।ऽ ऽ।। ऽ।ऽ । ऽ

अयुजोर्यदि सो जगौ युजोः, सभरा ल्गौ यदि सुन्दरी तदा ।

यदवोचत वीक्ष्य मानिनी, परितः स्नेहमयेन चक्षुषा ।
अपि वागधिपस्य दुर्वचं तद्विदधीत विस्मयम् ।। किराते ।।

इति छन्दोमञ्जर्याम् अर्धसमवृत्ताऽऽख्यस्तृतीयः स्तबकः ।

———

१. वैतालीयं पुष्पिताग्राञ्चेच्छन्त्यपरवक्त्रम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सामा... — ... अयुजोः विषमपादयोः सगणद्वयं जगणः, गुरुः च स्यात्, ... समपादयोः सगणः, भगणः, रगणः, लघुः, गुरुः च स्यात् तत् **सुन्दरी** नाम वृत्तम् । १०+११=२१ ।

यदवोचतेति—मानिनी स्वाभिमानिनी, द्रौपदी, स्नेहमयेन स्निग्धेन, चक्षुषा विलोचनाभ्यां, परितः समन्ताद्, वीक्ष्य निरीक्ष्य, यद् अवोचत यदुक्तवती, वागधिपस्य देवगुरोरपि, दुर्वचं कथयितुमशक्यं तद् वचनं, विस्मयम् आश्चर्यं, विदधीत कर्तुं समर्थः स्यात् ।●

इति सुषमाव्याख्यासंवलितायां छन्दोमञ्जर्यां तृतीयस्तबकः ।

● अन्य संस्करणों के प्रक्षिप्त छन्द—

त ज र ज ग ग ग र ज र य
S S I I S I S I S I S S S S I S I S I S I S I S S
ओजे तपरौ जरौ जगौ गुरू समे जौ यौ, कीर्तिता बुधैरियं तु **षट्पदाख्या** ॥१॥

न ज ज र स ज य र ल ग
I I I I S I I S I S I S I I S I S I I S S S I S I S
यदि विषमे भवतो नजौ जरौ, सजयाः समे तु रलौ गो **मञ्जुसौरभम्** ॥ २ ॥

र ज र य ज र ज र ग
S I S I S I S I S I S S I S I S I S I S I S I S S
स्यादयुग्मके रजौ रयौ समे चेत्, जरौ जरौ गुरुर्यंवात्**परामतीयम्** ॥ ३ ॥

र ज र ज त र ज र ग
S I S I S I S I S I S S I S I S I S I S I S S
रौ जरौ जसंयुतौ पदेऽसमेऽथ, युग्मे तरौ जरौ गुरु**र्मृगीयवानी** ॥ ४ ॥

ज त ज ग ग त त ज ग ग
I S I S S I I S I S S S S I S S I I S I S S
जतौ जगौ गौ विषमे समे चेत्, तौ ज्गौ ग एषा **विपरीतपूर्वा** ॥ ५ ॥

स स ज ग ग स भ र य
I I S I I S I S I S S I I S S I I S I S I S S
विषमे ससजा यदा गुरू चेत्, सभरा येन तु **कालभारिणीयम्** ॥ ६ ॥

त ज र ग ग म स . ज ग ग
S S I I S I S I S S S S S I I S I S I S S
ओजे तपरौ जरौ गुरुश्चेत्, म्सौ ज्गौ ग् **भद्रविराड्** भवेदनीजे ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MINE

सफला—यदि विषम चरणों में दो सगण, जगण, गुरु वर्ण हों और सम चरणों में सगण, भगण, रगण, लघु गुरु वर्ण हों, तो उसको **सुन्दरी** नामक छन्द कहते हैं।

पाण्डव कुल के गौरव का स्मरण करती हुई द्रौपदी ने स्त्रीजनोचित स्नेहपूर्ण दृष्टि से चारों ओर देखकर जो कुछ कहा, वह नीतियुक्त वाक्य देवगुरु बृहस्पति को भी आश्चर्य चकित कर सकता है।

सफला हिन्दी व्याख्या सहित छन्दोमञ्जरी का तृतीय स्तबक समाप्त।

———

भ भ भ ग ग न ज ज य
S I I S I I S I I S S I I I I S I I S I I S S
भत्रयमोजगतं गुरुणी चेद्, युजि च नजौ ज्ययुतौ **द्रुतमध्या** ॥ ८ ॥

न न भ भ न न र र
I I I I I I S I I S I I I I I I I I S I S S I S
अयुजि ननभभाः समकेऽपि तु, नयुगरयुगलं तथा **कौमुदी** ॥ ९ ॥

त त ज ग ग ज त ज ग ग
S S I S S I I S I S S I S I S S I I S I S S
आख्यानकी तौ जगुरू ग ओजे, जतावनोजे जगुरू गुरुश्चेत् ॥ १० ॥

स ज स ग भ र न ग ग
I I S I S I I I S S S I I S I S I I I S S
असमे सजौ सगुरुयुक्तौ, **केतुमती** समे भरनगाद् गः ॥ ११ ॥

र स ल ग स ज ज ग
S I S I I S I S I I S I S I I S I S
सौ लगौ विषमे यदि, सजजा गुरुर्ललिता समे ॥ १२ ॥

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चतुर्थः स्तबंकः

विषमवृत्तम्

स ज स ल न स ज ग
। । S । S । । । S । । । । । । S । S । S
प्रथमे सजौ यदि सलौ च, नसजगुरुकाण्यनन्तरम् ।
भ न भ ग स ज स ज ग
S । । । । । S । । S । । S । S । । । S । S । S
यद्यथ भनभगाः स्युरथो, सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता ॥१॥
विललास गोपरमणीषु, तरणितनया प्रभोद्गता ।
कृष्णनयनचकोरयुगे दधती सुधांशुकिरणोर्मिविभ्रमम् ॥

सुषमा—यदि प्रथमे पादे सगणः, जगणः, सगणः, लघुः च स्यात् द्वितीये पादे नगणः, सगणः, जगण, गुरुः च स्यात्, तृतीये पादे भगणः, नगणः, भगणः, गुरुः स्यात्, चतुर्थे पादे सगणः, जगणः, सगणः, जगणः गुरुः च स्यात् तद् उद्गता वृत्तम् ।

विललासेति—प्रभोद्गता रुच्या लब्धोत्कर्षा, तरणितनया यमुना, गोपरमणीषु व्रजसारङ्गलोचनासु, कृष्णनयनचकोरयुगे श्रीकृष्णस्य नयनयुगलरूपिणि चक्रवाकमिथुने, सुधांशुकिरणोर्मिविभ्रमं चन्द्रकिरणवद् ऊर्मिलोभां दधती विललास शुशुभे ।

सफला—विषमवृत्त में चारों चरण की गणव्यवस्था भिन्न होती है। यदि प्रथम पाद में सगण, जगण, सगण, लघु वर्ण हो, दूसरे पाद में नगण, सगण, जगण, गुरु वर्ण हों, तीसरे चरण में भगण, नगण, भगण, गुरु वर्ण हों और चौथे चरण में सगण, जगण, सगण, जगण, गुरु वर्ण हों, तो उसको उद्गता वृत्त कहते हैं।

गोपियों के रहते हुए भी, अत्यन्त चित्ताकर्षक यमुना श्रीकृष्ण के नेत्र रूपी-चकवा-चकई के लिये चन्द्रमा की किरणों के समान लहरों की छवि को धारण करती हुई शोभा को प्राप्त हुई।

स ज स ल न स ज ग
। । S । S । । । S । । । । । । S । S । S
प्रथमे सजौ यदि सलौ च, नसजगुरुकाण्यनन्तरम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भ न ज लग स ज स ज
S I I I I I I S I I S I I S I S I I I S I S I S
यद्यथ भनजलगाः स्युरथो, सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता ॥२॥

अथ वासवस्य वचनेन, रुचिरवदनस्त्रिलोचनम् ।
क्लान्तिरहितमभिराधयितुं, विधिवत्तपांसि विदधे धनञ्जयः ॥[1]

सुषमा—उद्गताभेदो निरूप्यते—यदि प्रथमे पादे सगणः, जगणः, सगणः लघुवर्णः च स्यात्, अनन्तरं द्वितीये पादे नगणः, सगणः, जगणः, गुरुवर्णः च स्यात्, अथ तृतीये पादे भगणः, नगणः, जगणः, लघुः, गुरुः च वर्णः स्यात्, चतुर्थे पादे सगणः, जगणः, सगणः, जगणः गुरुः च स्यात् तदा **उद्गता** नाम वृत्तम् ।

अथेति—अथ देवेन्द्रगमनानन्तरं, वासवस्य सुरेन्द्रस्य, वचनेन उक्त्या, रुचिरवदनः प्रसन्नास्यः, धनञ्जयः अर्जुनः, क्लान्तिरहितं प्रसन्नवदनं, त्रिलोचनं त्रिनयनं, अभिराधयितुं, प्रसन्नतामापादयितुं विधिवद् यथाविधि, तपांसि कृच्छ्रादिकर्माणि, विदधे कृतवान् ।

सफला—उद्गता भेद का निरूपण किया जा रहा है—यदि प्रथम पाद में स, ज, सगण तथा लघु वर्ण, द्वितीय पाद में न, स, ज, गुरु वर्ण, तीसरे पाद में भ, न, ज, लघु, गुरु वर्ण और चतुर्थपाद में स, ज, स, ज, गुरु वर्ण हों तो, इसको **उद्गता** भेद कहते हैं ।

इन्द्र के लौट जाने पर इन (इन्द्र) की बातों से प्रसन्न अर्जुन ने लोकशंकर शंकर की उपासना द्वारा अभीष्ट प्राप्ति की इच्छा से यथाविधि तपस्या प्रारम्भ कर दी ।

त्रयमुद्गतासदृशमेव, पदमिह तृतीयमन्यथा ।
र न भ ग
S I S I I I S I I S
जायते रनभगैर्ग्रथितं, कथयन्ति सौरभकमेतदीदृशम् ।
[2]अपि धूतफुल्लशतपत्र-वनविसृतगन्धविभ्रमा ।
कस्य हृन्न हरतीह हरे !, मुखपद्मसौरभकला तवाद्भुता ॥

---

१. इति भारवावुद्गताभेदः । २. 'परिभूत' इति पाठ भेदः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

…मा—यदि उद्गताच्छन्दसः तृतीये पादे रगणः, नगणः, भगणः, गुरुः च वर्णः भवेत्, तत् **सौरभकं** नाम वृत्तम् । शेषं पूर्ववत् ।

परिभूतेति—हे हरे ! कृष्ण !, धूतः कम्पितः, फुल्लशतपत्रवनस्य पुष्पित-कमलकाननस्य, विसृतगन्धविभ्रमः प्रसरणशीलसुगन्धिविलासः यथा सा, तव भवतः, मुखपद्मसौरभकला मुखकमलसुगन्धितकला, अद्भुता विचित्रा, कस्य सचेतसः, हृद् मनः, न, हरति आकृष्टं करोति ।

सफला—यदि प्रथम द्वितीय और चतुर्थपाद पूर्वोक्त उद्गता छन्द के सदृश हों और तृतीय चरण में रगण, नगण, भगण, एक गुरु वर्ण हों तो उसको **सौरभक** छन्द कहते हैं ।

हे श्रीकृष्ण ! विकसित कमलपुष्पों की सुवास को कँपा देनेवाली आपके मुख कमल की सुगन्धि किसके हृदय को आकर्षित नहीं करती ? अपितु सबके चित्त को आकर्षित करती है ।

नयुगं सकारयुगलञ्च, भवति चरणे तृतीयके ।

न न स स

ااا ااا ااS ااS

तदुदितमुरुमतिभिर्ललितं, यदि शेषमस्य सकलं यथोद्गता ।

व्रजसुन्दरीसमुदयेन, मुदितमनसा स्म पीयते ।
हिमकरगलितमिवामृतकं, ललितं मुरारिमुखचन्द्रविद्रुतम् ॥

सुषमा—यदि उद्गताच्छन्दसः तृतीये पादे नगणद्वय सगणद्वयञ्च स्यात् तत् **ललितं** नाम वृत्तम् । शेषं पूर्वोदाहरणवत् ।

व्रजसुन्दरीति—व्रजसुन्दरीसमुदयेन व्रजवनितासमाजेन, मुदितमनसा प्रसन्न-हृदयेन, मुरारिमुखचन्द्रविद्रुतं भगवतो वदनाद् विच्युतं, ललितं मनोरमम्, अमृतकं पीयूषं, हिमकरात् शीतांशोः, गलितम् इव पतितम् इव, पीयते स्म पानमकरोत् ।

सफला—यदि उद्गता छन्द के तीसरे चरण में दो नगण, दो सगण हों तो **ललित** नामक छन्द होता है । शेष पूर्व उदाहरण के समान समझें ।

व्रजवनिताओं ने श्रीकृष्ण के मुखचन्द्र से निकले हुए सुमधुर अमृत को चन्द्रमा से निकला समझकर अत्यन्त प्रसन्नता के साथ पान किया ।

भवत्यर्धसमं वक्त्रं विषमञ्च कदाचन ।
तयोर्द्वयोरुपान्तेऽत्र छन्दस्तदधुनोच्यते ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

य म ग य
। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ

वक्त्रं युग्भ्यां मगौ स्याता- मब्धेर्योऽनुष्टुभि ख्यातम् ।
वक्त्राम्भोजं सदा स्मेरं, चक्षुर्नीलोत्पलं फुल्लम् ।
वल्लवीनां मुरारातेश्चेतोभृङ्गं जहारोच्चैः ॥

सुषमा—वक्त्रं नामविशेषं वृत्तं, कदाचन कदाचिदपि, अर्धसमं, विषमञ्च, भवति । सम्प्रति तयोः उभयोः अपि, उपान्ते अन्तिमवर्णसमीपे, पूर्वस्मिन् वर्णे, छन्दः वृत्तमिति, उच्यते कथ्यते । अनुष्टुभि वृत्ते अब्धेः चतुर्थवर्णात् परः यगणः स्यात् तथा युग्भ्यां द्वितीय-चतुर्थपादयोः, मगणो गुरुः च भवेतां, तदा **वक्त्रं** नाम वृत्तम् ।

वक्त्राम्भोजमिति—वल्लवीनां व्रजवनितानां, सदा सर्वदा, स्मेरं मन्दहास्यं, वक्त्राम्भोजं मुखकमलं, फुल्लं पुष्पितं, चक्षुर्नीलोत्पलं नयनरूपं नीलकमलं, मुरारातेः श्रीकृष्णस्य, चेतोभृङ्गं मानसभ्रमरं, उच्चैः कामं, जहार अपहृतवान् ।

सफला—कभी 'वक्त्र' नामक छन्द ही अर्धसम और विषमवृत्त हो जाता है, अतः उन दोनों (अर्धसम विषम) में अन्तिम वर्ण से पहले वर्ण में छन्द का नियम कहते हैं । अनुष्टुप् छन्द में चार अक्षरों के बाद यगण हो, दूसरे और चौथे पाद में मगण तथा एक गुरु वर्ण होने पर **'वक्त्र'** नामक वृत्त होता है ।

व्रजवनिताओं की मन्दहास्ययुक्त काली-काली आखों ने श्रीकृष्ण के हृदय को आकर्षित किया ।

य ज
। ऽ ऽ । ऽ ।

युजोश्चतुर्थतो जेन, पथ्यावक्त्रं प्रकीर्तितम् ।
रासकेलिसतृष्णस्य, कृष्णस्य मधुवासरे ।
आसीद् गोपमृगाक्षीणां, पथ्या वक्त्रमधुस्रुतिः ॥

सुषमा—युजोः द्वितीय-चतुर्थपादयोः, चतुर्थतः चतुर्थवर्णादनन्तरं, जेन जगणेन, **पथ्यावक्त्रं** नाम वृत्तं भवति ।

रासकेलीति—रासकेलिसतृष्णस्य रासक्रीडेच्छुकस्य, कृष्णस्य नन्दनन्दनस्य, मधुवासरे वसन्तदिवसेषु, गोपमृगाक्षीणां गोपसारङ्गनेत्राणां, वक्त्राद् मुखाद् या मधुस्रुतिः पीयूषनिष्यन्दः सा एव, पथ्य हितकरी, आसीत् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सफला—सम पादों (दूसरे-चौथे) में चौथे वर्ण के वाद जगण होने से पथ्यावक्त्र नामक छन्द होता है। ऐसी स्थिति में पाँचवाँ, सातवाँ वर्ण लघु और छठा वर्ण गुरु होता है। प्रथम और तृतीय पाद में यगण होता है।

रासक्रीडा के लिये इच्छुक श्रीकृष्ण के लिये वसन्तऋतु में गोपियों के वदन कमल से निकली हुई अमृत की धारा हितकर थी।

ल लगल

। ।ऽ।

पञ्चमं लघु सर्वत्र, सप्तमं द्विचतुर्थयोः।

न लगल

। ।ऽ।

गुरु षष्ठ च पादानां शेषैष्वनियमो मतः।
प्रयोगे प्रायिकं प्राहुः केऽप्येतद्वृत्तलक्षणम्।
लोकेऽनुष्टुबिति ख्यातं तस्याष्टाक्षरता मता॥

इति छन्दोमञ्जर्यां विषमवृत्ताऽऽख्यः चतुर्थः स्तबकः।

सुषमा—अत्र वक्त्रनामके वृत्ते, सर्वत्र समेषु चरणेषु पञ्चमम् अक्षरं लघु भवति, द्वितीय-चतुर्थयोः चरणयोः सप्तमं लघु भवति, तथा षष्ठम् अक्षरं गुरु-जानीयात्, शेषेषु अक्षरेषु अनियमः स्वातन्त्र्यं मतः, तद् वृत्तं लोके अनुष्टुप् इति ख्यातं तस्य अष्टाक्षरता मता कथिता।

इति सुषमाव्याख्यासंवलितायां छन्दोमञ्जर्यां चतुर्थः स्तबकः।

सफला—इस 'वक्त्र' नामक वृत्त में सब चरणों में पाँचवाँ अक्षर लघु होता है, दूसरे-चौथे चरणों में सातवाँ लघु तथा छठा गुरु होता है। शेष वर्णों कोई नियम नहीं होता है। दूसरे आचार्य इसको 'अनुष्टुप्' छन्द मानते हैं, इसकी अक्षर संख्या आठ है।

सफला हिन्दी व्याख्या सहित छन्दोमञ्जरी का चतुर्थ स्तबक समाप्त।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

पञ्चमः स्तबकः

मात्रावृत्तम्

१   २   ३   ४   ५   ६   ७   ग

ऽ ऽ ऽ ऽ। ।ऽ ऽऽऽ ।।। ऽ। ।।ऽ ऽ

लक्ष्मै तत् सप्त गणा गोपेता भवति नेह विषमे जः ।

६

।

षष्ठो जश्च नलघु वा प्रथमेऽर्धे नियतमार्यायाः ॥ १ ॥

षष्ठे द्वितीयलात् परके न्ले मुखलाश्च सयतिपदनियमः ॥

६

।

चरमेऽर्धे पञ्चमके तस्मादिह भवति षष्ठो लः ॥ २ ॥

क्रष्णः शिशुः सुतो मे बल्लवकुलटाभिराहृतो न गृहे ।
क्षणमपि वसत्यसाविति जगाद गोष्ठ्यां यशोदाऽऽर्या ॥ १ ॥
वृन्दावने सलीलं वल्गुद्रुमकाण्डनिहिततनुयष्टिः ।
स्मेरमुखार्पितवेणुः कृष्णो यदि मनसि कः स्वर्गः ? ॥ २ ॥

सुषमा—आर्यायाः प्रथमेऽर्धे पूर्वार्धे, एतत् लक्ष्म लक्षणं नियतं वर्तते । तद् यथा—गोपेताः गुरुणा युक्ताः सप्तगणाः (आर्यादिषु गणाः चतुर्मात्रात्मका भवन्तीति पूर्वमुक्तम्) भवन्ति । चतुर्मात्राः सप्तगण अन्ते एको गुरुरित्येषा **आर्याया** गणानां व्यवस्था भवति । इह अस्याम् अर्यायां, विषमे स्थाने प्रथम-तृतीय-पञ्चम-सप्तम गणेषु जः जगणः (मध्यगुरुः) न भवति । षष्ठे गणे न्ले नगणलघुयुक्त द्वितीयलाद् द्वितीयलघोः पूर्वमेव यतिनियमः । चरमेऽर्धे षष्ठो गणः लः केवलं लघुवर्णरूपो भवति । एवं द्विविधाऽऽर्या क्रमेणोदाहरणम्—

जगणषष्ठाऽऽर्या—

कृष्ण इति—आर्या सद्गुणयुक्ता, यशोदा नन्दपत्नी, गोष्ठ्यां स्त्रीसमितौ, इति जगाद कथितवती, शिशुः कृष्णः मे मम, सुतः पुत्रः, वल्लवकुलटाभिः स्वैरिणीभिर्गोपपत्नीभिः, 'पुंश्चली धर्षिणी बन्धक्यसती कुलटेत्वरी । स्वैरिणी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पांसुला च' । इत्यमरः । आहृतः अपहृतः, अतः क्षणमपि स्वल्पकालमपि, गृहे अस्मद् गेहे न वसति ।

न लघुषष्ठाऽऽर्या—

वृन्दावन इति—वृन्दावने एतन्नामके सुप्रसिद्धस्थाने, वल्गुद्रुमकाण्डनिहित-तनुयष्टिः मनोहरद्रुमशाखान्यस्तशरीरव्रततिः, स्मेरमुखार्पितवेणुः स्मितवदनधृत-मुरलिकः, असौ श्रीकृष्णः, यदि मनसि हृदये स्यात् तर्हि स्वर्गः कः स्वर्गेण किं प्रयोजनं न किमपीति भावः ।

सफला–आर्या छन्द के पूर्वार्ध में निम्नलिखित लक्षण हों तो चार मात्राओं से युक्त सात गण होते हैं और उनके अन्त में एक गुरु वर्ण होता है। इसमें छठा गण जगण अथवा एक लघुवर्ण युक्त नगण (४ लघु) होता है, इसमें अन्य छन्दों की भाँति तीन अक्षरों का गण नहीं होता । षष्ठ गण में जब चार लघु वर्ण होंगे तो प्रथम लघुवर्ण से पूर्व यति (विराम) होती है । उसके उत्तरार्ध में षष्ठगण केवल लघुवर्णों वाला होता है और पाँचवें गण के चार लघु वर्ण वाला होने पर पहले लघु वर्ण से पूर्व यति होती है, मूल उदाहरणों पर ध्यान दें ।

जगणषष्ठ आर्या—सद्गुणवती यशोदा ने स्त्रियों की सभा में कहा कि मेरे भोले-भाले कृष्ण को कुलटा गोपियाँ कहीं ले गयी हैं, अब वह क्षण भर के लिये भी घर में नहीं रहता ।

नलघुषष्ठ आर्या —वृन्दावन में हरे-भरे पेड़ (कदम्ब) के सहारे खड़े मन्द हास्य युक्त वंशी बजाते हुए श्रीकृष्ण यदि हृदय में विराजमान हों तो इससे बढ़कर स्वर्ग के निवास में कोई सुख नहीं है ॥ १–२ ॥

पथ्या विपुला चपला मुखचपला जघनचपला च ।
गीत्युपगीत्युद्गीतय आर्यागीतिश्च नवधाऽऽर्या ॥ ३ ॥

३

।।।।S।।।।S

प्रथमगणत्रयविरतिर्दलयोरुभयोः प्रकीर्तिता पथ्या ।
जय जय जगदीश ! विभो ! केशव ! कंसान्त ! माधवानन्त ! ।
कुरु करुणामिति भणितिः पथ्या भवरोगदुःस्थानाम् ॥ ३ ॥

सुषमा—पथ्या, विपुला, चपला, मुखचपला, जघनचपला, गीतिः,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपगीतिः, उद्गीतिः आर्यागीतिः—इत्येते नवभेदाः आर्यायाः। यदि पूर्वार्धे तथोत्तरार्धे उभयोः पादयोः चतुर्मात्रात्मकगणत्रयानन्तरं विरतिः विश्रमः स्यात् तदा **पथ्या** नाम वृत्तम्।

जय जयेति—हे जगदीश !, विभो !, केशव !, कंसान्त !, माधव !, अनन्त ! जय जयेति पदाभ्यां प्रणाम आक्षिप्यते। करुणां दयां कुरु, इति भणतिः इत्युक्तिः, भवरोगदुःस्थानां संसारजनितकष्टैः पीडितानां, पुरुषाणां कृते पथ्या कल्याणप्रदा भवति।

सफला—पथ्या, विपुला, चपला, मुखचपला, जघनचपला, गीति, उपगीति, उद्गीति, आर्यागीति ये आर्या छन्द के नौ भेद हैं। यदि पूर्वार्ध और उत्तरार्ध के दोनों पादों में तीन गणों (१२ मात्राओं) के बाद यति होती है तो उसको **पथ्या** आर्यावृत्त कहते हैं।

हे नाथ ! मुरारे ! केशव ! कंसविनाशक ! अच्युत ! अनन्त ! आपको बार-बार प्रणाम है। आप कृपा कीजिये इस प्रकार का कथन सांसारिक कष्टों से पीड़ित मनुष्यों के लिये कल्याण कारक होता है।

३
ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ
संलङ्घ्य गणत्रयमादिमं शकलयोर्द्वयोर्भवति पादः।
३
ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ
यस्यास्तां पिङ्गलनागो विपुलामिति समाख्याति।
पुंसा कलिकालव्यालहतानां नास्त्युपहतिरल्पाऽपि।
वीर्यविपुला मुखे चेत् स्याद् गोविन्दाख्यमन्त्रोक्तिः॥

सुषमा—यस्या आर्याया उभयोरर्धयोः प्रथमं गणत्रयं परित्यज्य पादव्यवस्था स्यात् ताम् पिङ्गलमुनिः **विपुला**मिति कथयति।

पुंसामिति—कलिकालव्यालहतानां कलिकालः कलियुगस्य समयः एव व्यालः सर्पः, तेन हतानां, दष्टानां, पुंसां पुरुषाणाम्, अल्पाऽपि ईषदपि उपहतिः विनाशः, नास्ति, चेद् वीर्यविपुला शक्तिशाली, गोविन्दाख्यमन्त्रकला गोविन्देति नाम रूपो यो मन्त्रस्तस्य या उक्तिः कथनं, मुखे आनने स्यादिति।

सफला—जिस आर्या छन्द के दोनों खण्डों (चरणों) में प्रारम्भ के तीन गणों (१२ मात्राओं) को छोड़कर शेष दो पाद हों, उसको पिङ्गलमुनि **विपुला** कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कलिकाल रूपी सर्प से डसे हुए पुरुषों के मुख में यदि श्रीकृष्ण के नाम जपने की कला हो तो उनको किसी प्रकार का भी कष्ट नहीं होता।

ज ज
। ऽ । । ऽ ।

दलयोर्द्वितीयतुर्यौ गणौ जकारौ तु यत्र चपला सा ॥ ५ ॥

द्विरावृत्त्या श्लोकः पूरयितव्यः।

चपला न चेत् कदाचिन्नृणां भवेद् भक्तिभावना कृष्णे।
धर्मार्थकाममोक्षास्तदा करस्था न सन्देहः ॥

सुषमा—यस्या आर्यायाः दलयोः युग्मयोः अपि अर्धयोः, द्वितीयतुर्यौ द्वितीय-चतुर्थौ गणौ जकारौ जगणौ भवेतां, सा **चपला** कथिता।

चपलेति—चेत् यदि, कदाचित् नृणां नराणां, कृष्णे भगवति, भक्तिभावना सेवाभावः, चपला विच्युता न स्यात्, तर्हि धर्मार्थकाममोक्षाः चतुर्वर्गः पूर्वोक्ताश्चत्वारोऽपि पदार्थाः करस्थाः करस्थिता एव न सन्देहः, अत्र विस्मयः कथमपि न कर्तव्यः।

सफला—जिस आर्या छन्द के पूर्वार्ध तथा उत्तरार्ध के (प्रथम चार मात्रा के बाद) दूसरे और चौथे गण जगण हों, उसको **चपला** आर्या कहते हैं।

यदि कभी भी मनुष्यों की भावना श्रीकृष्ण की भक्ति के प्रति विचलित न हो तो धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष ये चारों पदार्थ उनको प्राप्त होते हैं इसमें जरा भी सन्देह नहीं।

ज ज
। ऽ । । ऽ ।

आद्यं दलं समस्तं भजेत लक्ष्म चपलागतं यस्या।
शेषे पूर्वजलक्ष्मा मुखचपला सोदिता मुनिना ॥ ६ ॥

नन्दसुत ! वञ्चकस्त्वं दृढं न ते प्रेम गच्छ तत्रैव।
यत्र भवति ते रागः क्वापि जगादेति मुखचपला ॥

सुषमा—यस्या आर्यायाः आद्यं दलं पूर्वार्धः, चपला गतं तत्सम्बन्धि लक्ष्म लक्षणं भजेत्, शेषः उपरार्धं, पूर्वलक्ष्मा सामान्यार्यासदृशः स्यात्, तदा सा मुनिना पिङ्गलेन **मुखचपला** उदिता उक्तेति शेषः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नन्दसुतेति–हे नन्दसुत ! श्रीकृष्ण !, त्वं वञ्चकः धूर्तः, असि, ते प्रेम गाढं, दृढं स्थायि नास्ति, यत्र क्वापि कस्मिन्नपि, ते तव, रागः स्नेहः, भवति जायते, तत्र एव गच्छ व्रज, इति कापि मुखचपला मुखरा, गोपी जगाद कथितवती।

सफला— जिसके पूर्वार्ध में चपला का लक्षण हो और उत्तरार्ध में सामान्य आर्या का लक्षण घटता हो, उसको पिङ्गलमुनि ने **मुखचपला** आर्या छन्द कहा है।

हे श्रीकृष्ण ! तुम अत्यन्त धूर्त हो, तुम्हारा प्रेम किसी के प्रति भी स्थायी नहीं है, अतः तुम्हारा जहाँ प्रेम (मन) हो वहाँ चले जाओ, ऐसा किसी मुँहफट गोपी ने उनसे कह दिया।

ज
६
।ऽ।

प्राक् प्रतिपादितमर्धे प्रथमे प्रथमेतरे च चपलायाः।

ज ज
२ ४

लक्ष्माश्रयेत सोक्ता विशुद्धधीभिर्जघनचपला ॥ ७ ॥
कृष्णः श्रृङ्गारपटुर्यौवनमदरागचपलललिताङ्गः।
आसीद् व्रजाङ्गनानां मनोहरो जघनचपलानाम ॥

सुषमा—यस्याः प्रथमेऽर्धे प्राक्प्रतिपादितं पूर्वोक्तं सामान्यार्याया लक्ष्म लक्षणं स्यात्, प्रथमेतरे द्वितीये च चपलाया लक्षणम् आश्रयेत भवेत्, विशुद्धधीभिः छन्दःशास्त्रकोविदैः सा **जघनचपला** इति उक्ता कथिता।

कृष्ण इति—यौवनस्य तारुण्यस्य मदरागाभ्यां मदेन रागेण च चपलं चञ्चलं, ललितं नेत्रानन्दप्रदम् अङ्ग शरीरं यस्य सः, श्रृङ्गारपटुः सम्भोगकुशलः, कृष्णः नन्दनन्दनः, जघनचपलानां नृत्यकर्मणि पट्वीनां व्रजाङ्गनानां, मनोहरः हृदयापहारकः, आसीत्।

सफला—जिस छन्द के पूर्वार्ध में सामान्य आर्या के लक्षण हों और दूसरे में चपला के लक्षण हों, उसको छन्दःशास्त्र विशेषज्ञ **जघनचपला** कहते हैं।

यौवन के मद और प्रेम से चञ्चल एवं सुन्दर शरीरयुक्त, सम्भोगनिपुण श्रीकृष्ण नाचने में कुशल गोपियों को अत्यन्त प्रिय लगते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज

१	२	३	४	५	६	७	ग
ऽऽ	।।ऽ	।।ऽ	ऽऽ	।।ऽ	।ऽ।	ऽऽ	ऽ

आर्याप्रथमार्धसमं यस्या अपरार्धमाह तां गीतिम् ।
केशववंशजगीतिर्लोकमनोमृगहारिणी जगति ।
गोपीमानग्रन्थेर्विमोचनी दिव्यगायनाश्चर्या ।।

सुषमा—यस्याः द्वितीयार्धम् आर्यायाः प्रथमार्धेन सदृशं स्यात् सा **गीतिः** नाम आर्या भेदः ।

केशवेति—केशवस्य श्रीकृष्णस्य, वंशजगीतिः मुरलिकागानं, लोकमनोमृगहारिणी जनमनहरिणवशीकरणसमर्था, गोपीनां व्रजसुन्दरीणां मानग्रन्थेः स्वाभिमानग्रन्थेः, विमोचनी समाधिका, दिव्यगायनानां गन्धर्वादीनामपि आश्चर्यकारिणी यया सा, जयति सर्वोत्कर्षेण वर्तते ।

सफला—जिस आर्या का दूसरा भाग प्रथम अर्धभाग के समान हो उसको **गीति** कहते हैं ।

सांसारिक प्राणियों के मन को वश में करने वाली, गायनविद्या के पारङ्गत गन्धर्वों को भी आश्चर्य चकित करने वाली और गोपियों के घमण्ड को चूर करने वाली श्रीकृष्ण की वंशी की धुन सर्वश्रेष्ठ है ।

६

।

आर्यापरार्धतुल्ये दलद्वये प्राहुरुपगीतिम् ।। ८ ।।
नवगोपसुन्दरीणां रासोल्लासे मुराराितम् ।
अस्मारयदुपगीतिः स्वर्गकुरङ्गीदृशां गीतेः ।।

सुषमा—दलद्वये आर्यायाः अपरार्धतुल्ये उत्तरार्धसदृशे सति **उपगीतिम्** आहुः कथयन्ति ।

नवगोपेति—रासोल्लासे रासक्रीडायाः प्रसन्नतायां नवाः याः गोपसुन्दर्यः, व्रजाङ्गनाः, तासाम् उपगीतिः गानम्, मुराराितं, श्रीकृष्णं, स्वर्गकुरङ्गीदृशां स्वर्गीयसारङ्गलोचनानां, गीतेः अस्मारयत्, गीतेरित्यत्र षष्ठी । स्मरणालङ्कारः ।

सफला—यदि पद्य के दोनों अर्धांश उत्तरार्ध के समान हों तो उसको **उपगीति**—आर्या छन्द कहते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रासलीला की प्रसन्नता में उस समय गाये गये गीतों की लय को सुनकर श्रीकृष्ण को अप्सराओं के द्वारा गाये गये सुमधुर गीतों का स्मरण हो आया।-

६

।

आर्याशकलद्वितये विपरीते पुनरिहोद्गीतिः ।
नारायणस्य सन्ततमुद्गीतिः संस्मृतिर्भक्त्या ।
अर्चायामासक्तिर्दुस्तरसंसारसागरे तरणिः ॥

सुषमा—आर्यायाः शकलद्वितीये खण्डद्वये विपरीते सति **उद्गीतिः** नाम वृत्तम् ।

नारायणस्येति—नारायणस्य भगवतः, सन्ततं निरन्तरम्, उद्गीतिः उच्चैः गानम् भक्त्या श्रद्धया, संस्मृतिः संस्मरणम्, अर्चायाम् अपचित्याम्, आसक्तिः तत्परता च, दुस्तरः अपारः संसार एव सागरः समुद्रः, तस्मिन्, तरणिः तरिः, भवति । नारायणनामस्मरणं संसारसागरात् पारकरणे साहाय्यमिति ।

सफला—आर्या छन्द के जब दोनों अर्ध विपरीत हो जाते हैं। (अर्थात् पूर्वार्ध उत्तरार्ध और उत्तरार्ध पूर्वार्ध के रूप में बदल जाता है) तो वह **उद्गीति** नामक आर्या भेद होता है।

नारायण का निरन्तर भजन, भक्ति-श्रद्धा के साथ स्मरण, और पूजा में हृदय की तत्परता अपार संसार सागर से पार होने मे सहायक होती है।

७ ग ग

ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ

आर्याप्राग्दलमन्तेऽधिकगुरु तादृक् परार्धमार्यागीतिः ।

द्विरावृत्त्या श्लोकः पूरणीयः ।

हर्षाश्रुस्तिमितदृशः प्रमोदरोमाञ्चकञ्चुकाञ्चितदेहाः ।
आर्यागीतिं भक्त्या गायन्ति श्रीपतेश्चरितसम्बद्धाम् ॥

सुषमा—आर्यायाः प्राग्दलम् पूर्वार्द्धं यदि अन्ते अधिकः गुरुः यस्य एतादृशं स्यात्, तादृगेव च परार्धम् उत्तरार्धं स्यात् तदा **आर्यागीतिः** भवति ।

हर्षेति—हर्षाश्रुभिः प्रेमाश्रुभिः, स्तिमिता आर्द्रा, दृक् दृष्टिः, येषां ते, प्रमोदरोमाञ्चकञ्जुकाञ्चितदेहाः प्रमोदः प्रसन्नता स एव रोमाञ्चः पुलकोद्गमः तैरेव कञ्चुकैः परिस्यूतवस्त्रविशेषैः, अञ्चितः आवृतः, देहः शरीरं येषां ते,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आर्याः श्रेष्ठगुणशालिनः, भक्त्या श्रद्धया, श्रीपतेः विष्णोः, चरितसम्बद्धां विविध-लीलाविषयणीं, गीतिं गानविशेषं गायन्ति प्रत्युदाहरणम्—

चारुसमीरणविपिने हरिणकलङ्ककिरणावलीसविलासा ।
आवद्धरागमोहा वेलामूले विभावरी परिहीणा ।। भट्टौ ।।

सफला—यदि आर्या छन्द के पूर्वार्ध के अन्त में गुरु वर्ण हो, इसी प्रकार उत्तरार्ध भी हो तो, उसको **आर्यागीति** कहते हैं ।

हर्षाश्रुओं तथा रोमाञ्चों से युक्त आर्य (भगवद्भक्त) श्रीकृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित गीतों का श्रद्धा-भक्ति पूर्ण मन से गान करते हैं ।

इत्यार्याः ।

अथ वैतालीयम्

६ र ल ग ७ र ल ग
S I I S S I S I S S I I S S S I S I S
षड् विषमेऽष्टौ समे कला-स्ताश्च समे स्युर्नो निरन्तराः ।
६ र ल ग ८ र ल ग
I I S I I S I S I S S S S S I S I S
न समात्र पराश्रिता कला, वैतालीयेऽन्ते रलौ गुरुः ।

घुसृणेन मदेन चर्चितं, तव यन्निन्दति राधिके ! कुचम् ।
मुदमातनुतेऽत्र पाकिमं तद् वैतालीयं फलं हरेः ।।

सुषमा—अस्मिन् **वैतालीये** छन्दसि विषमे (प्रथमे-तृतीये) पादे षट्कलाः मात्राः, समे (द्वितीये-चतुर्थे) पादे अष्टौ कलाः स्युः, तासाम् अन्ते रगणः, लघुः गुरुः च वर्णः भवति । अत्र छन्दसि सर्वासु अपि कलासु मात्रासु, समा कला पराश्रिता न कर्तव्येत्यर्थः । एवम्प्रकारेण विषमयोः पादयोः चतुर्दशमात्राः, समपादयोः षोडशमात्रा इति विवेकः ।

घुसृणेनेति—हे राधिके ! घुसृणेन केसरेण, मदेन कस्तूरिकया च चर्चितं विहितानुलेपनं, तव कुचं, 'जातावेकवचनम्' यत् तालीयं तालपादपसम्बन्धिफलं, निन्दति तिरस्करोति, अत्र अस्मिन् समये, पाकिमं सुपक्वं, तदेव हरेः श्रीकृष्णस्य मुदं सन्तोषम्, आतनुते विस्तारयति ।

सफला—वैतालीय छन्द में विषम (प्रथम-तृतीय) पाद में छः मात्रायें और सम (द्वितीय-चतुर्थ) पाद में आठ मात्रायें होती हैं, तत्पश्चात् रगण, लघु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा गुरु वर्ण होते हैं। सम पादों में प्रयुक्त आठ मात्रायें क्रमवद्ध गुरु लघु न हों, सभी सम मात्रायें पहली और वाद की विषममात्रा से युक्त न हों।

हे राधा ! कुंकुम-कस्तूरी के अंगराग से लिप्त तुम्हारे स्तनों के सदृश ताड़ के फलों को इस समय पका हुआ देखकर श्रीकृष्ण आनन्दमग्न हो गये हैं।

S S

तत्रैवान्तेऽधिके गुरौ स्या-दौपच्छन्दसिकं कवीन्द्रहृदयम्।

द्विरावृत्या श्लोकः पूरयितव्यः।

आतन्वानं सुरारिकान्तास्वौपच्छन्दसिकं हृदो विनोदम्।
कंसं यो निर्जघान देवो वन्दे तं जगतां स्थितिं दधानम्॥

सुषमा—तत्रैव वैतालीये वृत्ते, अन्ते एकस्मिन् गुरुवर्णेऽधिके सति कवीन्द्रहृद्यं श्रेष्ठकविकुलमनोरमम् **औपच्छन्दसिकं** नाम वृत्तं भवति।

आतन्वानमिति—यः देवः सुरः, सुरारीणां दैत्यानां, कान्तासु रमणीषु, औच्छन्दसिकं स्वाभिलाषसदृशं, हृदः मानसः, विनोदं क्रीडाविशेषम्, आतन्वानं कुर्वन्तं, कंसं निर्जघान कथाशेषताम् अनयत्, तं जगतां लोकानां, स्थितिं सत्तां, दधानं धारणं कुर्वन्तं, श्रीकृष्णं वन्दे प्रणमामि।

सफला—यदि उपर्युक्त वैतालीय छन्द में अन्तिम एक वर्ण गुरु अधिक होता है तो उसको **औपच्छन्दसिक** वृत्त कहते हैं।

दानवों की स्त्रियों के साथ मनमानी कामक्रीड़ा करने वाले कंस का जिस श्रीकृष्ण ने वध कर डाला, तीनों लोकों को धारण करने वाले उस श्रीकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

इति वैतालीयम्।

अथ पज्झटिका

१६ ९

I I I I I I I I S I I S S S

प्रतिपदयमकितषोडशमात्रा नवमगुरुत्वविभूषितगात्रा।

९ ९

S S

पज्झटिकाया एष विवेकः, क्वापि न मध्यगुरुर्गण एकः॥ १॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तरलवतंसाश्लिष्टस्कन्ध-श्चलतरपज्झटिका-कटिबन्धः ।
मौलिचपलशिखिचन्द्रकबृन्दः कालियशिरसि ननर्त मुकुन्दः ॥

सुषमा—प्रतिपदं प्रत्येकस्मिन् पादे, यमकिता युग्मविच्छिन्नाः षोडशमात्राः यत्र सा तथा नवममात्रायाः गुरुत्वेन विभूषितगात्रा समलङ्कृतशरीरा यस्याः तादृशी **पज्झटिका**। अत्र वृत्ते क्वापि मध्यगुरुः (जगणः) एकः अपि गणः न भवतीति विवेकः सिद्धान्तः ।

तरलवतंसेति—तरलेन चपलेन, वतंसेन कर्णाभरणेन, आश्लिष्टः समालिङ्गितः, स्कन्धः अंसः, यस्य सः, चलतराः चञ्चलतराः, याः पज्झटिकाः क्षुद्रघण्टिकाः ताभिः, कटिबन्धः मेखला, मौलौ शिरसि, चपलं चञ्चलं, शिखिनां मयूराणां चन्द्रकवृन्दं पिच्छं, यस्य तादृशः मुकुन्दः श्रीकृष्णः, कालियशिरसि कालियमूर्ध्नि, ननर्त ताण्डवं चकार ।

सुषमा—जिसके प्रत्येक चरण में दो-दो में विभाजित सोलह मात्रायें हों तथा नवम मात्रा गुरु हो और सम्पूर्ण छन्द में एक भी मध्य गुरु (जगण) न हो उसे **पज्झटिका** छन्द कहते हैं ।

झूलते हुए कनफूल, रुनुक-झुनक बजती हुई करधनी, और मोर पंखों का मुकुट धारण करने वाले श्रीकृष्ण ने कालियनाग के शिर पर नृत्य किया ।

९

।

नवमगुरुत्वं व्यभिचरति च ।
रणधरणीजितरजनिविहारी ।

सुषमा—नवममात्रायाः गुरुत्वस्य क्वचिद् व्यभिचारः व्यतिक्रमः दृश्यते, किन्तु लक्षणदृष्टया पूर्वोक्तमेव युक्तमिति सिद्धान्तः ।

रणेति—रणधरण्यां रणभूमौ, जितः पराजितः, रजनिविहारी रात्रिचरः, येन सः, इति उपर्यक्तपद्येन सह सम्बन्धः ।

सफला—पज्झटिका वृत्त में कहीं नवम मात्रा गुरु न होकर लघु देखी जाती है, इससे पूर्वोक्त लक्षण का खण्डन नहीं होता अपितु उसी लक्षण को सिद्धान्त रूप में माना गया है ।

रणभूमि में जीता हुआ चन्द्रमा······।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Communist Party (Mashal)

१३ ११

ऽऽ।ऽ।।ऽ।। ऽऽ।। ।।ऽ।

मात्रात्रयोदशकं यदि पूर्वं लघुकपरिविरामि ।
पठ पुनरेकादशज्ञं दोहडिका द्विगुणेन ॥ ३ ॥

अस्य प्राकृतभाषायां प्रचारः—

राई दोहडि पडण सुणि हासियो कण्ण गोआल ।
विन्दावणघणकुञ्जअर चलिओ कमण रसाल ॥
[राधिकादोहडिकापठनं श्रुत्वा हसितः कृष्णो गोपालः ।
वृन्दावनघनकुञ्जगृहं चलितः कमलरसालः ॥]

इति छन्दोमञ्जर्यां मात्रावृत्ताऽऽख्यः पञ्चमः स्तबकः ।

सुषमा—यदि पूर्वं प्रथमं चरणं, मात्रात्रयोदशकं त्रयोदशमात्रापरिमितं लघुकविरामि विरामे लघुवर्णयुक्तं स्यात्, द्वितीयचरणे एकादशमात्राः तथा विरामे लघुवर्णः स्यात् तदा **दोहडिका** नाम वृत्तम् । अस्य पूर्तिः द्विगुणेन द्विरावृत्त्या भवति । अत्र प्रमथपादः तृतीयवद् द्वितीयः चतुर्थवद् भवतीति निष्कर्षः ।

राईति—कमलरसालः कमलवत् कोमलः, सरसः, आकर्षकश्च, गोपालः नन्दगोपसूनुः श्रीकृष्णः, राधिकादोहडिकापठनं राधिकाकृतदोहडिकाभिधगीतिविशेषोच्चारणं, श्रुत्वा निशम्य, हसितः प्रसन्नतां गतः तथा वृन्दावनघनकुञ्जगृहं वृन्दावनस्थनिविडलतामण्डपं सङ्केतगृहम्प्रति चलितः प्रस्थितः ।

इति सुषमाव्याख्यासंवलितायां छन्दोमञ्जर्यां पञ्चमः स्तवकः ।

सफला—यदि प्रथमचरण में तेरह मात्रायें, द्वितीयचरण में ग्यारह मात्रायें हों और अन्तिमवर्ण लघु हो तथा प्रथम के अनुसार तृतीय, द्वितीय के अनुसार चतुर्थ पाद हो तो उसको **दोहडिका** छन्द कहते हैं ।

कमल पुष्प के समान कोमल, सरस, आकर्षक श्रीकृष्ण राधिका के दोहडिका (गोपीगीत) को सुनकर प्रसन्न होकर वृन्दावन के सुप्रसिद्ध किन्तु सुगुप्त लतामण्डप की ओर चल दिये ।

सफला हिन्दी व्याख्या सहित छन्दोमञ्जरी का पञ्चम स्तबक समाप्त ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal ... (Unity Centre)

षष्ठः स्तबकः

अथ गद्यप्रकरणम्

पद्यं गद्यमिति प्राहुर्वाङ्मयं द्विविधं बुधाः ।
प्रागुक्तलक्षणं पद्यं गद्यं सम्प्रति गद्यते ॥ १ ॥
अपादं पदसन्तानं गद्यं तत्तु त्रिधा मतम् ।
वृत्तकोत्कलिकाप्राय वृत्तगन्धिप्रभेदतः ॥ २ ॥
अकठोराक्षरं स्वल्पसमासं वृत्तकं विदुः ।
तत्तु वैदर्भरीतिस्थं गद्यं हृद्यतरं भवेत् ॥ ३ ॥
भवेदुत्कलिकाप्रायं समासाढ्यं दृढाक्षरम् ।
वृत्तैकदेशम्बन्धाद् वृत्तगन्धि पुनः स्मृतम् ॥ ४ ॥

सुषमा—बुधाः काव्यरहस्यज्ञातारः कवयः, वाङ्मयं वाक्यसमूहः, काव्यं पद्यं गद्यमिति च, द्विविधं द्विप्रकारकं, प्राहुः कथयन्ति । तत्र पद्यं 'पद्यं चतुष्पदीत्यादिलक्षणेन' प्राक् अस्मिन्नेव च्छन्दःशास्त्रे, उक्तं कथितं, सम्प्रति अधुना, गद्यं गद्यते व्याख्यायते ।

मात्राक्षरविन्यासनियमबद्धं पादमिति कथयन्ति तद् रहितम् अपादमिति केवलं पदसन्तानं (सुप्तिङन्तचयं) गद्यं भवति । तत् गद्यं त्रिधा त्रिप्रकारकं मतम् प्राक्तनैर्गद्यविद्भिः । तस्य भेदाः–१–वृत्तकम् चूर्णकं वा, २–उत्कलिकाप्रायं, ३–वृत्तगन्धि च ।

तत्र अकठोराक्षरं सुकुमारवर्णं (टवर्ग र ष रहितं), स्वल्पसमासं दीर्घसमासरहितं **वृत्तकं** (चूर्णकं) मतम् । एतस्यायमाशयः—यद् वैदर्भीरीति जुष्टं गद्यं वृत्तकस्य क्षेत्रम् एतादृग् गद्यं हृद्यतरं भवेत् । तदुक्तं साहित्यदर्पणे—

माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णैं रचना ललितात्मिका ।
अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भीरीतिरिष्यते ॥

समासाढ्यं दीर्घदीर्घतरसमासाऽऽश्लिष्टं पाञ्चालीरीतिजुष्टं, दृढाक्षरं कठोरवर्णयुक्तं गद्यम्, **उत्कलिकाप्रायम्** आमनन्ति ।

गद्यप्रचुरेऽपि काव्ये वृत्तस्य पद्यरूपस्य, एकदेशसम्बन्धात् तदेव उत्कलिकाप्रायं **वृत्तगन्धि** स्मृतं कथितम् । घृतगन्धि भोजनवत् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सफला—काव्यतत्वविशेषज्ञ समस्त वाङ्मय को पद्य और गद्यभेद से दो प्रकार का मानते हैं। पद्य का लक्षण (चार चरणों से युक्त पद समूह को पद्य कहते हैं) पहले इसी ग्रन्थ में कह दिया गया है। यहाँ गद्य का निरूपण किया जा रहा है।

मात्रा अथवा अक्षरों से नियन्त्रित पदावली को **पाद** कहा जाता है। उस पाद के नियमों से रहित **पद** समुदाय को गद्य कहते हैं। उस गद्य को १—वृत्तक (चूर्णक), २—उत्कलिकाप्राय तथा ३—वृत्तगन्धि इन नामों से तीन भागों में विभक्त किया है।

सुकुमार वर्णों (टवर्ग, र, ष से रहित) तथा लघु समासयुक्त गद्य को **वृत्तक** (चूर्णक) कहते हैं। वैदर्भी रीति के अनुसार की गयी इसकी रचना मनोहर होती है।

लम्बे-लम्बे समासों से युक्त पदावली को **उत्कलिकाप्राय** कहते हैं। इसमें वृत्तक में निषिद्ध कठोर वर्णों का प्रयोग होता है।

किसी छन्द के नियम में आबद्ध पदावली का जैसा प्रयोग जब आकस्मिक-रूप से गद्य में दृष्टिगोचर होता है तो उसको **वृत्तगन्धि** कहते हैं।

वृत्तकं (चूर्णकं) यथा—

स हि त्रयाणामेव जगतां गतिः परमपुरुषः पुरुषोत्तमो दृप्तदानव-भरेण भङ्गुराङ्गीमवनिमवलोक्य करुणार्द्रहृदयस्तस्या भारमवतारयितुं रामकृष्णस्वरूपेणांशतो यदुवंशेऽवतार। यस्तु प्रसङ्गेनापि स्मृतोऽभ्य-र्चितो वा गृहीतनामा पुंसा संसारपारमवलोकयति ॥ ५ ॥

सुषमा—स हि परमपुरुषः पुरुषोत्तमः श्रीकृष्णः, त्रयाणामेव समस्तानां जगतां पतिः लोकानां स्वामी, दृप्तदानवभरेण गर्वितदैत्यानां भारेण, भङ्गुराङ्गीं विनाशोन्मुखीम्, अवनिं पृथ्वीम्, अवलोक्य निरीक्ष्य, करुणार्द्रहृदयः दयाप्लावित-चित्तः, तस्याः भूमेः, भारमवतारयितुं भरापनोदाय, रामकृष्णरूपेण बलराम-श्रीकृष्णतनुभ्याम्, अंशतः कलाभागेन, यदुवंशे यदुकुले, अवततार अवतारं गृहीतवान्। यः पुमान् प्रसङ्गेनापि प्रकारान्तरेणापि स्मृतः स्मृतिपथं नीतोऽपि अभ्यर्चितः पूजितः वा, गृहीतनामा पुंसा मानवेन, संसारपारमवलोकयति भवाब्धेस्तरति।

सफला—जो परमपुरुष पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ! समस्त लोकों का आश्रय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थान है, घमण्डी दानवों के भार से नष्ट भ्रष्ट होने वाली पृथ्वी को देखकर दयालु होकर उसके भार को उतारने के लिये राम-कृष्ण रूप से यदुवंश में अवतरित हुए और जो किसी अन्य प्रसङ्ग से याद कर लेने पर भी पुरुषों को भवसागर पार कर देते हैं। Nepal Communist Party (United)

उत्कलिकाप्रायं यथा—

प्रणिपातप्रवणसप्रधानाशेषसुरासुरादिवृन्दसौन्दर्यप्रकटकिरीटकोटिनिविष्टस्पष्टमणिमयूखच्छटाच्छुरितचरणनखचक्र! विक्रमोद्दामवामपादाङ्गुष्ठनखशिखरखण्डितब्रह्माण्डविवरनिस्सरच्छरदमृतकरप्रकरभासुरसुरवाहिनी-प्रवाहपवित्रीकृतविष्ठपत्रितय! कैटभारे! क्रूरतरसंसारसागरनानाप्रकारावर्तविवर्त्तमानविग्रहं मामनुगृहाण ॥ ६ ॥

सुषमा—प्रणिपातप्रवणाः प्रणामतत्पराः, ये प्रधानेन देवेन्द्रादिसंयुताः, अशेषाः समस्ताः, सुरासुरादयः देवदैत्यप्रभृतयः, तेषां वृन्दस्य समूहस्य, सौन्दर्येण प्रकटानां देदीप्यमानानां, मुकुटानां शेखराणां, कोटिषु अग्रभागेषु, निविष्टाः जटिताः, स्पष्टाः प्रकटाः, ये मणयः रत्नानि, तेषां मयूखच्छटाभिः किरणभाभिः, छुरितं संयुक्तं, चरणनखचक्रं प्रपदस्थनखसमूहः यस्य तत्सम्बुद्धौ, विक्रमोद्दामस्य पराक्रमेण समुद्धतस्य, वामपादस्य सव्येतरचरणस्य अङ्गुष्ठनखरशिखरेण अङ्गुष्ठनखपुरोभागेण खण्डितं त्रुटितं यद् ब्रह्माण्डविवरं, ततः निस्सरन्ती निर्यान्ती या शरदमृतकरस्य शरच्चन्द्रमसः, करप्रकरवत् किरणमालानुरूपा, भासुरा भास्वन्ती, सुरवाहिनी देवगङ्गा, तत्प्रवाहेण पवित्रीकृतं पूतं, विष्टपत्रितयं भुवनत्रयं, येन तत्सम्बुद्धौ, कैटभारे! भगवन्! क्रूरतरस्य कष्टप्रदस्य, संसारसागरस्य संसाराब्धेः आवर्तेषु अम्भसांभ्रमेषु, विवर्तमानः स्थितः, विग्रहः यस्य तम् माम् अनुगृहाण रक्ष।

सफला—नमस्कार करने में तत्पर जो देव-दानव उनके मुकुट पर स्थान प्राप्त करने वाली किरणों से शोभित पैर के नख वाले, अत्यन्तशक्तिशाली, बाँये पैर के अंगूठे से ब्रह्माण्ड को तोड़ देने वाले, अपने नख के अग्रभाग से निकलने वाली गंगा (विष्णुपदी) से तीनों लोकों को पवित्र करने वाले हे भगवन्! संसार सागर में डूबते हुए मेरे ऊपर कृपा कीजिये।

वृत्तगन्धि यथा—

जय जय जय जनार्दन! सुकृतिमनस्तडागविकस्वरचरणपद्म! पद्मपत्रनयन! पद्मिनीविनोदराजहंसाभभास्वरयशःपटलपरिपूरितभुवनकुहर!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हरकमलासनादिवृन्दारकवृन्दवन्दनीयपदारविन्दद्वन्द्व ! द्वन्द्वनिर्मुक्त योगीन्द्रहृदयमन्दिराविष्कृतनिरञ्जनज्योतिःस्वरूप ! नीरदरूप ! विरूप ! अनाथनाथ ! जगन्नाथ ! मामनवधिभवदुःखव्याकुलं रक्ष रक्ष रक्ष ।। ७ ।।

सुषमा—जनार्दन ! जन-नामकदैत्यसूदन !, सुकृतिनां पुण्यवतां मनांसि चेतांसि, एव तडागाः पद्माकराः, तेषु विकस्वरं विकासि, चरणपद्म यस्य तत्सम्बुद्धौ, पद्मपत्रे इव नयने चक्षुषी यस्य तत्सम्बुद्धौ, पद्मिनी कमलिनी, तस्यां विनोदकारी विहरणशीलः, यः राजहंसाभ इव तत्सम्बुद्धौ, भास्वरं प्रकाशयुक्तं यद् यशःपटलं कीर्तिपुञ्जं, ते परिपूरितम् आच्छादितं, भुवनकुहरं ब्रह्माण्डं, येन तत्सम्बुद्धौ, हरः शम्भुः, कमलासनः पितामहो ब्रह्मा, एतौ आदौ येषां तथाभूताः ये वृन्दारकाः देवाः, तेषां वृन्देन सङ्घेन, वन्दनीयं प्रणामार्हं, पदारविन्दद्वन्द्वं चरणकमलमिथुनं यस्य तत्सम्बुद्धौ, द्वन्द्वैः सुखदुःखादिसांसारिकव्यवहारैः निर्मुक्ताः वञ्चिताः, ये योगीन्द्रा, तपस्विनः, तेषां हृदयमन्दिरे हृदयागारे, आविष्कृतं प्रकटं, निरञ्जनम् अव्यक्तं, ज्योतिःस्वरूपं प्रकाशमयं, रूपं यस्य तत्सम्बुद्धौ, नीरदरूप मेघाकृतिम्, विरूप विशिष्टाकृतिशोभित, अनाथानां निरावलम्बानां, नाथः अवलम्बनः, तत्सम्बुद्धौ, जगतां लोकानां, नाथः प्रभुः, तत्सम्बुद्धौ, अनवधि सीमारहितं यद् भवदुःखं संसारबन्धनरूपकष्टं, तेन व्याकुलं पीडितं, मां रक्षेति त्रिरुक्तिः बारं-बारं पालयेति आर्तवचनम् ।

अत्र वृत्तैकदेशसम्बन्धः स्पष्टीक्रियते—'द्वन्द्वनिर्मुक्तयोगीन्द्र' इति अनुष्टुभः । 'सुकृतिमनस्तडाग' इति 'रुचिरा' वृत्तस्य । 'पद्मपत्रनयन' इति 'स्वागता' च्छन्दसः । 'पद्मिनीविनोदराजहंस' इति तूणकस्य । 'वृन्दारकवृन्दवन्द' इत्यत्र शार्दूलविक्रीडितस्यांशस्य च्छटा दन्दृश्यते ।

सफला—हे जनार्दन भगवन् ! आपकी जय जयकार हो । सुकृतीजनों के हृदय सरोवर में पुष्पित चरणकमल वाले ! कमलनयन ! लक्ष्मीकमलिनी को आनन्द देने वाले राजहंस ! अपने चमचमाते यश से त्रैलोक्य को प्रकाशित करने वाले ! शिव तथा ब्रह्मा आदि देवताओं के द्वारा प्रणम्य चरण कमल वाले, सुख-दुःख के झगड़े से रहित योगीश्वरों के हृदय मन्दिर में प्रकाशमान अव्यक्त, ज्योतिःस्वरूप, मेघश्याम, विशिष्टरूप, अनाथों के नाथ ! मेरी असंख्य सांसारिक कष्टों से बार-बार रक्षा कीजिये ।

व्यवहारोचितं प्रायो मया छन्दोऽत्र कीर्तितम् ।
प्रस्तारादि पुनर्नोक्तं केवलं कौतुकं हि तत् ।। ८ ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुषमा—अत्र छन्दोमञ्जरी ग्रन्थे, मया गङ्गादासेन, व्यवहारोचितं सामान्यच्छन्दोज्ञानबोधकं, छन्दः कीर्तितं छन्दांसि समुपवर्णितानि, अत्र जातावेकवचनम्। प्रस्तारादि नोक्तं प्रस्तारादि (छन्दसां विस्तारः) न वर्णितं, यतः प्रस्तारादि केवलं कौतुकं कुतुकमेव।

सफला—मैंने व्यवहार में आने वाले छन्दों का ही इस ग्रन्थ में वर्णन किया है। प्रस्तारों (छन्दों के विस्तारों) का वर्णन इसमें इसलिये नहीं किया गया है क्योंकि वे केवल कौतूहल मात्र होते हैं।

सर्गैः षोडशभिः समुज्ज्वलपदैर्नव्यार्थभव्याशयै-
येनाकारि तदच्युतस्य चरितं काव्यं कविप्रीतिदम्।
कंसारेः शतकं दिनेशशतकद्वन्द्वं चः तस्यास्त्वसौ
गङ्गादासकवेः श्रुतौ कुतुकिनां सच्छन्दसां मञ्जरी ॥६॥

इति छन्दोमञ्जर्यां गद्यप्रभेदो नाम षष्ठः स्तबकः।

सुषमा—येन गङ्गादासकविना, समुज्ज्वलानि प्रशस्तानि, पदानि सुप्तिङन्तचयाः, येषु तैः, नव्यार्थाः प्रत्यग्रार्थयुक्ता, भव्याशयाः मनोहराभिप्राययुक्ताः येषु तादृशैः सर्गैः अध्यायैः कविप्रीतिदं धीजुषां सन्तोषकरं, काव्यं महाकाव्यं 'अच्युतचरितं' नाम, अकारि विरचितम्, तथा कंसारेः शतकं श्रीकृष्णशतकं दिनेशशतकं सूर्यशतकञ्च, इति एतद्वयम् अकारि व्यरचि, तस्य कवेः, असौ सच्छन्दसां मञ्जरी 'छन्दोमञ्जरी' इत्याशयः, कुतुकिनां छन्दःश्रवणौत्सुक्यवतां, श्रुतौ कर्णे अस्तु कर्णाभरणतां यास्यतु, इति।

इति सुषमा व्याख्यासंवलितायां छन्दोमञ्जर्यां षष्ठः स्तवकः।

सफला—जिस महाकवि गङ्गादास ने उदात्त भावना युक्त नूतन अर्थ तथा सुमनोहर भावों से परिपूर्ण सोलह सर्ग वाला 'अच्युतचरित' नामक महाकाव्य रचा, श्रीकृष्णशतक तथा सूर्यशतक का प्रणयन किया उसी महाकवि की रचना यह 'छन्दोमञ्जरी' भी है। छन्दः श्रवण के उत्सुक विद्वज्जन इसको अपने कानों की मञ्जरी (आभूषण) बनायें।

सफला हिन्दी व्याख्या सहित छन्दोमञ्जरी का छठा स्तबक समाप्त।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Majdur Kisan Party (Rohit)

सूत्र-कारिका-सूची

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
अकठोराक्षरं स्व०	१४८
अङ्कोन्माना वर्णा	३०
अनन्तरोदीरित०	३५
अनवसिता न्यो भ्यौ	४४
अपादं पदसन्तानं	१४८
अयुजि ननभभाः	१३१
अयुजि ननरला	१२८
अयुजि नयुगरेफतो	१२९
अयुजि प्रथमेन	१२७
अयुजोर्यदि सौ जगौ	१२९
अर्थाश्वाश्वैर्मभन०	९८
असमे सजौ सगुरु०	१३१
आख्यानकी तौ	१३१
आदिस्तृतीयवद्	४
आद्यं दलं समस्तं	१४०
आरभ्यैकाक्षरात्पा०	१४
आर्यापरार्धतुल्ये	१४२
आर्याप्रथमार्धसमं	१४२
आर्याप्राग्दलमन्ते०	१४३
आर्याशकलद्वितये	१४३
इत्युक्ताश्छन्दसां संज्ञा	१४
इदं कन्दुकं यत्र	६३
इनाश्वैः स्याद् यभ	१०३
इयमच्युतलीलाढ्या	२
इह ननरचतुष्कसृष्टं	१०४
इह नवमालिका	५६
इह वद तामरसं	५६
उक्थाऽत्युक्था तथा	१४
उपचित्रमिदं सस०	४४
उपस्थितमिदं	४४,७०
उपेन्द्रवज्रा प्रथमे	३४
एकन्यूनौ विद्युन्माला	८०
एते क्रमात्तभसज०	६३
ओजे तपरौ	१३०
कीर्तितैषा चतूरेफिका	४९
कुपुरुषजनिता	४४
कुमारललिता ज्स्गाः	२३
क्रौञ्चपदा स्याद्	११६
क्वचिच्छन्दस्यास्ते	१२
गजाब्धितुरगैर्जसौ	१०३
गरुडरुतं नजौ	८३
गुरुनिधनमनुलघुरिह	६९
गुरुरेको गकारस्तु	६
गौ स्त्री	१७
ग्मौ चेत् कन्या	१८
म्लौ रजौ समानिका	२६
ग् श्रीः	१६
चन्द्रवर्त्म निगदन्ति	४५
चित्रपदा यदि	२४
चित्रसंज्ञमीरितं	७६
चित्रानामच्छन्द०	७६
जतौ जगौ गो	१३०
जतौ सजौ गो	६३
जभौ सजौ गिति	५७
जसौ जसयला वसु०	८५
जसौ जसयुतौ	४७
जौ रगौ मयूर	३३
ज्ञेयं वसन्ततिलकं	६५
ज्ञेया मत्ता मभसभ०	३१
ज्ञेया सप्ताश्वषड्०	१०३
ज्ञेया हंसी मभनग	३३
ज्ञेयाः सर्वान्तमध्यादि०	६
तच्चेन्द्रवंशा प्रथमे	४६
तत्रैवान्तेऽधिके गुरौ	१४५
तूणकं समानिका०	७४
तौ जौ गुरुणेयमुप०	३३
त्यौ चेत् तनुमध्या	२०
त्यौ त्यौ मणिमाला	५५
त्रयमुद्गतासदृशमेव	१३३
त्रिष्टुप् च जगती	१४
त्र्याशाभिर्मनजरगाः	५७
त्वरितगतिश्च नज०	३२
दलयोर्द्वितीयतुर्यौ	१४०
दिङ्मुनि वंशपत्र०	८६
दीपकमाला भ्मौ मता	३३
देवं प्रणम्य गोपालं	१
दोधकमिच्छति	४२
द्रुतपदं भवति	५६
द्रुतविलम्बितमाह	५१
द्विगुणनगणसहितः	३०
द्विगुणितवसुलघुभि०	८२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
द्विधा सोमराजी	२१
द्विःसप्तच्छिदि लोला	६८
धीरैरभाणि ललिता	५६
धृतिश्चातिधृतिश्चैव	१४
नगि सती	१९
नजजलगैर्गदिता	३८
नजभजजा जरौ	१०९
नजभजभा जभौ	११२
नजभजरैर्यदा भवति	८१
नजभजरैस्तु रेफ०	९४
नजरभभेण गेन	८४
ननगि मधुमती	२२
ननततगुरुभिः	६०
ननभनलगिति	६६
ननभरसहिता	५६
ननमयययुतेयं	७२
ननररघटिता तु	५२
ननरलगुरुभिश्च	४४
ननरसलघुगैः	६६
ननसगगुरुरचिता	४४
नभलगा गजगतिः	२७
नयसहितौ न्यौ	५५
नयुगं सकारयुगलञ्च	१३४
नयुगलसयुगलगै०	५९
नरजगैर्भवेन्मनोरमा	३२
ननरलैर्गुराविन्दिरा	४४
नवमगुरुत्वं	१४६
नसमरसला गः	८८
नसरयुगगैश्चन्द्र०	६३

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
नाराचिकातरौ लगौ	२८
पञ्चभकारयु०	८४, ९७
पञ्चमं लघु सर्वत्र	१३६
पञ्चमुनी म्मौ स्यात्	५६
पथ्या विपुला	१३८
पद्यं गद्यमिति	१४८
पद्यं चतुष्पदी तच्च	३
प्रचितकसमभिधो	१२०
प्रतिचरणविवृद्धरे०	११९
प्रतिपदयमकित०	१४५
प्रथमगणत्रयविर०	१३८
प्रथमे सजौ	१३२, १३३
प्रमाणिका जरौ लगौ	२६
प्रमाणिकापदद्वयं	७९
प्रमिताक्षरा सजससैः	५१
प्रयोगे प्रायिक प्राहुः	१३६
प्राक्प्रतिपादित	१४१
वाणाश्वैश्छिन्ना	५०
भत्रयमोजगतं	१३१
भद्रिका भवति	३०
भवति नजावथ	५४
भवति मृगेन्द्रमुखं	६३
भवत्यर्धसमं वक्त्रं	१३४
भवेत्कान्ता युग०	९२
भवेत्सैवच्छाया	९९
भवेदुत्कलिकाप्रायं	१४८
भात्तलगा माणवकम्	२५
भात् समतनगैरष्ट०	७८
भात् सौ जौ भर०	९७

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
भाद् रनना नसौ	९७
भाराक्रान्ता ममन०	९१
भुजगशिशुभृता	२८
भुजंगप्रयातं चतुर्भि०	४८
भुवि भवेन्नभजरैः	५६
भूतमुनीनैर्यतिरिह	११५
भो रयना नगौ च	८४
भ्गौ गिति पङ्क्ति	१९
भ्रत्रिनगैः स्वरात्ख०	७७
भ्रौ नरना रनावथ	११२
मत्ताक्रीडं वस्वि०	११३
मन्दाक्रान्ता नपर	९६
मन्दाक्रान्ताम्बुधि०	८७
मातो नो मो गौ	६७
मात्तौ गौ चेच्छालिनी	३८
मात्रात्रयोदशकं	१४७
मात्सो जौ भर०	९७
मो गो नौ गो	४०
मो गौ नौ तौ गौ	१०२
मो गौ नौ मश्चेच्छर	६४
मोटकनामसमस्त०	५६
मो नारी	१७
मो नाः षट् सग०	११८
मो भः स्मौ चेज्जल०	५५
मो मो गो गो विद्यु०	२५
मौ मौ नाश्चत्वारो	११०
मः सो जः सतसा	९६
मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च	५
म्नौ गौ हंसरुतमेतत्	२८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
म्नौ य्गौ चेति	३३
म्भौ नो म्नो गो	८०
म्भौ न्जौ भ्रौ चे०	६८
म्यरस्तजभ्नगैर्लान्तै०	४
म्रभ्नैर्याणां त्रयेण	१०८
म्रौ भ्नौ यो तो	१०१
म्रौ मो यौ चेद्ध्रुवेतां	७५
म्सौ गः स्यान्मद०	२४
म्सौ ज्यौ शुद्ध०	३३
यकारैः कवीच्छा०	१२४
यतिर्जिह्वेष्टविश्राम०	१०
यत्र दृश्यते गुरोः	१२१
यत्र रेफान् कविः	१२४
यत्र रेफः परं	१२३
यदि भवतो नजौ	८६
यदि विषमे भवतो	१३०
यदिह नयुगलं ततो	११८
यदिह नयुगलं ततः	६८
यमौ नस्रौ गश्च	८२
यमौ रौ विख्याता	६३
यस्मिन् सर्वे गा	८४
युजोश्चतुर्थतोगेन	१३५
रसाश्वाश्वैः शोभा	१०६
रविलघुतरलनयन०	५६
रसयुगहययुङ्	६२
रसर्त्वश्वैय्मौं न्सौ	६८
रसै रुद्रैश्छिन्ना	८४
रसैः षड्भिर्लोकैः	१०३
रात् परैर्नरलगैः	४१

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
रान्नसाविह हलमुखी	३०
रुक्मवती सा यत्र	३०
रेण जेन सेन	४४
रो मृगी	१८
रो जरौ जसंयुतौ	१३०
जौं रगौ मयूरसारिणी	३३
सौं लगौ विषमे	१४३
लक्ष्मैतत् सप्त गणा	१३७
लघुर्गुरुर्निजेच्छया	१२५
लघुर्गुरुर्वदन्ति	५६
ललितमभिहितं	५६
लालित्यं भुजगेन्द्रेण	११२
वक्त्वं युग्म्यां मगौ	१३४
वद तोटकमब्धि०	४८
वदन्ति वंशस्थबिलं	४६
वर्णाश्वैर्मननततमकैः	६७
वसुमुनियतिरिति	७१
वसुयुगविरतिर्नौ	५६
वस्वीशाश्वैश्छेदो०	११७
वातोर्मीयं गदिता	३६
विद्युल्लेखा मो मः	२२
विध्वङ्कमाला भवेत्तौ	४४
विपिनतिलकं नसन०	७३
विषमे प्रथमाक्षर	१२७
विषमे यदि सौ	१२६
विषमे ससजा यदा	१३०
वृत्त विम्वाख्यं	१०३
वृत्तकोत्कलिका	१४८
वृत्तमीदृशन्तु	१०५

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
वेदर्त्वश्वैर्मभनम०	[illegible]
वेदैरन्ध्रैर्म्तौ यसगा	५८
वैतालीयं पुष्पिताग्रा	१२६
व्यवहारोचितं प्रायो	१५१
शशिवदना न्यौ	२१
शार्दूलं वद मास	६७
शिखण्डितमितं ज्सौ	४४
श्येन्युदीरिता रजौ	४४
श्वेतमाण्डव्यमुख्या०	१२
षड् विषमेऽष्टौ समे	१४४
षष्ठे द्वितीयलात्	१३७
संलघ्य गणत्रय०	१३६
सगणः सकलः	१२२
सङ्कथिता भरौ नर०	८४
सजसा भरौ सलगा	१०५
सजता नसौ ररौ	११३
सजरैर्भुजङ्गसङ्गता	२६
सजसा जगौ च भवति	६२
सजसा जगौ च यदि	६०
सजसा सगौ च	६१
सन्ति यद्यपि भूयांस०	२
सप्तभकारयुतैकगुरु०	१११
सममर्धसमं वृत्तं	४
समस्तजमीरय	५६
सर्गाः षोडशभिः	१५२
सर्वे मा यस्मिन्	५६
सलगैः प्रिया	२०
ससजैरतिशायिनो	६२
सानुस्वारश्च दीर्घश्च	७
सान्द्रपदं स्याद् भत०	४४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सारङ्गसंज्ञं समस्तै०	५६
सुधा तर्कस्तर्के०	९७
सूर्याश्वैर्यदि मः	१००
सौ लगौ विषमे	१३१
स्यादनुकूला भतन	४१
स्यादयुग्मके रजौ	१३०
स्यादिन्द्रवज्रा यदि	३३
स्याद् भूतर्त्वश्वैः	९२
स्यान्मणिमध्यं चेद्भ०	२९
स्यान्मोटनकं तज०	४३
स्रगियमपि च रस०	७०
स्वरभिदि यदि नौ	६९
स्वागता रनभ	४२
स्वेच्छया रजौ	१२४
हयऋतुसागरैर्यति०	९०

उदाहरण-प्रत्युदाहरण-सूची

पद्यानि	पृष्ठाङ्काः
अंहो हन्ति ज्ञानवृद्धि	३८
अक्षरैर्गणना यत्र	३
अतिसुरभिरभाजि	५२
अथ वासवस्य	१३३
अनन्तरोदीरित०	३५
अनन्याश्रिन्त०	५०
अपि भूतफुल्लशत	१३३
अभीष्टं जुष्टो यो	९९
अभून्नृपो विबुधसखः	५८
अमरमयूरमानस०	८३
अमृतस्य शीकर०	५१
अमृतोर्मिशीतलकरेण	६०
अयि विजहीहि	५४
अयि सहचरि !	७०
अर्चामिन्येषां त्वं	५०
अवतु वो गिरिसुता	२७
अहिलतादल०	२३
अहृत धनेश्वरस्य	९४
आचार्यपिङ्गल	१
आतन्वानं सुरारि०	१४५
आदिमध्यावसानेषु	५
इत्थं रथाश्वमनिषा०	३६
इन्द्रनीलोपलेनेव	४९
इह कलयाऽच्युत	५४
इह दुरधिगमैः	६१
उक्ता वसन्ततिलका	६५
उदञ्चत्कावेरील	९९
उदेत्यसौ सुधाकरः	१२५
उपेन्द्रवज्राचरणः	३६
उपेन्द्रवज्रादिमणि०	३४
एकमात्रो भवेद्	३
एवं यथा यथोद्वेगः	१०
कत्यद्विप्रतिरोधिताः	१३
कदम्बामोदाढ्या	९८
करकिसलयशोभया	१२९
करतालचञ्चल०	१०५
करादस्य भ्रष्टे ननु	८४
काचिन्मुरारेर्वदना०	३५
कामक्रीडासतृष्णो	१०१
कायमनोवाक्यैः	३०
कालियभोगाभोगग०	२९
कृत्वा कंसमृगे	९७
कृष्णसनाथा तर्णक०	१९
कृष्णः शिशुः सुतो	१३७
कृष्णः शृङ्गारपटु०	१४१
केशववंशीगीति	१४२
क्रीडत्कालिन्दी०	९३
क्रौञ्चपदालीचित्रि०	११६
क्षितिविजितिस्थिति	३२
खरतरशौर्यपावक०	११२
खिस्तेवंशशिरो०	१
गुरुभुजवीर्यभरं	६३
गोपस्त्रीभिः कृष्णो	१७
गोपानां नारीभिः	,,
गोपालीलालोला	७६
गोपीनामधुरसुधा०	५७
गोविन्दं प्रणमो०	१००
गोष्ठे गिरिं सव्यक०	३३
ग्राम्याब्जानूपं	९३
घुसृणेन मदेन	१६०
,, ,,	१४४
चञ्चलचूडं चपलै०	२५
चन्द्रवर्त्मपिहितं	४५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पद्यानि	पृष्ठाङ्काः
चपला न चेत् क०	१४०
चारुसमीरणरमणे	१४४
चिकुरकलापशैव०	१०६
चित्तवृत्तलीलया	१०६
जय जय जगदीश	११६
,, ,, ,,	१३८
जय जय जय !	१५०
जयति दितिजरिपु०	५६
झटिति प्रविश	८
तरणिजातटे	३२
तरणिजापुलिने न०	५२
तरणिदुहितृतट०	८२
तरणि सुतातटक०	३८
तरणिसुतातरङ्ग०	६४
तरलवतंसाश्लिष्ट०	१४६
तरला तरङ्गरिङ्ग०	२६
तरुणं सर्षपशाकं	७
तुरगशताकुलस्य	१०६
तोयेषु तस्याः प्रति०	३६
त्वरितगतिर्व्रज०	३२
दिनकरतनया त०	६५
दुरन्तदनुजेश्वर०	८५
दुर्जयदनुजश्रेणी०	७८
देव ! सदोध ! कद०	४२
दैत्येन्द्रवंशाग्नि०	४६
ध्याता मूर्तिः क्षण०	३६
नन्दसुत वञ्चक०	१४०
नरकरिपुरवतु	७१
नवगोपसुन्दरीणां	१४२

पद्यानि	पृष्ठाङ्काः
नश्यन्ति ददर्श	२०
नारायणस्य	१४३
नूतनवंशपत्रपतितं	८६
पादादाविह	८
पायाद्वो गोविन्दः	७२
पीत्वा मत्ता मधु	३१
पुंसां कलिकाल०	१३६
पुनातु भक्तिरच्युता	२७
पुनातु वो हरिरति०	५८
प्रणिपात प्रवण	१५०
प्रतिकूलतामुपगते	५१
प्रत्यूहव्यूह	१
प्रत्याहृत्येन्द्रियाणि	१०४
प्रलयघनघटा	११८
प्रह्वामरमौलौ रत्नो	५५
प्राप्य नाभिह्रदमज्जन	८
प्रेमालापैः प्रिय०	८७
फुल्लं वसन्ततिलकं	६५
बलिदमनविधौ बभौ	५२
बल्लववेशा मुररिपु०	४१
बाहू द्वौ च	११०
भाराक्रान्ता मम	६१
भास्वत्कन्या सैका	१८
भुजोत्क्षेपः शून्ये	८२
भोभूमिस्त्रिगुरुः	५
भ्राम्यद्भृङ्गीनिर्भर०	६७
मनौ सखायौ	६
मया ततमिदं सर्वं	५०
मलयजतिलक०	७०

पद्यानि	पृष्ठाङ्काः
मा कान्ते ! पक्ष०	७३
माधवमासि विक०	१११
माधव मुग्धैर्मधु०	११५
माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णै०	१४८
मुखारविन्दैर्व्रज०	३५
मुग्धे ! मानं परिहर	४०
मुग्धे ! यौवनल०	६८
मुग्धोन्मीलन्मत्ता०	११४
मुररिपो ! तव पदं	१६
मुरवैरिवपुस्तनुतां	१२३
मुरहर ! यदुकुलां	१२०
मुरारितनुवल्ली	२३
मूर्तिर्मुरशत्रो०	२०
मूर्ध्नि चारुचम्प०	१२१
मृगमदकृतचर्चा	७२
यतिः सर्वत्र पादान्ते	१०
यदनवधिभुज०	६६
यदवोचत वीक्ष्य	१२६
यदीयहलतोविलोक्य	४७
यमुनातटमच्युत०	४६
यमुनाविहारकुतुके	६१
यस्य कीर्तिरिन्दुकु०	४४
यस्य कृष्णपादपद्म०	२६
यस्य चेतसि सदा	४२
यस्या नित्यं श्रुति०	६०
या भक्तानां कलि०	५६
यामुनसैकतदेशे	२४
यो हरिरुच्चखान	७७
रक्तेन केशिदशनक्षत०	८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सारङ्गसंज्ञं समस्तै०	५६	स्यादयुग्मके रजौ	१३०	स्रगियमपि च रस०	७०
सुधा तर्कस्तर्को०	९७	स्यादिन्द्रवज्रा यदि	३३	स्वरभिदि यदि नौ	६९
सूर्याश्वैर्यदि मः	१००	स्याद् भूतर्त्वश्वैः	९२	स्वागता रनभ	४२
सौ लगौ विषमे	१३१	स्यान्मणिमध्यं चेद्भ०२९		स्वेच्छया रजौ	१२४
स्यादनुकूला भतन	४१	स्यान्मोटनकं तज०	४३	हयऋतुसागरैर्यति०	९०

उदाहरण-प्रत्युदाहरण-सूची

पद्यानि	पृष्ठाङ्काः	पद्यानि	पृष्ठाङ्काः	पद्यानि	पृष्ठाङ्काः
अंहो हन्ति ज्ञानवृद्धि	३८	इत्थं रथाश्वमनिषा०	३६	कृष्णसनाथा तर्णक०	१९
अक्षरैर्गणना यत्र	३	इन्द्रनीलोपलेनेव	४९	कृष्णः शिशुः सुतो	१३७
अतिसुरभिरभाजि	५२	इह कलयाऽच्युत	५४	कृष्णः श्रृङ्गारपटु०	१४१
अथ वासवस्य	१३३	इह दुरधिगमैः	६१	केशववंशीगीति	१४२
अनन्तरोदीरित०	३५	उक्ता वसन्ततिलका	६५	क्रीडत्कालिन्दी०	९३
अनन्याश्चिन्त०	५०	उदञ्चत्कावेरील	९९	क्रौञ्चपदालीचित्रि०	११६
अपि भूतफुल्लशत	१३३	उदेत्यसौ सुधाकरः	१२५	क्षितिविजितिस्थिति	३२
अभीष्टं जुष्टो यो	९९	उपेन्द्रवज्राचरणः	३६	खरतरशौर्यपावक०	११२
अभून्नृपो विबुधसखः	५८	उपेन्द्रवज्रादिमणि०	३४	खिस्तेवंशशिरो०	१
अमरमयूरमानस०	८३	एकमात्रो भवेद्	३	गुरुभुजवीर्यभरं	६३
अमृतस्य शीकर०	५१	एवं यथा यथोद्वेगः	१०	गोपस्त्रीभिः कृष्णो	१७
अमृतोर्मिशीतलकरेण	६०	कत्यद्विप्रतिरोधिताः	१३	गोपानां नारीभिः	,,
अयि विजहीहि	५४	कदम्बामोदाढ्या	९८	गोपालीलालोला	७६
अयि सहचरि !	७०	करकिसलयशोभया	१२९	गोपीनामधुरसुधा०	५७
अर्चामन्येषां त्वं	५०	करतालचञ्चल०	१०५	गोविन्दं प्रणमो०	१००
अवतु वो गिरिसुता	२७	करादस्य भ्रष्टे ननु	८४	गोष्ठे गिरिं सव्यक०	३३
अहिलतादल०	२३	काचिन्मुरारेर्वदना०	३५	ग्राम्याब्जानूपं	९३
अहृत धनेश्वरस्य	९४	कामक्रीडासतृष्णो	१०१	घुसृणेन मदेन	१६०
आचार्यपिङ्गल	१	कायमनोवाक्यैः	३०	,, ,,	१४४
आतन्वानं सुरारि०	१४५	कालियभोगाभोगग०	२९	चञ्चलचूडं चपलै०	२५
आदिमध्यावसानेषु	५	कृत्वा कंसमृगे	९७	चन्द्रवर्त्मपिहितं	४५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पद्यानि	पृष्ठाङ्काः
चपला न चेत् क०	१४०
चारुसमीरणरमणे	१४४
चिकुरकलापशैव०	१०६
चित्तवृत्तलीलया	१०६
जय जय जगदीश	११६
,, ,, ,,	१३८
जय जय जय !	१५०
जयति दितिजरिपु०	५६
झटिति प्रविश	८
तरणिजातटे	३२
तरणिजापुलिने न०	५२
तरणिदुहितृतट०	८२
तरणि सुतातटक०	३८
तरणिसुतातरङ्ग०	६४
तरलवतंसाश्लिष्ट०	१४६
तरला तरङ्गरिङ्ग०	२६
तरुणं सर्षपशाकं	७
तुरगशताकुलस्य	१०६
तोयेषु तस्याः प्रति०	३६
त्वरितगतिर्व्रज०	३२
दिनकरतनया त०	६५
दुरन्तदनुजेश्वर०	८५
दुर्जयदनुजश्रेणी०	७८
देव ! सदोध ! कद०	४२
दैत्येन्द्रवंशाग्नि०	४६
ध्याता मूर्तिः क्षण०	३६
नन्दसुत वञ्चक०	१४०
नरकरिपुरवतु	७१
नवगोपसुन्दरीणां	१४२

पद्यानि	पृष्ठाङ्काः
नश्यन्ति ददर्श	२०
नारायणस्य	१४३
नूतनवंशपत्रपतितं	८६
पादादाविह	८
पायाद्वो गोविन्दः	७२
पीत्वा मत्ता मधु	३१
पुंसां कलिकाल०	१३६
पुनातु भक्तिरच्युता	२७
पुनातु वो हरिरति०	५८
प्रणिपात प्रवण	१५०
प्रतिकूलतामुपगते	५१
प्रत्यूहव्यूह	१
प्रत्याहृत्येन्द्रियाणि	१०४
प्रलयघनघटा	११८
प्रह्वामरमौलौ रत्नो	५५
प्राप्य नाभिह्रदमज्जन	८
प्रेमालापैः प्रिय०	८७
फुल्लं वसन्ततिलकं	६५
बलिदमनविधौ बभौ	५२
बल्लववेशा मुररिपु०	४१
बाहू द्वौ च	११०
भाराक्रान्ता मम	६१
भास्वत्कन्या सैका	१८
भुजोत्क्षेपः शून्ये	८२
भोभूमिस्त्रिगुरुः	५
भ्राम्यद्भृङ्गीनिर्भर०	६७
मनौ सखायौ	६
मया ततमिदं सर्वं	५०
मलयजतिलक०	७०

पद्यानि	पृष्ठाङ्काः
मा कान्ते ! पक्ष०	७३
माधवमासि विक०	१११
माधव मुग्धैर्मधु०	११५
माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णै०	१४८
मुखारविन्दैर्व्रज०	३५
मुग्धे ! मानं परिहर	४०
मुग्धे ! यौवनल०	६८
मुग्धौन्मीलन्मत्ता०	११४
मुररिपो ! तव पदं	१६
मुरवैरिवपुस्तनुतां	१२३
मुरहर ! यदुकुलां	१२०
मुरारितनुवल्ली	२३
मूर्तिर्मुरशत्रो०	२०
मूर्ध्नि चारुचम्प०	१२१
मृगमदकृतचर्चा	७२
यतिः सर्वत्र पादान्ते	१०
यदनवधिभुज०	६६
यदवोचत वीक्ष्य	१२६
यदीयहलतोविलोक्य	४७
यमुनातटमच्युत०	४६
यमुनाविहारकुतुके	६१
यस्य कीर्तिरिन्दुकु०	४४
यस्य कृष्णपादपद्म०	२६
यस्य चेतसि सदा	४२
यस्या नित्यं श्रुति०	६०
या भक्तानां कलि०	५६
यामुनसैकतदेशे	२४
यो हरिरुच्चखान	७७
रक्तेन केशिदशनक्षत०	८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पद्यानि	पृष्ठाङ्काः
रघुपतिरिपि जात०	९५
रङ्गे खलु मल्लक०	४३
रङ्गे बाहुविरुग्णाद	२४
रणधरणीजित	१४६
रविदुहितृतटे वन०	२२
रविसुतापरिसरे	२७
राई दोहडि पडण	१४७
राधिकादधिविलो०	१४७
रासकेलिसतृष्णस्य	१३५
लसदरुणेक्षणं	९०
लीलानृत्यन्मत्तमयू०	५८
वक्त्राम्भोजं सदा	१३५
वनेषु कृत्वा सुरभि०	३६
वल्लववेशा	४१
वासोवल्ली विद्यु०	२५
विच्छेदे ते मुरारे !	७४
विद्रुमारुणाधरोष्ठ०	७७
विद्युल्लेखापीतं	२२
विपिनतिलकं	७३
विपिनविहारे कुसु०	५३
विभ्रष्टस्रग्गलित०	८०
विरराज यदीय०	१२२
विललास गोप०	१४६
विलासवंशस्थविलं	४६
विलुलितपुष्परेणु०	११३
वीर्याग्नौ येन ज्व०	६४
वृन्दावने सलीलं	१३७
वेदाङ्गत्वेन	२
व्यथयति कुसुम०	६६
व्यधित स विधिनेत्रं	८८
व्याकोपेन्दीवराभा	१०८
व्रजवनितावसन्त०	८९
व्रजसुन्दरीसमुद०	१३४
व्रजभ्रुवो विलस०	२०
शङ्केऽमुष्मिञ्जगति	९६
शयिता मृषा चटु०	६२
शरदमृतरुच०	६१
शशिवदनानां व्रज०	२१
शश्वल्लोकानां	१०२
श्रीस्ते सास्ताम्	१६
सदा पूषोन्मील०	१०७
सदारात्मजज्ञाति०	४८
सन्तुष्टे तिसृणां पु०	१३
सनाकवनितं	४८
सम्प्रति लब्धजन्म	८७
सरसखगकुलालाप०	६९
सह शरधि निजं तथा	५२
सहि त्रयाणामेव	१४९
साध्वी माध्वीक	१३
सा मङ्गलस्नानवि०	८
सा मृगीलोचना	१८
सार्धं कान्तेनैकान्ते	११०
सा सुवर्णकेतकं	७४
सिन्दूरपूरकृतगैरिक०	८
सुरद्रुमूलमण्डपे	७९
स्फुटफेनचया	१२७
स्फुटसुमधुरवेणु०	१२८
स्फुटसुषमामकर०	५३
स्फुरतु ममानेनाऽद्य	८१
स्मरवेगवती व्रज०	१२७
हरे ! सोमराजी समा	२१
हर्षाश्रुस्तिमितदृशः	१४३
हा तातेतिक्रन्दित	५९
हेमगौरे वसानो०	१२३
हेलोदञ्चन्यञ्च	११७
ह्रदतरनिकटक्षोणी	२८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu